

स्व० प० भव नाथ मिश्र

'' मिथिला शब्द प्रकाश '' कार परिचय

स्व० प० भव नाथ मिश्र, शुक्ल यजुर्वेदक बाजस्नेय शाखाध्यायी, और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य, आप्लवान एहि पञ्च प्रवर सँ युक्त वत्स गोत्रिय हरिअम्मे बलिराजपुर मूलक मैथिल श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह । हिनक जन्म १८७६ ई० मे ग्राम - जमुथरि, पो० हटाढ़ - रूपौली, झंझारपुर, जिला - मधुबनी में भेल छल। ई अपन मामा महामहोपाध्याय कृष्ण सिंह ठाकुरक शिष्यत्त्व मे व्याकरण साहित्यक गम्भीर अध्ययन कय धर्मशास्त्र तथा कर्मकाण्ड मे सेहो निष्णात भेलाह । हिनक पिताक नाम प० दामोदर मिश्र तथा माताक नाम यमुना देवी छलन्हि । हिनका धर्मपत्नी आद्या देवी सँ स्व० प० तेज नाथ मिश्र, व्याकरणाचार्य, वर्तमान प० श्री मति नाथ मिश्र, साहित्याचार्य (स्वर्णपदक प्राप्त), प० श्री यन्त्र नाथ मिश्र, व्याकरण साहित्याचार्य तथा प० श्री पुण्य नाथ मिश्र आयुर्वेदाचार्य –चारि पुत्र भेलथिन । रचित ग्रन्थ मे सात खण्डक '' ***मिथिला शब्द प्रकाश*** ''नामक महाकोश अछि जे अपन प्रथम खण्डक प्रकाशन (ई० १६१४ / बनारस / मूल्य ६ : आना) उपरान्त विश्व निष्णात विद्वान् लोकनि यथा जार्ज ग्रियर्सन, बार्नेट, सुनीति कुमार चटर्जी, सर गंगानाथ झा, कुमार गंगानन्द सिंह मध्य प्रशंसित ओ चर्चित रहल छल । अन्य रचना मे विविध विषयक संकलन ''विषयावली'' छल जे अनुपलब्ध अछि। फुटकर श्लोक भेटैत अछि । मिथिलाक्षर मे स्वहस्तलिखित सम्पूर्ण हरिवंश पुराण, दुर्गा सप्तशती तथा अनेक ग्रन्थक विशद हस्तलेख दर्शनीय अछि। १६३३ ई० क अग्रहण शुक्ल चतुर्थी तिथि कें हिनक स्वर्गवास भय गेल ।



प० मति नाथ मिश्र 'मतंग'

'' मैथिली शब्द कल्पद्रुम '' कार परिचय

प्रस्तुत ''***मैथिली शब्द कल्पद्रुम*** ''कोशक रचयिता संस्कृत तथा मैथिलीक महाकवि प० श्री मति नाथ मिश्र 'मतंग' वाजस्नेय शाखाध्यायी वत्स गोत्रिय हरिअम्मे बलिराजपुर मूलक मैथिल श्रोत्रिय ब्राह्मण प० भव नाथ मिश्रक कुलोनायक द्वितीय पुत्र थिकाह। हिनक माताक नाम आद्या देवी छलन्हि । हिनक जन्म भारतीय शासन क्षेत्रक मिथिलाक मधुबनी जिलान्तर्गत झंझारपुर प्रखण्ड के ग्राम – जमुथरि, पो० हटाढ़ – रूपौली मे १५-७-१६२४ ई० कें भेल छल । भागलपुर के सुलतानगञ्जस्थ विक्रमशिला संस्कृत महाविद्यालय मे पढ़ि साहित्याचार्य परीक्षा मे बिहार मे प्रथम होयवाक कारणे स्वर्णपदक प्राप्त कयल । हिनक स्वरचित प्रकाशित संस्कृत ग्रन्थ सभ मे - '' भार्गव विक्रमम् '', पद्य महाकाव्य, '' महर्षि विश्वामित्रम् '', गद्य महाकाव्य, '' राष्ट्रबन्धु '' नाटक तथा पद्य खण्ड काव्य '' ऋतु विभ्रमम् '' एवम् '' संस्कृत व्याकरणानुवाद चन्द्रोदय '' अछि । असंख्य अप्रकाशित पद्य अछि । मैथिली मे ''ठहक्का'' पद्य, ''जय राजा सलहेस'', पद्य महाकाव्य, संस्कृत समछन्द मे ''मेघदूत''क मैथिली अनुवाद तथा बहुत रासे अप्रकाशित मैथिली कविता अछि । प्रस्तुत पुस्तक समक्षे अछि । कैओ आइ तक पूर्ण नहिं भऽ सकल अछि ई बूझि एकर त्रुटि पर ध्यान नहि दैत मैथिल समाज एकर पूरक दोसर तकर पूरक तेसरो कोशक निर्माण कय मैथिलीक भण्डार के भरैत रहथि से लेखकक कामना छनि । तेहत्तरि वय: क्रम के पार कइयो के हिनक लेखिनी लगातार चलितहिं रहैत छन्हि ।

मैथिली–मैथिली शब्दकोश

मैथिली शब्द कल्पद्रुम

प० मति नाथ मिश्र 'मतंग'



मिश्र बन्धु प्रकाशन :—०५

प्रकाशक :
मिश्र बन्धु प्रकाशन
अमृथरि, हटाढ़-रुपौली
झंझारपुर, मधुबनी–८४७ ४०४

प्रथम संस्करण—१९९८
प्रति —२२००

संशोधित मूल्य 300/- टाका
मिश्र बन्धु प्रकाशन, मधुबनी

मुद्रक एवं विक्रय प्रबन्धन :
सर्वश्री सुनील आनन्द प्रिन्टर्स
गोशाला रोड, पी० ओ०–रमना
मुजफ्फरपुर–८४२ ००२
दूरभाष–२४७२३३

सम्पादकीय

कोनो अर्थाभिव्यञ्जक शब्द समूह के भाषाक रूप में प्रतिष्ठित होयबा मे साहित्य, लिपि, व्याकरण आ कोश ई चारि टा मुख्य स्तम्भ होईत छैक। एहि सब से उपर ओहि भाषाक भौगोलिकता, ऐतिहासिकता तथा राजनैतिकता सेहो कोनो भाषा कें स्थापित करबा मे साहित (मदति) करैत रहलैक अछि।

निस्तुकी छैक जे एहि सभ दृष्टि सँ मैथिली, समस्त भारतीय स्थापित भाषाक सँग अग्रिम पाँती मे अपन स्थान बनौने अछि। पहिने कोनो भाषाक क्षेत्रीय नाम नहि होइत छल। जखन वैदिक वा संस्कृत उत्तर भारतक विभिन्न क्षेत्रक माटि, पानि, बसात, आकाश तथा उष्माक प्रभाव से स्वर, अभिव्यक्ति, उच्चारण प्रणाली, ओतुक्का लोक द्वारा अपनाओल गेल मुताबुत हेतु विशिष्ट शैली मे बाजल जाय लागल तखन मागधी, अर्द्धमागधी सौरसेनी आदि नाम से भाषाक नाम पड़ए लागल। जे अपभ्रंश कहबैं छल।

अर्द्धमागधी अपभ्रंस सँ मिथिला मे मैथिली, मगध मे मगही, बंगाल मे बंगला, असाम मे असमियाँ उत्कल मे उड़िया सन पूर्वीय भाषा विकसित होमए लागल आओर सौरसेनी से ब्रजभाषा, भोजपुरी, अवधी, बैसवाड़ी, गढ़वाली आदि।

तेँ हेतु उपस्थित ''मैथिली शब्द कल्पद्रुम'' नामक शब्द कोश मैथिली भाषाक थीक तेँ एहि भाषाक उपर्युक्त उपादान पर किछु संदर्भ प्रस्तुत करब आवश्यक बुझैत छी जाहि सँ मैथिलीक विषय मे किछु भ्रमक सेहो निवारण भए सकै।

सर्वप्रथम डा० हर प्रसाद शास्त्री कें शोधक क्रम मे नेपालक पुस्तकालय मे मैथिली साहित्य पुस्तकक लाट मे चर्याचर्य विनिश्चय वा चर्यापदक ''दोहा कोष'' तथा डाकार्णव, के रूप मे बौद्ध सिद्धक अनेकानेक पद्यगीत भेटलन्हि जे सातमी शताब्दी से पहिलुका आ पश्चातिक थीक जाहि मे लुहिपा, विरुपा आदि सिद्ध प्रमुख छथि। निश्चित रूप से ई गीत सभ प्राचीन मैथिलीक थीक।

ध्यान देबाक बात अछि जे ओहि अमल (जमाना) मे राजाश्रय पाबि के जहिना संस्कृत पूर्ण विकसित भऽ चुकल छल तहिना भिक्षुक होएबाक कारणे लोकाश्रय पाबि के लोकभाषा मैथिली तथा मगही के साहित्यिक रूप मे सिद्ध लोकनि विकसित कए रहल छलाह् होएत।

सिद्ध साहित्यक परिशीलन करैत महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ''गंगा के प्रवाह–३, तरंग–१'' मे १६३३ ई० क अंक मे स्पष्ट लिखने छथि जे सिद्ध साहित्य मैथिली तथा मगहीक सबसे लगीच अछि। विरुपाक एक पद्य बानगी अछि—राग गवड़ा मे—एक से शुण्डिनि दुइ घरे सान्ध अ, चीअण वाकलअ वारुणी बान्धअ। ध्रु० सहजठि थाड़िये देह पसारा, पइठल गराहक नहि निसारा। ध्रु० विस्तार के डर से अधिक उदाहरण नहि दए रहल छी। मैथिलीक रचनाकार होएबाक कारणे ज्योतिरीश्वर ठाकुर ''वर्ण रत्नाकार'' मे चौरासी सिद्धक उल्लेख करैत सत्तावनटा सिद्धक नामोल्लेखो कएलन्हि अछि।

लोक भाषाक लोकप्रियता देखैत अनेक संस्कृत ग्रन्थक प्रणेता विद्यापतियोके घोषणा करए पड़लन्हि जे—"देसिल बयना सबजन मिट्ठा" आ ओ देसिल बयना मैथिली मे तेहन सार्वभौम, सार्वजनीन आ सार्वकालिक रचना कएलन्हि जे विश्वविख्यात भए गेल। हुनके एहि देसिल बयनाक मन्त्र सँ प्रेरित भ के समस्त उत्तर भारतीय भाषाक लोक भाषा सभ मे रचना होमए लागल, सूर, तुलसी, कबीर, मीरा, खुसरो, जायसी, रहीम, रसखान आदि जकर प्रतिफल भेलाह।

बंगला में कृत्तिवास, चण्डीदास सँ लए कें रवीन्द्रनाथ तथा तकर पश्चातियो बंगलाक रचनाकार सभ विद्यापति से प्रेरित होइत रहलाह। असामक अंकियानाट, कीर्त्तनियाँ, आ उड़ियाक साहित्य सेहो प्रेरित भेल। अही क्षेत्रीय भाषा कें विद्यापति देसिल बयना कहैत छथाह जे मैथिली वा तिरहुतिया थीक।

जाहि भाषाक साहित्य कें ज्योतिरीश्वर, विद्यापति लोचन, अमियकर, उमापति, लाल दास, मनबोध, गोविन्द दास, चन्दा झा आदि महाकवि सजौलन्हि, बदरीनाथ, सीताराम झा, सुमन, रामलोचन, मधुप, मणिपद्म, किरण, अमर, राघव आदि रससिद्ध रचनाकार आगाँ बढ़ौलन्हि आ एखन अनेक उदीयमान कवि रचनाकार भरि रहल छथि एकर साहित्यिक रत्न भण्डार कें अपन कालजयी साहित्यक निर्माण सँ। जाहि भाषा मे—चन्दा झा रामायण, रामलोचन शरणक मैथिली रामचरित मानस, विषपायीक राम सुयश सागर, तथा श्रीकृष्ण नन्दन सिंहक "सीतारामायण" सन चारि चारि टा रामायण अछि। पाँचम कवि भोलालाल दासक मैथिली रामायण सबसे शीर्ष पर चमकि रहल अछि।

जकर लोक साहित्य असंख्य लोक कण्ठ से सोहर, मूड़न, उपनयन, विवाह, कुमार, कोबर, बढगवनी, उचिती, योग, डहकन, समदाउनि, बटगबनी, झूमरि, कजरी, लगनी, गोदना, विषहरागीत, शीतलागीत, देवीगीत, सामागीत, साँझ, पराती, बिरहा, जटा जटिन, डोमकच, दाहागीत, दीनोभद्रीक गीत के उपरो राजासलहेस, दिवरादयाल, लोरिकानि, बृजभान, गोढ़ैया, सीतबसन्त, रानीसारंगा, राजा भरथरी, गोपीचन, जालिम सिंह, आदि लोकगाथा विविध विधा तथा विविध रूप मे अनादिकाल से गुञ्जित भ रहल अछि।

तत्पश्चात् नहि नेपालक मल्ल राज्यकाल तें मैथिलीक स्वर्णयुग छले जे लगातार आइधरि नेपालक मैथिली भक्त मैथिलीक लेल संघर्ष करैत एकर द्रुत गति सँ विकासक लेल प्रयासरत छथि। ओहुठाम मैथिली सेवी लोकनि मैथिली मे कालजयी साहित्यक निर्माण क रहल छथि। अनेक मैथिली पत्र पत्रिका बहार क रहल छथि।

कोनो मे साहित्यक रचना ओहिभाषाक शक्ति पर पहिने निर्भर करैत छैक जे शिक्षित अशिक्षित सभ के रचनाक हेतु विवश कए दैत छैक दोसर स्थान मे कविक शक्ति आ तखन कविताक शक्ति। शक्तिहीनताक दोष झट द दृष्टिगोचर भ जाइत छैक। मैथिली मे कोनो भाषा से अधिक शक्ति विद्यमान छैक। एहि भाषा मे हजारो अपूर्व फकड़ा आ अगणित उपलक्षण (मुहावरा) अछि। एकर पाचन शक्ति एतेक प्रखर अछि जे अनेक विदेशियो शब्द के तेना पचा लैत अछि जे से ओकर मूल रूपक पता नहि चलैत छैक। विदेशियो भाषा से अनेक मुहावरा बना लैत अछि जेना "दफाननाई" "हुसेल-हुसेल केनाई" "फतिया पढ़नाई" "गुरमिन्टी केनाई" "सीट लगोनाई" आदि अनेक मुहावरा अछि। १९४७ ई. सँ पूर्वहुँ मैथिली अन्तर्राष्ट्रीय भाषा छल। एहिभाषा मे पत्रकारिताक अभाव नहि रहल अछि।

१९०५ ई० मे सर्वप्रथम "मैथिल हित साधन", १९०६ मे "मिथिला मोद", १९०८ मे "मिथिला मिहिर", "मैथिली प्रभाकर", "जीवन प्रभा", "श्री मैथिली", "मिथिला", "मिथिला मित्र", "मैथिल-बन्धु", "मैथिल युवक", "वैदेही", "मिथिला दर्शन", "मिथिला सेवक", "वटुक", "चौपाड़ि", पहिलुका पत्र पत्रिकाक अतिरिक्त सम्प्रति त नेपाल सँ "वाणी" "पल्लव" आदि तथा पटना सँ "भाषा" "सन्धान", कलकत्ता सँ "मैथिली संवाद", "कर्णामृत", सहरसा सँ "कोशी कुसुम", "भारती मण्डन", एक प्रौढ़ पत्रिका अछि जहिना मिथिला मिहिर। दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद, कानपुर, मेरठ, प्रयाग आदि स्थान से त सहर्षहि जे अमेरिका पर्यन्त से मैथिली पत्रिका निकलैत रहल अछि। मैथिली साहित्यक गुणवत्ता सँ आकर्षित भए सबसे पहिने कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिली के १९१९ ई० मे पाठ्यक्रम मे आनल गेल तदुत्तर इलाहाबाद तथा बनारस विश्वविद्यालय तकरा अनन्तर बिहारीक विभिन्न विश्व-विद्यालय अपन पाठ्यक्रम मे रखलक। १९७४ ई० मे एकरा बिहार लोक सेवा आयोग मे सेहो स्थान भेटल मुदा एहि भाषाक प्रति द्वेष से १९९४ ई० मे लोक सेवा आयोग सँ हटा देल गेल। सम्प्रति इण्टरक पाठ्यक्रम से सेहो हटा देल गेल अछि। वास्तविक मैथिली त तथाकथित पिछड़ी एवं दलितक भाषा थीक तखन की कारण जे दलित एवं पछिड़ल लोकक उत्थान लेल प्रतिबद्ध शासन मे मैथिलीक सँग एहि तरहक उपेक्षाक व्यवहार कएल जा रहल अछि? वस्तुतः एकर उत्तर मिथिला समाज वर्तमान दायित्व सँ किएक नहि पुछैत अछि। दिल्लीक साहित्य अकादमी सँ मैथिलीक अनेक ग्रन्थ पुरस्कृत भेल अछि तथा बिहार मे १९७२ ई० मे मैथिली अकादमीक स्थापना भेलाक उत्तर अनेक मैथिलीक ग्रन्थ एकरा द्वारा मुद्रित प्रकाशित आ पुरस्कृत होइत रहल अछि जाहि मे प्रस्तुत कोशक रचयिता महाकवि पं० श्री मतिनाथ मिश्रीक "नव राजा सलहेस" महाकाव्य सेहो अछि।

स्व० इन्दिरा गाँधी मैथिली भाषाक माधुर्य सँ अति प्रभावित छलीह। हुनक प्रधानमन्त्रित्वकाल मे दिल्ली पुस्तक मेला मे देखैत देखैत ओ जखन मैथिली कार्नर पर अएलीह आ मैथिली गीतक टेप सुनाओल गेलन्हि त प्रसन्न भए कहैत रहलीह—स्वीट लैंग्वेज-स्वीट लैंग्वेज। एहन चिर प्राचीन चिर-नवीन प्रगतिशील मैथिली आ एकर साहित्य के केओ अपना के विद्वन्मन्य साहित्यकार आ इतिहासकार एकरा हिन्दीक उपभाषा वा बोली बुझैत छथि त से हुनक निजाग्रह, पूर्वाग्रह, पराग्रह वा दुराग्रह बुझबाक चाही। कि ओ नेपाल से नियमित रूप मे मैथिली मे समाचार, पटना, दरभंगा, भागलपुर, राँची आकाशवाणी से प्रसारित होइवाला मैथिली कार्यक्रम ओलो से नहि सुनने होयताह।

कि? ओ उत्तर द सकैत छथि जे विद्यापति—गोविन्द दासक समय मे हिन्दी नामक कोनो सार्थक शब्द छलैक जकरा देसिल बयना कहल गेलैक? अथवा मैथिलीक ओज दए के हिन्दी कें नवीन साज सज्जा मे उपस्थित केनिहार हिन्दी मैथिली दुनू मे रचना केनिहार "जनार्दन झा जनसीदन", "सुधांशु शेखर चौधरी", "आरसी प्रसाद सिंह", "राजकमल", "बाबा नागार्जुन", "जीवकान्त", "आद्यानाथ झा निरंकुश", "फणीश्वर नाथ रेणु" आदि रचनाकारक रचनाक दुनू भाषा मे कोनो अन्तर नहि बुझ-बाक बुद्धि छन्हि। तखन ई पाखण्ड किएक? डंकाक चोट पर हम कहब जे मैथिली भाषा तथा एकर साहित्य बहुत समृद्ध, सशक्त तथा स्वतन्त्र अछि। एहि बातक विरोध केनिहार के हम बदान (चुनौती) दैत छियन्हि।

यदि मैथिली मे विपन्नता छैक त राजनैतिक जकरा कारणे चार कोटि मैथिली भाषी के भारत सरकार से अपन भाषा मे बजबाक संवैधानिक अधिकार नहि भेटलैक अछि तावेक नहि एकरा पर बराबरि विखण्डनकारी राजनीतिक आक्रमण होईत रहलैक अछि।

सबसे पहिने सुगौली सन्धि के अनुसार मैथिली भाषी क्षेत्र के भारत नेपाल दू भाग मे बाँटि देल गेल। पुनः बंगाल से बिहार के फराक करबाक समय एहि नवकल्पित बिहारक वास्तविक भाषा

"मैथिली", "मगही", आ भोजपुरी नहि भए के एकरा पर हिन्दी नामक भाषा थोपि देल गेलै। जाहि भाषा सँ ओहि समय केओ परिचित नहि छल। तेसर बेर १९५४ ई० मे भाषाधार प्रान्त निर्माणक सिद्धान्त पर जखन कल्याणी मे कांग्रेस महाधिवेशन होमए जाईत रहैक त मिथिला आ मैथिलीक माङ्ग के आन्दोलन करबाक हेतु मिथिला केशरी जानकीनन्दन सिंहक नेतृत्व मे अधिवेशन मे जाइत एक हजार कांग्रेस सदस्य कें आसनसोल जंक्शन पर बन्दी बनाय अधिवेशन मे उपस्थित होयबा सँ वञ्चित कए देल गेल। ई छल जनतान्त्रिक अधिकारक आदर्श।

अधिवेशनक उपरान्त तात्कालिक बिहारक मुख्यमंत्री द्वारा मिथिला मैथिलीक विखण्डन हेतु मैथिली भाषी क्षेत्र कें नवकल्पित अंगिका एवं वज्जिका भाषी क्षेत्र मे परिगणित कए मैथिली भाषी क्षेत्र मे फूट कराके विखण्डित आ दुर्बल बनाओल गेल। नहि त १९५४ ई० सँ पहिने कोनो इतिहास, पुराण, साहित्य, राजकीय अभिलेख मे अंगिका, वज्जिका नामक भाषाक चर्चा नहि आयल अछि प्रत्युत १९०२ ई० सँ १९११ ई० तक जे जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन भारतीय भाषाक सर्वेक्षण कएने छलाह ताहि गजट मे उत्तर बिहारक अतिरिक्त भागलपुर सन्थाल प्रगणाक देवघर, मधुपुर, साहेबगञ्ज तकक क्षेत्र कें मैथिली भाषी क्षेत्र के रूप मे रेखांकित कएने छथि। जकर रेखाचित्र गत्ता पर देल गेल अछि। मजहब वा धर्मक कोनो भाषा नहि होईत छैक। मजहब के यदि कोनो भाषा होइतैक त सम्पूर्ण इस्लामी विश्व अरबिए बजितै। त ने सभ हिन्दू संस्कृत भाषा बजैत अछि ने वैदिक, ने सभ बौद्ध पाली भाषा बजैत अछि ने सभ इसाई-यहूदी हिब्रू आकि सभ मुसलमान अरबी। सत्य त ई छैक जे जाहि क्षेत्रक वासी कोनो धर्मावलम्बी अछि से ओहि क्षेत्रक भाषा बजैत अछि। तखन ई आत्मवंचना किऐक ? शरीर जेकाँ भाषा सेहो ओहि क्षेत्रक माटि पानि बसात आकाश आ उष्माक उपजा थिकैक।

बिहारक एकटा मुख्य मन्त्री मैथिली कें अगड़ी जातिक भाषा होएबाक लोक में भ्रम उत्पन्न क के पिछड़ी जाति कें मैथिली सँ फूट करबाक असफल प्रयास कएलन्हि। कारण मिथिलाक पिछड़ी जाति आब ओतेक मूर्ख नहि रहि गेल अछि जे ओकरा अपन परिचय सँ दूर राखल जायत। से यदि रहितैक त बिहारक जन नायक मुख्य मन्त्री कर्पूरी ठाकुर पिछड़ी जाति में सँ रहितहुँ मैथिली कें अष्टम अनुसूची मे सम्बद्ध कए संवैधानिक अधिकार देएबाक हेतु केन्द्र सरकार कें प्रस्ताव नहि पठबितथिन। वास्तविकता त ई छैक जे ओही तथा कथित पिछड़ी आ दलित जातिक घर आङ्गन मे मैथिली अपन शुद्ध रूप मे सुरक्षित छथि। कोनो भाषा देशक ऊर्जा थिकैक। भारतीय संस्कृति कें रवीन्द्र नाथ ठाकुर कमल फूल सँ तुलना कएने छथि जकर एकोटा पंखुरी टूटि गेला सँ ओकर शोभा नष्ट भ जाइत छैक ओहने पंखुरी मे एकटा मैथिली संस्कृति अछि। संस्कृति माने भाषा, साहित्य लिपि, कला दर्शन आचार विचारक परम्परा सँ अर्जित संस्कार होइत छैक। स्वतन्त्रताक एकमात्र लक्ष्य अपन संस्कृतिक रक्षा आ परतन्त्रता सँ अपन संस्कृतिक नाश होइत छैक। निश्चित रूप सँ विदेशी शब्द देशी शब्द सभके विस्थापित कए रहल अछि। बहिष्कृत कए रहल अछि। तथापि हिन्दी साहित्यकारक मैथिलीक प्रति ओहने प्रवृत्ति देखल जाइत अछि जेहन साँप सँ धएल बेङ, लगमे आयल कीड़ा मकोड़ा के गीड़ए चाहैत अछि।

एहि प्रकारें भारतक जनतान्त्रिक शासन सँ मैथिली पर कतबो प्रहार होअ मुदा एकरा अन्तर्राष्ट्रीय होयबाक कारणें नेपाल मे ओतयक उत्साही मैथिली भाषी द्वारा एकर निरन्तर विकास भ रहल अछि आ होइत रहत। अहू ठाम जखन जन साधारण अपन मुँहक एहि रत्न के चिन्हत तऽ एकर महत्व बुझए लागत। वस्तु आब मिथिलाक्षर वा तिरहुतालिपिक विषय पर आबी एखन तक जे शिलालेख, तड़िपत्र, वा कागज परक अभिलेख भेटल अछि ताहि में तेसर ई० शताब्दीक भार शिव वा काटक राजा द्वारा शिव मन्दिर स्थित कचनाक अभिलेख में शिला पर जे लिखित अछि से मिथिलाक्षर थीक। बेगूसरा-

बक मंगलागढ़ स्थित देवी मन्दिरक शिला लेख सेहो मिथिलाक्षरे अछि जे तेसर सँ छठम शताब्दी तकक थीक। वैद्यनाथ धाम सँ सात किलो मीटर दक्षिण सायर गाँव में प्राचीनतम सूर्य मन्दिर में शिला पर उत्कीर्ण मिथिलाक्षरक आदि रूप देखल जा सकैत अछि। अन्हरा ठाढी मधुबनीक प्राचीन शिला लेख सेहो मिथिलाक्षरक विषय में उल्लेखनीय अछि। सबसे अर्वाचीन एहि कोथ कारक ग्राम-जमुथरि स्थित गौरी-शंकर स्थानक गौरीक मुख प्रतिमा सँ युक्त शिव लिंगक मिथिलाक्षर में शिला लेख अछि।

जकरा शिला लेखक इतिहास में प्रथम आश्चर्य कहल जाय त अत्युक्ति नहि होयत। कारण एहि शिव लिंगक वृत्ताकार आधार जकरा जल धरी कहल जाइत अछि तँ मेरुपुर यन्त्र बनाओल अछि जकर भीतर सँ बीस तथा बाहर सँ सोलह कोण बनैत अछि। ताहि बीच अनेक तान्त्रिक मन्त्र अछि तकरो मध्य अत्यन्त कलात्मक अष्टदल कमल अछि जकर प्रत्येक दल में अँ आँ आ कँ खँ गँ घँ ङँ एहि क्रम सँ स्वर बीज तथा व्यन्जन बीज आठो दल मे स्पष्ट लिखल अछि। अष्ट दलक कर्णिका पर शिव लिंग स्थित अछि। लिंगक हृदयस्थल सँ अत्यन्त सुन्दर गौरीक मुख मात्रक प्रतिमा लिंग सँ संलग्न आ लिंग सँ बाहर भेल अछि। जकरा कान मे कर्ण फूल गरा में हँसुली तथा शीसि मात्रक केश समेटि के बीच माथ पर खोपा बनल अछि। आइयो काल्हि विवाहक समय कन्याक खोपा बीचे माथ पर बनाओल जाइत रहल अछि। ताहि सँ ऊपर लिंगक भाल प्रदेश में अर्द्ध चन्द्र पर बिन्दु बनल अछि ताहू सँ ऊपर लिंगक उन्नतोदर शीर्ष अछि। लिंगक वाम पार्श्व मे नीचाँ सँ ऊपरदीस राम गायत्री तथा राम मन्त्र अछि तथा दहिन भाग मे ऊपर सँ नीचा दीस के शिव गायत्री तथा अघोर मन्त्र लिखल अछि। ई लिंग बैंटकर सँ सावा हाथ ठाढ़ अछि तथा अपना आधार पर एकरा सभ दिशा घुमाओल जा सकैत अछि। अहि लिंगक तल में जे भैरव लिंगक जलधरी अछि तकर धरि पर लिखल अछि अक मे एग्यारह सय एका-वन शाके तदुन्तर भग्न तखन फेर माथ। ताहि सँ सिद्ध होइत अछि जे ई लिंग बारहवीं शताब्दी ईस्वीक थीक। सबसे अधिक ध्यान देबाक योग्य एहिमहूक आश्चर्य जनक लिपिक कला कारिता अछि। एक एकटा मन्त्रक रेखा एक एकटा अक्षर एकर कसौटी पाथर पर तरासि तरासि के उगाओल गेल अछि जे बहुत स्पष्ट तथा एतेक दिनक उपरान्तो अद्यतन बूझि परैत छैक। एह रहों शिला लेख खोदल पाओल जाइत अछि एतेक मन्त्र अक्षर के एतेक परिच्छिन्न रूप सँ उभार नाई लोकातीत कला कारिता देखन्त में बनैत अछि। अहि सँ अतिरिक्त हैहट देवीक शिला लेख १३२२ ई० क दड़िभगाक बर हटिया पोखरिक जाठि में लिखल शिला लेखक उपरो अठारहवीं इस्वी तक मिथिलाक्षर मे लिखल शिला लेख अछि। १०६७ ई०क नान्य देवक मन्त्री श्रीधर दासक शिला लेखक प्रतिलिपियेटा सुरक्षित अछि। ओ इनवार वंशक नरेश नरसिंह देवक कन्दहा शिला लेखक प्रतिलिपि सेहो प्रमाणित करैत अछि जे मिथलाक्षर कतेक प्राचीन काल सँ प्रचलित छल।

जहिया सँ मिथिला गुप्त साम्राज्य मे मिला लेल गेल तहिया सँ एकर नाम तीर भुक्ति पड़िगेल कारण साम्राज्यक अंगराज्य कें भुक्ति कहल जाइत छलैक आ एहि अंग के नदी मातृक होयबाक कारणे तीर भुक्ति होएब स्वाभाविक छल। ओना विद्वान लोकनि देशा प्राचीन विषयक संग अनेक बात जुटैत चल जाइत छैक तहिना अनेक ऐतिहासिक कथाक आधार पर तीरहुत तिरहुत त्रिमुक्त आदि कहैत छथि तँ तिरहुते होएबाक कारणें अक्षर तिरहुता गीत तिरहुत, निवासी तिरहुतिया, कहाबए लागल। तँ मिथिलाक्षर तिरहुता नाम सँ प्रसिद्ध अछि। बंगला आ असमिया लिपि एकरे दु चारि अक्षर हेर-फेर कके बनल अछि तँ हेवनी तक ओतए लोक अपन लिपि के तिहुता या तिउता कहैत रहल अछि।

मिथिलाक्षर मे हस्त लिखित सभसे प्राचीन ग्रन्थ नेपाल दर्बार पुस्तकालय मे "कुरा कुल साधन" नामक अछि। संगहि समस्त बौद्ध तन्त्र तथा बौद्ध गान-दोहा कोष, "डाकार्णव" मिथिलाक्षरे मे लिखित

भेटल अछि। ततबैक नहि महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन तिब्बतक बौद्ध मठ सँ जे हजारक संख्या मे दुर्लभ ग्रन्थ अपन राष्ट्रक सेवाक लेल अनलन्हि जाहि मे बहुतो पोथी पटना संग्रहालय मे सुरक्षित अछि मे तिरहुते मे लिखल अछि। बौद्ध ग्रन्थ "ललित विस्तर मे एहि लिपि के वैदेही" लिपि सेहो कहल गेल अछि।

उन्नैसम शताब्दी मे जखन विदेशी तथा स्वदेशी विद्वान लोकनि अनुसन्धान करए लगलाह आ विद्यापति कें मैथिल के रूप मे स्थापित कएलन्हि त १४३५ चौदह सय पैंतीस इस्वीक हुनक लिखल "श्री मद्भागवतक" मिथिलाक्षर मे हस्तलेखो प्राप्त करबाक सौभाग्य भेलैक जे राज दरभंगाक पुस्तकालय मे सुरक्षित होएबाक चाही। एहिसे अतिरिक्तो अट्ठारह सय कोन जे १६५० ई० उन्नैस सय पचास इस्वी तक हजारो नहि लाखोक संख्या मे मिथिलाक्षर मे लिखल रामायण, भागवत, पुराण समूह, शास्त्र समूह, न्याय पत्र, वैद्यक, बन्ध पत्र, जय पत्र, काव्य, संगीतक ग्रन्थ एखनहुँ मिथिला मे तथा मिथिला सँ बाहर अरक्षित दशा मे छिड़ियायल चितियायल पड़ल अछि। विलायत, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि देशक पुस्तकालय सभ मे हजारो हजार के संख्या मे मिथिलाक्षर मे लिखल पाण्डु लिपि दिनक फेरी देखि के दुःख से बौक बनल एही आशा बाटी मे पड़ल अछि जे हमरा देशक मिथिलाक केओ एहन सपूत कहियो आओत आ पढ़ि के एहि मे जे रहस्य छै तकरा जानत त अतुल रत्नक ओकरा भण्डार भेटतै हमर सन्तान सुखी होएत त हमरो आत्माके शान्ति भेटत प्रेतत्त्व से मुक्ति भेटत। मुदा धिक्कैक ई श्रद्धाक विषय यदि हम अर्थक हेतु एतेक शिक्षा, श्रम, समय दए सकैत छियैक त एतेक उदार विशाल उपयोगी मिथिलाक्षर सिखैक हेतु वा सिखेबाक हेतु ओहि साधनक सहस्त्रांश व्यय नहि क सकैत छी ? जाहि से हमर भावी पीढ़ीक सांस्कृतिक उन्नति आ पूर्वजक तर्पण भए सकैत अछि। ककरा से पुछबाक हमरा कोनो अधिकार नहि अछि तँ अपनहि सँ पुछैछी कि हम मनुष्य भ० के एहि धरती पर अहीलक्ष्य लेल आयल छी जे भरि जीवन केवल अपन भोग्य सामग्री जुटबैत जुटबैत एक दिन पशु जेकाँ ई शरीरो विवशता पूर्वक छोड़ए पड़ए आ राष्ट्र समाज आ संस्कृतिक हेतु किछु नहि करी !

स्वतन्त्रताक पश्चाति सभ क्षेत्र मे उत्तरोत्तर जहिना अपन संस्कार आ संस्कृतिक ह्रास भ रहल अछि तहिना मिथिलाक्षरक व्यवहारो अपवाद स्वरुपे रहि गेल अछि। पचास वर्ष पहिने सभ शुभ काज नोत पिहान पाता, व्यवस्था आदि तिरहुता मे लिखल जाइत छल। हम अपन परम्पराक एहि धरोहर कें बिसरि कतेक दिन अस्तित्व राखि सकैत छी। लिपियैक दुर्ग मे भाषा सुरक्षित रहि सकैत अछि। बंगला भाषा लिपियैक कारण विश्व मे अपन विशेष स्थान बनौने अछि। ई सभ बात शिक्षित मिथिला वासी मिथिला भाषी भाइ बहिन कें बुझबाक आ बुझेबाक टा विलम्ब अछि नहि त पूर्ववत् पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त कए सकैत छी।

आब भाषाक तेसर सामग्र व्याकरण दिस अबैछी। मैथिली भाषा पर व्याकरण लिखैबाला सर्व प्रथम सात समुद्र पारक मनीषी विद्वान डा० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन छलाह। ई अट्ठारह सय पचहत्तरि ई०क लगभग तात्कालिक मधुबनी अनुमण्डलक ब्रिटिश भारतीय प्रशासक छलाह। एहाँ ओ मैथिली भाषाक शक्ति से आकर्षित भए एतयक कतिपय विद्वान सँ सहायता लय एकर अध्ययन कयलन्हि आ तखन मैथिली व्याकरण लिखलन्हि। मैथिली क्रिस्टो मेथी के अतिरिक्त मैथिली भाषा, विद्यापतिक साहित्य पर अनेक शोध ग्रन्थ लिखलन्हि। विद्यापतिक वंशावली उपर कए ओकर आधार पर सिद्ध कए देखौलन्हि जे विद्यापति मैथिल छलाह। पश्चाति १९०२—११ ई० जखन लिंग्विष्टिक सर्वे आफ इण्डियाक अध्यक्ष बनलाह त एहि ग्रन्थक सत्तापर देश नकसाक अनुसार मैथिली भाषी क्षेत्रक सीमा निर्धारण कएलन्हि। दोसर "मिथिला भाषा विद्योतन" नामक मैथिली व्याकरण संस्कृत व्याकरणक सूत्र शैली पर महा वैयाकरण प० दीनबन्धु

झा द्वारा लिखल गेल। तेसर बेर श्री बाल गोविन्द झा व्यथित द्वारा प्रचलित अंगरेजी-हिन्दीक डर्रा पर मैथिली भाषाक व्याकरण लिखल गेल। चारिम व्याकरण पं० श्री गोविन्द झा द्वारा "उच्चतर मैथिली व्याकरण" लिखल गेल मुदा सभ मे एक देशीयता तथा अपन मान्यताक आधारें पर सिद्धान्तक स्थापना व्यवहार्यता सँ हटल हटल सन लक्षण लक्षित होइत रहल अछि। नीक तँ होइत जे मिथिलाञ्चलक विभिन्न क्षेत्रक भ्रमण अध्ययन तथा ओहि ठामक विद्वान लोकनि सँ विचार विमर्श कए लोक सबसँ सम्पर्क कए एक ठोस प्रौढ़ व्याकरण बनाओल जाइत। तैयो जतबा दूर तक व्याकरणक यात्रा पहुँचल अछि तकरा कम उपलब्धि नाहि मानल जएबाक चाही। ओ सभ मैथिली व्याकरणक वैयाकरण स्तुत्य आ धन्यवाद के पात्र थिकाह।

भाषाक चारिम प्रमुख खाम्ह थीक कोश। कोनो भाषा के कोशक ओतबेक सगता छैक जतबा कोनो शासन के। दुनूक सन्निहित अर्थ कोशे मे रहैत छैक जे व्यवहारक बेर मे काज दैत छैक। भाषाक विषय मे कहल गेल छैक जे—"शक्ति ग्रहं व्याकरणोपमान कोशाप्त वाक्याद् व्यवहारतश्च" अर्थात् कोनो शब्द के कोनो वस्तु मे जे संकेत भेटैत छैक से ताहि मे व्याकरण उपमान, कोश, तथा अपना सँ श्रेष्ठक वाक्य सँ होइत छैक। शब्द-अर्थक सम्बन्ध बुझेबा मे आन सभ कारण रहितहुँ कोश सबसँ आवश्यक छैक। एहि मे शब्दक अर्थो सुरक्षित रहैत छैक जे देखिओ के लोक तत्तुत अर्थ मे शब्दक प्रयोग कए सकैत अछि। कोश नहि रहतैक त शब्दक उपयुक्त प्रयोग मे लोक के चुप्पे रहए पड़तैक। तेँ संस्कृत मे छैक जे—

"अर्थव्याकरण स्त्वन्धः मूकः कोश विवर्जितः।
साहित्य रहितः पंगुः बधिरस्तर्क विवर्जितः।

अर्थात्—व्याकरण ज्ञान के बिना आन्हर, शब्द कोश के बिना बौक, साहित्य के बिना अपङ्ग, तथा तर्क के बिना कोनो लोक बहीर होइत अछि। एहन महत्त्व छै भाषा मे कोशक। एखुनका अपसंस्कृतिक प्रसार युग मे कोशक आओर आवश्यकता बढ़ि गेलैक अछि। कारण हजार वर्ष सँ एतए विदेशी संस्कृतिक आक्रमण चलि रहल अछि जाहि सँ रक्षाक हेतु सेहो कोश आवश्यक छैक। धड़ाधड़ स्वदेशी शब्द के धकेल-धकेल के विदेशी शब्द स्थान छीनि रहल अछि। पनपियाई वा जलपान के नास्ता, विवाहैक योग्य पुत्र-पुत्री के वर कन्या नहि कहि लड़का लड़की कहल जाइत अछि। तहिना नव विवाहिता पति पत्नी के वर वधू नहि कहि लड़का लड़की सेहु कहल जाइत अछि। जमाय के दमाद कि मेहमान। भात के चावल आ तरकारी के सब्जी। तहिना स्वरक उच्चारण मे विकृति आबि रहल अछि। भैरवि के भै मे पुरा ऐकारक उच्चारण नहि कयल जाइत अछि भौजी के भोंजी तहिना मैथिली मे ऐकार के अंगरेजीक मैन जेकाँ उच्चारण कयल जाइत अछि। मनि के देवाक स्थान मे भिन कें दिअ, बहिना कें स्थान मे बहना कतेक कहू सिनेमा रेडियो विडियो दूरदर्शनक सभ व्यवहार कें लोक अपन व्यवहार मानए लागल अछि। एहना परिस्थिति मे पुस्तकाकार कोशे एकटा भाषा रक्षाक उपाय भऽ सकैत अछि। नहि त अत्यन्त संवेदक अभिव्यञ्जक रहितहुँ देशी शब्द सभ विस्मृतिक गर्भ मे विलीन भ जायत। तेँ हेतु महाकवि पं० मतिनाथ मिश्र "मतंग" जीक एतेक पैघ मैथिली कोश निर्माणक भगीरथ प्रयासक जतेक प्रशंसा कयल जाय से थोड़ थिक।

एहि सँ पूर्व अनेक मैथिली भाषाक कोशक रचना भऽचुकल अछि। मुदा केओ साधिकार ई नहि कहि सकैत छथि जे हम मैथिली मे कोशक काज सम्पूर्ण कऽलेलहुँ। मुदा कोश निर्माणक आदि प्रयास केनिहार अवश्य स्तुत्य थिकाह कारण ओ एक पथ निर्देशक कार्य करैत छथि।

ओना मैथिली भाषाक आदि कोश कारक रूप मे पं० दीनबन्धु झा नाम उपस्थित कयल जाइत अछि। हुनके विद्वान पुत्र प० श्री गोविन्द झा "भारती मण्डन" पत्रिकाक तेसर अंक मे लिखने छथि जे हमर पिता एहि मैथिली शब्द कोशक रचना १६१४ ई० मे प्रारम्भ कएलन्हि। जखन कि पं० भवनाथ मिश्र द्वारा रचित "मिथिला शब्द प्रकाश" नामक सात खण्डक विशाल मैथिली शब्द कोशक प्रथम खण्ड १६१४ ई० मे वाराणसी सँ छपि के प्रकाशित भए चुकल छल। जकर प्रति उपलब्ध अछि। एहि कोशक विषय मे ब्रिटिश म्युजियमक कीपर एल० डी० बार्नेट, "जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, कुमार गंगानन्द सिंह तथा डा० सर गंगा नाथ झाक संग जे पत्राचार भेल छन्हि जकर विवरण आगाँ देब जे एहि कोशक महत्व के स्पष्ट करैत अछि। सिद्ध करैत अछि एकर कालके। ई संयोगैक बात कहबाक चाही जे एकदिस जखन जार्ज ए० ग्रियर्सन सर्वप्रथम मैथिली व्याकरण लिखं मे प्रयास रत छलाह तखनहि आजुक मधुबनी जिलाक जमुथरि (जमथर) ग्राम निवासी पं० दामोदर मिश्रक द्वितीय पुत्र, तथा महामहोपाध्याय श्री कृष्ण सिंह ठाकुरक अनन्य शिष्य पं० भवनाथ मिश्रक ६ एक वर्षक भगीरथ प्रयत्न सँ १६१२ ई० मे विशाल विशाल सात खण्डक "मिथिला शब्द प्रकाश" नामक मैथिली शब्द कोश बना लेने छलाह। जकर प्रथम खण्ड १६१४ ई० मे वाराणसी सँ छपि के सर्वप्रथम प्रकाशित भेल। जकर एक प्रति डा० एल० डी० बार्नेट, कीपर डिपार्टमेन्ट आफ ओरियन्टल पी० बी० एण्ड एम०एस०एस० लन्दन के प्राप्त भेलन्हि। एहि कोशक शब्द संग्रह वर्णमालाक क्रम सँ अछि। पहिने मैथिली शब्द तकर हिन्दी तथा हिन्दीयोक संस्कृत स्तम्भानुसार देल गेल अछि। संस्कृत शब्दक कोन कोश, शास्त्र वा पुराण कि ग्रन्थ मे चर्चा वा प्रयोग भेल अछि तकर विवरण एवम् लिंगक निर्णय देल गेल अछि। प्रथमे खण्ड मे अनठानबे टा दुर्लभ ग्रन्थक उल्लेख अछि ताही सँ अँटकर सर्गक अछि जे ई कोश कतेक उपादेय छल तँ उक्त बार्नेट साहेब कोशकार पं० मिश्र के लिखलथिन्ह जे कोशक शेष छह खण्ड कतए भेटत ? हमरा अपन संग्रहालयक हेतु लेबाक अछि। जे अँगरेजी मे अछि। एहि प्रकारक समपत्रक प्रतिलिपि हम अन्त मे राखब। प्रथम ई पत्र २८/५/१६२५ ई० क छल। जकर उत्तर मे कृतज्ञता ज्ञापन करैत पण्डित जी बार्नेट साहेब कें सातो खण्डक एहि कोशक विवरण तथा परिचय दैत ई हो लिखलथिन जे अर्थाभावक कारणे १५५–रुपया ऋण लऽकें प्रथम खण्डक केवल एक हजार प्रति छपा सकलहुँ। जकर दाम ओहि समय एक प्रति कें छओ आना छल। ई पत्र २४/४/१६२५ क दोसर छल। एकरे संदर्भ मे—१४/७/१६२५ कें बार्नेट साहेब लिखैत छथिन जे "मिथिला शब्द प्रकाश" सन उपयोगी पुस्तकक जे प्रकाशन नहि भऽ रहल अछि तकर हमरा खेद अछि तँ सर जार्ज ग्रियर्सन कें एकर प्रकाशन मे सहयोग देबाक हेतु लिखि रहल छियन्हि। जाहि पत्रक उल्लेख करैत सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, रथफारन्हम, केम्बरली, सूरी विलायत सँ २५/७/१६२५ ई० कें पं० भवनाथ मिश्र कें लिखने रहथिन अंगरेजी मे। ई पत्र तेसर छल।

पुनः चारिम पत्र अछि जाहि मे बार्नेट साहेब मिश्रजीक २/३/१६२६ क पत्रक उत्तर मे लिखैत छथिन जे कोशक शेष खण्डक सरकारी मशीनरी द्वारा प्रकाशन करेबाक मादे ग्रियर्सन साहेब कें लिखने छलखिन मुदा हुनक अस्वस्थताक कारणे ई कार्य सम्भव नहि भ सकल।

फेर ४/३/१६२६ ई०क पत्रक सन्दर्भ कें आगा बढ़बैत ११/३/१६२६ ई० कें पत्र द्वारा बार्नेट साहेब पं० मिश्र कें लिखैत छथिन जे उक्त कोशक प्रकाशनार्थ डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या कें सेहो लिखलियन्हि अछि। ई पाँचम पत्र थिक। इंगलिश में।

पुनः छठम पत्र जे अछि से रथ फारन्हम, केम्बरली, सूरी, इंगलैण्ड सँ पं० मिश्र कें सम्बोधित कए डा० ग्रियर्सन साहेब लिखैत छथिन जे ५/५/१६२६ क पत्र पाओल आशा अछि जे एहि कोशक शेष

खण्ड प्रकाशित भऽ सकत ई पत्र २५-५-१९२६ क थीक। ज्ञातव्य अछि जे डा० ग्रियर्सन साहेब १८७५ ई० उपरान्त मधुवनी अनुमण्डलक ब्रिटिश भारतीय प्रशासक छलाह ओ प्रथम मैथिली व्याकरण विद्यापति तथा मैथिली भाषा पर प्रामाणिक शोध ग्रन्थ लिखलन्हि। मधुबनीक ग्रिअेसन (ग्रियर्सन) मार्केट हिनकहि बनाके गेलाह। १९०२ सँ १९११ ई० तकक अन्तराल मे लिंग्विष्टिक सर्वे ऑफ इण्डियाक सदस्य तथा अध्यक्षो बनलाह पश्चात सेवा निवृत्त भए अपन देश इंगलैण्ड चल गेलाह तथापि मिथिलाक लोक सँ प्रेम व्यवहार पत्राचार करितहि रहलाह। एल० डी० बार्नेट साहेबक तथा डा० ग्रियर्सन साहेबक तथा आनो विद्वानक प० मिश्रक संग भेल पत्राचार यथावत् सुरक्षित अछि। जकरा अन्त मे उपस्थित कयल जायत। एहि दुनू विदेशी विद्वानक अतिरिक्त २६-६-१९२५ कें डा० सर गंगानाथ झा इलाहाबाद विश्वविद्यालयक सिनेट हाल सँ प० मिश्रक कोश पर अमूल्य सम्मति देने छथि। ई सातम पत्र थीक। अही भाँति दिनांक १९-९-१९२७ ई० कें तिनमुकिया रोड कलकत्ता से डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या प० मिश्र कें लिखलथिन जे उपर्युक्त तिथि सँ पूर्व तथोक्त कोशक छपल पहिल खण्ड हस्तगत भ चुकल छल। बार्नेट साहेबक कोशक शेष खण्डक छपेबा मे सहयोगक हेतु अनुरोध पत्र दूटा आयल छल जे "कलकत्ता युनिवर्सिटी एकरा छपेबाक प्रबन्ध करे", तँ ओ अपन सुझाव देलथिन जे मैथिलीक परम भक्त रखनिहार तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय मे मैथिलीक पढ़ाईक लेल अथक प्रयत्न केनिहार कुमार गंगानन्द सिंह सँ सम्पर्क कयल जाय। ई आठम पत्र अछि। अही भाँति पत्राचारक शृंखला मे कुमार गंगानन्द सिंह मेम्बर लेजिस्लेटिव एसेम्बली दिल्ली सँ प० मिश्र कें २-८-१९२७ ई० के पत्र लिखि पुछैत छथिन जे छपल पहिल खण्ड प्राप्त भेल, सम्पूर्ण पुस्तकक प्रकाशन मे कतेक द्रव्यक आवश्यकता छक से सूचित करी। ई नवम पत्र अछि।

एहि प्रकारक कतेक पत्र आओरो अछि संगहि मिथिला मिहिर पत्रिकाक बसन्त पञ्चमी १९३६ ई० क मिथिलांक मे अठारहम पृष्ठ पर आचार्य रमेश्वर लता सं० महाविद्यालय दरिभंगाक प० त्रिलोक नाथ मिश्र लिखित "मिथिलाक विद्वान" शीर्षक लेख मे प० भवनाथ मिश्र रचित "मिथिला शब्द प्रकाश", नामक ग्रन्थक उल्लेख भेल अछि। जाहि सँ सिद्ध अछि जे मैथिलीक सबसँ पहिल कोशकार प० भवनाथ मिश्र छलाह।

तखन प्रश्न उठैत अछि जे एहि अमूल्य महाग्रन्थक छः खण्ड भेल कि? उपर्युक्त ग्रन्थकार ग्रन्थक सम्पूर्ण छपेबाक सपना लेनहि १९३३ ई० क अगहन शुक्ल चौठ के चौवन्नम वर्षक अवस्था मे स्वर्गवासी भय गेलाह।

जखन कि हुनका चारि पुत्र मे सँ सबसे जेठ पुत्र प० तेजनाथ मिश्र मिडिल नौ वर्षक छलथिन तथा छोट पुत्र प० श्री पुण्य नाथ मिश्र डेढ़ वर्षक। १९४२-४३ ई० मे पिताक लिखल ई पुस्तक कोनहुना अढ़ाइ छवि जाव एकर अगुताई मे प० तेज नाथ मिश्र, रमेश्वर ग्रन्थालय दरिभंगाक मालिक कन्हैया लाल कृष्ण दास अग्रवाल के दए देलथिन। नैनमत्तिक कारणे जकर कोनो प्रमाण पत्रो लेब आवश्यक नहि बुझि पड़लन्हि। ओ छपवाक सुर सार करितहि छलाह कि अपनहि स्वर्गवासी भए गेलाह। तत्पश्चात हुनक पुत्र मधुसूदन दास कें हमहुँ छपैक लेल आग्रह करैत रहलियन्हि ओहो सभ बेर तुरंत छपबाक आश्वासन दैत स्वर्गवासी भऽ गेलाह। बन्धु विद्रोह मे मकान, प्रेस, व्यवसाय सभ नष्ट भए गेलन्हि। कृष्ण दास क पौत्र ज्योतिः प्रसाद अग्रवाल सम्प्रति एकमात्र छोट छीन पोथीक पसार (दोकान) लगाके बैसल रहैत छथि। कइएक बेर हाके कहलियन्हि "जे रुपैया लेबाक हो से लिय मुदा ओहि कोशक पाण्डुलिपि ढूँढ़ि के दिय नहि त गोदाम मे हमरा ताकए दिय मुदा प्रत्येक बेर खोजि रहल छी सैह कहैत छथि। ओ नष्ट भऽ गेल कि कतहुँ राखल अछि तकर पता नहि।

अहि् क्रम मे मिथिला शब्द प्रकाशकार प० भवनाथ मिश्रक द्वितीय पुत्र महाकवि प० श्री मतिनाथ मिश्र "मतंग" अपन पूज्य पिताक मैथिली सेवाक पुण्य कार्य कें आगाँ बढ़बैक इच्छा सँ "मैथिली शब्द कल्पद्रुम" नामक महाकोषक रचना आइ सँ आठ नौ वर्ष पूर्व प्रारम्भ कयल आ सम्पूर्ण कए पाठकक आगाँ उपस्थित छथि।

एहि महाकविक संस्कृत मे रचित "भार्गव विक्रमम्" पद्य महाकाव्य "महर्षि विश्वामित्रम्" नामक गद्य महाकाव्य "ऋतु विभ्रमम्" नामक खण्ड काव्य प्रकाशित छन्हि आ "नर्मरिणी" एकटा पद्य संग्रह सेहो प्रकाशित होमए जा रहल छन्हि।

संगहि "जय राजा सलहेस" नामक मैथिली पद्य महाकाव्य मैथिली अकादमी बिहार द्वारा प्रकाशित छन्हि जाहि पर नेपालक सिरहा मे १४ अप्रैल १९९७ ई० कें सम्मानित कयल गेलन्हि महाकवि कें। अहू सँ उपरी मेघदूतक समच्छन्द मे मैथिली अनुवाद आ "ठहाका" आदि छोट छोट मैथिली खण्ड काव्य प्रकाशित भए चकल छन्हि। हजारोक संख्या मे मैथिलीक पद्य जे अप्रकाशित छन्हि। जनिक मैथिली कोष ग्रन्थ, "मैथिली शब्द कल्पद्रुम" छपल मैथिली भाषी मिथिलावासीक सेवा लेल समर्पित भ रहल अछि। एकर केहन उपादेयता छैक से त मैथिली भाषीक ग्राहकता पर निर्भर करैत अछि समय आ समाज पर निर्भर करैत अछि। ग्रन्थकार अपन कर्तव्य टा कयलन्हि अछि।

अहि सँ पूर्वो प० भवनाथ मिश्रक "मिथिला शब्द प्रकाश" सँ अतिरिक्त महावैयाकरण प० दीनबन्धु झा द्वारा "मैथिली शब्द कोश" डा० श्री जयकान्त मिश्र द्वारा अपूर्ण "बृहत् मैथिली शब्द कोश" तथा प० श्री गोविन्द झा द्वारा "मैथिली अंगरेजी शब्द कोश" रचित भेल अछि जे प्रमाणित करैत अछि जे मैथिली के कोष बड़ो कम नहि अछि। तैयो पतञ्जलिक शब्द मे कहल जे "महान् शब्दस्य प्रयोग विषयः" एहि पर एखन बहुत कार्य कर्तव्य बाकी छैक। एहि सब कोश सँ मैथिलीक कोश पूर्ण नहि भेल अछि पूरक अवश्य बनल अछि कोशक। एहिना यदि पहिलुका कोशक त्रुटि के देखि के एक पर सँ दोसर पोथी बनैत रहल त एक दिन पूर्ण भके रहत।

प्रस्तुत "मैथिली शब्द कल्पद्रुम" नामक परिवेश मे चिर परिचित प० मतिनाथ मिश्र द्वारा ग्रामीक परिवेश मे लिखल गेल अछि तेँ आन कोश सँ एहि मे ठेठ मैथिली कि हेरायल नुकायल मैथिली शब्द अधिक संगृहीत भेल अछि। संगहि क्रियापद संज्ञा विशेषण संस्कृत उर्दू आ अन्य शब्दक परिचय, कतिपय शब्दक प्रयोग द्वारा ओकर अर्थक स्पष्टीकरण आदि अधिक उपयोगी बना देलक अछि एकरा। हँ एकटा बात ई थोड़ेक अधिक बूझि पड़ैत अछि जे सामान्य मे विशेष वा अपवादक उल्लेख आवश्यके छैक मुदा मैथिली शब्द कोश मे प्रत्येक शब्दक आगाँ मै० परिचय आवश्यक नहि बूझि पड़ैत अछि। दोसर मैथिली उपलक्षण (मुहावरा) के शब्दक रूप मे राखब सेहो किछु अखरैत छैक। एकरा यदि एक अलग सँ मुहावराक सूची राखल जाइत त नीक छलैक। ई सब त बहुत छोट बात अछि मुदा सभ मिला के मैथिली शब्द कोशक एकटा शून्य स्थान के भरि सकल अछि ताहि मे कोनो दोष (संशय) नहि। कारण पूर्वांच लोकन कएला सँ स्पष्ट होइत अछि जे पहिने राजा महाराजाक समय मे संस्कृतक प्रताप सँ शाही सुलतानीक अमलमे अरबी फारसीक मारिसँ आ एखन हिन्दी अंगरेजीक दानवी प्रहार सँ डरा के कत्तेक मैथिलीक मौलिक शब्द हिमालय गंगाक बीच, कागी कोशी तथा गण्डकीक मध्य क्षेत्र मे सुदूर मुंगेर, भागलपुर, देवघर आदि ग्रियर्सन द्वारा सीमांकित मैथिली भाषी क्षेत्रक गामें घर कोन कोंचर मे हेरायल भोतियायल नुकायल अछि तकर ठेकान नहि। तेँ हमर मनतव अछि जे उपर्युक्त क्षेत्रक गामें गामें जाके यावत् जन सम्पर्क नहि कयल जायत ताहि ताहि ठाम सँ शब्दक संग्रह नहि कयल जायत

तावत् केओ मैथिली शब्द कोश के पूरा करवाक दावी नहि कए सकैत छथि। ई हमर मानता अछि। वास्तविक आवश्यकता एहि बातक छैक जे संस्कृत अंगरेजी जेकाँ मैथिलीयो शब्दकोश वैज्ञानिक दृष्टि कोण से बनाओल जाय। ओकर मिथक के बूझल जाय।

अंगरेजी वा विश्वक अन्य भाषा मे निहित विचार कें अपन परिप्रेक्ष्य मे उपस्थित केनाई कोनो अधलाह नहि थिकैक मुदा अंगरेजीक वा आन भाषाक अनुवादित नाँ भेल किछु समालोचना पढ़िके तकर अनुकरण कऽके मैथिलीयो मे अपना के ओकर सम्राट बूझिलेब बहुत भयावह प्रवृत्ति थिकैक कारण देखल गेल अछि जे अनावश्यक, अनभिलषित, अनन्वित रूप से मौलिक मैथिली शब्द के छोड़ि विदेशी शब्दक व्यवहार करब एकटा साज (फैसन) चलि पड़ल अछि। अन्धाधुन्ध विदेशी शब्दक प्रयोग के प्रगति शीलता बूझल जाय लागल अछि। मुदा हमरा ई कहै मे कनेको रोष (हियकिचाहटि-भय-आपत्ति) नहि भए रहल अछि जे एहि प्रकारक प्रगति शीलताक झाँप (पर्दा) हुनक मैथिलीक अनभिज्ञताक आकार के तुका नहि सकैत छन्हि प्रत्युत उपहासास्पद रूपसे उघाड़ि दैत छन्हि। आदरणीय कोश कार एहि बातक पूरा ध्यान रखलन्हि अछि जे मैथिलीक अपन मौलिक शब्द सुरमुन (स्तीरसी) क के ढूँढ़वाक चाही से यदि नहि भेटए त हमरा लग संसारक सब से पैघ शब्दक रत्नाकर संस्कृत अछि जाहि से बढ़िके अभिव्यञ्जकता भरिसके आन कोनो भाषा मे पाओल जाइछ। नहित विदेशी अनिवार्य शब्दोके पर्व्वी-हृत के फजहति स्टेशन के टीसन टाइम के टेम येनियन के बनियानि लैनटर्न के लालटेम कहितहि छियैक मैथिलीकरण कएकऽ मैथिली के अन्य भाषाके पचाके स्वसात् करबाक अद्भुत सामर्थ छैक मुदा तकरा अप्राकृतिक रूप से व्यवहार कऽके प्रगतिशील कहेवाक प्रयास छुच्छे हास्यास्पद होइत अछि। कोनो भाषा जतेक अपना रूप मे रहैत अछि ततेक सुन्दर लगैत अछि। मुदा संस्कृत त समस्त उत्तर भारतीय भाषाक उपजीव्य थीक तें ओकरा से शब्द ग्रहण करबा मे एकोरत्ती अस्वाभाविकता नहि बूझि पड़ैत छैक। हम त कहब शब्द यदि नहियो लेल जाय तैयो संस्कृतक भाव, संस्कार मे दूध पानि जेका एकाकार भए गेल छैक जे ओकरा अलग नहि कयल जा सकैत छैक।

एहि महाकोशक पाण्डुलिपि जखन एकटा साहित्य अकादमीक निर्णायक मण्डलक एक व्यक्ति के देखा के एकरा छपेबाक हेतु प्रयास कए देवाक हेतु कहने रहथिन त ओ कहने रहथिन जे एहि कोश मे साहित्यिक शब्द नहि अछि। शब्दक विषय मे हुनक ओछ धारणा पर हमरा हँसी अबैत अछि जे साहित्यिक शब्द कहल जाइत छैक ककरा। शब्द से साहित्य बनैत छैक ? कि साहित्य से शब्द ? वा कोन शब्द एहन छैक जाहि से साहित्य नहि बनाओल जा सकैत छैक ? यदि हुनक तात्पर्य एखन तक बनल विख्यात साहित्यक शब्दे टा से छन्हि त एहि प्रकारे संसारक सभ भाषा कें दू चारि टा भाषा छोड़िकेँ बाकी क अस्तित्व समाप्त भ जायत। तें कोनो भाषाक कोनो शब्द असाहित्यिक होइतहि नहि छैक जैं कि संसारक भिन्न भिन्न देश क्षेत्र मे भिन्न भिन्न भाषा बाजल जाइत अछि आ ओहि भाषा से लोक साहित्य उत्पन्न होइत अछि। ई प्रकृतिक देन थिकैक एकरा बुझिये कें प० श्री मतिनाथ मिश्र एहन कोश बनौलन्हि अछि। हिनकौ भाषा कें उच्च अगड़ी पिछड़ी दलित आदि कें रूप मे विभाजित करवाक इच्छा नहि छलन्हि।

एक बात आओर कहब जे मैथिली साहित्य तथा भाषा तकर शैली कें व्यक्तिगत रूप मे स्थापित कय अपन नामक झण्डा गाड़बाक खेल गुटबाजी कएकें एक दोसरा गुट पर आक्षेप प्रत्याक्षेप करवाक प्रवृत्ति मैथिली कें नीक जेकाँ पाछाँ धकेलवाक प्रयास मैथिली भाषी मे देखल जाइत अछि। एतेक विशाल क्षेत्र मे चारि कोटि से ऊपर लोक द्वारा बाजल जाइ वाली एहि भाषा मे थोड़ेक थोड़ेक अन्तर

अपने करतैक किएक त भाषाक बानी अर्थात् बजबाक शैली—"चारि कोश पर बदले बानी" कहल गेल अछि तखन "अछि", "अहि" "ए" "दए देलथिन" "दय देलथीन" "दए देलकीन" "दय देल-कीन" "दऽ देलथिन" "दऽ देलकीन" "भए गेलैं" भय गेलैं भऽ गेलैं" "कहलनिह कहलनि कहला" "आऊ आबू" "औ बहू" "से सहू" "थिकाह थिकीह छिकाह छिकीह थिका थिकी छिका छिकी" "हम हमे मे" "हमर मोर" "पहिले पहिने" कहने रहथि कहले रहथि" "देलिये रहे, देने रहियै, दएने रहियै" "हे औ ! हे यौ ! हे हो !" "जाइत छथि, जाइ छथि" "मनमोन वनबोन" उच्चारणक बहुत विविधता छैक मुदा उच्चारण जेना होए लिखै मे गाय माय भाय सेहू लिखल जयबाक चाही। एहि उपर्युक्त उदाहरण के रहितहुँ एक एहन मर्यादा सूत्र छैक जे सभटा के मैथिली मे बनहने छैक ओ मर्यादा छैक जे उपर्युक्त प्रयोग मैथिली भाषी क्षेत्र मे बजल जाइत अछि। दोसर एहि क्षेत्र से बाहर ऐ से भिन्न प्रयोग होइत अछि। भोजपुरी त भिन्न अछिए जे मगही जे अधिक तर ठाम छकार हकारक उच्चारण टा से भिन्न देखल जाइत अछि ओतहुँ वा परोसी भाषा बंगला असमिया मे ऐ प्रकारक प्रयोग नहि देखल जाइत अछि तँ मैथिली भाषी क्षेत्र मे मैथिली भाषी द्वारा बाजल गेल एकर सभ बानी मैथिली थीक।

संस्कृत व्याकरणक जनिका थोड़बो गम (ज्ञान अनुभव) होयतन्हि से पाणिनि सन वैयाकरण एक एक शब्दक सय सय वैकल्पिक रूप साधनिका से सिद्ध कएके देखा देने छथि। पतञ्जलियो कहने छथि—"एकस्यापि शब्दस्यबहवोऽपभ्रंशा भवन्ति" तँ हम कहब जे पूज्य प० मतिनाथ मिश्र द्वारा लिखित ई कोश मैथिलीक बहुत पैघ कमता के पूरा कए रहल अछि। एहि वैकल्पिक रूप के देखाके।

भाषा पर भौगोलिक प्रभाव कतेक छैक से पशु पक्षी तक मे देखल जा सकैत अछि हाथी धत्त कहला से बैसि जाइत अछि पीछू कहला से पाछा आ अगत कहला से आगाँ दिस बढ़ैत अछि। बरद अ कहला स चलैत अछि हुऽ कहला से ठाढ़ भऽ जाइत अछि। सांढ़ भैंसा बहू आदि अपन हाक के सुनि के दौड़ल अबैत अछि। अरेऽ कहला से बकरी लग अबैत अछि लिहू कहला से भागि जाइत अछि। एहिना सुगर भेंड़ी अपना हेतुक शब्दक प्रयोग बुझैत छैक। ओहि शब्द से यदि अन्य भाषा भाषी क्षेत्र मे कहल जाइक त नहि बुझैत छैक ओतए ओकरा हेतु दोसरे शब्द होइत छैक। भाषाक विशेषता भूगोल पर निर्भर करैत अछि तँ संसार मे अनेक भिन्न भिन्न भाषा होइत अछि। तहिना मिथिलाक एकटा भूगोल छैक जकर सीमांकन शतपथ ब्राह्मण मे आरण्यकमे थोड़ बहुत भेल अछि मुदा बृहद्विष्णु पुराण मे स्पष्ट अछि—"कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकी मधिगम्य वै, योजनानिचतुर्विंशत् व्यायामः परि कीर्तितः। गंगा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्चदशान्तरे, विस्तारषोडशः प्रोक्तो मिथिला देशस्यवै"। अर्थात् कोशी सँ गण्डकी तक पूबे पच्छिमे चौबीस योजनक क्षेत्र जाहि मे पन्द्रह टा नदी बहैत अछि तथा गंगा आ हिमालयक उत्तरे दक्षिणे विस्तरका क्षेत्र मिथिला देश थीक। एहिठाम कोशी से मार्कण्डेय पुराणोक्त "कौशिकीति समस्तेषु ततो लोके पुगीयते" क अनुसार कारी कोशी बुझबाक चाही जे महानन्दा सँ पूब बहैत छथि। एहि क्षेत्रक प्रकृति मे कूट कूट कएके मिठास भरल अछि। एहि ठामक भाषा पशु पक्षीक बोली, आम, जामु, केरा, कटहर, लताम, इलची आदि फल तथा अन्न पानि मे जे मिठास अछि से दिल्यमे तकने नहि भेटैत छैक। एहन छैक एहि भूगोलक प्रभाव। जाति धर्म निर्विशेष ऐ ठामक निवासी मैथिल छी। अत्याचारी होएबाक कारणे राज्यासन से उतारल जए बाक चर्चा जे हेतु चाणक्य अर्थशास्त्र मे कएने छथि कराल जनक के रूप मे एकमात्र ऐतिहासिक राजा क उल्लेख भेटैत अछि जे अनुमानतः तेसर वा चारिम ईस्वी शताब्दीक पूर्व भेल होयताह। ओना उपनिषद रामायण महाभारत पुराण

सब ठाम मिथिला राज्यक शासक के रूप मे जनक वा विदेह वंशक राजाक उल्लेख अछि। तत: पर मिथिलाक इतिहास, अन्धकार युग मे प्रवेश करैत अछि। श्रीमद् भागवत पुराण मे पाँचटा श्लोक मिथिलाक बलि राजाक सम्बन्धमे आयल अछि आ इहो श्लोक अछि—

> अंग बंग कलिंगाद्या: स्सुम्न पुण्ड्राग्ध्र संज्ञका:
> जज्ञिरे दीर्घ तमसो बले: क्षत्रे महीक्षित:

अर्थात् मिथिलाक बलि राजाकें दीर्घ तमस नामक ऋषि से अंग बंग कलिंग स्सुम्न पुण्ड्र तथा अन्ध्र नामक छ: टा क्षेत्रज पुत्र उत्पन्न लेलकन्हि जे सभ अपना नामक अंग बंग कलिंग सुम्न पौण्ड्र आ आन्ध्र राज्य कायम कएलन्हि। जाहि मे बंग एतेक प्रतापी भेलाह जे सुदूर हिन्दचीन देश तक अपन साम्राज्य स्थापित कएलन्हि। बंगालक शासक होएबाक कारणे बंगाली शासक कें ओतए बौड लौग कहल जाय लगलैक। चीनी यात्री हेन सांगक यात्रा वृत्तान्त मे राजा बलिक नाग पूजक रूपमे तथा राजधानीक कमला बलानक तट पर होयबाक उल्लेख अछि। एहने महत्त्व पूर्ण बलिगढ़क खोदाई सरकार द्वारा लम्बित अछि। ६४७–४८ मे हर्षवर्द्धनक मृत्यूपरान्त हुनक तिरहुतिया मंत्री जखन राज्य पर अधिकार कए लेलक जकर नाम अरुणाश्व छलैक प्राय: ओकरे वंशजक जखन मिथिलाक राजधानी मुंगेरक अधिक समीप बेगूसराय मे छल बोधगया मे बहुमूल्य चढ़ौआ चढ़ेबाक लेल एक बौद्ध मण्डली जा रहल छल हुनक सेनापति किरातार्जुन द्वारा लूटि लेल गेल। जाहि से कुपित भएके चीनी भूटान तथा नेपालक सहयोग से मिथिला पर आक्रमण कए एकरा अपन अधीन बनाय लेलक। लगभग एक डेढ़ सय वर्ष तक चीनक अधीन रहलाक बाद एतए चीनक लूट खसोट तस्करी से अकच्छ भएके मिथिलाक कोन कोन क लोक के जगाय छोट छोट राजा सभके संगठित कए अलौकिक वीरता से राजा सलहेस चीनी भूटानी शासन कें मिथिला से उखाड़ि फेंकलन्हि आ मिथिला के अराजकता से बचा लेलन्हि तें हुनक मिथिलाक गाम गाम मे आइ तक पूजा भए रहल अछि। ओम्हर कराल जनक क उपरान्त मिथिला अठ्ठकुल वैशालीक अधीन भए गेल। फेर वैशाली जखन गुप्त साम्राज्य के अधीन भए गेल त मिथिला गुप्त साम्राज्य मे मिला लेल गेल जखन मिथिला तीरभुक्ति वा तिरहुत से प्रसिद्ध भेल। मध्य काल मे मिथिला बंगाल के पाल वंशीय शासक सम्भवत: सातमी आठमीक ईस्वी के शासन मे रहल पुन: ओतुक्के सेन वंश क शासन मे आयल। मिथिला के अराजकता से दूर कए गहड़वाल राज्यक सेनापति कर्नाट वंशीय नान्य देव कें एतयक लोक अपन मिथिलाक राजा बनौलक जकर अन्त अपने कुल पुरोहित कामेश्वर ठाकुर द्वारा विद्रोह कएला से कर्नाट वंशीय अन्तिम राजा हरि सिंह देवक समय मे भेल। ई अछि मिथिलाक अति संक्षिप्त इतिहास आ राजनीति। तखन होइत अछि बंगालक सूबेदार तोघनक आक्रमण आ गयासुद्दीन तुगलक द्वारा मिथिला के अपना अधिकार मे लए ओइनवार ब्राह्मण कामेश्वर ठाकुर के राज्य देनाई। ओइनवार वंशक राजा कीर्ति सिंह आ शिव सिंह पुन: एकरा स्वतन्त्र बनेबाक प्रयत्न कएलन्हि किछु दिन बनेबो कएलन्हि मुदा सुलतानक बल के आगाँ टिक नहि सकलाह। तहिया से मिथिला करद राज्य बनि गेल। मुदा एकर संस्कृति पर एतेक प्रहार कहियो नहि भेल जतेक आइ गम्भीर रूप से भए रहल अछि। तकरे रक्षा हेतु पूज्य प० श्री मतिनाथ मिश्र एहि प्रकारक मैथिली शब्द कोश बनेबाक भगीरथ प्रयत्न कएलन्हि आ हुनक योग्य चारू सुपुत्र अपन पिताक सुकीर्त्ति तथा मैथिली भाषाक प्रति अपन मातृ ऋण चुकेबाक लेल पूर्ण उत्साह देखौलन्हि। ओहू चारू पुत्र श्री रमानाथ मिश्र श्री सतीनाथ मिश्र श्री डा० मोहनाथ मिश्र तथा श्री सोमनाथ मिश्र मे डा० श्री मोहनाथ मिश्रक परिवारक श्रम समय तथा अर्थक जे एतन्निमित्तक त्याग भेलन्हि अछि से अतुलनीय अछि।

आजुक नगरीय जीवन पानि बसात प्रकाश सभ प्राकृतिक वस्तुक कारन पराधीन भए गेल अछि एकर लाथ वैकल्पिक व्यवस्था कएल जाय मुदा तैयो नियमित होएबाक भरोसे नहि तेहना परिस्थिति मे एतेक टा ग्रन्थक प्रूफ संशोधन तथा निर्देशन सुकमालकी नहि छैक। जखन कि घरक काज आफिसक काज बच्चा सभकें पढ़ौनाइ लिखौनाइ सामाजिक सम्पर्क सभ टा अनिवार्य छैक। श्री सोमनाथ मिश्र त किछु आर्थिको साहित्य कएलथिन अछि। जेना तेना एहि कोशक छपाई एक अश्वमेध के बरोबरि थीक। एकर प्रकाशन मिश्र बन्धु प्रकाशन, जमुथरि, पो०—हटाढ़-रुपौली भाया-झंझारपुर जिला-मधुबनी-847404 के द्वारा कयल गेल अछि। एहि प्रकाशनक ई पाँचम पुस्तक थीक। "मैथिली शब्द कल्पद्रुम"। सब-सँ पहिने प० यन्त्रनाथ मिश्रक "उल्का भ्रमण" नामक मैथिली कथा संग्रह श्रावणी पूर्णिमा १९९५ के कें प्रकाशित भेल तखन संस्कृत मे छोट छोट दू टा स्तोत्र तखन कोश कारैक मेघदूतक समच्छन्द मे मैथिली अनुवाद तत पर ई प्रस्तुत अछि। पहिल पोथी आयुष्मान् डा० श्री मोहनाथ मिश्रक सफल सम्पादन मे प्रकाशित भेल छल। हम चाहैत छलहुँ जे इहो हिनकें सम्पादकत्त्व मे छपै मुदा आग्रह भेलन्हि जे एकर सम्पादक अहीं बनी तँ हमरा अपन नाम देमए पड़ल नहि त सभ काजक सम्पादन मोहनाथ मिश्रे कएलन्हि अछि। सभ टा प्रूफ इएह देखलन्हि। हम निमित्त मात्र छी तथापि अपन भातिजक भाषा संस्कारक जागृति देखि के हम गौरवान्वित भए रहल छी कारण वेद मे एकटा मन्त्र अएलैक अछि जे

उतत्व श्रृण्वन्न श्रृणोत्येनाम्, उतत्वः पश्यन्न ददर्श वाचम् ।
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ।

अर्थात् वाणी के सुनियों कें बहुत नहि सुनै छै अर्थात् बुझि नहि पबैत छैक देखियो कें कतेक देखि नहि सकैत छैक अर्थात् ओकर रहस्य नहि देखि सकैत छैक आओर ओहीठाम ओ वाणी जकरा पर प्रसन्न होइत छथि तकरा आगू मे पति लग पत्नी जेकाँ सभ रहस्य कें उघारि दैत अछि। एहि प्रकारक भाषाक जागरण दैवी सम्पत्ति मानल भेलैक अछि। से देखै मे हमरा आयल अछि। लेखक आ सम्पादक कहाँ तक अपन प्रयास मे सफल भेलाह अछि तकर प्रमाण त एकर ग्राहकें दए सकैत छथि मुदा हम कहब जे मिथिलाक निवासी रहथु कि प्रवासी जनिका अपन मातृभाषा पर स्वाभिमान होएतन्हि आ रहबाक चाही ओ संसारक कोनो देशक कोनो समुदाय कें अपन भाषाक परिचय नहि छोड़ैत देखिकें मैथिली सन मधुर पुरान नवीन अपन भाषाक प्रति अवश्य स्वाभिमान जगौताह। बुझा पड़तन्हि जे भाषा प्रकृतिक देन थिकैक कोनो बनौआ (कृत्रिम) वस्तु नहि थिकैक। भाषा लोकक अपन परिचय थिकैक। तखन एहि परिचय कें स्पष्ट कें निहार लेखक कलाकार शिल्पी आदि कें यदि हम अपनहि प्रोत्साहित नहि करबैक त अनका कोन बगता छैक। आब मिथिला वासियो विपन्न नहि जानि पड़ैत छथि तखन निर्वाह सामग्री से उपरी विलास सामग्री मे सँ थोड़ेक थोड़ेक बचा क बंगाली, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगु आदि भाषा भाषी जेकाँ हम जँ मैथिली पुस्तक कीनिकें मैथिली कें उजास करी त त निश्चित रूप से हम अपने जड़ि कें बलगर बनायब।

विज्ञ मैथिली भाषी लोकनि सँ एहि से अधिक प्रार्थना करबाक त हमरा क्षमता नहि अछि मुदा इहो हमरे सभ कें सोचय पड़त जे जँ कें ओ लेखक कलाकार एतेक समय दए कें श्रम दए कें संग संग हजारो लाखो रुपैया बुकनी कऽकें पोथी छपा सकैत छथि त कि हमरा सभ कें ई मिथिलाक धरती एतबो पूँजी नहि देने छथि जे दश बीस आ सय टका दएकें एकटा मैथिली पोथी कीनि सकीह ?। थोड़ेक कालक लेल यदि हमरा मन मे इएह क्षुद्र भावना आबे जे सभ अपन लाभ लेल लिखैत त अछि एक दिन एकटा जन राखि कें हमरा देखबाक चाही जें ओ कएक पन्ना लिखैत अछि आ ओकर कतेक बौनि

होइत छैक आ तकरा छपा कें सेहो देखि लेबाक चाही जे कतेक लागत लगैत छैक। एकर सोच मैथिली भाषीक बुद्धि मे आबि जायत तहिया बंगला, तमिल, तेलगू आदि भाषा जेकाँ मैथिलीयो भाषा विश्व मे अपन स्थान अवश्य बना लेत। अन्त मे हम ओहि सभ व्यक्तित्वक चिर आभारी रहब जे भिन्न रूप मे सहानुभूति पूर्वक एहि कार्य मे सहयोग प्रदान कयलन्हि अछि। एहि प्रकरण मे दू तीन उल्लेख आवश्यक। प्रथम विद्वान प्राध्यापक, धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय, आयुष्मान् डा० सती रमण झा जे अपन क्षमता भरि एहि कार्य मे रचनात्मक सहयोग कयलनि। आ अन्त मे मुद्रक बन्धु श्री सुनील आ श्री आनन्द जी। हिनका लोकनिक कार्य प्रतिबद्धता आ शब्द कोश प्रकाशन प्रति हार्दिक आकर्षणक फल थिक जे ई अतेक कम समय मे अपनेक हाथ मे उपलब्ध अछि।

! जय मैथिली !

चन्द्र नाथ मिश्र
०२/०८/१९९७ ई०

लिखनिहारक कहब छनि

अलतुक समय मे ठाम ठाम पर सदिखन मैथिली भाषाक जागरण आ विकासक लेल रंग रंगक बैसार होइत रहै अछि। एहि मे हमरो बहुतो ठाम जाइक जोग लागल। परन्तु ऐ बैसार सभक की लक्ष्य से प्रायः अपन अज्ञानता सँ नहि जानि सकलौं। हास विनोद आ चाह पान सँ भिन्न कोनो किछु करैक विचार नहि बुझि पड़ल।

मिथिला दिगारक वासी आ मैथिली भाषी सब वर्गक आ मुसलमानो लोकके कतौ नै देखल। तथाकथित उच्च वर्गक लोकेटा के मैथिली भाषा मातृभाषाक अधिकार तँ नै छनि। जँ उच्च वर्ग सँ अलग वर्गोक मातृभाषा थीक तँ दुखक बात जे आन वर्ग कें ने मैथिल होइक ने मैथिली भाषीक स्वाभिमान छै ने ज्ञान छै। बड़ पुछला पर केवल कहि देत "तिरहुतिया बोली" तँ एकरा सबकें एहन बैसार सब मे संग करब तकर खगता छै। एकर सम्पूर्ण अभाव रहै अछि। मैथिलीक उत्थानक अभियान मे ई बुझु तँ रीढ़ थीक।

दोसर देखल जे विद्वानो लोकनि अर्थात् विशेषज्ञो सब अपन कविता, लेख आ भाषण मे संस्कृत उर्दू आ अंगरेजी भाषाक शब्द प्रायः चालीस प्रतिशत मिला लैत छथि। की ओहि सब शब्दक मैथिली शब्द नै छै? जेना 'हस्ताक्षर' अथवा 'दस्तखत' एकर मैथिली शब्द "अक्षरताली" थिक मुदा तकर प्रयोग नै करै छथि।

एहि सब लोकक कहब छनि जे आन आन भाषा के शब्द आदि देने मैथिली भाषाके भण्डार भरैत अछि मुदा हमर मैथिलीक शब्द सँ आन भाषा कहाँ अपन भण्डार भरैत अछि तखन की मैथिली मात्र लेहस्टल अछि। जे आनक गहना पहिरि धनिकानि बनत। ई सब बात अपन अज्ञान कें झंपैक लाथे टा थिकैक। "निगरानी" "सेवा" "गलती" "याद राखब" 'अगर' 'मगर' आदि शब्द सब बजता मुदा ओकर स्थान मे "ओगरवाहि" "निकमानि" "चट्टी" "मोन राखब" ई सब शब्द एवम् "जँ" "मुदा" नै बजता, ई नै बजैक दुइटा अर्थ भऽ सकै अछि—की ऐ शब्द सभक ज्ञाने नै रहै छनि आकि मैथिलीक साहित्यकारे ओकरा हीन बुझि उपेक्षा करै छथि। बहुत एहन शब्द अछि जकर ज्ञान मैथिली विशेषज्ञों कें नै रहै छनि ने ओकरा तकैक चेष्टा रहै छनि।

एहि सब कारणें पड़ाइत की बिलाइत मैथिली शब्द कें जोगा क रखैक हेतु हम आतुर रहऽ लगलौं। हमरा आन कोनो भाषाक प्रति घृणा वा उपेक्षा नहि अछि मुदा जखन मनक भाव बुझवै लें अपन मैथिली शब्दे बलगर अछि तखन आन शब्द किये लेब।

मैथिली मे संस्कृत अथवा तकर तद्भव क प्रयोग पुर्वाचिरै सँ होइत आयल अछि तकर कारण जे प्राचीन काल मे मिथिला मे जखन साधारण लोकक भाषा अभद्र "टुट्टं" "कुट्टं" "जार्य" एहि प्रकारक छल तखन सभ्य सुशिक्षित वर्गक बीच संस्कृतेक टा शिक्षा होइत छलैक। नान्य वंशीय मिथिलाक राजाक समय मे संस्कृतक किछु शब्द के तद्भव एवम् तत्सम लऽ कऽ ओ अभट्ठा शब्द कें परिष्कृत कऽ कऽ सुन्दर कोमल मैथिली भाषा जनप्रिय भऽ गेल। विद्यापति गोसाउनियो क गीत मे (तुअ) 'पाँडरि' आदि अभट्ठा शब्दक प्रयोग कयने छथि। वैह परिष्कृत भाषा मैथिली सर्वमान्य भऽ गेल तँ संस्कृत शब्द ओकर जननी कहल जाइत अछि।

मुदा आगर पर अर्थात् नान्यवंशीय राज्यक अन्तिम काल मे राज्य हस्तान्तरित भऽ गेल तखन देश पर तुर्क सभक आधिपत्य भऽ गेने मिथिलो वंचित नै रहल। यत्र तत्र एतहु मुसलमानक प्राबल्य

होमऽ लागल जतय दीन हीन जन बोनिहार सब काज करैत रहै छल ओकरें द्वारा अधिकतर निम्न वर्ग मे उर्दूक प्रचार आ प्रसार होइत गेल जाहि सँ मैथिली मे घोंसियाइत गेल। तँ 'जनक' संग स्थान मे 'मजदूर' आ 'बोनि' केँ बना देलक 'मजदूरी' परिश्रम भऽ गेल 'मेहनति' (मिहनत)।

उर्दू मैथिली केँ तीन रूपें दबौलक। १–मैथिली शब्द केँ गीडे उड़ा कऽ, जेना–'खर्च'। एकर मैथिली शब्द "उठानि" थीक। उदाहरण–'हमरा ओतय 'शक्कर' क बड़ उठानि अछि। परन्तु बाघो आब उठानि नहि बजैत अछि आ खर्च कहबे मैथिली बुझि पड़ैत अछि। एहिना अनेक शब्द अछि मुदा विस्तारक डरें नहि उल्लेख कऽ सकै छी।

२–मैथिलीक संग सौतिन जकाँ लागल उर्दू शब्द–माउगि मेहरि सिरहर सलामी आदि आदि रहै अछि। सिरहर थिकै मंगलघट सलामी भेल देवताक प्रणामक द्रव्य। परन्तु 'सिरहर गोकलगाइ' नै कहल जाइछ एहिना 'माउगि' तँ जातिक रूप मे स्त्री थीक किन्तु 'मेहरि' शब्द ओकरा विवाहित बुझबै अछि कारण जे मुसलमानक निकाह (विवाह) काल मे स्त्रीक मोल आँकल जा कऽ ओतबाक मुद्रा देलें पर विवाह होइत छैक। ओहि मोल केँ मेहर कहल जाइत छैक ताहि सँ कीनल मेहरि होइत अछि। एकरा 'जनीजाति' नहि कहि माउगि मेहरि कहल जाइत अछि।

एहन एहन कैकटा शब्द अछि जेकर सभ्य सुशिक्षित उच्च कोटिक व्यक्तियोक घर मे प्रचुर व्यवहार होइत अछि। तकरो संभवतः मुगल सम्राट अकबरक कृपा सँ आयल खण्डवला कुल मे मिथिला राज्यक प्रभाव थीक।

३–उर्दू शब्द केँ तोड़ि मरोड़ि कै मैथिलीक उच्चारण योग्य बनाओल मैथिली शब्द मेहनति। मिहनत सँ बनिगेल, मुहल्लत् सँ मोहलति, मुजावरा सँ मोजवरा आदि आदि।

ऐ प्रकारें मैथिली शब्द केँ पछाड़इत, बिगड़ैत आ बिलाइत रहैत सोचि केँ हम कोना बुझब जे हमर मैथिलीक भँडार भरि रहल अछि। एहि रूपें बुझनिहार व्यक्ति केँ मैथिलीक शब्दक ज्ञाने नै छनि आ कि मातृभाषा मैथिलीक उपर निष्ठे नै छनि ई बुझएटा कहि सकै छी। मैथिलीक नाम पर मनोरंजन आ फूसि साहित्यकार बनने किछु नै फल।

हिन्दी आ अंगरेजी एहि देशक बड़ नव भाषा अछि तथापि जँ एक राष्ट्रभाषा आ दोसर विश्व भाषा रहने परमादरणीय अछि। मुदा कहाँ हमर शब्द लऽ कऽ अपना मे पचा सकैत अछि। तखन मैथिलीये किऐक दोसराक शब्द लेत जखन ई अपनें भरल पुरल अछि। सारांश ई जे मैथिली भाषाक दिश एहि तरहें उदासीनता आ आनो भाषाक प्रति आकर्षण बढ़ल जाइत अछि। एहना स्थिति मे कोना कऽ मैथिली भाषा सुरक्षित रहि सकत। एकरा बिलाएब स्वयं सिद्ध अछि।

जा धरि मिथिला भाषी लोकनि के अपन भाषा मैथिलीक प्रति आग्रह आ आसक्ति (तन मन धन सँ लगाओ) नहि रहत ता धरि एही स्थिति मे होइत होइत दिनेक ई हमर मातृभाषा मैथिली अलोपित भऽ जाएत।

आग्रहक अभिप्राय ई अछि जे भाषा केँ अपन रूप मे जीवित रखैक आ ओकर पोषण हेतु प्रत्येक व्यक्ति केँ आतुरता सँ मनोयोग रहब। जखन असमी भाषाक आन्दोलन भेल तखन ओतय अनपढो गमार खाबोनिहार सब अपन भाषाक पोथी आ पत्रिका सब ओकर समृद्धिक ध्येय सँ कीनैत छल। मुदा मैथिलीभाषी पढ़लो लिखलो लोक एहि चेष्टा मे रहै छथि जे मडनी मे पोथी की पत्र पत्रिका भेटि जाय। एकरे फल सँ एकोटा मैथिली पत्र पत्रिका चिरजीवी नहि रहि सकैत अछि। तखन कोना बुझब जे मैथिली भाषी केँ मैथिलीक प्रति आग्रह छनि।

आसक्तिक अर्थ थीक जे अपने भाषा मे लिखब, पढ़ब आ बाजैक नियम राखब, परन्तु से तँ देखैत छी जे कतेक लोक लोकवेद लऽ कऽ जँ कतौक यात्रा करता तऽ अपनो मे हिन्दियैं सँ गप करता। अपने भाषा मे बतकहीं केने "देहाती" बुझतैन। एकबेर यात्रा क्रम मे गाड़ीक बाट तकैत किउल स्टेशन पर रही ओतँ हमर एकटा पुरान संगी भेटि गेला। अचानक हुनका देखि हमर मुँह सँ बहरा गेल हुँसीक रूपें "आपनी कोत्तो जाबेन" ओहो ओहिना उत्तर देलनि "आमि बैद्यनाथ धाम जाबो" ओतँ एक बंगाली परिवार छल ओ हमरा लोकनि कें बंगाली जानि लगले पूछि देलक 'आपनार' बाड़ी कोथाय "दीरोभंगा" तखनें ओ बंगाली नहि बूझि चुप भऽ गेल। एकरा कहै छै आसक्ति तकरे हमरा सब मे त्रुटि अछि।

तखन कोना मैथिली भाषा कें बचाओल जाय एहि धुनि धुनि मे विकल छलौं। सोचल जे पिताक लिखल मिथिला शब्द प्रकाशे कें किएक नहि प्रकाश मे आनल जाय। परन्तु ओकर व्यञ्जन वर्णवाला अंश यद्यपि हमर समक अज्ञानता सँ नष्ट भऽ गेल अछि तथापि ओही समयक गणनाक अनुसार साढ़े तीन हजार मात्र शब्द छल। छपल स्वरवर्णवाला खण्ड मे केवल सात सै शब्द अछि। अर्थात् दूनू मिलाकय छतपत पैंतालीस सै शब्द अछि। हमरा मन मे तारतम्य उठल जे एतबैक शब्द सँ कोश कोना भऽ सकैत छैक। शब्द तँ अनन्त अछि। कोनो भाषाक कोश अपूर्ण रहै अछि। परन्तु ओही कोश कें अपन बुद्धि सँ शब्द संकलित कऽ विस्तार कयके हुनक नाम कें चिरस्थायी करैक चाही।

आइ सँ ८५–९० वर्ष पहिने हमर पितृचरण एहि मिथिला शब्द प्रकाश कें लिखने छला। ई हुनक एहि दिश प्रथम प्रयास रहैन। जकर प्रमाण एहि प्रसंग मे "सर ग्रियर्सन" आ "कुमार गंगानन्द सिंह" क पत्र (मूल सुरक्षित) अछि।

एकरे आधार कय हम लेखिनी उठाओल। परन्तु पहिनें बड़ पैघ समस्या ठाढ़ भऽ गेल। किएक तँ ओहि समय मे स्तुत्य कार्य रहै मुदा आधुनिक परिवेश मे किछु नहि। कारण जे एहि मे अक्षरक कोनो क्रम नहि अछि। उदाहरणार्थ किछु आदिक अंश निम्नलिखित अछि।

मिथिला शब्द	हिन्दी	संस्कृत	लिंग	प्रमाण
अङ्ग	शरीर	अङ्गम्	नपुं०	अङ्गम् प्रतिकोऽन्यवोऽपघन इत्यमरः।
अन्न	अनाज	अन्नम्	नपुं०	भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्न मित्यमः।
अण्डा	अण्डा	अण्डम्	नपुं०	पेशीकोशो द्विहीनेऽण्ड मित्यमरः।
अर्घ	अर्घ	अर्घः	पुलिंग	पूजा विधावर्घः इत्यमरः।
अस्सी	अस्सी	अशीतिः	स्त्री०	अशीतिर्यस्य वर्षाणि।
अत्ता	अत्ता	आतृप्यम्	नपुं०	फल विशेष इत्यमरः।
अर्घी	अर्घी	अर्घी	स्त्री०	इति शब्दार्थ चिन्तामणिः।
अस्त	अस्त	अस्तम्	नपुं०	अस्तमदर्शन मित्यमरः।
अन्त	अन्त	अन्तः	नपुं०	अन्तः शेष इत्यमरः।
अरे	अरे	अरे	अव्यय	अरे नीच सम्बोधन मित्यमरः।

ओहि समय मे ई एकटा नव सृष्टि छल तैं कवो एहि उत्पन्न होइवाला समस्या पर ध्यान नहि देलक। आजुक समय मे एकटा तँ ई ओक्सफोर्ड जागल जे उपर्युक्त अंश मे सब सँ पहिल शब्द अछि "अङ्क"। प्रश्न उठै अछि जे एक तँ 'अ' अक्षर अपना रूप मे स्वतः शब्द थीक कियैक तँ स्वर वर्णक प्रथम वर्ण थीक। पहिने सैह अबैक उचित रहैक। आनो कते 'अ' टा तँ शब्द बनैत अछि।

दोसर जे 'अ' क संग जँ दोसर वर्ण आबय तँ पहिने 'क' "अकरवज" शब्द अथवा "अकतालीस" तथा क के संगे विभिन्न भाषा के शब्द रहैक चाही से नहि भऽ कऽ सोझे 'अ' पर सँ 'ङ' आएल अछि। फेर उनट पुनट अछि 'अ' पर सँ जँ तवर्ग आबय तँ 'अन्न' सँ पहिने "अन्त" शब्द अबैक छलै। अक्षरक अनुक्रम नहि रहने पोथीक प्रत्येक पन्ना उनटा कय कोनो शब्द ताकि सकैत छी। अर्थात् शब्दानुक्रम नहि अछि।

दोसर समस्या अछि, मैथिली पर सँ हिन्दी ताहि पर सँ संस्कृत शब्द तकर परिचय (लिंग मात्र) आ ओहि शब्दक विभिन्न कोशक प्रमाण देल अछि। आब सोचैक विषय ई उठल जे कहैं छी 'मिथिला शब्दक प्रकाशक आ संस्कृत शब्दैक प्रमाण तँ प्रकाश भ' जाइत अछि। एहि क्रम मे मैथिली शब्द दऽर पड़ि गेने अप्रधान आ संस्कृते प्रधान भऽ जाइत अछि। ओ तऽ अपनै अगाध अछि।

एहि कारणेँ मूल **मिथिला शब्द प्रकाशक** ढंगे के फेरि कय अपना ढंगेँ लिखैक विचार कयल। मुदा अनेक व्यक्ति एहि मे अरुचि देखौलनि, मुदा हमरा तँ विलाइत मैथिली शब्द केँ प्रकाश मे अनेक अदम्य जुआरि उठल छल। एही गुनि धुनि मे हमर तात पादक प्रेरणा अन्तरात्मा मे भेल जे ई काज वहनीक हैत एहि द्वारेँ ई सम्पूर्ण कृति हम हुनके बूझि हुनकें समर्पित करैत छी।

एहि **मिथिला शब्द प्रकाश** केँ देखला उत्तर साहित्य अकादमीक किछु विद्वान् लोकनिक कहब (लिखित पत्रक अनुसार) छनि, जे साहित्यिक कोश होइक आवश्यकता छैक। हमर छोट बुद्धि मे एकर अर्थ नहि लगै अछि कारण जे शब्दे सँ तँ साहित्यिक सृजन होइत अछि। ओहि हेतु कोनो विशेष शब्द तँ नहि होइत अछि तथापि जँ होइतो अछि तँ हमरा पुछबाक अछि जे ठेठ मैथिली शब्द की मिथिला भाषा नहि थीक। जँ नै थीक तँ ग्राम्य (ठेठ) मैथिली शब्द केँ कोन भाषा कहब। जँ ओहो मैथिली शब्द थीक तँ ओहू शब्द सभक साहित्य मे प्रयोग कयले जाइत अछि। दोसर बात जे मिथिला भाषीक विभिन्न पसारी (व्यावसायी वर्ग के) केँ अपन अपन व्यवसाय मे काज अबैवाला अस्त्र वा वस्तुक नाम मैथिली भाषा नहि थिकैक। मिथिला भाषाक प्रति उपर्युक्त कथन सँ अभेला मात्र झलकैत अछि। तँ सम्पूर्ण रूपेँ आत्म निर्भर भऽ कऽ एहि कार्य मे लेखनी उठाओल।

सैह उर्दू शब्द देल गेल अछि जे मैथिली मे दरि कऽ प्रचुर व्यवहार मे अबैत अछि। जेना 'खर्च' 'हाल' (निकट भूतकाल) आदि आदि, मुदा ओकर मूल रूपक परिचय दऽ देल गेल अछि। एहिना संस्कृत आ आनो भाषाक क्रम अछि।

मैथिली भाषा तीन रूप मे देखल जाइत अछि। १—शिक्षित सुसंस्कृत सभ्य परिवारक संस्कृत निष्ठ जेना "ओ विषय हमरा लोकनि केँ ज्ञात नहि अछि जे हुनक संग ई घटना घटल छन्हि।"

२—एकरे बिच बिचौआ लोकक मध्य जेना—"ओ बात हमरा सबकेँ बूझल नै अछि जे हुनका संगेँ ई बात भऽ गेल छनि।"

३—एकरे अनपढ़ ग्राम्य लोकक बीच एहन प्रयोग होइत अछि। "ओ सब हमरा आइ के नै जानय जे हुनका जरेँ भऽ गेल छैन।"

एहि तीनू प्रकारक मैथिली शब्दक संग्रह एहि मे यथासाध्य अछि। शब्द अनन्त होइत अछि तैहू पर क्षेत्रीय भाषा तऽ दुइए तीन कोस पर स्वर मे आ उच्चारण मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि जेना कतौ 'हम्म' कतौ 'हम' आ कतौ 'हमे' भऽ जाइत अछि। एहिना कतौ 'तोर' कतौ 'तोहर' आ कतौ 'तोहरा' कहल जाइछ। तैं सबटा शब्द दऽ देब कठिन छै जे कयो दाबी (दर्प) कऽ सकैत अछि। एहि सँ हमहूँ छूटल नहि छी। मुदा लोक प्रायः 'वहल्लोल' 'बहतर' शब्द कें छोड़िये देलक अछि। ओकर ओजी मे 'अवारा' एही शब्दक प्रयोग कय लैत अछि। यैह होइछ मैथिली भाषाक शब्दक बिलाऐब। तकरे रक्षाक ई प्रयास थीक।

आदरणीय पिताक मिथिला शब्द प्रकाशक ई विस्तृत रूप थिक हुनके कृतिक हम व्याकरण कय मैथिली शब्द कल्पद्रुम कयल अछि। तैं ई हुनके कृति थीक। हम केवल एकरा पुष्ट कयल अछि। एहि मे हम कोनो श्रेय नहि मानैत छी। जे हुनक प्रेरणा भेल तँहि ई विस्तृत भेल।

अजगुतक विषय तँ ई जे ई पुस्तक तीन खाढ़ी कें लपेटने प्रकाश मे आयल अछि। हमर पूज्य पिता जतवाक लिखलनि ताहि मे हुनक पुण्य प्रताप सँ हमरा मे प्रेरणा आयल जाहि सँ एकर रूप बढ़लैक तकरा प्रकाश मे अनेक श्रेय हमर तेसर आयुष्मान् सुपुत्र डा० श्री मोहनाथ मिश्र लेलनि।

एहि ग्रन्थक सम्पादन कार्य प्रकाशनस्थल सँ दूर रहितौ एहि वृद्धावस्था मे अस्वस्थता सँ घेरैल रहितौ जाहि तरहे हमर अनुज विद्वान पण्डित श्री मन्मनाथ मिश्र सम्पन्न कएल ताहि हेतु हुनका आशीष सिक्त साधुवाद। अद्यावधि ओ मिथिला शब्द प्रकाशक शेष अंशक गवेषणा मे जाहि तरहे प्रतिबद्ध छथि ताहि सँ विश्वास अछि जे भगवती हुनका मैथिलीक प्रतिष्ठामूलक प्रथम कोशक गवेषक रूपे प्रतिष्ठित होयबाक अवसर देथीन।

हम तँ मिथिलावासी सँ एतबेक निवेदन करैत छी जे अपन भाषा आ तकरा आधार कय अपन संस्कृतिक हमर एहि योगदान कें प्रोत्साहित कय विद्यापतिक एहि सूक्त कें चरितार्थ करथि—"देशिल बयना सबजन मिट्ठा"।

मतिनाथ मिश्र



BRITISH MUSEUM,

LONDON: W.C.1.

To

28 May, 1925.

Pandit BHAVANATH MISRA.

Sir,

I shall be greatly obliged if you will be so good as to inform me whether parts 2 and later parts of your work Mithilā-śabda-prakāśa have been published, and, if so, where I can purchase copies of them for this Department. We have received part 1, printed at Benares in 1914, and desire to make our copy complete, if possible.

Believe me to be

Your obedient servant,

L. D. Barnett.

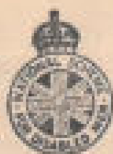
Keeper, Department of
Oriental P.B.& MSS.

Malath Rupauly
23. 6. 25

Sir, your kind note of the 28th May reached me on the 15th instant. I am very glad to know that my little production Mithila Tattva Vimarsha took such a wide circulation with appreciation. This work is divided into eleven parts.

It will not be out of point to put before you the history of its production in relation to my circumstances. The work is the result of my incessant labour of 7 years. After 7 years in 1912, I approached some local gentlemen for subscription for the publication of it but they did not pay heed to my request. Afterwards I borrowed Rs 155 which cost the paper and printing charge of a thousand copy of the first part. I incurred this debt with the hope that I shall be able to pay it up with the price of the 1st part and with the surplus to get the remaining parts printed. But my hopes are now frustrated and am still involved in debt because there is no demand for a single copy. Owing to the above reason the remaining six parts is yet unprinted.

I, therefore, now request the favour of your kindly making arrangements to relieve me from debt & to get the remaining parts printed, which are written in Deva Nagari



BRITISH MUSEUM,

LONDON: W.C.1.

14.vii.25.

Sir,

I beg to acknowledge the receipt of your letter of the 24th ult.,for which I am greatly obliged to you. It is a matter of great regret to me that circumstances have prevented the publication of your useful Mithila-sabda-prakasa,and I have sent a copy of your letter to Sir George Grierson asking him to do whatever he can to assist you.

Believe me to remain

Yours very faithfully,

L.D. Barnett.

Pt.Bhava Nath Mishra.

TELEPHONE,
48, CAMBERLEY.

RATHFARNHAM,
CAMBERLEY,
SURREY.

July 25, 1925.

Copy.

Dear Sir,

Dr. L. Barnett, of the British Museum, has told me of your book named "Mithilā Śabda-Prakāśa" (मिथिला शब्द प्रकाश) I shall be obliged if you will send me a copy of the first part. Dr. Barnett tells me that the price is six annas, so I enclose a postal order for one shilling and six pence, which is worth much more than six annas, and which you can change at any Indian post office. The balance over the six annas is for packing and postage.

I do not know if you have heard my name, but I know Jhanjharpur well, as about fifty years ago I was Subdivisional Officer of Madhubani, and built a bazaar there, which is, I believe, still called "Grierson Ganj".

Yours faithfully,

sd. George A. Grierson.

Pandit Bhava Nātha Miśra,
Hatarhrupauli,
Jhanjharpur,
Darbhanga.



BRITISH MUSEUM,

LONDON: W.C.1.

11.iii.26.

Sir,

In continuation of my letter of the 4th inst., I beg to inform you that I have received from Sir G. Grierson the enclosed copy of a letter which he wrote to you some time ago, and which apparently was lost in the post.

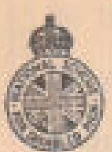
By this mail I am also writing to Professor Suniti Kumar, of the University of Calcutta, asking him to support your work. I would advise you to write to him also, as he is keenly interested in Maithili, and I hope he will move the University of Calcutta to interest itself in your case.

I remain

Yours very faithfully,

L D Barnett

Pandit Bhavanath Misra.



BRITISH MUSEUM,

LONDON: W.C.1.

4.iii.26.

Sir,

I beg to acknowledge the receipt of your letter of the 3rd February. The letter which you mention, dated 20 August 1925, was duly received here, and I communicated with Sir George Grierson on the matter, as I wrote to you. Unfortunately Sir George has been dangerously ill this winter, and is only now beginning to recover ; he has been compelled to take a complete rest from all work, and has therefore been unable to put forward a plea on your behalf to Government or other powers. However, I hope he will soon be well enough to take some step forward, and I am writing to him this to that effect.

Believe me

Yours faithfully,

L. D. Barnett

Pandit Bhavanath Misra.

6

SUNITI KUMAR CHATTERJI
B.A. (CALCUTTA), D.LIT. (LONDON)
KHAIRA PROFESSOR OF INDIAN LINGUISTICS & PHONETICS
AND LECTURER IN ENGLISH AND COMPARATIVE PHILOLOGY
CALCUTTA UNIVERSITY



CALCUTTA
3, SUKIAS ROW

19 June 1927

श्रीयुक्त पंडित भवनाथ शर्म्मा महाशयेषु —

मान्यवर पंडितजी, आपका पत्र (२ जून तारिख का) मुझे मिला है। आपने "मिथिलाभाषाप्रकाश" का पहिला खंड कई मास हुए मुझे भेजा था, पर कार्यवशात् इसकी प्राप्तिस्वीकार करनेमें त्रुटी होगई है, आप कृपाकर इस अपराध को क्षमा कीजियेगा। डक्टर बारनेट साहबने मुझे दो बार लिखा था कि आपकी पुस्तक छपवाने का प्रबंध यदि सम्भव हो तो युनिवर्सिटीसे किया जाय। पर मैं देखता हूँ कि बिना किसी मैथिल श्रीमंत की सहायतासे अर्थाभाववशात् कलकत्ता युनिवर्सिटीसे इसे छपवाना मुशकिल है। मैथिल भाषा की चर्चा और मैथिल साहित्य के मुद्रण विषयमें कलकत्ता युनिवर्सिटीमें जो प्रयत्न किया गया वह केवल श्रीनगर [illegible] बनैली (पुरनिया) के भूम्यधिकारियों के साहाय्यसे। श्रीमान् कुमार गंगानन्द सिंह, एम्-ए, बी-एल, एम्-एल-ए (मैंबर लेजिस्लेटिव एसेम्ब्ली — देहलीकी मुख्य मंत्रणा परिषत् का सदस्य), श्रीनगर बनैली, पुरनिया — मैथिल भाषा का एकनिष्ठ अनुरागी हैं, मैथिल साहित्य की उन्नति के लिये इन्होंने बड़ी ही चेष्टा की है। मेरा परामर्श यह है कि आप उनसे पत्रव्यवहार कीजिये, प्रथम खंड की एक प्रति भेज दीजिये। यदि कुमार साहब राजी होवें, आपकी किताब का [illegible] मुद्रापन उनहीके प्रबंधसे हो जायगा। आशा है कि कुमारसाहब ऐसे मैथिल प्रेमी कि दृष्टि आकृष्ट होनेसे आप सफलकाम हो जायँगे। इति नमस्कार॥ भवदीयवशंवद श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या॥

RATHFARNHAM,
CAMBERLEY,
SURREY.

TELEPHONE,
48, CAMBERLEY.

May 25th., 1926.

Dear Sir,

I am obliged to you for your letter of May 5th., 1926 and for the copy of the first part of your "Mithilā Śabda Prakāśa". I have read through the latter and see that it is very interesting, and hope that you will find means for continuing the publication. I am afraid that I cannot do much to help you, as in this country there are very few people who know Maithilī. However, if I get an opportunity I shall do so.

As you did not get my former letter enclosing a postal order for one shilling and sixpence, I enclose another herewith, and shall be glad to learn that you have received it safely. You can cash it for Indian money at any Indian post office.

Yours faithfully,

George A. Grierson

Pandit Bhava Nath Mishra.



SENATE HOUSE

ALLAHABAD 26 June, 1925.

I have looked over the Mithila-shabda-prakash by Pandit Bhavanath Mishra of Jamthari, Darbhanga. The author has made an honest effort to trace the Maithili word to its Sanskrit original and thereby determine its gender. The venture deserves to be encouraged.

Ganganatha Jha

श्रीनगर

पूर्णियाँ

अगस्त २ । १९२७

कुमार गंगानन्द सिंह

पंडितप्रवरश्रीयुक्त भवनाथशर्म्ममहाशयेषु निवेदनमिदम् ।

मिथिलाशब्दप्रकाश प्राप्त भेल । अपनेक सराहनीय उद्योग देखि हृष्ट भेलहुँ । एकरा सम्पूर्ण मुद्रित करयबा मे कतेक द्रव्यक आवश्यकता छैक ? से तकर अन्दाज कयने होइ तँ सूचित करब । हमरा विचारेँ एहि ग्रन्थरत्न क प्रथम खंडक जाहि रूपेँ सम्पादन भेल अछि ताहि सँ नीक जेकाँ छपब उचित । जँ भेंट हयबाक कोनो अवसर प्राप्त हो तँ अपन विचार कही । पत्र मे कहाँ धरि लिखू । द्रव्यक अन्दाज बुझि छपयबाक विषय मे लिखब।

हम १५।८।२७ क शिमला जयबाक विचार कयने छी । सितम्बर क अन्त धरि घुरब । इतिशुभम् ।

भवदीय

[signature]

पं० श्री भवनाथ मिसर

मौ० जमथर

पो० झंझारपुर

दरभंगा

मिथिला शब्द प्रकाश

–स्व० प० भव नाथ मिश्र

॥ श्री दुर्गा० ॥

श्रीकालिकायैनमः ॥

श्रीनन्दनन्दनम्वन्दे वृन्दावन विहारिणम् । गोपीवृन्दसमाकीर्णं नृत्यन्तं मुरलीधरम् ॥१॥

कालीसम्मुक्तकेशी रुधिरचयलसन्मुण्डमालां दधानाम् ।
दिग्वस्त्रांकृष्णवर्णां दनुजकरलसत्सप्तकोशोभिमध्याम् ॥
भालेन्दुद्योतिताङ्गीमभयवरयुतां खड्ग मुण्ड प्रसन्नाम् ।
भक्ताभीष्टप्रदात्रीं दुरितसमुदयध्वंसकर्त्रीं भजामः ॥२॥

पीनंसौम्यतरं किरीटलसितं बालेन्दु संशोभितम् ।
बालार्कद्युतिम प्रमेय बदनं नागाननं सुन्दरम् ॥
दन्तैकेनविराजितं त्रिनयनं रक्ताम्बरं भूषितम् ।
भक्तत्राणकरं महेश्वरसुतं श्रीविघ्नराजम्भजे ॥३॥

मैथिलानां मातृभाषाः संस्कृता वाप्यसंस्कृताः ।
तासां सुसंग्रहः सम्यक् भवनाथेन सूरिणा ॥४॥

क्रियतेमिथिला शब्द प्रकाशाख्योमनोहरः ।
उपकारकरः कोषो नाना ग्रन्थावलोकनात् ॥५॥

अभ्यर्थनामुधाज्ञेया सर्वदादुर्जनस्यच । अमृतार्द्रीकृतः सर्पो विषं नैवविमुञ्चति ॥६॥

प्रार्थये प्राञ्जलिर्भूत्वा सज्जनानमलाशयान् । श्रीमद्भिः करुणानेत्रैर्दृश्यतां शब्दसंग्रह ॥७॥

卐 मिथिला शब्द प्रकाशः 卐

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अङ्ग	शरीर	अङ्गन्	न.	अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनोथ कलेवरः । इत्यमरः ।
अन्न	अनाज्	अन्नम्	न.	भिस्साऽस्त्रीभक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्रीस-दीदिविः । इत्यमरः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अण्डा	अण्डा	अण्डम्	न.	पेशीकोशोद्विहीनेण्डम् । इत्यमरः ।
अर्घ	अर्घ	अर्घः	पु.	पूजाविधावर्घः । इत्यमरः ।
अस्सी	असी (८०)	अशीतिः	स्त्री.	संख्याविशेषः । अशीतिर्म्वस्यवर्षाणिवा-लीवाप्यूनषोडशः । इतिप्रायश्चित्ततत्वम्
अत्ता	अत्ता	आतृप्यम्	न.	फलविशेषः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अस्त	अस्त	अस्तम्	न.	अस्तंअदर्शनमित्यमरः ।
अर्थी	अर्थी	अर्थी	स्त्री.	इति शब्दार्थचिन्तामणिः ।
अन्त	अन्त	अन्तम्	न. पु.	अन्तः शेषः इतिमेदिनी ।
अरे	अरे	अरे	[अव्य.]	अरेनीचसम्बोधनम् । इतिहेमचन्द्रः ।
अर्थ	अर्थ	अर्थ	पु.	अर्थःविषयायाभ्याधनंकारणवस्तु शब्द-प्रतिपाद्य । इतिमेदिनी ।
अस्त्र	हथियार [हुरवा]	अस्त्रम्	न.	आयुधंप्रहरणंअस्त्रम् इत्यमरः ।
अस्थि	हड्डी	अस्थि	न.	मेदोदंकीकसंकुल्यंअस्थिचेत्यभिधीयते इत्यमरः ।
अहा	अहा	अहह	[अव्य.]	अद्भुतखेदः । इत्यमरटीकायां रायमुकुटाद्यः ।
अओरा	अँवरा	अकरा	स्त्री.	अकरातिश्च फलावृष्या । इतिशब्द चन्द्रिका ।
अङोरा	अंगारा	अङ्गारः	पु.	अङ्गारोऽलातमुल्मुके । इत्यमरः ।
अङैठी	अङेठी	अङ्गारधानिका	स्त्री.	अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपिहसन्त्य-पीत्यमरः ।
अपेक्षा	अपेक्षा	अपेक्षा	स्त्री.	कार्य्यनिमित्तयोरन्योन्याभिसम्बन्धः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अरुचि	अरुचि	अरुचिः	पु.	अरोचकः अश्रद्धाअनभिलाषः । इति-राजनिर्घण्टः ।
अक्षर	अक्षर	अक्षरम्	न.	अक्षरंस्यादपवर्गेपरब्रह्मवर्णयोरितिहैमः ।
अतर	अतर	गन्धतैलम्	न.	पन्वपाकेनजनिततैले । इतिशब्दस्तोम-महानिधिः ।
अशोक	अशोक	अशोकः	पु.	अशोकः पिण्डपुष्पस्तु-इतित्रिकाण्डशेषः ।
अधङ्गा	अधांगा	असितच्छदः	पु.	चित्रग्रीवोमयूरश्चजालपादोऽसितच्छदः । इति पलपीयूषलता ।
असह्य	असह्य	असह्यम्	त्रि.	वरंरामशराः शह्यानचवैभीषणंवचः । असह्यं ज्ञातिदुर्वाक्यंमेघान्तरिसरौद्रवत् इतिमहानाटकम् ।
असिद्ध	असिद्ध	असिद्धम्	त्रि.	असिद्धम्अपक्वम्असिद्धम् इतिरत्न-माला ।
असुस्त	दुःखित	असुस्थः	त्रि.	इतिशब्दकल्पद्रुमः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अक्षत	अक्षत	अक्षतः	पु.	आतपतण्डुलः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अतीस	अतीस	अतिविषा	स्त्री.	विश्वाविषाप्रतिविषाऽतिविषोपविषारुणा । इत्यमरः ।
अशुद्ध	अशुद्ध	अशुद्धम्	त्रि.	अशुद्धावैवर्णंवयोरितिशुद्धितत्त्वम् ।
अशुभ	अशुभ	अशुभम्	न.	पापमशुभम् । इतिहेमचन्द्र ।
अकुसी	अँकुवा	आकर्षणी	स्त्री.	फलपुष्पाद्याकर्षकवष्टिकाविशेषः । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
अढैआ	अढैया	आढकम्	न. पु.	द्रोणचतुर्थभागोआढकः । इतिलीलावती ।
अशौच	अशौच	अशौचम्	न.	वैदिककर्म्माऽनर्हत्वाप्रयोजकसंस्काररूपमशौचम् । इतिरघुनंदनः ।
अमड़ा	अमड़ा	आम्रातकः	पु.	आम्रातककपीतनौ । इत्यमरः ।
अम्मट	अमावट	आम्रावर्तः	पु.	पक्वस्यसहकारस्यपटेविस्तारितोरसः । धर्म्मशुष्कोमुहुर्दत्त आम्रातक इतिस्मृतः इतिराजनिर्घण्टः ।
अलबी	अरुई	आलुकी	स्त्री.	आलुकीबलकृत्स्निग्धागुर्वीहृत्कफनाशिनी भावप्रकाशः ।
अबीर	अबीर	आवीरः	पु.	आवीरचूर्णं रुचिरंगृह्यतांपरमेश्वर । इतिकृष्णजन्मखण्डे ८ अध्यायः ।
अडरी	रेंड़ी	एरण्डः	पु.	एरण्डऊरुबूकश्च इत्यमरः ।
अलाची	इलायची	एला	स्त्री.	पृथ्वीकाचन्द्रवालैला । इत्यमरः ।
अष्टमी	अष्टमी	अष्टमी	स्त्री.	तिथिविशेषःशाचन्द्रस्याष्टमकलाक्रियारूपा । शब्दकल्पद्रुमः ।
अन्हार	अन्धेरा	अन्धकारः	पु.	अन्धकारोऽस्त्रियांध्वान्ततमिश्रं तिमिरंतमः । अमरः ।
अकाल	अकाल	आकालः	पु.	असमयःअप्रशस्तकालःयद्वाऽन्यकालातिरिक्तसमयः । शब्दकल्पद्रुमः ।
अर्हणा	दहेज	अर्हणः	पु.	पूजोपकरणेपूजादौउपचयनेच । इतिशब्द स्तोममहानिधिः ।
अन्दर	भीतर	अन्तर्गृहम्	न.	गृहमध्यं इतिनानार्थकोष्ठशब्दार्थेअमरः ।
अङ्गना	अंगना	अङ्गणम्	न.	अङ्गणंचत्वराजिरे इत्यमरः ।
अगरु	अगरु काष्ट	अगरु	न. पु.	अगरु अगुरुरितिहेमचन्द्रः ।
अदृष्ट	अदेख	अदृष्टम्	न.	अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात्करोतिसुप्तिर्जनदर्शनातिथिः इति श्रीहर्षः ।
अतरी	आंत	अन्त्रम्	न.	अन्त्रंपुरीतदित्यमरः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अल्हुआ	शकरकन्द	रक्तालुकम्	न.	पिण्डालुकमध्वालुकरक्तालुकानिव्यक्ता-निमूलविशेषः (इतिभावप्रकाशः।)
अतिथि	अतीथ	अतिथिः	पु.	प्रघूर्णोऽतिथिरित्यत्र:। इतिहेमचन्द्रः।
असामी	प्रजा	प्रजा	स्त्री	प्रजानांनपा नर्नवानंद्वे अपिराज्ञांशुभावहे-द्वाभ्यांविवर्जिताभूपास्तेवि ज्ञेयानृपाधमाः इतिपाद्ये।
अयना	दरपन	आर्दशः	पु.	आदर्शोदर्पणः प्रोक्तः इत्यमरमाला।
अधिक	बहुत	अधिकः	पु.	अधिकः अतिरिक्तः अनेकः इतिहेमचन्द्रः।
अधीन	बस में	अधीनम्	त्रि.	अधीनोनिघ्नआयत्तोऽस्वच्छन्दोगृह्यकाप्यसौ। इत्यमरः।
अनादि	अनादि	अनादि	त्रि.	अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणः। इतिब्रह्मसंहिता।
अनोन	अलोना	अलवणम्	न.	इतिवहवः।
अगस्ति	अगस्त का फूल	अगस्त्यः	पु.	मुनिद्रुमोब्रीहिपुष्पोऽगस्त्योवल्कफलो-मुनिः। इतिपञ्चतत्त्व प्र०
अर्जुन	अर्जुन वृक्ष	अर्जुनः	पु.	कुकुवीरोनदीसर्जः ककुभोर्जुनवृक्षकः। पञ्चतत्त्व प्रकाशः।
अम्मत	खट्टा	अम्ल	पु.	षड्रसमध्येरसविशेषः इतिराजनिर्घन्टः।
अपथ्य	कुपथ्य	अपथ्यम्	न.	यत्पथ्यंयदपथ्यंचवक्ष्यतेरक्तपित्तिनाम्। इतिवैद्यके
अपूर्व	अनोखा	अपूर्वम्	त्रि	अपूर्वेयहरेम्मायात्रिगुणारज्जुरूपिणी। इतिपुराणम्।
अस्तुरा	छुरा	छुरः	पु.	छुरोवपनशस्त्रम्। छुरःस्याच्छेदनद्रव्ये। इतिमेदिनी।
अशुचि	अपवित्र	अशुचिः	पु.	इत्यश्वलायनः।
अढिआ	अढिआ	पादप्रक्षालनपात्रं	न.	इतिवृद्धाः
अनर्थ	अनर्थ	अनर्थकम्।	न.	अबद्धञ्चअनर्थकम् इत्यमरः।
अजीर्ण	अजीर्ण	अजीर्णम्	न.	अजीर्णेभेषजंवारिजीर्णेवारिबलप्रदम्। इतिवैद्यके।
अलक्ष	अशुभ	अशुभम्	न.	सर्वाशुभानांपरिमोक्षकारिसम्पूजनंदेव-वरस्यविष्णोः। इतिज्योतिस्तत्त्वम्।
अपक्व	कच्चा	अपक्वम्	त्रि.	अपक्वमसृतंआमंअसिद्धमितिरत्नमाला।
अकीर्ति	अकीर्ति	अकीर्ति	स्त्री.	सम्भावितस्यचाकीर्तिर्म्मरणादतिरिच्यते। भगवद्गीता।
अकर्म्म	अकर्म्म	अकर्म्म	न. पु.	अकरणीयकार्य्यम्। शब्दकल्पद्रुमः।
अन्याय	बेइनसाफ	अन्यायः	त्रि.	अन्यायेनापियद्भुक्तं पित्रापूर्वंशतैरपि। नतच्छक्यमपाकर्तुं क्रमात्त्रिपुरुषागतम्। इतिव्यवहारतत्वेनारदः।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अकार्य्य	अकाम	अकार्य्यम्	न.	किमकार्य्यं कदर्य्याणांदुस्त्यजंकिंधृतात्मनाम् । भागवतम् ।
अखाद्य	अभक्ष्य	अखाद्यम्	न.	खाद्यानर्हंअभक्ष्य । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अगण्य	अगण्य	अगण्यम्	त्रि.	अगणनीयअगणितव्यम् इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अंकुश	आंकुश	अंकुशः	पु. न.	सृणिरङ्कुशः । इत्यमरः ।
अंकुर।	अखुआ	अंकुरः	पु.	अंकुरोऽभिनवोद्भिदि । इतिहेमचन्द्रः ।
अचेत	बेचेत	अचेतनः	पु.	चेतनारहितःचैतन्यशून्यः अज्ञानः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अज्ञान	बेवकूफ	अज्ञान	न.	चेतनारहितः चैतन्यशून्यः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अत्याज्य	रख देनेलायक	अत्याज्यम्	त्रि.	त्यागानर्हंअत्यक्तव्यंअत्यजनीय । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अदृश्य	अदेख	अदृश्यम्	त्रि.	अदर्शनीय अद्रष्टव्यम्कन्याद्रे रतिकोमला-त्रिभुवनव्याप्ताप्यदृश्या जनैः इत्युद्भटः ।
अधम	चांडाल	अधमः	त्रि.	निकृष्टोनिन्दितोऽधमः । इत्यमरः ।
अधर्म्म	बेधर्म्म	अधर्म्मः	पु.	श्रुतिस्मृतिविरुद्धाचारः । अधर्म्मेणैधते-राजन्ततोभद्राणिपश्यति इतिमहाभारते ।
अधर्म्मी	बेधर्म्मी	अधर्म्मी	न. पु.	अधर्म्मात्मा । अधर्म्मशब्दादस्त्यर्थेइन । शब्दकल्पद्रुमः ।
अधैर्य्य	अधीर	अधैर्य्य	त्रि.	धैर्य्यधैर्य्यपरिग्रहग्रहिलयोरेणीदृशोभीतये । इतिभानुमिश्रः ।
अनित्य	अनित्य	अनित्यम्	त्रि.	धर्मोनित्यःसुखदुःखे त्वनित्ये इतिमहाभारतेभारतसाविनी ।
अनीति	बे इनसाफ	अनीति	स्त्री.	दुर्नीतिः अन्यायः अत्याचारः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अनेक	अनेक	अनेकम्	त्रि.	अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलम् । इतिभारविः ।
अपात्र	नालायक	अपात्रम्	न.	अपात्रंपालयेद्दत्तंसुवर्णं नरकार्णवे इतिमलमासतत्वे० ।
अप्रिय	नापसंद	अप्रियम्	त्रि	नब्रूयात्सत्यमप्रियम् । इतिमनुः ।
अबोध	अज्ञान	अबोधः	पु.	अज्ञानम् निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः इतिभारविः ।
अबल	कमजोर	अबलम्	त्रि.	बलरहितम् दुर्बलम् । अबलमुकुलासिनोच्छ्वसान् । इतिश्रीहर्षः ।
अबला	स्त्री	अबला	स्त्री	स्त्रीयोषिदबलायोषा । इत्यमरः ।
अभक्ष्य	खाने लायक नहीं	अभक्ष्य	त्रि.	अभक्ष्यञ्चैवमेमांसं स्यादृशैर्ह्यचारिभिः । इतिरामायणम् ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अभीष्ट	माफिक	अभीष्टम्	न.	अभीष्टं वांछितं प्रियम् । इत्यमर: ।
अभुक्त	भूखा	अभुक्तम्	न.	अभुक्तस्य दिवानिद्रापाषाणमपिपाचयेत् । इतिवैद्यके० ।
अभ्यास	महावरा	अभ्यास:	पु.	अभ्यासे न तु कौन्तेयवैराग्येण च गृह्यते । इतिभगवद्‌गीता ।
अमृत	अमृत	अमृतम्	न.	पीयूषममृतंसुधा० । इत्यमर: ।
अरिष्ट	अरिष्ट	अरिष्टम्	न.	अरिष्टमशुभंतक्रंसुर्मरणचिन्हकम्० । इतिमेदिनी० ।
अवधि	अवधि (समय)	अवधि:	पु.	अवधानमवधि: सीमा० । इति विश्व-मेदिन्यौ ।
असार	असार	असारम्	न.	असारं फल्गुशून्यम्तु० । इत्यमर: ।
अवस्था	अवस्था	अवस्था	स्त्री.	कौमारंपञ्चमाब्दान्तं पौगण्डंदशमावधि कैशोरमापञ्चदशात् । (यौवनन्तुततः परम् इतिस्मृतिः) ।
अवाच्य	असभ्य शब्द	अवाच्यम्	न.	अनक्षरमवाच्यंस्यादित्यमर: ।
अविज्ञ	अनजान	अविज्ञ:	त्रि.	अविज्ञ: अनिपुण: । इति शब्दकल्प-द्रुम: ।
अर्जन	कमाना	अर्जनम्	न.	अर्जनं स्वत्वहेतुभूतोव्यापार: अर्जनं-स्वत्व नापादयतीति विप्रतिषिद्धम् । इतिदायभाग: ।
अव्यक्त	अप्रकास	अव्यक्त:	पु.	आत्मन्यपिस्यादव्यक्तमस्फुटेत्वभिधेय-वत्० । इतिविश्व: ।
अशक्य	असामर्थ	अशक्य:	त्रि.	अशाक्यंअशक्येऽप्यनवसाय: समर्थना । इति मुग्धबोधव्याकरणम् ।
अश्रद्धा	अश्रद्धा	अश्रद्धा	स्त्री	विधिहीनंभावदुष्टंकृतमश्रद्धयाचयत् । इतिश्राद्धतत्वम्० ।
आसध्य	असाध्य	असाध्यम्	त्रि.	नासाध्यं विद्यते तस्य त्रिपुलोकेषु-पार्वति । इति शब्दकल्पद्रुम: ।
असुर	असुर	असुर:	स्त्री. पु.	असुरादैत्यदैतेयादनुजेन्द्रादिदानवा: । इत्यमर: ।
अहित	हित नहीं	अहित:	त्रि.	अपथ्यमहित: । इतिशब्दचन्द्रिका० ।
अघट	अघट	अघट्ट:	पु.	नद्यादौस्नानार्थं अप्रवेशस्थानम् । इतिशिष्टा: ।
अइँठी	जम्भाई	जृम्भणम्	त्रि.	जृम्भिकाजृम्भणंजृम्भा० । इति शब्द-रत्नावली ।
अषाढ	अषाढ	अषाढ:	पु.	भवेदषाढअषाढो । इतिद्विरूपकोश: ।
अविधि	अविधि	अविधि:	पु.	अविधानम् । इतिशब्दकल्पद्रुम: ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अन्यथा	वृथा	अन्यथा	स्त्री.	अन्यथाचिन्तितंकार्य्यं विधिनाकृतमन्यथा । इत्युद्भटः ।
अन्हड़	अन्धड़	महावातः	पु.	प्रकम्पनोमहावातः । इत्यमरः ।
अनेर	अनेरा	स्वच्छन्दः	पु.	स्वच्छन्दोनिरवग्रहः इत्यमरः ।
अन्यत्र	दूसरी जगह	अन्यत्र	अ.	अन्यत्रमरणात्पत्युः पत्नीकेशान्नवापयेदितिप्राचीनाः ।
अन्हेर	अन्धेर	अन्यायः	पु	अन्यायोपार्जितंद्रव्यंदशवर्षाणितिष्ठति । इतिप्राचीनाः ।
अंकुरी	अंकुरी	अंकुरी	पु.	अङ्कुरशब्दादस्त्यर्थेइन् । इतिव्याकरणम्० ।
अपने	अपना	स्वयम्	अ.	स्वयंपञ्चाननः पुत्रौगजाननषडाननौ । कथंनिर्वाहमेतेषामन्नपूर्णानचेद्गृहे ॥ इत्युद्भटः ।
अथाह	अगाध	अगाधः	पु.	अगाधजलसञ्चारीनगर्वं जातिरोहितः । इतिचाणक्यम् ।
अमिर्ती	हंसपदी (लताधि)	हंसपदी	स्त्री.	हंसस्येवपादाः मूलान्यस्याः पदनाथेस्त्रियांङीपिपदभावः गोधातकीलतायां । इतिशब्दस्तोममहानिधिः ।
अचार	अचार	सन्धानिका	स्त्री.	खाद्यद्रव्यविशेषः तत्करणप्रकारंकं यथा अपक्वाम्रफलानि विंशति राजिकामरावषोडशैकभारमितामरिचं तोलकद्वयं लवणं षट्तोलकं मेथिकाद्वितोलकं जीरकं तोलकद्वयं हरिद्रातोलकं नागरमेकतोलकं कृष्णजीरकंतोलकैकंगृहीत्वा-आम्रभिन्नं सकलद्रव्यंचूर्णयित्वाएकत्रीकुर्य्यात्० आम्रन्तुदीर्घं द्विखण्डन्तु खण्डंवाकृत्वाअष्टीं दूरीकृत्यतेदभ्यन्तरे पूर्वोक्तचूर्णं पूरयित्वाशलाकयाबद्धा-षड्भाग्रकुर्य्यात् ततस्तैलेनिमज्जयेत्० । इति पाकराजेश्वरः ।
अकटा	अंकटा	अणुका	स्त्री.	अणुकाबीजसंपन्नाक्षुद्रानोह्यविवर्द्धिनी । इतिशब्दवर्णमाला ।
अद्भुत	अद्भुत	अद्भुतम्	त्रि.	विस्मयोद्भुतमाश्चर्य्यम् । इत्यमरः ।
अम्वात	आमवात	आमवातः	पु.	वर्जयेदामवातार्तोगुरुमांसमनूपजम् । इतिभावप्रकाशः ।
अन्तर	अन्दर	अन्तर्गृहम्	न.	अन्तर्गृहेकृतं पापं वज्रलेपोभविष्यतीतिस्कान्दे ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अङरखा	अंगरखा	अङ्गा	स्त्री.	अङ्गास्यादङ्गरक्षिणी । इतिहेमचन्द्रः ।
अचेतन्य	बेहोस	अचेतन्यम्	न.	चेतनाभावअज्ञान । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अजेगर	अजगर	अजगरः	पु.	अजगरेशयुर्वाहसइत्युभौ । इत्यमरः ।
अण्डकोश	अण्डकोश	अण्डकोषः	पु.	मुष्कोण्डकोषः । इत्यमरः ।
अनादर	अनादर	अनादरः	पु.	अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया । इत्यमरः ।
अरिआत	अगवानी	अनुव्रजनम्	न.	आयान्तमग्रतोगच्छेद्गच्छन्तं त मनुव्रजेत् । इतिनिगम कल्पद्रुमः ।
अन्हैसाप	सर्प विशेष	अन्धाहिः	पु.स्त्री.	अन्धाहिः कुचिकाद्वयोः । इतित्रिकाण्डशेषः ।
अपराध	कसूर	अपराधः	पु.	आगोपराधोमन्तुश्च । इत्यमरः ।
अभिलाष	अभिलाषा	अभिलाषः	पु.	कामोभिलाषस्तर्षश्च । इत्यमरः ।
अबरख	अबरख	अभ्रकम्	न.	अभ्रकंगिरिजामलम् । इत्यमरः ।
अमरोड़ा	चौपतिया	अम्ललोणिका	स्त्री.	चाङ्गेरीचुक्रिकादन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका । इत्यमरः ।
अवक्तव्य	बोलने लायक नहीं	अकथ्यः	त्रि.	अकथनीयः अवक्तव्यः । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
असगन्ध	असगंध	अश्वगन्धा	स्त्री.	अश्वगन्धावाजिगन्धाहयगन्धाचपुष्टिदा । इतिरत्नमाला ।
अठारह	अठारह (१८)	अष्टादशः	त्रि.	अष्टादशसंख्या नित्यबहुवचनान्तशब्दोऽयम् । इतिशब्द कल्पद्रुमः ।
असंगत	बेमेल	असंगतम्	त्रि.	असमञ्जसमसङ्गतंदुर्जातंदुः समञ्जसम् । इतित्रिकाण्डशेषः ।
असन्तुष्ट	असन्तुष्ट	असन्तुष्टम्	त्रि.	असन्तुष्टाद्विजानष्टा । इतिचाणक्यम् ।
अहंकार	अहंकार	अहङ्कारः	पु.	गर्वोभिमानोऽहङ्कारः । इत्यमरः ।
अखरोट	अखरोट	आक्षोटः	पु.	आक्षोटः फलस्नेहः गुडाशयः कीरेष्टः । इतिराजनिर्घण्टः ।
अखड़हा	अखाड़ा	अच्छवाटः	पु.	अच्छवाटोमल्लभूमिः । इतिहेमचन्द्रः ।
अधपक्कू	अधपक्का	आपक्कम्	न.	आपक्वं पौलिरभ्युषो । इत्यमरः ।
अङ्रेज	अङ्रेज	इङरेजः	पु.	इङ्रेजानवषट्पञ्चलङ्कादचापि भाविनः । इतिमेरुतन्त्रे ५ प्रकाशः ।
अगहन	अगहन	आग्रहायणिकः	पु.	मार्गशीर्षसहामार्गआग्रहायणिकश्चसः । इत्यमरः ।
अमावस्या	अमावस	अमावास्या	स्त्री.	अमावस्या अमावाशीदर्शः सूर्य्येन्दुसङ्गम । इत्यमरशब्दरत्नावल्यौ ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अरिपन	ऐपन	आलिम्पनम्	न.	आलिम्पनातर्पणादीपनं मण्डीदकं च तत् । इतित्रिकाण्डशेषः ।
अनरसा	अनरसा	इन्दुरसा	स्त्री.	भक्ष्यद्रव्यविशेषः इन्दुरसाह्वया । इति-चर्य्याचन्द्रोदयः ।
अतीचार	विवाहादि जिसमें न हो	अतिचारः	पु.	कुजादिपञ्चग्रहाणां राशिभोगकाला-समाप्तौराश्यन्तरगमने तत्पूर्वराशि-गमनेवक्रातिचार, पराशिगमनेअति-चार । इतिस्मृतिज्योतिषे ।
असवार	सवार	अश्वारोहः	पु.	अश्वारोहस्तुसादिनः । इत्यमरः ।
अभ्यागत	अतीथी	अभ्यागतः	पु.	प्राघूर्णिकोऽभ्यागतस्च । इतिहेमचन्द्रः ।
अधिकारी	अधिकारी	अध्यक्षः	त्रि.	अध्यक्षाधिकृतौसमौ इत्यमरः ।
अनायास	अनायास	अनायासः	पु.	अनायासेन मरणं विनादैन्येन जीवनं । अनाराधितगोविन्दचरणस्यकथं भवेत् । इतिप्रामाणिकाः ।
अनवस्था	अचानक	अनवस्था	स्त्री.	इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अनाचार	अनाचार	अनाचारः	पु.	सर्वदेशेष्वनाचारः पथितान्मूलवर्जयम् । इतिस्मृतिः ।
अनुग्रह	अनुग्रह	अनुग्रहः	पु.	अभ्युपपत्तिरनुग्रहः । इत्यमरः ।
असगल	उपलाता हुआ	असंलग्नम्	न.	असंलग्नं कुवार्तं च दूरतः परिवर्जयेत् । इतिप्रामाणिकाः ।
अधलाह	खराब	अनिष्टम्	त्रि.	इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करुणाख्योरसो-भवेत् । इतिसाहित्यदर्पणम् ।
अनुरोध	अनुरोध	अनुरोधः	पु.	अनुरोधोऽनुवर्तनम् । इत्यमरः ।
अनुमान	अनुमान	अनुमानम्	न.	अनुमानंअनुमितिः अनुमामितित्रिकाण्ड-शेषः ।
अनुराग	प्रेम	अनुरागः	पु.	अनुरागोरतिप्रीतिः । इतिहेमचन्द्रः ।
अनुचित	अनुचित	अनुचितः	पु.	अन्यायः अनुचितः इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अनुभव	अनुभव	अनुभवः	पु.	स्मृतिभिन्नज्ञानम् । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अनुराधा	नक्षत्र	अनुराधा	स्त्री.	सप्तविंशतिनक्षत्रान्तर्गतनक्षत्रविशेषः । इतिज्योतिषे ।
अनुष्ठान	अनुष्ठान	अनुष्ठानम्	न.	कर्म्मारम्भविशेषः कृताश्रीभवदेवेनक-र्म्मानुष्ठानपद्धती । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
अंकनाइ	अंकन	अंकनम्	न.	अङ्कनंत्रिशूलादिचिह्नकरणम् इतिप्राय-श्चित्ततत्त्वम् ।
अगडाहो	वन की आग	दावाग्निः	पु.	वनोद्भवाग्निर्दावाग्निर्दवाग्निश्चेति रत्नावली ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अपकार	अपकार	अपकार:	पु.	द्रोह: अनुपकार: मन्दकरणम् । इति-हलायुध: ।
अप्रसिद्ध	अप्रसिद्ध	अप्रसिद्धम्	त्रि.	लिङ्गसामर्थ्यं रूढिगतं प्रसिद्धं न त्वप्रसिद्धिम् । इति तिथ्यादि तत्वम् ।
अप्रधान	नामी नहीं	अप्रधानम्	न.	प्राधान्यरहितं अप्राधर्यं उपसर्जनं अप्र-धानम् । इत्यमर: ।
अप्रशस्त	खुलासा नहीं	अप्रशस्तम्	त्रि.	अप्रशस्तं निशिस्नानं राहोरन्यत्रदर्श-नात् । इतितिथ्यादि तत्वे ।
अप्रसन्न	अप्रसन्न	अप्रसन्नम्	त्रि.	आविलं । अनच्छम् । इतिशब्दरत्ना-वली । त्वयिप्रसन्ने परशर्म्मभि: किम् । त्वय्यप्रसन्ने परशर्म्मभि: किम् इति प्राचीना: ।
अतीसार	अतीसार रोग	अतिसार:	पु.	अतिसारोऽक्षगन्धि: । इति त्रिकाण्ड-शेष: ।
अपरस	अपरस	विसर्प:	पु.	विसर्परोगभेदे । इतिशब्दस्तोममहा-निधि: ।
अवग्रह	प्रतिबन्धक	अवग्रह:	पु.	अवग्रह: प्रतिबन्धक: ज्ञानविशेष: इति-मेदिनी ।
अपकर्म्म	खराब काम	अपकर्म्मम्	न.	दु:क्रियामन्दकर्म्म । इति शब्दकल्प-द्रुम: ।
अकर्तव्य	नालायक	अकर्तव्यम्	त्रि.	अकर्तव्योविरोधश्चदारुण: क्षयिर्यसह । इतिगणपतिखण्डे ।
अकस्मात्	अकस्मात्	अकस्मात्	[अ.]	अकस्मात् सहसासद्य: सपदितत्क्षणे-ऽप्यपि । इतिहेमचन्द्र: ।
अकारण	अकारण	अकारणम्	न.	कारणशून्यं निर्हेतु: अनिमित्तम् । इति-शब्दकल्पद्रुम: ।
अकृत्तिम	असली	अकृत्रिम:	पु.	चतुर्थचतथाभावे स्नानार्थंमृदमाहरेत् । तिलपुष्पकुशादीनिस्नानञ्चाकृत्रिमेजले । इत्याह्निकाचारतत्वम् ।
अनाध्याय	अनाध्याय	अनाध्याय:	पु.	स्मृतियुक्तानाध्यायनसप्तमीञ्चत्रयोद-शीम् पक्षयोर्म्मासमासस्यद्वितीयां परिव-र्जयेत् । इतिवृद्धगर्ग: ।
अकर्म्मण्य	नाकाम	अकर्म्मण्यम्	न.	षष्ठिदशात्मिकायाञ्चतिथेर्विरुकर्मणे-परे । अकर्म्मण्यतिथिमन्तं विद्यादेकाद-शीविना । इतितिथ्यादि तत्वम् ।

स्व०
और्व,
युक्त
ब्राह्म
पो०
ई अ
व्याक
मे सं
तथा
देवी
पं०
पं०
नाथ
खण्ड
प्रथम
उपर
सुनी
प्रशं
संक
भेंटि
दुर्गा
१६३
भय गेल।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अनभिज्ञ	अनजान	अनभिज्ञः	त्रि.	प्रज्ञारहितः धिक्त्वांचुततरोः परापरपरिज्ञानानभिज्ञोभवान् । इति प्राचीनाः।
अनर्गल	अनर्गल	अनर्गलम्	त्रि.	अबाधमच्छं खलमनर्गलम् हेमचन्द्रः।
अनियम	अनियम	अनियमः	पु.	अनियमः अनिश्चयः। गुरुषष्ठत्व पादानां शेषेष्वनियमोमतः इति छन्दोमञ्जरी।
अनुकल्प	बैसाही	अनुकल्पः	पु.	मुख्यस्यानापन्नप्रतिनिधिः। इत्यमरभरतो।
अनुरक्त	आसिक	अनुरक्तः	त्रि.	आसक्तः। अनुरक्तोगुणान् श्रुतेविरक्तोदूषणानिच० इत्युद्भटः।
अन्वेषण	खोजना	अन्वेषणम्	न.	सुग्रीवोराममित्रं स्वजनकतनयान्वेषणेप्रेषितोऽहम्। नाटकम्।
अपमान	तिरस्कार	अपमानम्	न.	अपमानंपरिभवस्तिरस्कारस्तिरस्क्रिया। इति शब्दरत्नावली।
अपमृत्यु	अनमय का मरना	अपमृत्युः	पु.	विनारोगेणमरणम् अपमृत्युभयं नास्तिमृतोमोक्षमवाप्नुयात्। देवीकीलकं।
अपवाद	कलंक	अपवादः	पु.	परीवादापवादवत्। इत्यमरः।
अभिप्राय	मतलब	अभिप्रायः	पु.	इच्छाविशेषः अभिप्रायश्छन्दः आशयः। इत्यमरः।
अभिमान	घमंड	अभिमानः	पु.	गर्वोभिमानोऽहंकारः। इत्यमरः:
अभिमानी	घमंड रखनेवाला	अभिमानी	त्रि.	अभिमानयुक्तः कर्तायुतच्छलानांजतुमयशरणोद्दीपितः सोऽभिमानी। इति वेणीसंहार।
अभ्युदय	उन्नति	अभ्युदय	पु	प्राप्तश्चाभ्युदयोमम। रामायणम्।
अमंगल	अशुभ	अमंगलम्	न.	मङ्गलशून्यः। अमङ्गलं रूपमिदम्। इति विद्वन्मोदतरङ्गिणी।
अलौकिक	अद्भुत	अलौकिकः	त्रि.	अलौकिकत्वादमरः स्वकोषेन वानिनामानिसमुल्लिलेख०। इति त्रिकाण्डशेषः।
अवदात	साफ	अवदातः	त्रि.	मनोज्ञं निर्मलम्। इत्यमरभरतो।
अवकाश	समय	अवकाशः	पु	अवकाशोद्विविधः कालिकः दैशिकश्च। इति शब्दस्तोम महानिधिः।
अवधूत	सन्यासी के भेद	अवधूतः	पु	सन्यासाश्रमी तद्विधानं सन्यासिशब्दे द्रष्टव्यः। इति शब्दकल्पद्रुमः।
अवरोध	रोकना	अवरोधकः	पु.	अवरोधकारकः अवपूर्वकरुधधातोः ण्वुल्प्रत्ययेननिष्पन्नः। इति व्याकरणम्।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
अवलम्ब	सहारा	अवलम्बनम्	न.	आश्रय: । अवलम्बनाय दिनभर्तु रभून्न-पतिष्यत: सहस्रमपि इति माघे ९ सर्ग: ।
अवशिष्ट	बाकी	अवशिष्ट:	त्रि.	शेष: । उद्वर्त: । शीनावशिष्टाङ्गेहान्च-नावशाल्वेपसम्भवाम् । इत्यान्हिका-चारतत्वम् ।
अवसन्न	मरने के समीप	अवसन्न:	त्रि.	आचारेणावसन्नोऽपिपुन: प्रार्थयते यदि । इति व्यवहारतत्वम् ।
अवसर	अवसर	अवसर:	पु.	प्रस्तारोऽवसरोनन्वविशेषेऽवर्षणमिति मेदिनी ।
अविवेक	अविचार	अविवेक:	पु.	सदसद्विवेचना राहित्यम् । इति शब्द-कल्पद्रुम: ।
अहंकारी	अभिमानी	अहंकारी	त्रि.	अहङ्कारोविद्यतेऽस्येति अस्त्यर्थे णिनि-प्रत्ययेन निष्पन्न: । इति व्याकरणम् ।
अधिकार	अधिकार	अधिकार:	पु.	सर्वस्युरधिकारिण: । इति स्मृति: ।
अकबाल	प्रताप	प्रताप:	पु.	सप्रताप: प्रभावश्च । इत्यमर: ।
अपजश	अपजरा	दरदम्य:	पु.	इति शब्दार्थ चिन्तामणि: ।
अपोआड	तृण वि०	उस्वंल:	पु.	तृतीत्तमोभूरिपत्री सुतृणश्च उस्वंल: । इति राजनिर्घन्ट: ।
अहलाद	अह्लाद (प्रसन्न)	ह्लाद:	पु.	ह्लाद: प्रमोद: प्रमदोमुत्प्रीत्यामोद-सम्पदा: । इति हेमचन्द्र: ।
अन्तर्यामी	भीतर जानने वा.	अन्तर्यामी	त्रि.	आत्माजीव: पुरुष: पुद्गल: । त्रिका-ण्डशेष: ।
अङ्पोछा	अङोछा	अङ्गप्रच्छानिका	स्त्री.	अङ्गप्रच्छानि कागात्रमार्जनी मलहा-रिणी । इति शब्दरत्नाकर: ।
अष्टगन्ध	अष्टगन्ध	अष्टगन्ध:	पु.	कर्पूरं चन्दनं मुस्ता कुंकुमं देवदारु च । रोचनाकेसरोशीरं गन्धाष्टकमुदाहृतम् । निघन्टुभूषणे ।
अविचार	अन्याय	अविचार	पु.	अविचारेण सर्वाभिरनुष्ठेयन्तुगत्तुन: । इति मात्स्ये ।
अनकर	दूसरों का	अन्यदीय:	पु.	हृदयस्यान्यदीयस्यभेदनेकाकुपात्रयोरि-त्युद्भट: ।
अर्द्धोदय	पर्व विशेष	अर्द्धोदय:	पु.	योगविशेष: । अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता-चेन्माघपौषयो: । अर्द्धोदय: सविज्ञेय: कोटिसूर्य्यग्रहै: सम: । अर्द्धोदयेतु संप्राप्ते सर्वं गङ्गासमंजलम् । शुद्धात्मानो द्विज:

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
				सर्वेभवेयुत्रं ह्रासभिभाः इति तिथ्यादितत्त्वम् ।
अपराजित	अपराजित	अपराजिता	स्त्री.	विष्णुक्रान्तापराजिता । इत्यमरः ।
अमलवेत	अमलवेंत	अम्लवेतसः	पु.	सहस्रवेधीचुक्रोम्लवेतसः शतवेध्यपि । इत्यमरः ।
असमंजस	मेल नहीं	असमंजसम्	त्रि.	असमञ्जसमिति त्रिकाण्डशेषः ।
अधपहरा	बारबेला	अर्द्धप्रहरा	स्त्री.	वर्ज्यार्द्धप्रहराबुधैरिति ज्योतिषम् ।
अन्नप्राशन	अन्नप्राशन	अन्नप्राशनम्	न.	अन्नस्य प्राशनं कार्य्यं मासिषष्ठेऽष्टमेबुधैरिति कृत्यचिन्तामणौ ।
अछिन्नजल	पवित्रजल	अच्छिन्नजलम्	न.	यौगिकशब्दोयम् । इति वृद्धाः ।
अन्नकढेरी	अन्न का ढेर	उत्करः	पु.	उत्करस्तूपधान्यादिराशिः । इत्यमरः ।
अमलतास	अमलतास	आरग्वधः	पु.	आरग्वधोराजवृक्षः सम्पाकश्चतुरङ्गुलः । इत्यमरः ।
अनवधान	असावधान	अनवधानता	स्त्री.	प्रमादोऽनवधानता । इत्यमरः ।
अनरमस्त	सुदर्शना जड़ीवि.	सुदर्शना	स्त्री.	सुदर्शनाकरैवध्वार्थलोकयवसमानयेदिति इन्द्रजालकम् ।
अमरलत्ती	आकाशवेल	आकाशवल्ली	स्त्री.	आकाशवल्लीदुःस्पर्शावल्लीव्योमवल्लिका । इतिराजनिर्घण्टः ।
अनवसर	अवसर नहीं	अनवसरः	त्रि.	अनवसरेभजमानो गुणवानपिसज्जनंलभते । इत्युद्भटः ।
अडरनेबा	पपीता	कटभी	स्त्री.	कैटर्य्यः श्यामलाशोभीपाटलीकटभीत्यपि । इतिराजनिर्घण्टः ।
अमलपित्त	अमलपित रोग	अम्लपित्तम्	न.	अम्लपित्तम् । इति वैद्यकम् ।
अनभुआर	अनजान	अनभिज्ञम्	त्रि.	प्राज्ञारहितः बुद्धिहीनः अपटुः । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
अनवरत	बराबर	अनवरतम्	न	नित्यानवरताजस्रमित्यमरः ।
अन्तःकरण	अन्तःकरण	अन्तःकरणम्	न.	मनोऽन्तः करणं निगुः । इत्यमरः ।
अलङ्करण	भूषण (गहना)	अलंकरणम्	न.	अलङ्करणं भूषणम् । इति शब्दरत्नावली ।
अवधारण	निश्चय करना	अवधारणम्	न.	निश्चयः इति शब्दकल्पद्रुमः ।
अव्यवस्थित	काम का ठीक न हो	अव्यवस्थितम्	त्रि.	अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः। इति हितोपदेशः ।
अव्यवहित	अव्यवहित	अव्यवहितम्	त्रि.	संसक्तं त्वव्यवहितमपदांतरमित्यपीत्यमरः ।
असाधारण	असाधारण	असाधारणम्	त्रि.	इति शब्दस्तोममहानिधिः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
असपताल	असपताल	आरोग्यशाला	स्त्री.	आरोग्यशालां कुर्वीतमहौषधपरिच्छदाम् । विदग्धवैद्यसंयुक्तां वह्निवरसंयुताम् । इति वैद्यकम् ।
अकादारुण	भयानक	दारुण:	पु.	दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् । इत्यमर: ।
अधबोलिआ	बालकों की भाषा	गद्‌गद्‌वाणी	स्त्री.	इति श्रीमद्भागवतम् ।
अमचुकारी	अमचुकार	अम्लोत्कैद:	पु.	इति राजनिर्घन्ट: ।
अकरकड़हा	अकरकरा दवा	मरुन्माला	स्त्री.	मरुन्मालातुपिशुनास्पृक्कादेवीलतालघु । इत्यमर: ।
अड़िआबड़द	बैल	अनड्वान	पु.	उच्छागौवृषभोनड्वान् । इति शारदीनाम माला ।
अकचकायल	चौकना	चकितम्	न.	प्रियार्थे चकितं भीतिरस्थानेऽपिभयं महत् । इत्युज्वलनीलमणि:
अरवा चाउर	अरवा चावल	आतपतण्डुल:	पु.	इति शब्दकल्पद्रुमे अक्षतशब्देद्रष्टव्य: ।
आगि	आग	अग्नि:	पु.	अग्निर्वैश्वानरोवह्नि: । इत्यमर: ।
आवा	आपाक	आपाक:	पु.	कुम्भकारमृत्पात्रदहनस्थानम् । इति जटाधर: ।
आलू	आलू	आलु:	पु.	आलुर्गलन्ति कायास्यात्कन्दभेदे च भेलके । इतिविश्व: ।
आगाँ	आगे	अग्रम्	न	अग्रं पुरस्तादुपरिपरिमाणेपलस्य च । इत्यमर: ।
आङ	अंग	अङ्गम्	न.	अंगं प्रतीकोऽवयवोऽपघने । इत्यमर: ।
आङी	अङिया	अङ्गिका	स्त्री.	चोल: कञ्चुलिका कूर्पासिकाङ्गिका चऽकञ्चुके । इति हेमचन्द्र: ।
आन	दूसरा	अन्यम्	त्रि.	भिन्नार्थकाअन्यतर । इत्यमर: ।
आँखि	आँख	अक्षि	न.	लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी । इत्यमर: ।
आँशु	असुआ	आशु:	पु. न.	आशुर्व्रीहि: पाटलस्यादित्यमर: ।
आधा	आधा	अर्द्ध	न.	समांशो ऽर्द्धसमभाग: । इत्यमर: ।
आठ	आठ (८)	अष्ट	त्रि.	संख्याविशेष: नित्यबहुवचनान्त शब्दोऽयम् । व्याकरणम् ।
आशा	आशा	आशा	स्त्री.	आशातृष्णापिचायता । इत्यमर: ।
आम	आम	आम्र:	पु.	आम्रश्चूतोरसालोसौसहकारोऽतिसौरभ: । । इत्यमर: ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आक	मदार	अर्कः	पु.	अर्कपर्णो ऽथमन्दारः प्रतापः क्षीरकाण्डकः । इति राजनिर्घण्टः ।
आद	अदरख	आर्द्रकम्	न.	शृङ्गवेरञ्चमार्द्रकम् । इति राजनिर्घण्टः ।
आरु	अड़ुआ	आरुः	पु.	क्षीरारुकं क्षीरसेनं आरुकं वीरमित्यपि । इति राजनिर्घण्टः ।
आंठी	आंठी	अष्टिः	पु.	अष्टिर्बीजम् इत्युणादिकोशः ।
आंटी	आंटीआ	अष्टिका	स्त्री.	इति शब्दार्थचिन्तामणिः ।
आइ	आज	अद्य	[अ.]	वर्तमान दिनमित्यमरः अद्यश्वोवापरश्वोवा । रामायणे ।
आज्ञा	हुकुम	आज्ञा	स्त्री.	शिष्टिश्चाज्ञा च संस्थातु । इत्यमरः ।
आरा	आरा	क्रकचः	पु.	काष्ठविदारणशस्त्रविशेषः । इत्यमरः ।
आरि	डांड	आलिः	पु.	पर्य्यन्तभूः परिसरः सेतुरालौस्त्रियां पुमान् । इत्यमरः ।
आर्त	दुःखी	आर्तः	त्रि.	पीडितः यथा । आर्तानां मार्गमाणानां प्रायश्चित्तानि ये द्विजाः जानन्तो न प्रयच्छन्तिते अपितद्दोषभागिनः । इति प्रायश्चित्ततत्त्वम् ।
आख्या	नाम का संज्ञा	आख्या	स्त्री.	नामसंज्ञा । इत्यमरः ।
आढ्य	धनवान्	आढ्यः	त्रि.	धनवान् । इत्यमरः ।
आत्मा	आत्मा	आत्मा	पु.	आत्मालयः धृतिः बुद्धिः स्वभावः ब्रह्म-देहः । इत्यमरः ।
आदि	आदि	आदिः	पु.	पूर्वः प्रथमः । इत्यमरः ।
आधि	आधि	आधि	पु.	आधिः मनः पीडा । इति मेदिनी ।
आप्त	विश्वास करने वाला	आप्तः	पु.	प्रत्ययितः विश्वस्तः । इत्यमरः ।
आयु	आयु (उमर)	आयुः	पु. न.	जीवितश्चाप्यकालः । इति जटाधरः ।
आर्द्रा	आर्द्रा (नक्षत्र)	आर्द्रा	स्त्री.	अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गत-षष्ठनक्षत्रम् । इति ज्योतिषे ।
आस्था	हैसियत	आस्था	स्त्री.	आलम्बने आस्थानं अपेक्षा । इति मेदिनीकरौ ।
आंकी	आंकुश	अंकुशः	पु.	सृणिरङ्कुशः । इत्यमरः ।
आकाश	आकाश	आकाशः	पु. न.	वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी० । इत्यमरः ।
आकुल	व्याकुल	आकुलम्	न.	आकुलं व्याकुलं व्यस्तम् । इत्यमरः ।
आग्रह	आग्रह (हठ)	आग्रहः	पु.	आग्रहोऽनुग्रहासक्तिराक्रमः । इतिमेदनी।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आनन्द	आनन्द	आनन्दः	त्रि.	स्यादानन्दथुरानन्दः । इत्यमरः ।
आमील	खट्टा	आम्रपेषी	स्त्री.	शुष्काम्र खण्डम् । अस्यागुणाः राजवल्लभेद्रष्टव्यः ।
आरम्भ	आरम्भ (शुरु)	आरम्भः	पु.	प्रक्रमोपक्रमारम्भः इत्यमरः ।
आकार	आकार	आकारः	पु.	अभिप्रायानुरूपचेष्टाविष्करणम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आकांक्षा	आकांक्षा	आकांक्षा	स्त्री.	इच्छाकाङ्क्षास्पृहेहा । इत्यमरः ।
आकृति	आकार	आकृतिः	स्त्री.	रूपमाकृतिजातिश्च । इति मेदिनी ।
आकन्द	रोना	आक्रान्दः	पु.	आक्रन्दरोदनमाह्वानम् । इति मेदिनी ।
आचार	तरीका	आचारः	पु.	आचारचरितं शीलं वृत्तं चरणमित्यपि । इति हेमचन्द्रः ।
आँकुर	अंकुर	अंकुरः	पु.	अङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि इत्यमरः ।
आँकुश	अंकुश	अङ्कुशः	न. पु.	अङ्कुशोऽस्त्रीसृणिः स्त्रियामित्यमरः ।
आङन	अङना	अङ्गनम्	न.	अङ्गनं प्राङ्गणेयाने । इति विश्वः ।
आङ्‌र	अंगुली	अङ्गुलिः	स्त्री.	अङ्गुल्यः करशाखास्युः । इत्यमरः ।
आङ्ठ	उङ्गुली	अङ्गुष्ठः	पु.	पुंस्यङ्गुष्ठप्रदेशिनी । इत्यमरः ।
आँचर	अञ्चल	अञ्चलः	पु.	वस्त्रस्यान्तोमतोऽञ्चलः इति हलायुधः ।
आँजन	अंजन	अञ्जनम्	न.	कज्जलमञ्जनमहिलम् । इति हलायुधः ।
आँजुर	अंजुरी	अञ्जलिः	पु.	अञ्जलिजलमिवसुन्दरि यौवनमेतद्विजानीहि । वृतमपि निपतति निरवं दत्तमिदं कार्य्यतामेति । इत्युद्भटः ।
आश्चर्य्य	आश्चर्य्य	आश्चर्यम्	न. पु.	विस्मयोद्भुतमाश्चर्य्यम् । इत्यमरः ।
आश्रम	आश्रम	आश्रमः	पु.	शास्त्रोक्त धर्म्मविशेषः ब्रह्मचर्य्यं, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास । इति स्मृतिः।
आहार	आहार	आहारः	पु.	जेमनं लेहआहारो । इत्यमरः ।
आलस्य	आलस्य	आलस्यः	पु.	आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः । इत्यमरः ।
आश्विन	आश्विन (महीना)	आश्विनः	त्रि.	आश्विनेत्वाश्वयुजेषा । इति हेमचन्द्रः ।
आसक्त	आशिक	आसक्तः	स्त्री.	आसक्तिविशिष्टः प्रसितस्तत्परासक्तः । इत्यमरः ।
आषाढ	असाढ़	आषाढः	त्रि.	आषाढशशुचिस्यादिति । हेमचन्द्र ।
आपत्ति	आपत्ति	आपत्तिः	पु.	आपत्तिर्दोषः । इति हेमचन्द्रः ।
आएल	आगत	आगतम्	न.	आयातमागतं उपस्थितमिति । शब्दकल्पद्रुमः ।
आन्हर	अन्धा	अन्धः	त्रि.	किलासीसिध्मलोऽन्धोदृक् । इत्यमरः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आचार्य्य	आचार्य्य	आचार्य्यः	पु.	मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य्यः । इत्यमरः ।
आच्छन्न	घेरा हुआ	आच्छन्नम्	न.	आच्छादितमावृतम् । इत्यमरः ।
आरती	आरती	आरात्रिकम्	त्रि.	आरात्रिक शुभेपात्रे त्रिपञ्चनिक वार्तिकम् । इति हरिभक्ति विलासे ।
आतिथ्य	आतिथ्य	आतिथ्यम्	न.	अतिथ्यर्थं वस्तु अतिथिभक्षणादिद्रव्यम् । इत्यमरः ।
आतुर	आतुर	आतुरः	पु.	आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः । इत्यमरः ।
आयास	मेहनत	आयासः	पु.	श्रमः प्रयासो आयासः । इतिः हेमचन्द्रः ।
आरोग्य	आरोग्य	आरोग्यम्	न.	आरोग्यन्त्वनामयम् । इति राजनिर्घण्टः ।
आलाप	बोलना	आलापः	पु.	स्यादभाषणमालापः । इत्यमरः ।
आबल्य	कमजोर	आबल्यम्	न.	अबलस्यभावः दौर्बल्यम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आशय	अभिप्राय	आशयः	पु.	अभिप्रायः आशयः । इति विश्वमेदिन्यौ ।
आसन	आसन	आसनम्	न.	पीठमासनम् । इत्यमरः ।
आसन	आसन (काष्ठ)	आसनः	पु.	सर्जकासनबन्धुकपुष्पप्रियकजीवकाः । इत्यमरः ।
आदमी	आदमी	मनुष्यः	पु.	मनुष्यामानुषामर्त्या । इत्यमरः ।
आशीष	आशीर्वाद	आशीः	स्त्री.	आशीर्वचन मङ्गलप्रार्थना । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आश्रमी	आश्रमी	आश्रमिकः	पु.	आश्रमयुक्तश्चाश्रमिकः । इति शब्दरत्नावली ।
आश्रय	ठेकाना	आश्रयः	पु.	उच्छिद्यमानोवलिनाआश्रयेद्बलवत्तरम् । इति युक्तिकल्पतरौ । १ अध्यायः ।
आतङ्क	डर	आतङ्कः	पु.	आतङ्कोरोगभेदे च शङ्कासन्तापकोपि च । इति मेदिनी ।
आंकड़	आंकड़	कर्करम्	न.	चूर्णजनकक्षुद्रपाषाणखण्डम्—चूर्णखण्डम् । इतिहारावली ।
आस्तिक	आस्तिक (ऋषी)	आस्तिकः	पु.	मुनि विशेषः । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आस्तिक	आस्तिक	आस्तिकः	त्रि.	नास्तिकभिन्नः । ईश्वरोऽस्तीतिवादी । हेमचन्द्रः ।
आचारी	आचारी	आचारी	पु.	आचारविशिष्टेत्री । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आटोप	घमंड करते है	आटोपः	पु.	आटोपोदर्पः । इति हेमचन्द्रः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आदर	सम्मान्	आदरः	पु.	आदरः समादरः सम्मानः । इति शब्द-कल्पद्रुमः ।
आधार	अवलम्ब	आधारः	पु.	आधारोऽधिकरणम् । इति व्याकरणम् ।
आपत्	विपत्	आपत	स्त्री.	आपत्सुमूढोऽप्युतिमान् यः सम्यक् प्रति-पाद्यते । शब्दकल्पद्रुमः ।
आमोद	आमोद	आमोदः	पु.	अतिदूरगामिगन्धः । इत्यमरः ।
आलय	शिवालादि	आलयः	पु.	इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आचमन	आचमन	आचमनम्	न.	कृत्वाथशौचं प्रक्षाल्यपादौहस्तौ च मृज्जलैः । निबद्धशिखआसीनोद्विजमा-चमनं चरेत् । इति पाराशरः ।
आराधना	आराधना	आराधना	स्त्री.	आराधना साधना च सेवाभक्तिः प्रसा-दना इति हेमचन्द्रः ।
आचरण	आचार	आचरणम्	न.	आचारः व्यवहारः आचरणम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आशीर्वाद	आशीर्वाद	आशीर्वादः	पु.	आशीर्वचनं मङ्गलप्रार्थना । इति शब्द-कल्पद्रुमः ।
आलकति	आलकती	आलस्यम्	न.	इति शब्दकल्पद्रुमः ।
आनठाम	दूसरा जगह	अन्यत्र	[अ.]	अन्यत्र निधनात्पत्युः पत्नीकेशान्नवाप-येदिति स्मृतिः ।
आबनूस	आबनूस	स्फुर्जकः	पु.	तिन्दुकः स्फुर्जकः कालस्कन्धम् । इत्य-मरः ।
आमदनी	आमदनी	आयः	पु.	आयोधनागमः प्राप्तिर्लाभश्चेति । हला-युधः ।
आडम्बर	आडम्बर	आडम्बरः	पु.	आडम्बररः समारम्भः गजगर्जिततूर्य्ययो-रितिकोशान्तरम् ।
आतातयी	आततायी	आततायी	त्रि.	आततायि बधोद्यते । इत्यमरः ।
आ वरस	नमूना	आदर्शः	पु.	आदर्शः प्रतिपुस्तकम् । इति मेदिनी ।
आनुपूर्वी	जैसा को तैसा	आनुपूर्वी	स्त्री.न.	आनुपूर्वीअनुक्रमः इत्यमरः ।
आभ्युदय	अभ्युदय सम्बन्धी	आभ्युदयिकम्	न.	आभ्युदयो विवाहादिस्तदर्थं श्राद्ध आभ्युदयिकम् । इति श्राद्धतत्वम् ।
आयुरदा	उम्र	आयुः	पु.	जीवितं नित्यगोऽह्यायुः । इति शब्द-कल्पद्रुमः ।
आवरण	परदा	आवरणम्	न.	आच्छादनमावरणम् । इति हेमचन्द्रः ।
आवश्यक	आवश्यक	आवश्यकम्	न.	आवश्यक पर्वादि क्रियमाणस्य नित्य-नैमित्तिकत्वम् ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
आसासोटा	आसासोटा	परिघः	पु.	परिघः परिघातनः। इति हेमचन्द्रः।
आघलेर	आघालेर	शरावर्द्धम्	न.	इति शब्दार्थ चिन्तामणिः।
आम्रे डन	आम्रे डन	आम्रे डितम्	न.	आम्रे डितं द्विस्त्रिरुक्तम्। पञ्चतत्त्व-प्रकाशः।
आइधरि	आज तक	अद्यावधिम्	न.	अद्यारभ्य वर्तमानदिनपर्य्यन्तम्। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आज्ञाकारी	आज्ञाकारी	आज्ञाकारी	त्रि.	इति शब्दकल्पद्रुमः।
आकाशदीप	आकाशदीया	आकाशदीपः	पु.	आकाशदीपं यो दद्यात् मासमेकं हरिं प्रति। इति निर्णयसिन्धौ।
आकाशवाणी	आकाशवाणी	आकाशवाणी	स्त्री.	अशरीरिणावाक् दैववाणी। इति पुराणम्।
आतशबाजी	आतशबाजी	अग्निलेखा	स्त्री.	अग्निक्रीडाअग्निलेखाश्वपुष्पः। इति शब्दकल्पद्रुमः।
आरतकपात	आरत का पत्ता	आलक्तकम्	न.	अनुच्छ्रताऽग्नाकृमिजामथालक्तौतुलसद्रसः इति हेमचन्द्रः।
आँखिगुड़रनाइ	आँख टेढा करना	अदृष्टिका	स्त्री.	सरोषवक्रदृष्टिरदृष्टिका। इति शब्द-रत्नावली।
आङभुटकनाइ	रोमांच	रोमाञ्चः	पु.	रोमाञ्चोरोम हर्षणम्। इत्यमरः।
इः	इ	इः	पु.	इः सन्तापोदुःखभावनाकोपयत्र। शब्द-रत्नावली।
इन्द्र	इन्द्र	इन्द्रः	पु.	देवराजः। शब्दकल्पद्रुमः।
इन्द्री	इन्द्रिय	इन्द्रियम्	त्रि.	गोचरा इन्द्रियार्थाश्च। इत्यमरः।
इच्छा	कामना	इच्छा	त्रि.	इच्छाकांक्षास्पृहेहा। इत्यमरः।
इष्ट	इष्ट (मित्र)	इष्टम्	[अ.]	इष्टमाशंसितं प्रियम्। मेदिनी।
इति	इति	इति	[अ.]	इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु। इत्यमरः।
इज्जड़	इज्जल (वृक्ष)	इज्जलः	पु.	निचुलेइज्जलहिज्जला। इति रभसः।
इजोत	उजियारा	उद्योतः	पु.	आलोकोद्योतज्योतिः। इति हलायुधः।
इनार	कूआ	कूपः	पु.	पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूपः। इत्यमरः।
इचना	इच्चा (माछ)	इञ्चाकः	पु.	मत्स्यविशेषः। इति वैद्यकम्।
इच्छुक	चाहनेवाला	इच्छुः	त्रि.	इच्छतीतिइच्छुः इति व्याकरणम्।
इतर	नीच	इतरः	त्रि.	क्षुल्लकस्त्वेतरश्चसः। इत्यमरः।
इनाम	इनाम	पारितोषिकम्	न.	परितोषजनकद्रव्यं यथाममापि चन्द्र-शेखर शरासना रावण प्रथमयादिनः पारितोषिकं धारयतीतिमुरारिः।
इरांक	इरांक (देश)	ऐरांकः	पु.	तन्मध्येचोत्तरेदेशेऐरांकः परिकीर्तितः। इतितन्त्रम्।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
इंगुदी	इंगुदी (फल)	इंगुदी	स्त्री.	इंगुदीफलपिण्याकम् । इतिवाल्मीकिये।
इन्द्रज	इन्द्रजव	इन्द्रयवः	पु.	कलिङ्गेन्द्रयवः पुमान् । इत्यमरमाला।
इज्जति	इज्जत	प्रतिष्ठा	स्त्री.	इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
इन्द्रलुप्त	खालित्य	इन्द्रलुप्तम्	न.	केशघ्नोइंद्रलुप्तकः इतिराजनिर्घण्टः ।
इजोरिआ	चानमी	चन्द्रिका	स्त्री.	चन्द्रिकाकौमुदी ज्योत्स्ना । इत्यमरः ।
इसगंद	इसगंद (मूल)	पुलिकमूलम्	न.	बद्धपुलिकमूलस्येत्यादिवर्णकृत्यम् ।
इतस्ततः	यहाँ वहाँ	इतस्ततः	[अ्य.]	इतस्तोधावमानः मुरथोरथिनांवरः । इति महाभारते ।
इतिहास	इतिहास	इतिहासः	पु.	इतिहासः पुरावृत्तः । इत्यमरः
इन्द्रदारु	इन्द्रदारु	इन्द्रदारुः	पु.	इन्द्रदारुर्देववृक्षः । इतिभावप्रकाशः ।
इसपात	इसपात (लोहा)	काललोहः	पु.	शालिग्रामौषध शब्दसागरः ।
इन्द्रजाल	इन्द्रजाल	इन्द्रजालम्	न.	इतिशब्द कल्पद्रुमेद्रष्टव्यः ।
इन्द्रकमल	इन्द्रकमल (फूल)	इन्द्रकमलम्	न.	पुष्पविशेषः । इतिवृद्धाः ।
इसफगोल	इसबगोल	ईषद्गोलम्	न.	इषद्गोलं स्निग्धबीजं स्वल्पजीरकं-कीर्तितः इषद्गोलंपरंवृष्यं मधुरंग्राहि-शीतलम् इतिशालिग्रामनिर्घण्टः ।
इशारा	इशारा	चेष्टा	स्त्री.	इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
ई	ई	एतद्	त्रि.	पुरोवर्तिवाचकनामसर्वशब्दः । इति-व्याकरणम् ।
ईर्ष्या	ईर्षा	ईर्ष्या	स्त्री.	अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूयातु । इत्यमरः ।
ईंट	ईंटा	ईष्टका	स्त्री.	नेष्टकारचितेपितृन् सन्तर्पयेदितिश्राद्ध-तत्वम् ।
उक्ति	कथन	उक्तिः	स्त्री.	व्याहारउक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः । इत्यमरः ।
उष्ण	गरम	उष्णः	पु.	उष्णः आतपः । इति हेमचन्द्र ।
उग्र	कड़ा	उग्रः	त्रि.	उग्रम् उत्कटम् राद्रम् । इत्यमरोमेदि-नीच ।
उचक्का	उचक्का	चिल्लाभः	पु.	प्रसह्यचोरः चिल्लाभः । इतित्रिकाण्-शेषः ।
उच्छेद	उच्छेद	उच्छेदः	पु.	उच्छेदंजन्मनः कर्तुमेधिशान्तस्तपोधन। इतिभारविः ११ सर्गः ।
उत्ताप	उताप	उत्तापः	पु.	तेजः उष्मा सन्तापः । इति शब्दकल्प-द्रुमः ।
उद्दण्ड	निडर	उद्दण्डः	पु.	उद्दण्डचण्डकिरणं ननुशारयामि । इति महानाटकम् ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उद्गम	निकास	उद्गमः	पु.	यौवनोद्गमनितान्त शङ्किता । इति प्राचीनाः ।
उद्गार	हर्ष	आनन्दः	पु.	इति वृद्धाः ।
उलूक	उलूक (पक्षी)	उलूकः	पु.	नोलूकोप्यवलोकते यदि दिवासूर्य्यस्य किं दूषणम् । इति चाणक्यम् ।
उड़नाइ	उड़ना	उड्डीनम्	न.	प्रडीनोड्डीनसण्डीनान्येताः खगगति क्रियाः । इत्यमरः ।
उल्लास	आनन्द	उल्लासः	पु.	आह्लादः प्रकाशः उल्लासश्च । शब्द-कल्पद्रुमः ।
उत्तम	अच्छा	उत्तमः	पु.	प्रवेकानुत्तमोत्तमाः । इत्यमरः ।
उत्तर	जबाब	उत्तरम्	न.	प्रतिवाक्योत्तरेसमे । इत्यमरः ।
उत्तर	उत्तर (दिशा)	उत्तरः	त्रि.	दिशाविशेषः । उर्द्धः । उदीची उत्तरः । इति मेदिनी ।
उत्तान	उतान	उत्तानम्	न.	उत्तानमूर्द्धमुखशयितम् । इति मेदिनी ।
उत्पति	उद्भव	उत्पत्तिः	स्त्री.	अनिरुत्पत्तिरुद्भवः । इत्यमरः ।
उत्सव	उछाह	उत्सवः	पु.	महउत्सवउद्धव । इत्यमरः ।
उदय	उदय	उदयः	पु.	उदयः पूर्वपर्वतः । इत्यमरः ।
उदार	दाता	उदारः	पु.	दक्षिणेसरलोदारौ । इत्यमरः ।
उखरि	ऊखल	उदूखलम्	न.	उदूखलमुलूखलम् । इत्यमरः ।
उद्वेग	उद्वेग	उद्वेगः	पु.	मदउद्वेगउद्भ्रमे । इत्यमरः ।
उद्योग	उद्योग	उद्योगः	पु.	उद्योगोत्साह केपिच । इति जटाधरः ।
उपाय	यत्न	उपायः	पु.	उपायश्चोपगतिः । मेदिनी ।
उत्सर्ग	उत्सर्ग	उत्सर्गः	पु.	त्यागोविहापितं दानमुत्सर्जन विसर्जने । इत्यमरः ।
उरीद	उरद	माषः	पु.	कुरुविन्दः धान्यवीरः वृषाकरः पित्र्य । पितृभोजनः मांसलः बलाढ्यः । इति राजनिर्घन्टः ।
उज्जर	सफेद	उज्वलम्	न	उज्वलं विशदं दीप्तम् । इति मेदिनी ।
उड़ीस	खटमल	मत्कुणः	पु.	मत्कुणः रक्तपायी रक्ताङ्गः मञ्चका-श्रयः । इति राजनिर्घन्टः ।
उच्छ्राय	उन्नति	उच्छ्रायः	पु.	उच्छ्रायः उच्चता उच्छ्रयः । इत्यमरः ।
उबाति	रसद	भोजन संपादनम्	न	भोजनसंपादनंददौ । इति पुराणम् ।
उनतीस	उनतीस (२६)	ऊनत्रिंशः	पु.	संख्याविशेषः । ज्योतिषम् ।
उठल	उठा हुआ	उत्थितः	पु. न.	उच्छ्रितउत्थितास्त्वमी । इत्यमरः ।
उझट	उझट	उद्भटः	त्रि.	प्राचीननिर्म्मितपद्यविशेषः । इति वृद्धाः ।
उन्नैस	उन्नैस (१६)	ऊनविंशतिः	स्त्री.	ऊनविंशतिदास्यमानपिण्डस्थानानि । इति तिथ्यादि तत्वम् ।
उदास	उदासीन	उदासीनः	पु.	विजगीषोः शत्रुमित्रभूमितोव्यवहितः व्यवहितत्वादेवनोपकारी नाप्यपकारी केवलमुदासीनइव । इति भरतः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उसर	उसर	उषरः	पु.	ऊषवानूषरौद्वावप्यन्यलिङ्गौस्थलंस्थली। इत्यमरः।
उनाह	भाफ देना	उनाहः	पु.	इति वैद्यकपरिभाषा।
उलोँच	चानदी	उल्लोचः	पु.	चन्द्रोदयवितानं स्यादुल्लोचः चन्नकस्तथा। इति हलायुधः।
उनटा	उल्टा	विपरीतः	त्रि.	तत्पर्य्यायः। प्रतिसव्यः अपसव्यः विलोमकः। इति जटाधरः।
उसिना	उसना चावल	द्विः स्विन्नान्नम्	न.	द्विः स्विन्नमन्नं पृथुकं शुद्धं देशविशेषके। नात्यन्तप्रशस्तं विप्राणां भक्षणे च निवेदने। इति ब्रह्मवैवर्त्ते ब्रह्मखण्डम्।
उकासी	खासी	काशः	पु.	काशिकाक्षवथुः काशः। इति शब्दरत्नावली।
उतरी	उत्तरीय	उत्तरीयम्	न.	सम्व्यानमुत्तरीयञ्च। इत्यमरः।
उबेर	प्रकाश	प्रकाशः	पु.	प्रकाशोद्योतआतपः। इत्यमरः।
उचित	उचित	उचितम्	त्रि.	विदितम् न्यस्तम् परिमितम् युक्तम्। इति हेमचन्द्रः।
उच्छन्न	किसी के वश में न हो	उच्छन्नम्	त्रि.	उच्छन्नम् नष्टम्। इति भगवद्गीता।
उत्कट	कडा	उत्कटम्	त्रि.	तीव्रम् मतम् उत्कटम्। इति मेदिनी।
उत्कण्ठा	इच्छा	उत्कण्ठा	स्त्री.	इष्टलाभे कालक्षे पासहिष्णुता इत्यमरः।
उत्तीर्ण	पास	उत्तीर्णम्	त्रि.	मुक्तम् पारगतम् इति शब्दकल्पद्रुमः।
उत्पन्न	पैदाइस	उत्पन्नम्	त्रि.	बृद्धिमत्प्राप्ततीलत्वा। इत्यमरः।
उत्पात	अरिष्ट लक्षण	उत्पातः	त्रि.	अजन्यं क्लीवमुत्पातउपसर्गः समंत्रयम्। इत्यमरः।
उत्साह	उत्साह	उत्साहः	पु.	उत्साहोऽध्यवसायश्च। इत्यमरः।
उत्सुक	अभिलाषा	उत्सुकः	पु.	वाञ्छितकर्म्मोद्यतः इष्टार्थोद्युक्तः उत्सुकः। इत्यमरः।
उगल	उदय का समय	उद्गतः	त्रि.	उदितः। उद्गतः प्राप्तोदयः। इति मेदिनी।
उद्धत	उद्दण्ड	उद्धतम्	त्रि.	अविनीतमुद्धतम्। इति हेमचन्द्रः।
उद्यम	परिश्रम	उद्यमः	पु.	गुरणमुद्यमे। इत्यमरः।
उद्योगी	उद्योगी (उपाय)	उद्योगी	त्रि.	उद्यागविशिष्टः उद्यमी। उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैतिलक्ष्मी। इति हितोपदेशः।
उद्विग्न	चञ्चल	उद्विग्नः	पु.	निमग्नोद्विग्नसंह्लीणैः। इति भट्टिः।
उधार	उधार	उद्धारः	पु.	उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु। इत्यमरः।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उन्मत्त	पागल	उन्मत्तः	पु.	उन्मत्तउन्मादवान् । इत्यमरः ।
उन्माद	उन्माद	उन्मादः	पु.	उन्मादश्चित्त विभ्रमः । इत्यमरः ।
उपमा	सदृश्य	उपमा	स्त्री.	उपमानम् सादृश्यम् । इत्यमरः ।
उपाधि	सम्मान	उपाधिः	पु.	छलम् विशेषणम् उपाधिः । इति मेदिनी ।
उपेक्षा	त्याग	उपेक्षा	स्त्री.	उपेक्षा अस्वीकारः त्यागः । इति हेमचन्द्रः ।
उच्चारण	उच्चारण	उच्चारणम्	न.	उच्चारणम् कथनम् वाङ्निष्पत्तिकरणम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
उपद्रव	उपद्रव	उपद्रवः	पु.	उपद्रवोत्पातः । इति हलायुधः ।
उबटन	अबटन	उद्वर्तनम्	न.	उद्वर्तनोत्सादनेद्वे । इत्यमरः ।
उघाड़ल	उघारना	उद्घाटितः	पु.	कृतोद्घाटनम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
उगरल	उबरा	उद्वर्तः	पु.	उद्वर्तोहिग्रन्थः । समधिकफलमाचष्टे । इति व्याकरण टीका ।
उपवास	लंघन	उपवासः	पु.	औपवस्तंतूपवासोविवेकः पृथगात्मता । इत्यमरः ।
उपहत	अपवित्र	उपहतः	पु.	अशुद्धद्रव्यं । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
उपहास	निन्दा	उपहासः	पु.	उपहासाय किं नस्यात् असत्सङ्गो मनीषिणाम् । इति मलमास तत्वम् ।
उपार्जन	पैदा करना	उपार्जनम्	पु.	अर्जनम् धनाद्याहरणम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
उल्कापात	उल्कापात	उल्कापातः	पु.	उल्कापातोदिग्दाहः परिवेषस्तथैव च । इति अद्भुत प्रकरणम् ।
उपचार	उपचार	उपचारः	पु.	रोगप्रतीकारः उपचारश्चोपचर्या चिकित्सारुक्प्रतिक्रिया । इति राजनिर्घण्टः ।
उपहार	बकसीश	उपहारः	पु.	उपहारस्त्वोपग्राह्यः उपानयनप्रदेयानम् । इत्यमरः ।
उनी वस्त्र	पशमीना	राङ्कवम्	न.	राङ्कवं मृगरोमजम् । इत्यमरः ।
उचरीङ्	झींगुर	भृङ्गारी	स्त्री.	भृङ्गारीझीरुकाचीरी । इत्यमरः ।
उनचालीस	उनचालीस (३९)	ऊनचत्वारिंशत्	स्त्री.	संख्याविशेषः । इति ज्योतिषम् ।
उषाकाल	भोर का समय	उषः	पु.	उषाप्रभातं गोसर्गः । इति त्रिकाण्ड शेषः ।
उकाडकी	उल्का भ्रमण	उल्काभ्रमणम्	न.	यद्येवं पूर्वदिन एवं प्रदोषव्यापिन्यमावास्या तदा पूर्वदिन एवं श्राद्धमकृत्वापि उल्कादानं कर्त्तव्यम् । इति शब्दकल्पद्रुमः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उझिलल	उझिलना	उज्झितम्	त्रि.	उत्सृष्टमुज्झितं त्यक्तं वर्जितं चेति-कीर्तितम् । इति हलायुधः ।
उठओनाइ	उठाना	उन्नमनम्	न.	ऊर्द्ध्वप्रापणउन्नयनं वितर्कः । इति हेम-चन्द्रः ।
उपगत	उपलाता	उपगतः	त्रि.	समाहितोपश्रुतोपगतम् । इत्यमरः ।
उपस्थित	उपस्थित	उपस्थितः	त्रि.	उपस्थितश्चोपनतः उपसन्नः । इति हेमचन्द्रः ।
उपराग	उपराग	उपरागः	पु.	उपरागोउपलम्भः । कोशान्तरम् ।
उत्कण्ठित	उत्कण्ठा	उत्कण्ठितम्	त्रि.	उत्कण्ठायुक्तम् । उत्कम् उत्सुकम् उन्मनः । हेमचन्द्रः
उपरोंझ	उपराचढ़ी	अहमहमिका	स्त्री.	अहमहमिकातुसास्यात्परस्परं योभव-त्यहङ्कारः । इत्यमरः ।
उलहन	उलहना	उपालम्भः	त्रि.	यः सनिन्द उपालम्भः । इत्यमरः ।
उपार्जन	पैदा करना	अर्थ्यकः	पु.	अतएव वशिष्ठेनज्येष्ठस्यां शङ्खमभि-धायाय्र्यकस्यां शङ्खमभि हितम् । इति दायभागः ।
उच्चाटन	जी न लगना	उच्चाटनम्	न.	षट्कर्म्मान्तर्गताभिचारकर्म्मविशेषः । उच्चाटनं स्वदेशादेभ्रं शनम्परिकीर्ति-तम् । इति शारदा तन्त्रम् ।
उद्यापन	उद्यापन	उद्यापनम्	न.	उद्यापनं दीपदानं व्रतान्येतानिकार्तिके । इति शब्दकल्द्रुमः ।
उच्चैःश्रवा	इन्द्र का घोड़ा	उच्चैः श्रवा	न.	इन्द्रघोटकः । इत्यमरः ।
उगहनि	उगहन	उद्वाहिनी	पु.	उद्वाहिनीरज्जुः । इति मेदिनी ।
उनचास	उनचास (४९)	एकोनपञ्चाशत्	त्रि.	इति ज्योतिषे ।
उनसट्ठि	उनसठ (५९)	ऊनषष्ठिः	स्त्री.	इति ज्योतिषे ।
उनासी	उनासी (७९)	एकोनाशीतिः	स्त्री.	इति ज्योतिषे ।
उतरनाइ	उतरना	उत्तरणम्	न.	नद्यादिपारगमनम् । शब्दकल्पद्रुमः ।
उपाड़नाइ	उपारना	उत्पाटितम्	न.	उत्पाटितम् उन्मूलितम् उत्खातम् । जटाधरः ।
उपनयन	यज्ञोपवीत संस्कार	उपनयनम्	न.	उपनायः उपनयः आनयः उपनयनम् । इति हेमचन्द्रः ।
उदाहरण	उदाहरण	उदाहरणम्	न.	उदाहरणम् उपोद्घातः उदाहारः । इति शब्दरत्नावली ।
उदरामाछ	मछली	उद्रुसाक्षी	स्त्री.	उद्वृसाक्षीवृहत्कुक्षीकूर्म्मरुपास्वयं स्मृता । इति पत्तपीयूषलता ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
उगिलनाइ	उगलना	उद्गतम्	त्रि.	उद्गान्तम् छर्दितवस्तु । इत्यमरः ।
उगहनाइ	उगहना	उद्ग्रहणम्	त्रि.	उद्ग्रहणम् । इति कोशान्तरम् ।
उत्तराखाढ	उत्तराखाढ	उत्तराषाढा	स्त्री.	अश्विन्यादिसप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गतैकविंशति नक्षत्रम् । इति ज्योतिषे ।
उजराकमल	सफेद कमल	पुण्डरीकम्	न.	पुण्डरीकं सिताम्भोज । इत्यमरः ।
उलबाचाउर	चावल भुजिया	भृष्टतण्डुलः	पु.	सुस्निग्धः कफहारकः पित्तक्षोभृष्टतण्डुलः । इति राजवल्लभः ।
उत्तरफल्गुनी	उत्तरफल्गुनी	उत्तरफल्गुनी	स्त्री.	अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गतद्वादशनक्षत्रम् । इति ज्योतिषे ।
उत्तरभाद्रपद	उत्तरभाद्रपद	उत्तरभाद्रपदा	स्त्री.	अश्विन्यादिसप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गतषड्विंशनक्षत्रम् । इति ज्योतिषे ।
ऊक	उल्का	उल्का	स्त्री.	तेजः पुञ्जः उल्काज्वालास्यनिर्गता । इति हलायुधः ।
ऊद	ऊदबिलाव	उद्रः	पु.	उद्रस्तुजलमार्जारः पानीयनकुलोवसी । इति हेमचन्द्रः ।
ऊँन	ऊन	ऊर्णा	स्त्री.	ऊर्णमेषादिलोम्निस्यादित्यमरः ।
ऊस	सज्जी मिट्टी	ऊषः	पु.	स्यादूषः क्षारमृत्तिका । इत्यमरः ।
ऊँट	ऊँट	उष्ट्रः	पु.	उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः । इत्यमरः ।
ऊँच	ऊँचा	उच्चः	त्रि.	उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे । इत्यमरः ।
ऊपर	ऊपर	ऊर्द्धम्	न.	उपरिष्टादथवूर्द्धम् । इति हलायुधः ।
ऋतु	छ ऋतु	ऋतुः	त्रि.	षडमीऋतवः पुंसि । इत्यमरः ।
ऋण	कर्ज	ऋणम्	न.	स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।
ऋषि	मुनी	ऋषिः	पु.	ऋषिः सत्यवचाः शापास्त्रः । इति त्रिकाण्डशेषः ।
ऋग्वेद	ऋग्वेद	ऋच्	स्त्री.	वेदविशेषः ऋग्वेद इत्यमरः ।
ॠ	ॠ	ॠ	न.	रक्षा । इति मेदिनी ।
ऌ	ऌ	ऌ	[अ.]	एकाक्षर कोशः ।
ॡ	ॡ	ॡ	स्त्री.	एकाक्षर कोशः ।
एक	एक (१)	एकः	त्रि.	आदि संख्या इति मेदिनी ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
एड़ी	एड़ी	पार्ष्णिः	पु. स्त्री.	पार्ष्णिस्तुघुटयोरधः । इति हेमचन्द्रः ।
एत्ता	सीमा	इयत्ता	स्त्री.	इयतोभावः । सीमा परिमाणम् संख्या । इति शब्दकल्पद्रुमः ।
एते	इतना	एतावत्	त्रि.	एतत्परिमाणम् । इति व्याकरणम् ।
एकान्ती	एकान्त	मन्त्रः	पु.	गुप्तवादेरहसि कर्त्तव्यावधारणे मन्त्रः । वेदांशे गुप्तवादे च । इति हैमः ।
एकाङ्गी	एकाङ्गीदवा	मुरा	स्त्री.	दैत्यागन्धकुटी मुरा । इत्यमरः ।
एकट्ठा	एकत्र	एकत्र	(अ.)	एकस्मिन् शयने सरोरुहमुखी । इति अमरुशतकम् ।
एकाग्र	एकाग्रचित	एकाग्रः	त्रि.	एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्र्यं कायनावपीत्यमरः ।
एम्हर	इधर	इतः	(अ.)	ताडितास्तेन वीरेण फणीन्द्रास्त्रासमगताः । इतस्ततस्तेतन्मुक्तागताः पाताल-भुञ्जवाः । इति पार्श्वे ।
एखन	अभी	एतत्क्षणम्	न.	एतत्क्षणे महाबाहोरावणं तंजहिष्यसि । इति वाल्मीकये ।
एकसर	एकाकी	एककः	त्रि.	साधारणन्तुसामान्यमेकाकीत्वेकएककः । इत्यमरः ।
एकादशी	एकादशी	एकादशी	स्त्री.	उपोष्यैकादशीराजन् यावदायुः प्रवृत्तिभिः । इत्येकादशी तत्त्वम् ।
एकमौन	एक मन	खारी	स्त्री.	खारीद्रोणचतुष्टयम् । इति स्मृतिः ।
एकोद्दिष्ट	एकोद्दिष्टश्राद्ध	एकोद्दिष्टम्	न.	पूर्वाह्णेमातृकं श्राद्धमपराह्णेतुपैतृकम् । एकोद्दिष्टन्तुमध्याह्ने प्रातर्वृद्धि निमित्तकम् । इति ब्रह्मपुराणम् ।
एकभुक्त	एक समय का भोजन	एकभुक्तम्	न.	दिनार्द्धसमयेऽतीते भुज्यते नियमेनयत् । एकभुक्तमितिप्रोक्तं रात्रौतन्नकदाचनः । इति स्कान्दे ।
एकवयस	समान उम्र	वयस्यः	पु.	वयस्यः स्निग्धः सवयाः । इत्यमरः ।
एककनिघा	१६ माशा	कर्षः	पु. न.	षोडशमाषपरिमाणम् कर्षोऽस्त्रः इत्यमरः ।
एकादशाह	एकादशाह	एकादशाहः	पु.	एकादशदिनेशय्याकाञ्चनपुरुषद्विजदम्पती-

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
				पूजनकपिलादान वृषोत्सर्गान् कृत्वा एकादशाहश्राद्धं कुर्य्यात् । इति श्राद्ध-विवेकः ।
एम्हर ओम्हर	इधर उधर	इतस्ततः	(अ.)	ईं महत्रे रथानांसमजानामयुतंरणे । इतस्ततोधावमानः सुरथो रथिनम्वरः । इ. ज. भा. आ. प. २ अध्यायः ।
एगारह	एगारह ११	एकादश	त्रि.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकैस	इक्कीस २१	एकविंशति	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकतीस	इकतीस ३१	एकत्रिंशत्	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकतालीस	एकतालीस	एकचत्वारिंशत्	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकावन	एकावन ५१	एकपंचाशत्	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकसठि	एकसठ ६१	एकषष्ठिः	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकहत्तरि	एकहत्तर ७१	एकसप्ततिः	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकासी	एकासी ८१	एकाशीतिः	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
एकानबे	एकानबे ९१	एकनवतिः	स्त्री.	संख्या विशेषः । इति ज्यौतिषम् ।
ऐंठ	जूठा	उच्छिष्टम्	न.	पुष्ठपुच्छिष्टमिति मेदिनी ।
ऐंठा	बखना	पट्टडोरम्	न.	पट्टडोर द्वितीयायाकेवलं यमहेतवे । इति दुर्गा पूजा विधिः ।
ऐला	इला	चर्मकीलम्	न	चर्म्मकीलं जतुमणि मशकान्तिलकालकान् । उत्कृत्यशस्त्रेण
			स्त्री.	दहेत्क्षाराग्निभ्यामशेषतः । इतिभाव-प्रकाशः ।
ऐहब	सधवा	सधवा		नस्पृशेत्तिलदर्भादिवसधवानुकथञ्चन । इतिस्मृतिः ।
ऐश्वर्य	धन	ऐश्वर्य्यम्	न.	विभूतिर्भूतिरैश्वर्य्यम् । इत्यमरः ।
ऐंचाताना	ऐंचाताना	केकरः	पु.	वलिरः केकर । इत्यमरः ।
ऐंचकाड	खाद्य पदार्थ (खोड़ा)	स्वस्तिकः	पु.	स्वस्तिकोमङ्गलद्रव्ये चतुष्कगृहभेदयोः । पिष्टकस्य विकारेच इतिविश्वः । तण्डु-लचूर्णनिर्म्मितपक्वान्नविशेषः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
ओड़हुल	ओड़हुल	ओड्रपुष्पम्	न.	ओड्रपुष्पंजवापुष्पंबन्धुपुष्पंतिलस्यपत् । इत्यमरः ।
ओछाओन	बिछौना	आच्छादितम्	त्रि.	कृताच्छादनमावृतम् । इतिकोशान्तरम् ।
ओसारा	दालान	ओकःसारा	त्रि.	ओकः सारा । इतिप्राचीनाः ।
ओलती	ओरी	ओकतटः	पु.	स्यादोकतटस्नुतः । इतिशब्दमाला ।
ओड़री	तिन्नी	नीवारः	पु.	तृणधान्यानिनीवाराः । इत्यमरः ।
ओढ़ना	ओढ़ना	आच्छादनम्	न.	वस्त्रम् संपिधानम् आच्छादनम् इत्यम-मदिन्यौ ।
ओहार	ओहार	अंशुकयवनिका	स्त्री.	अंशुकयवनिकापरिगतपर्य्यन्तायेत्यादि-कादम्बरी ।
ओरहा	होरहा	होलका	स्त्री.	अर्द्धपक्वेशमीधान्यै स्तृणभृष्टश्च होलका इति शब्दस्तोम् महानिधिः ।
ओड़िका	करछुल	दुग्धविलोडनी	स्त्री.	दुग्धविलोडिनी । इति प्रामाणिकाः ।
ओस	ओस	अवश्यम्	न.	दिव्योदकंअवश्यं चरजनीजलमित्यपि । इति मेदिनी ।
ओटी	पेडू	वस्तिः	पु.	नाभेरधोमञ्चुर्पटवस्तिर्मूत्राशयोऽपिच । इतिहेमचन्द्रः ।
ओठ	ओठ	ओष्ठः	पु.	ओष्ठाधरौतुरदनच्छदौदशनवाससी । इत्यमरः ।
ओल	सूरन	ओल्लः	पु.	आद्रशूरणयोरोल्लः । इतित्रिकाण्डशेषः ।
ओंड़ड़ायल	गिर गया हुआ	लुठितः	पु.	त्रिप्वावृत्तलुठितौ । इत्यमरः ।
औन्ही	आभूषण विशेष	पायकः	पु.	रत्नपायकपट्कैश्च विराजित पदाङ्गुलैरितिब्रह्मवैवर्ते कृष्ण खण्डे ४ अध्यायः ।
ओङ्ही	ऊँघना	अवपातः	पु.	अधःपतनेनिपातेच । इतिशब्दस्तोममहानिधिः ।
औंठी	अंगूठी	अङ्गुलीयकः	पु.	अङ्गुलीयकमूर्मिका । इत्यमरः ।

मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
औषध	दवा	औषधम्	न.	भेषजौषधभैषज्यान्यगदोजायुरित्यपि । इत्यमरः ।
औटनाइ	आवर्तन	आवर्तनम्	न.	दुग्धादेरालोडनम् । इतिशब्दकल्पद्रुमः ।
ओङ्हायल	ऊँघाया हुआ	परासुता	स्त्री.	निद्रापरवशतापरासुता । इतिपुराणम् ।
औंठिआकेश	घुंघराला बाल	अलकः	न. पु.	अलकाश्चूर्णकुन्तलाः । इत्यमरः ।
अंश	हिस्सा	अंशः	पु.	अंशभागौतुवन्टके । इत्यमरः ।
अंक	अंक	चिन्हम्	न.	चिन्हं लक्ष्मचलक्षणम् इत्यमरः ।
अः	अः	अः	पु.	अः । निषेधः । इति मेदिनि ।



मिथिलाभाषा	हिन्दी	संस्कृत	लिङ्ग	प्रमाण
कणा	रेणु	कणिका	स्त्री.	अत्यन्तसूक्ष्मवस्तु कणा । इति श. क. द्रुमः ।
कथा	कथा	कथा	स्त्री.	प्रबन्धेन कल्पना अथवा प्रबन्धस्य अभिधेयस्य कल्पना स्वयं रचना । इति सारसुन्दरी ।
कछा	फेंटा बँधा हुआ	कक्षा	स्त्री.	परिधानवस्त्रस्य पृष्ठतो निहिताञ्चलम् । इ. हे. च.
कन्था	कन्था	कन्था	स्त्री.	स्यूतकर्पटः । इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहे अमरः ।
कली	मुँह बँधा फूल	कलिका	स्त्री.	कलिका कोरकः पुमानित्यमरः ।
कत्ता	खड्ग	कर्त्तृका	स्त्री.	ह्रस्वयुक्तां त्रिनेत्राञ्च कपाल कर्त्तृका युताम् । इति तन्त्रसारे ।
कबै (माछ)	मत्स्य विशेष	कवयी	स्त्री.	कवयी काकचपुटी कच्छुशोटी जलव्यधः । इति त्रिकाण्डशेषः ।



मैथिली शब्द कल्पद्रुम

—मति नाथ मिश्र 'मतंग'

अ-सं., स्वर वर्णक आदि अक्षर। अकार। मै.

अः-अ., निषेधक शब्द। मै.

अइ-अ., सम्मान सूचक सम्बोधन। मै.

अए-अ., पुरुषक हेतु सम्मानसूचक सम्बोधन। मै.

अएँ-अ., हर्ष, विस्मय आ भय मे स्वतः बहराएल शब्द। प्रयोग-अएँ! एहन बात? मै.

अओ-अ., पुरुषक हेतु शिष्ट सम्बोधन। मै.

अऔ-अ., हर जोतैक काल बड़दक प्रेरक शब्द। मै.

अओरा-सं., धात्री फल। मै.

अकका चकका लागब-क्रि., आश्चर्य मे पड़ब। मै.

अकखज-विशे., हड्डुँ नै मरैवाला। मै.

अक्खड़-विशे., अपन बलवन्तीक दार्पी सँ अत्यन्त ढीठ, अड़ि रहैक स्वभाववाला। मै.

अक्खा-सं., अन्न आदि रखैक बड़का बोरा आ बाँसक बीनल गोल नाम बासन। मै.

अक्खै अम्मर-विशे., देवता सन अविनाशशील। 'अक्षय अमर'। तद्भव

अक्री-विशे., सब रुपेँ कोनो काज मे असमर्थ। अक्रिय। सं. तद्भव

अक्षत-सं., पूजा आदि उपयोगक हेतु अरबा चाउर। सं. तत्सम

अक्षय-विशे., अविनाशी, क्षय रहित। सं. तत्सम

अक्षर-सं., वर्णात्मक शब्द बनबैक हेतु स्वर आ व्यञ्जन वर्ण। सं. तत्सम

अकच्छ-विशे., कोनो काज मे एकाकरन लगने हतोत्साह, व्याकुलता सँ विरक्त। मै.

अकचक लागब-क्रि., आश्चर्य सँ विश्वास नहि जमब। चकित भय दहोदिश ताकब। मै.

अकचकाएब-क्रि., विस्मय सँ विश्वास नहि होएब। एम्हर ओम्हर निहारब। मै.

अकचकाह-विशे., साधारणो बात मे चौंकनिहार। मै.

अकछाएब-क्रि., निरन्तर काज मे निमग्न रहने मनक व्याकुल भय विरक्त होएब। दोसरा के मन उचटाएब। मै.

अकट्ठी-विशे., परिहास मे अनेक चेष्टा, गप गढ़ैवाला। प्रयोग-"भुटकुन बड़ अकट्ठी छथि।" मै.

अकरकाँट-विशे., काँट कुशक गदौस सँ भरल। गुरपाकी भोजन। मै.

अकर मकर-विशे., विलम्ब सँ पचैवाला भोजन। प्रयोग-"अकरमकर खाकय पेट नहि बिगाड़।" मै.

अकटा-सं., मसुरीक रूपक अनहित अन्न। मै.

अकठ-सं., उपयोगी काठ सँ भिन्न काठ। मै.

अकठ काठ-विशे., १. अनपच भोजन। २. अनचिन्हार काठ। मै.

अकड़ब-क्रि., १. दम्भ सँ भरल रहब। २. रक्त संचारक अभाव सँ अंग मे संचार नै होएब। मै.

अकड़ा लागब-क्रि., शिरा सनक शून्यता आ असमर्थता सँ संचार मे कष्ट होएब। मै.

अँकड़ा-विशे., बिन कूटल धान मिलल चाउर। मै.

अँकड़ाह-विशे., औकड़ भरल चाउर। मै.

अकत-विशे., तीत रस मे अधिकता बुझबैवाला। प्रयोग-"परोड़क पात अकत तीत होइ छै।" मै.

अकथ-विशे., नहि कहैक योग्य बात, अकथ्य। सं. तद्भव

अकन्छा-सं., अप्रकट इच्छा। सं. तद्भव

अकनमी-विशे., सुनैक शक्ति रहितौ नहि सुनैवाली स्त्री। मै.

अकनाएब-क्रि., समस्त चेतना केँ समेटि सुनैले कान लगाएब। मै.

अकबकनै फुरब-क्रि., बुद्धिक कुण्ठित होएब। भय आदि सँ ज्ञान लुप्त होएब। मै.

अकबकाएब-क्रि., भय, विस्मय, घृणा आ अधिक पीड़ा सँ ज्ञान शून्य होएब। प्रयोग-"रामक हाथेँ धनुष टूटि गेला पर सब अकबकाएले रहि गेला"। मै.

अँकबारब-क्रि., सुरक्षा ले पाँज मे धय लेब। मै.

अकर्म-सं., जाहि समाजक वा व्यक्तिक जे काज नहि रहय। सं. तत्सम

अकर्मक-विशे., कोनो काज मे अलूरि। मै.

अकर्मण्य-विशे., कोनो काज मे उत्साहहीन। वयसक प्रभावेँ असमर्थ। सं. तत्सम

अकर्मी-विशे., जाहि व्यक्ति केँ जे नहि करैक तेँ कर्म कयनिहार। सं. तद्भव

अकरकचाह-विशे., जंगलझाड़ सँ भरल खेत। गदौस सँ असर्द्ध स्थान। मै.

अकर कड़हा-सं., विशेष जड़ी बूटी सँ बनल कड़हा। मै.

अकरकन-सं., अधलाह वस्तुक छोट-छोट काण सभक समूह। मै.

अकरकनाह-विशे., अकरकन सँ भरल। मै.

अकरतब-सं., अनैतिक काज, अधिष्ठ व्यवहार। सं. तद्भव

अकर धकर-विशे., गुरुपाकी वस्तुक वे हिसावक भोजन। आतुरता सँ पेट मे धकेलल अन्न। मै.

अकर मकर-सं., लगाने लागय खाएल अनेक प्रकारक भोजन। मै.

अकरमाड़-विशे., उगल खड़पात सँ भरल खेत। बुभौला पर नहि बुझनिहार लोक। मै.

अकरर-सं., प्रसंगहीन आ अर्थहीन बातक उत्थान। मै.

अकरहर-सं., अविश्वसनीय, असम्भव विस्मयक बात कहि लोक कें आकर्षित करैक प्रयास। मै.

अकराएब-क्रि., घिनाएब। अपन रुप आ आचरण सँ समाज मे घृणाक पात्र बनब। मै.

अकराओन-विशे., घृणास्पद, घिनाओन, समाज मे अश्रद्धेय। मै.

अकरूर-विशे., १. कठोर, निर्दय। (सं., २. कृष्णक परिकर यदुवंशी।) मै.

अकरौना-विशे., समाज मे घिनौनिहार आ समाज कें घिनवैवाला। मै.

अकलबेरा-सं., विषयक अनुपयुक्त समय। अकाल-बेर। विकट समय। मै.

अकबार-सं., समाचार पत्र। उ. तद्भव

अकस्मात्-अव्यय, हठात्, अचानक, अप्रत्याशित। सं. तद्भव

अकसक-विशे., अत्यन्त भरल रहैक द्वारें विवश। अशक्त। मै.

अकसकाएब- क्रि., अधिक भरल रहैक द्वारें कोनो क्रिया मे शिथिल होएब। मै.

अकसकी-सं., अधिक भोजन कयला सँ कोनो काज मे स्वाभाविक शिथिलता, असमर्थता। मै.

अकहुरुष-विशे., (निन्दा मे) नमहर शरीर वाला। बुद्धिक छोट शरीरें नाम। मै.

अकाज-विशे., प्रयोजन वा लक्ष्यहीन काज। अकार्य। सं. तद्भव

अकाट्य-विशे., नहि कटैक योग्य विषय वा वस्तु। मै.

अकाठ-विशे., अप्रयोजनक काठ। मै.

अकाठामस-विशे., आकार प्रकार सँ अत्यन्त भया-वह। विरूपताक द्वारें निन्दित। मै.

अकान-विशे., अपने धुनि मे रहने सुनैक शक्ति रहितो नहि सुननिहार। मै.

अकानब-क्रि., सुप्तो बात कें सुनैक हेतु साकांक्ष रहब। आनक बात सुनै लेल कान लगा कय रहब। मै.

अकानसुन्न-विशे., सुनैक शक्ति रहलो पर बेरि-बेरि टोकला पर बुद्धि सँ ध्यान देनिहार। कहलो पर नहि सुननिहार। मै.

अकाबरी-विशे., अत्यन्त उत्कृष्ट सँ उपजल सारि। सुन्दर कृपि। मै.

अकाबोन-विशे., अत्यन्त सघन बोन आ बोन झाड़। मै.

अकार-सं., आकृति, रुप, आकार। सं. तद्भव

अंकार-सं., छवि, छटा। मै.

अकारथ-विशे., निष्फल, अपेक्षाहीन, व्यर्थ। मै.

अकाल-सं., असमय, दुर्भिक्षक समय। मै.

अकालदूत-विशे., १. असमय मे उपस्थित भेनिहार। २. अपन रुप गुण सँ निन्दास्पद। मै.

अकास-सं., शून्यगोलक। आकाश। सं. तद्भव

अकाशकांकोड़-विशे., (लाक्षणिक) अपन अज्ञता आ कि मूर्खता छिपयवाले कोनो प्रश्नक उत्तर देवा मे आकाश दिश तकनिहार। निन्दाक पात्र। मै.

अकासगंगा-सं., अर्द्धगोलक आकाश मे घनीभूत तारा सभक इजोतक पंक्ति। देव डगहर। सं. एवं मै.

अकाशगामी-विशे., आकाश मे विचरण करैवाला। आकाश मार्गे चलैवाला। सं. तत्सम

अकासचारी-विशे., आकाशे मे रहैवाला। सं. तद्भव

अकासदीप-सं. बहुत उपर आकाश दिश दीप नेसैक कार्तिक व्रत। प्रयोग-वैह बेटी प्रशंसनीय जे आकास दीप नेसय। सं. तद्भव

अकासवासी-विशे., आकाशे मे रह निहार। मै.

अकासीदेब-क्रि., मूर्ख आ घमण्डीक प्रतीक बनल सदिखन अनेर आकाश दिश तकैत रहब। मै.

अकासीवृत्ति-सं., अकस्मात् अनिश्चित अर्थक आग-मनक भरोसें निर्वाह। सं. तद्भव

अकिञ्चन-विशे.,निर्धन, दरिद्र। सं. तत्सम

अकुत-विशे., निश्चित मान (संख्या, नाप आ तौल) क अनुमान सँ बाहर। असीम। मै.

अँकुरब-क्रि., अँकुरा फोंकब। बीज सँ अंकुरक बहराएब। मै.

अंकुरा-सं., बीज सँ वा भूमि सँ बहराएल गाछक प्रथम रूप । मै.

अंकुराएब-क्रि., बीज वा भूमि सँ अंकुराक निकलब । मै.

अंकुरी-सं., अंकुर फोंड़ैक अवस्था वाला भिजाओल दलिहन जे देवता पितरक काज मे तथा विशेष शुभ अवसर पर काज अबैछ । मै.

अकुलाएब-क्रि., आकुल होएब । भय आ पीड़ा सँ जीक घबरा उठब । मै.

अकुलीन-विशे., हीन कुलवाला, नीच वंशक लोक । प्रयोग- ओछाहक रीत नै खाइ अकुलीनक धी नहि बियाही । लोकोक्ति । मै.

अंकुशा-सं., बझाकय खींचैवाला अस्त्र विशेष । सं. तत्सम

अंकुसी-सं., लग्गी मे बनाओल वा बान्हल कोनो वस्तु कें पकड़ि कय खीचैंवाला अंकुश सन नोक । मै.

अकूबा-सं., दुष्टता सँ कयल निर्मूल फूसि अपवादक प्रचार । मै.

अकोल-सं., संकुचित, उपेक्षित आ जन शून्य स्थान । मै.

अखयास-सं., मोन पाड़ैक चेष्टा । स्मरण । मै.

अखज-विशे., अक्षय । क्षय नहि होइक जोग । सं. तद्भव

अखड़ब-क्रि., कटु अनुभव होएब । मन मे चुभि जाएब । मै.

अखड़हा-सं., १. कोड़ल आ कोमल माटि वाला कोष्टमय पहलवानी सीखैक स्थान २. साधु संन्यासी सभक अड्डा । मै.

अखड़ा-विशे., १. खड़खड़ लगैवाला मृदुताहीन वस्त्र । २. कठोर रूप मे परिणत । प्रयोग–अखड़ा पटिया, अखड़ा चिक्कस । मै.

अखड़िया-विशे., मल्ल कला प्रदर्शन करैक हेतु अखड़हा पर उतरैक आवेश वाला । मै.

अखड़-सं., मालजाल कें अपकार करैवाला खढ़ । उपयोगक अयोग्य खढ़ । मै.

अखड़िमल-विशे., कोनो विषय पर अड़ल रहैक प्रवृत्तिवाला । मै.

अखत-सं., अक्षत पुष्प पत्र । आनक दृष्टि सँ बाँचल रखैवाला पत्र । सं. तद्भव

अखरलेखय-सं., गुप्त रूपें लिखिकय सुरक्षित उत्तराधिकार पत्र । सं. तद्भव

अखन्मर-विशे., नहि मरैवाला, अपूर्ण रहैवाला । मै.

अखरकट्टू- विशे., आधे स्थिति मे छोड़ल काज । मै.

अखरताली-सं., हस्ताक्षर । (उ. दस्तखत) मै.

अखरोट-सं., सुखाएल फल विशेष । मै.

अखलबाहि-सं., लड़ैले तनतनी, मल्ल युद्धक हेतु हाथ पैरक, जोश, उत्साह । मै.

अखलास-सं.,बनौटी प्रसन्नता वा कृत्रिम आवेश सँ अगराएल बात । मै.

अखाउजि-सं., भीतरे भीतर जोगाओल भयंकर शत्रुता । मै.

अखाड़ा-सं., १. साधु सन्तक सम्मिलित साधनाक स्थान तथा सम्मेलनक स्थल । २. मल्ल क्रीड़ा क स्थान । हि. तत्सम

अखाद-विशे., नहि खाइक योग्य वस्तु । अखाद्य । सं. तद्भव

अखार पखार-सं., धोऐक-माँजैक प्रक्रिया । मै.

अखारब-क्रि., धोअब, माँजब आ स्वच्छ करब । मै.

आँखिउठ्ठी-सं., आँखिक रोग । आँखि उठैक क्रम । दुखाएब, लाल होएब आ सटब ई सब रोगक लक्षण । मै.

आँखिगर-विशे., (लाक्षणिक) विषय कें तुरन्त पकड़निहार । दूरदर्शी आ कहि कयनिहार । मै.

आँखिमुन्नी-सं., आँखि मुनिकय धीया-पूताक खेलाइक प्रकार । मै.

आँखिफोड़ा-सं., अनघुन उड़िकय आँखि पर चोट करैवाला फतिङ्गा । (लाक्षणिक) चुपचाप रहस्यक बात कहनिहार । प्रयोग –दुष्ट अंगरेजक आँखि फोड़ल रहैक जे मुसलमान वाला क्षेत्रक अपन भिन्ने राष्ट्र हो । मै.

आँखियाएब-क्रि., तृष्णा, ईर्ष्या अथवा अमंगल भावना सँ दृष्टि गड़ाएब वा बाजब । मै.

अँखुआ-सं., पोरे पोरे गीरह सब पर अंकुर बहराइक रूप, प्रारूप तथा सुइआ जकाँ बीज सँ बहराएल अंकुर । मै.

अखो अखोकय-अव्यय, अतिशय भय के । (केवल भोजन मे प्रयोग) । मै.

अखोड़ा-सं., बाँसक कामि सँ बीनल चौरस पेंनी वाला फैलगर मुहवाला बासन । मै.

अखोर-विशे., समाज मे नीचतापूर्ण काज करैत रहला सँ अधम चरित्र मे प्रसिद्ध । मै.

अखोह-सं., खोह जकाँ अन्धकार भरल संकीर्ण स्थान । मै.

अग्य-विशे., किछु नहि जानि बूझि सकैवाला मूर्ख । अज्ञ । सं. तद्भव

अगर-सं. धूपवाला विशेष पदार्थ । सं. तद्भव

अग्गहबिग्गह-विशे., दूर धरि विस्तृत । मै.

अग्रनण्य-विशे., आगुए आगू गनल जाइक योग्य नामवाला । सं. तत्सम

अग्रेसर-विशे., कोनो काज मे आगू रहनिहार लोक । सं. तत्सम

अगाओं-सं.,खरिहानें मे निछुछल दान करैक अन्न । मै.

अगङ्गु-विशे., कहियो गंगा नहि नहाएल लोक । मै.

अगड़ाही-सं., खेतक बीच गदौस मे लगाओल तथा बोन झाड़ मे लगाओल आगि । मै.

अगड़ाहीक धनछूहा-सं, उपर्युक्त अगड़ाही सँ लोल मे लुत्तीलय के आनोआन मे आगि लगौनिहार छोट पक्षी विशेष । (लाक्षणिक) चुगिलखोर । मै.

अगण्य-विशे., नीक लोकक गिनती मे नहि अबैक योग्य । सं. तत्सम

अगत्त-अव्यय, हाथी कँ चलैलेल आदेशक शब्द । अग्रतः । सं. तद्भव

अगत्ती-विशे., सदिखन उत्पात करैवाला । अपन दुष्ट बुद्धिक द्वारेँ अपनो संकट नहि सोचैवाला । मै.

अगत्या-अव्यय, उपायक अभावेँ विवशता सँ, अनिच्छो सँ करैक प्रयास । सं. तत्सम

अगता-विशे., अग्रतः । १. आगुए आगू भेनिहार उपजा । २. बधिया कयल घोड़ा । ३. प्रसवक उपरान्त बिना ऋतु धर्म भेनहि रहल गर्भ । मै.

अगबिग्गोरहब-क्रि., विस्मय सँ ज्ञान कुण्ठित भऽजाएब, दिशा नँ बूझब । मै.

अगधाएब-क्रि., अति तृप्त रहैक आचरण कय मिथ्या गौरव सँ कोनो विषय वा वस्तु मे अनिच्छा प्रकट करब । मै.

अगन-विशे., १. अति तृप्तता भरल लोक । २. तृप्ति सँ चरल रहैवाला पशु । मै.

अगब-विशे; एक मात्र वस्तु । एकनिष्ठ अन्यक सन्दर्भ । मै.

अगबास-सं., आंगनक आगू विस्तृत अवकाश (लाक्षणिक) स्त्रीगणक अड़ुथातक क्रिया क हेतु पर्दा वाला स्थान । मै.

अगबीत-सं., निज अधिकारक वस्तु आ स्वत्व । अपन अधिकृत धन । सं. तद्भव

अगबे-विशे., बिना दोसर वस्तु फेंटल । बिना आन वस्तु मिलाओल भोज्य पदार्थ । मै.

अगम-विशे., १. अथाह जलक द्वारेँ नदी नहि पार करैक योग्य, सघन आ हिंसक पशु भरल रहैक कारणेँ वन नहि चलैक योग्य आ बाट मे अत्यन्त ऊँच रहैक द्वारेँ पहाड़ नहि टपैक योग्य । २. यौन सम्पर्कक अयोग्य व्यक्ति अगम्य । स्त्री० अगम्या । सं. तद्भव

अगरचित्त-विशे., अपने मन कँ सब सँ उपर मानि, ककरो बात नहि माननिहार बिन नीक अधलाह सोचनँ किछु कय लेनिहार । मै.

अगरजानी जानब-क्रि., अन्तर्यामी जकाँ अपनँ जानि जाएब । मै.

अगरधत्त-विशे., शरीरेँ आ बुद्धिएँ विशालताक दुआरेँ समाज कँ विशेषता सँ प्रभावित कयनिहार । उत्कृष्ट लोक । मै.

अगरमस्त-सं., जड़ी विशेष । मै.

अगराएब-क्रि., रूप यौवन आ धनक गर्व सँ वा आनन्द सँ अनुचित चेष्टा करब । मै.

अगरेस-विशे., बिना परिणाम सोचनँ बिना कहनँ सब काज मे आगू रहनिहार । मै.

अगरैल-विशे., विशेष आकार प्रकार वाला कसि (फूल) क थारी । मै.

अगलटेंट-विशे. बिन बुझनँ बिन पुछनँ आगँ आगाँ टेंटें कय के बाजि उठनिहार । मै.

अगस्त-सं., अंगरेजी वर्षक आठम मास । अं. तत्सम

अगस्ति-सं., १. पौराणिक ऋषि विशेष । २. एहिनामक फूलवाला वृक्ष । मै.

अगसर-विशे., देखू-अग्रसर । सं. तत्सम

अगहँडी-विशे., केराक अभग्न पात । मै.

अगहन-सं., १. धान उपजँ वाला मास विशेष । २. मिथिला देशीय पाँचम मास । मै.

अगहनी-विशे., अगहन मे भेनिहार उपजा धान । मै.

अगहनुआ-विशे., अगहन मास मे प्रस्तुत कयल । मै.

अगाउ-विशे., काज करै सँ पहिनँ देल पारिश्रमिक तथा वस्तुक मूल्य । मै.

अगाड़-सं. कोनो वस्तुक अगिला भाग। मै.

अगाड़ी-सं., बाँसक कर्चो समेत उपरका अंश। मै.

अगाध-विशेषण, अथाह (जलाशयक हेतु)। (लाक्षणिक) गम्भीर ज्ञान आ कूटनीतिवाला। मै.

अगिआ-सं., अधिक आगि तपला सँ उत्पन्न चमड़ा पर कारी-कारी चिह्न। मै.

अगिआग्य-सं., १. तपस्वीक पञ्चाग्नि साधना। चारू कोन पर धधकैत आगि उपर जेठक अटट्ट रौद। २. अचानक चोट लगने आँखिक आगाँ तुती जकाँ देखा पड़ैक लक्षण। मै.

अगिनबान-सं., गर्मी अथवा चर्म विकारक द्वारें देहक चमड़ा पर उठल फोका। मै.

अगिमुत्तू-विशे., (लाक्षणिक) दुर्वृत्ती, अन्यायी आ समाज मे सतत उत्पात मचवैवाला। मै.

अगियावेताल-विशे., उद्दण्डता सँ अप्रत्याशित उत्पात कय लोकक अनिष्ट कयनिहार। मै.

अगियास-सं., आगिक पजार। घूरक व्यवस्था। मै.

अगियासी-सं., आगि प्रज्वलित करैक उपक्रम। मै.

अगियाह-विशे., गर्मी क विशेषता वाला। अधिक काम क्रोधवाला। प्रखर वासना वाला। मै.

अगिलकण्ठ-विशे., टन दँऽ आगँ आगाँ बाजि उठनिहार। मै.

अगिलग्गी-सं., अग्नि प्रकोपक शृंखला क्रम। मै.

अगिलग्गू-विशे., (लाक्षणिक) मर्मक बात क प्रचार कय समाज मे हलचल मचा देनिहार। मै.

अगिलह-विशे., काज वा वस्तु मे विषमता उत्पन्न कयनिहार, अपन दुष्ट बुद्धिक द्वारा लोक बीच कलह करौनिहार। स्त्री० अगिलही। मै.

अगिला-विशे., आगूक वस्तु, आगू मे रहनिहार वा आगू मे होनिहार। स्त्री० अगिली। मै.

अगुआ-विशे., सब सँ आगू रहनिहार। नेता। मै.

अगुआ-सं., १. स्त्रीक हाथक गहना विशेष। २. बैलगाड़ीक आगू मे देल काठक पट्टी। मै.

अगुआएब-क्रि., संगी तुरिया सँ आगू बढ़ि जाएब। मै.

अगुआनी-सं., आगू जा कय कोनो विशिष्ट व्यक्ति कें अरियाति आनब। मै.

अगुआर-सं., वासक आगू आ देहक अगिला भाग। मै.

अगुऐल-सं., घर वा वासक आगू भागक खण्ड। मै.

अगुताइ-सं., तुरन्त करैक प्रवृत्ति। शीघ्रता। मै.

अगुताएब-क्रि., शीघ्रता करब, शीघ्रताक प्रेरणा-देब। मै.

अगुताएल-विशे., अत्यन्त शीघ्रता मे रहैवाला। मै.

अगुताह-विशे., कखनौ विलम्ब नहि सहन कयनिहार। हड़बड़ कय काज करैवाला। मै.

अगुद-सं., विस्मय सँ बुद्धिक निष्क्रियता। प्रयोग-कोकहू इन्दिरा गान्धीक अचानक मारल जाइक समाचार सँ अगुद मे हम पड़ि गेलौं। मै.

अगुलका-विशे., सब सँ आगू बेनिहार। मै.

अगूबार-विशे., काज सँ पहिनें देल वस्तु वा श्रमक मूल्य। मै.

अगेली-सं., हाथक आगू क गहना। मै.

अगोचर-विशे., १. गाय बाछक नैं चरैं योग्य भूमि। २. आँखि सँ नैं देखि पड़ै वाला। सं. तत्सम

अगोछा-सं., देह पोछैक छोट वस्त्र, गमछा। मै.

अगोत-विशे., अकुलीन। जकरा गोत्रक ठेकान नैं हो। मै.

अगोधीमारब-क्रि., अनठाकए अथवा अबूझबनिकए बातक भेदलेब। आन्तरिक भाव कें पकड़ब। मै.

अगोरब-क्रि., रखवारि करब। सुरक्षाक हेतु तत्पर भय विद्यमान रहब। मै.

अगौ-सं., देखू-अगऔं। मै.

अघट-सं., जलाशयक निर्धारित घाट सँ भिन्न स्थान। अशुद्धघाट। मै.

अघाएब-क्रि., अत्यन्त तृप्त होएब। मै.

अघान-सं. अत्यन्त तृप्ति। मै.

अघोर-विशे., अत्यन्त आकुल, विरक्त, वितृष्ण। प्रयोग-सबेरे सँ खटैत-खटैत मन अघोर भय गेल। मै.

अघोर-सं., वाम मार्गी तन्त्र साधक सम्प्रदाय। सं. तत्सम

अघोरी-विशे., घृणा आ खाद्य-अखाद्य पर विजय पओनिहार तन्त्र साधक। मै.

अङ्क-सं., १. कोरा। २. कलङ्क। ३. संख्या-चिह्न सं. तत्सम

अंकलगाएब-क्रि., देह सँ बच्चा कें सटाएब। मै.

अंकलागब-क्रि. (लाक्षणिक) निश्चित रूपें ककरो आश्रित भय जाएब। मै.

अंकुर-सं., बीज सँ बहराएल गाछक प्रथम रूप । सं. तत्सम

अङ्ग-सं., शरीर । शरीरक कोनो अवयव । सं. तत्सम

अङ्गरेज-सं., ब्रिटिश जातिक यूरोपीय जाति । मै.

अङ्गा-सं., देहक अनुसार सीयल पहिरैक वस्त्र । मै.

अङ्गार-सं., १. जरैत आरनिक ठोस वहकैत बिन धधरा आ धूआँक आगि । २. मंगल ग्रह । सं. तत्सम

अङ्गित-विशे., सम्बन्धिक, निकटसम्पर्की, अपन-लोक । मै.

अङ्गी-सं., आत्मा अर्थात् शरीरक प्रधान तत्त्व । सं. तत्सम

अङ्गुठा-सं., हाथ पैरक छोट मोट पहिल आङुर । बुढ़बा आङुर, अङुष्ठा । सं. तद्भव

अङ्गूर-सं., दाना आ गुच्छ रूपक लत्ती मे फड़ैवाला काश्मीरी मधुर फल । मै.

अङ्ठोलमङ्ठोल-सं., अलसाएल रहैक प्रवृत्ति, कोनो काज मे उत्साहहीनता । मै.

अङना-सं., चारू परत बीच घेरल अवकाशवाला स्वच्छ जड़वाला । स्त्रीगणक स्वतन्त्र स्थान । मै.

अङनावाली-विशे., अङना पर अधिकार रखैवाली स्त्री । पत्नी । मै.

अङनियाँ-विशे., अङना मे रहैवाला । काज अबै वाला । मै.

अङनै-सं., घर आदिक आगू छोटसन शून्य स्थान । मै.

अङनैत-विशे., अङनाक मुख्य । अङनाक लोक । मै.

अङपोछ-कि., अङपोछा सँ देह मात्र पोछैक क्रिया । मै.

अङवरिया-विशे., कोनो सवारी सँ यात्रा करैक काल संगक सहायक । अंगरक्षक । मै.

अङवाह-विशे., खेत जोतैक काल आरि धूर बनबैक खड़-पात बीछैक हेतु सहायक । मै.

अङरखा-सं., देह मे सटल सीयल वस्त्र । मै.

अङलगाएब-कि., १. तन मन सँ कोनो काज करब । २. प्रिय व्यक्ति कें आबेगें देह सँ लगालेब । मै.

अङलागब-कि., मन दय कें शरीरक श्रम लगाकय बुद्धि सँ काज करब । मै.

अङाएब-कि., कोनो बात आ विषय कें अपन तन आ मन मे पचालेब । मै.

अङिया-सं., नारीक पहिरैक छोट आङी, चोली । प्रयोग–"आबि निवेदल चेरिया मधुरा अङिया भेष" 'हमर जय राजा सलहेस' । मै.

अङुरकट्टा-सं., अपनें आप आङुरक पोरक कोमल भाग मे कटि जाइक रोग विशेष । मै.

अङुरी-सं., आङुर सब । छोट आङुर । मै.

अङुरी उठाएब-कि., (लाक्षणिक) उपहास वा निन्दाक ध्येय सँ आङुर सँ निर्देश करब । मै.

अङुरी देखाएब-कि., (लाक्षणिक) समाज मे अधम बनबैत देखार करब । मै.

अङेजब-कि., कोनो स्थिति कें आत्मसात् अर्थात् अपना मे सामंजस्य करब । मै.

अङेठी-सं., आगि रखैक पैघ पात्र, बोरसि । मै.

अङेठीमोड़-सं., ज्वरक आगम, श्रमक अधिकता आ एहने गर्रे अधिक कालक स्थिति सँ देह कें हल्लुक बनबैले अङ्ग कें तनैक आयाम । मै.

अङोछ-सं., अङ्गक छवि छटा । अङ्गच्छवि । सं. तद्भव

अङोछमङोछ-कि., मन अयुक्त रहैक द्वारें गमछा भिजा कय थोड़ बहुत देह पोछैक मात्र क्रिया । मै.

अङोरा-सं., आगिक दहकैत ढेपा । देखू- "अङ्गार" । मै.

अङोठ-सं., अंगक समानता । अङ्गोष्ठ । सं. तद्भव

अच्छत-सं., देखू - "अक्षत" । सं. तद्भव

अच्छय-विशे., ककरो मे नहि छपै (मिलै) वाला । मै.

अच्छर-सं., देखू-"अक्षर" । सं. तद्भव

अच्छा-अव्यय, बेश । स्वीकारात्मक । नीक । ठीक । हि. तत्सम

अचक्क-सं., अचानक, असावधानी । मै.

अचक्की-विशे., अचानक उनट फेर कय दैवाला । नेन्ना । मै.

अंचब-कि., अधिक आँच देब । मै.

अचम्भा-अव्यय, १. आश्चर्य । २. माटिक बासन (बर्तन) रखैले कुम्हारक बासन । मै.

अचर-विशे., नहि विचरण करैवाला । नहि चरैक योग्य । सं. तत्सम

अंचरकसू-विशे., एक रूपें आँच नहि लगला सँ विकृत पाक । मै.

अचरज-अव्यय, आश्चर्य । उ. तत्सम

अंचरा-सं., छोट कन्याक पर्दा मात्रक हेतु पहिरै वाला वस्त्र खण्ड । भगवा । मै.

अँचरी-सं., घरक निचला ओलतीवाला कोर। मै.

अँचरौल-विशे., आँचरक एक अंश मात्र रंगल नव नूआ बिन रंगल पहिरैवाला वस्त्रक शुभ सूचक। मै.

अचल-विशे., नैं चलै हिलैवाला गाछ पहाड़ आदि। स्थावर। सं. तत्सम

अचल भारती-विशे., (निन्दा मे लाक्षणिक) अहृदयता वा स्थूलताक कारणें वा शारीरिक असमर्थता द्वारें देहक सञ्चार नहि कय सकैवाला। मै.

अँचाएब-क्रि., हाथ मुह धोएब, धोआएब। मै.

अँचाओन-सं., आचमन, मुह हाथ शुद्ध करबैक विधि। मै.

अचानक-अव्यय, दैवात्, हठात्, अप्रत्याशित। मै.

अचानचक-अव्यय, अकस्मात्, एकाएक। मै.

अँचार-सं., लेह्य पदार्थ। अम्मत फल आदि मे विविध कटुक (मसाला) सँ बनाओल चहटगर चोष्य भोज्य पदार्थ। मै.

अचिर-अव्यय, लगले। सं. तत्सम

अचूक-विशे., नैं चूकैवाला, अमोघ, अव्यर्थ। मै.

अचेत-सं. एवं विशे., मूर्छा-मूर्छित, बुद्धि आ संचारक हीनता एवं संज्ञाशून्य। मै.

अचेतन-विशेषण, स्पन्दनहीन, चेतना रहित। (लाक्षणिक) चेष्टा रहित, अबूझ। सं. तत्सम

अचैतन्य-विशे., आत्मा रहित, मृतक। सं. तत्सम.

अछतापछताकय-अव्यय, बहुत तारतम कयला उत्तर। मै.

अछार-सं., १. छोटसन वर्षा। २. चलाह खेत मे उपरें उपर छीटल बीआ। मै.

अछारब-क्रि. गील खेत मे उपरें उपर धानक बीआ पाड़ब। मै.

अछाह-सं., छाया, वस्तुक वर्गाकार छाँह। मै.

अछाहेंकुकुरभूकब-(लाक्षणिक) सन्देह मात्रे सँ प्रतिक्रिया मे उद्यत होएब। मै.

अछि-क्रि. कोनो वस्तुक स्थितिक क्रिया शब्द होएब। अस्ति। सं. तद्भव

अछिनजल-विशे., व्यक्तिक पवित्रता सँ लाओल पवित्र जल। अच्छिन्नजल। सं. तद्भव

अछिनरें-अव्यय, यथेच्छ, अत्यधिक। मै.

अछिया-सं., चिता, चिताक चुल्हा आ काठक सय्या। मै.

अछूत-विशे., अस्पृश्य, घृणास्पद होइक कारणें नहि छूबा योग्य। बिन छूअल। मै.

अछेप-सं., आक्षेप, झटका क्रियाक थोड़ प्रभाव। सं. तद्भव

अछैत-विशे., रहैत (अव्यय) रहला पर अस्तित्व मे। मै.

अछोप-विशे., अस्पृश्य। मै.

अछौं-अव्यय, सन्तुष्टिपूर्वक, भरिमन। मै.

अज-विशे., जे नहि जनमय। मै.

अजग्य-विशे., यज्ञ कर्मक अधिकार सँ बाहर भय गेल व्यक्ति। अयज्ञ। सं. तद्भव

अजगर-सं., चलै ससरै सँ असमर्थ विशाल काय स्थूल साँप, अजगर्द। सं. तद्भव

अजगुत-अव्यय, आश्चर्य, असम्बद्ध। मै.

अजगैबी-सं., अद्भुत, विस्मय। मै.

अँजब-क्रि., बारम्बार आँजन (काजर) करब। प्रयोग—"अँजिते-अँजिते धिया कनाहि।" मै.

अजब-अव्यय, अद्भुत, आश्चर्य। उ. तत्सम

अजबारब-क्रि., वासन केँ शून्य करब, तथा शून्य स्थान केँ भरब। बाधित करब। मै.

अजबारि-विशे., शून्यता वा रिक्तता भरल अथवा पदार्थ भरल वा बाधा भरल। मै.

अजमाएब-क्रि., जाँचब, अनुमान सँ स्थिर करब। मै.

अजय-विशे., नहि जीतैक योग्य। सं. तद्भव

अजरअमर-सं. देवता। विशे., सदा एकै रूपें रहि चिरजीवी। सं. तत्सम

अजराजोरी-अव्यय, बलपूर्वक। उ. तद्भव

अजरैला-विशे., अत्यन्त सक्कत। सारिल। कोनो स्थित मे नहि नष्ट होमऽवाला। मै.

अजस्त्र-विशे., सदिखन सबठाँ उपलभ्य। मै.

अजाईजाएब-क्रि., व्यर्थ अनायास नष्ट होएब। मै.

अजाति-विशे., अपन जाति छोड़ि आन जाति केँ धरैवाला। मै.

अजान-सं., १. इसलाम धर्मक उच्च स्वरें ईश्वरक स्तुति। उ. तत्सम। अज्ञान, ज्ञान हीनता। सं. तद्भव

अजियासासु-विशे., सासुक सासु, आजादयन्यू। सं. तद्भव

अजीर्ण-विशे., अनपच अधिक खाएल अन्न । सं. तत्सम

अजुका-विशे., आइ होमऽ वाला, वर्तमान मे रहैवाला भूत भविष्यक सम्पर्की । मै.

अजूरा-सं., बोनि, पारिश्रमिक, सामन्ती युगक कहार । उ. तत्सम

अजेगर-सं., देखू-अजगर । मै.

अजेब-विशे., आश्चर्यजनक । अजायब । उ. तद्भव

अजोध-विशे., अयोध्य, अतिक्रूर, भयंकर विशाल । सं. तद्भव

अजोह-विशे., पूर्णतः युवावस्था मे नहि पहुँचल । मै.

अझलक-अव्यय, एक झलक मात्र । मै.

अझट्ट-अव्यय, अचानक, अनठेकान । मै.

अञ्चल-सं., आँचर, प्रान्तक एक अंशक क्षेत्र । सं. तत्सम

अञ्चोक-अव्यय, अनवधान, अचानचक । मै.

अञ्जास-सं., पेटक अपच अन्नक विकारें उत्पन्न ज्वर आदिक पीड़ा । मै.

अञ्जीर-सं., दानावाला फल विशेष । मै.

अट्टहास-सं., ठहक्का, खूबजोर सँ सब्दक संग हँसी । सं. तत्सम

अट्टालिका-सं., ऊँच आ पैघ कोठा । सं. तत्सम

अट्टब-क्रि., अड़ारि ठानब । मै.

अट्ठाइस-संख्या, आठ एकाइ दू दहाइक अंक । मै.

अट्ठारह-संख्या, आठ एकाइ एक दहाइक अंक । मै.

अँटकन मटकन-अव्यय, धीया पूताक खेलाइक प्रक्रिया । भूमि पर अनेक तेन्ना तरहत्थी रोपने रहै अछि । एक गोटए एक एक हाथ पर आङुर दैत पढ़ै अछि । "अटकन मटकन दहिया चटकन" आदि । अन्तिम शब्द जकरा पर अबै छै तकरा पूछै अछि सिही लेब की मजूरी । मै.

अँटकब-क्रि., गति रोकब, थम्हब, रुकब । मै.

अँटकर-सं., सन्तुलित मान अनुमानित विषय । प्रयोग–अँटकरें सँ खाउ । अँटकरे गीता भगवान उवाचा कहबी । मै.

अटकर-सं., अनुमान, अप्रत्यक्ष कें विशेष कारण पकड़ि प्रत्यक्ष सिद्धि । मै.

अँटका-सं., जगन्नाथपुरीक प्रसाद । मै.

अँटकाओ-सं., लोक आ सवारीक ठहरैक स्थान । मै.

अँटकारब-क्रि., अनुमान सँ निश्चित करब । मै.

अटट्ट-विशे., प्रचण्ड, अत्यन्त तीक्ष्ण । रौदक विषय मे प्रयुक्त । मै.

अटपट-विशे., अनर्गल, अप्रासंगिक प्रलाप । मै.

अँटब-क्रि., समाएब, सन्हिआएब । मै.

अटरिया-सं., छोटसन कोठा । हि. तत्सम

अटल-विशे., कनेको नहि घसकैवाला । नहि टरैवाला । टस सँ मस नहि होमऽ वाला । मै.

अँटाएब-क्रि., कोनो बासन वा स्थान मे अधिक वस्तु कें समाविष्ट करब आ व्यवस्थित करैक चेष्टा करब । मै.

अटाएब-क्रि., अवकहूरा चक्र सँ नामक अनुसार देवता एवं दीक्षा मन्त्रक निर्धारण करब। ग्रह नक्षत्रक विचार कय फलाफल बाहर करब । मै.

अटावेस-सं., यथा स्थान मे समावेश । थोड़ स्थानो मे कोनहुना बहुत केर व्यवस्था । मै.

अटारी-सं., पैघ कोठाक उपरका भाग । मै.

अँटिया-सं., पातर आँटी । मै.

अँटियाएब-क्रि., आँटी बान्हब । छोट छोट खढ़ सन वस्तुक आँटी बनाएब । मै.

अटूट-विशे., कोनो स्थिति मे नहि टूटैवाला । मै.

अटेहल-विशे., अव्यवस्थित रूपें ऊँचकय के ढेरी कयल । मै.

अटैची-सं., हल्लुक हथलग्गू पेटी । अं. तत्सम

अटोर-सं., विचार, कल्पना । मै.

अटोह-सं., गुप्तरूपें अन्वेषण, चरचीत । मै.

अठकपाड़ि-विशे., नीक अर्थात् शुभ काजक अवसर पर बाधा पड़ैक दुर्भाग्यवाला व्यक्ति । मै.

अठकोशल-सं., (लाक्षणिक) अनेक व्यक्तिक संग मिलि गुप्त मन्त्रणा । मै.

अठखेलि-सं., खेला खेला कय ठकैक युक्ति । मै.

अठगोड़बा-सं., अठौरी, बड़का मकड़ा । मै.

अठतालीस-संख्या, आठ एकाइ चारि दहाइक अंक । मै.

अठतीस-संख्या, आठ एकाइ तीन दहाइक अंक । मै.

अठन्नी-सं., आधा रुपैयाक मुद्रा । मै.

अठबभना-सं., उपनयन कर्मक उपरान्त आठ ब्राह्मण भोजनक विधि । मै.

अठबासल-विशे., कोनो काजक बेरे पर बाधक रूपें बूत भेल । मै.

अठमस्सू-विशे., गर्भक आठमे मास मे जनमल बच्चा। मै.

अठमीफेंटा-सं., उपनयनक सन्दर्भ मे बरुआक पहिरैक विशेष रूपक वस्त्र। मै.

अठबारय-अव्यय, आठ दिन पर कय। मै.

अठसठि-संख्या, आठ एकाइ छ दहाइक अंक। मै.

अठहत्तरि-संख्या, आठ एकाइ सात दहाइक अंक। मै.

अठाबन-संख्या, आठ एकाइ पाँच दहाइक अंक। मै.

अठासी-संख्या, आठ एकाइ आठ दहाइक अंक। मै.

अँठिअम्मत-विशे., आँठी लग अम्मत लगैवाला आम। मै.

अँठिगर-विशे., पँच पँच आ अधिक आँठीवाला। मै.

अँठिया-विशे., केवल आँठी भरल फल। मै.

अठुलाहि-विशे., गौरव सँ आ धृष्टता सँ सदिखन फूलल रहैवाली। मै.

अठेल-विशे., (विशेषतया भोजनक प्रसंग मे) ठूसि कय स्थानरहित भेल। मै.

अठौहर-सं., अष्टमंगल। विवाह मे आठ गोटए मिलिकय धान कूटैक विधि। मै.

अठौरी-सं., अठ गोड़ी, मालजालक देह मे लगैवाला छोट कीड़ा। मै.

अड्डा-सं., १. सीमा। २. सम्मेलन स्थान। ३. अवधि। मै.

अडुँल-विशे., अपन शक्ति पर विश्वास कय अड़ल रहैवाला, अड़िग। मै.

अड़िग-विशे., अपन बात वा स्थान सँ नामोनि ने चलैवाला। मै.

अड़कन-सं., कोनो वस्तुकें अड़बैक रोकैक साधन विशेष। मै.

अड़कब-क्रि., अड़ि जाएब। रुकिकय स्थिर भ' जाएब। अड़ि अड़िकय चलब। मै.

अंड़कोष-सं., अण्डकोश, पुरुषचिह्न। सं. तद्भव

अड़खोस-सं., बदला लैक पूर्वाग्रह। मै.

अड़ड्लागब-क्रि., वेशी एकट्ठा भय अधिक ऊँच धरि ढेरि भऽ जाएब। मै.

अड़ड्ड़ा-सं., कोनो काजक सम्पादन मे विशेष बाधा। काजक प्रगति मे विकट अवरोध। मै.

अड़ड्ड़ा लागब-क्रि., कोनो कारणें काजक प्रगति मे विघ्न पड़ब। मै.

अड़चन-सं., बाधा (आकस्मिक) रोक। मै.

अड़ण्ड-विशे., बिन दण्डीक दण्ड। बिन कारणें अर्थक व्यर्थ देय। मै.

अड़ना-विशे., १. चलैत-चलैत अड़ि जाइवाला घोड़ा आदि पशु। २. कोनो वस्तु कें अड़ा कय (रोकि कय) रखैवाला निर्जीव वस्तु। मै.

अड़ब-क्रि., कोनो बान्ह अर्थात् रोकाओट पड़ने रुकि जाएब। अपन क्रिया मर्य्यादा वा सिद्धांत पर डटल रहब। मै.

अड़रमेबा-सं., फल विशेष। (हि.)पपीता। मै.

अड़राएब-क्रि., गौरवक लेल एतकुत्र ऐंठीक बात बजैत निडर घुमैत रहब। मै.

अड़रालागब-क्रि., नदी नाली सब मे बहैत-बहैत कछेर मे कोनो वस्तुक फँसिकय रुकि जाएब। (लाक्षणिक) अदृश्य शक्तिक प्रभावें किछु कालक हेतु अचल रहब। मै.

अँड़री-सं., अण्डी, तेलहन विशेष। मै.

अड़सठि-संख्या, आठ एकाइ छ दहाइक अंक। मै.

अड़ाएब-क्रि., रोकि राखब। रोकने राखब। मै.

अड़ाक-विशे., चलितैं-चलितैं अधिक अड़ि रहैवाला। रुकि जाइवाला। मै.

अड़ाँच-सं., घरक दू चार कें मिलाकय माथी पर बन्हैक सक्कत आ मोट विशेष प्रकारक डोरी। मै.

अड़ानी-सं., कृत्रिम कय बनाओल अड़बैक स्थान। मै.

अड़ारा-सं., तटबन्ध, बहैत पानि कें छिड़िआइ सँ रोकैक लेल बनल आड़, बान्ह। मै.

अड़ारि-सं., मन मे गुम्हड़ैत भगड़ा, लड़ाइ, विरोध। मै.

अड़ियल-विशे., १. अपन सिद्धांत आ बात सँ कनेको नहि चलैवाला। २. रुकि-रुकि कय चलैवाला घोड़ा आदि। मै.

अड़्आर-सं., क्षेत्र, घनक विस्तार। मै.

अड़-सं., सामना सामनीक कोनो प्रकारक व्यवधान। पर्दा। मै.

अड़पाल-सं., परस्परक सम्मुखता (सामना-सामनी) क हेतु बनाओल व्यवधान। पदपोस। मै.

अड़तिया-विशे., उत्पादक कें अगाड़ राशि द' क' वस्तुकें छेंकि रखनिहार व्यापारी। मै.

अड़नवड़न-विशे., अति सुलभ आ अधिक रहला सँ आदरहीन वस्तु। मै.

अड़ाइ-संख्या, दू पूर्णाङ्क एक बटे दू। मै.

अड़ाएब-क्रि., काज कऽ दैक भार देब । मै.

अड़ाहुस्ती-सं., प्रत्येक काज आ प्रत्येक वस्तु मे हिस्सेदारी । वस्तु वा क्रिया मात्र मे समान बँट-वाराक दुष्ट भावना । मै.

अड़िया-सं., चाकर पेनी वाला वृत्ताकार फैल गहीँर धातुक बासन । कठौती । मै.

अड़ूल-सं.,लाल आ पैघ फूल विशेष । जबा पुष्प । मै.

अड़ैपँजरा- सं., बाम वा दहिन भाग छाती मे दर्द करैक विशेष रोग । मै.

अड़ैया-सं., अढ़ाइ सेरक बटिखारा । विशे., अढ़ाइ दिन पर होमऽवाला वा अढ़ाइ दिन धरि रहै वाला ज्वर । मै.

अड़ौआ-विशे., अड़ाओल जन । मै.

अड़ौती-क्रि., १. कोनो काज मे नियुक्त करैक वा प्रेरित करैक क्रिया । सं., २. कोनो शुभ काजक अधिवास अर्थात् मानसिक संकल्पक चिह्न । ३. कोनो वस्तुक निर्माणक प्रारम्भ । मै.

अड़ौनिहार-विशे.,अड़वैवाला । नियुक्ति देवाला ।मै.

अण्डकोश-सं.,देखू 'अँड़कोश' । सं. तत्सम

अण्डा-सं., पक्षी एवं सरीसृप जीवक गर्भ गोल । मै.

अण्डाएल-विशे., अण्डा भरल जीव । मै.

अण्डी-सं., १. देखू-'अँडरी' । २. भागलपुरी रेसम आ सूरमिलल सूतक बनल ओढ़ना (चादरि) । मै.

अणाएल-विशे., देखू-'अण्डाएल' । मै.

अणाबी-सं., स्वाद आ सुगन्धि भरल मुख शुद्धिक मसाला । मै.

अणाचीदाना-सं., तीर्थ प्रसाद रूपक चीनीक बनल छोट मेहीं गोल दाना । मै.

अणिया-विशे., बिन बधिया कयल बरद, घोड़ा आदि । मै.

अणीवा-विशे., बड़ल आ पैघ आँणवाला । मै.

अणु-सं., चरम कण । सूर्यक किरणक संग आएल गवाछ देने अत्यन्त सूक्ष्म भौतिक कण । मै.

अत्तर-सं., वनस्पति सँ बाहर कयल सुगन्धित द्रव। मै.

अँत्तरज-सं., कपड़ा बीनैक कल मे लागल नीचाँ मुहक पातर खूट्टीवाला नमहर पट्टीक सूत के आपस मे फरिछऽवैत रहैवाला यन्त्र । मै.

अँता-सं., फल विशेष । मै.

अत्यन्त-अव्यय, आवश्यकता सँ बहुत बेसी, अति-शय । सं. तत्सम

अत्याचार-सं.,अमानवीय दुष्ट व्यवहार । सं. तत्सम

अत्याहित-विशे., अत्यावश्यक, अकर बिना काज नहि चलैक ।अनिर्वाहित । मै.

अतउतकरब-क्रि., मनक आगाँ पाछाँ करब । मै.

अतएव-अव्यय, एही द्वारें, एहिकारणें । सं. तत्सम

अतत्तह-अव्यय, अन्हेर, अन्यथा, अतिशय अनिष्टक बात । मै.

अतमा-सं., जीव । लोकोक्ति-लल अतमा रे विकल अतमा सोइ संङे बीर खयलौं भरि अतमा । मै.

अँतरबाल-सं., फूलक घर छारैक क्रम मे चारक एक एक बाती छोड़ि छारैक विधि । मै.

अँतराएब-क्रि., अन्तर पड़ब, घनत्व मे कमी होएब। मै.

अँतराहित-अव्यय, अत्यावश्यक, (विशे.) आवश्यक विषयवाला । मै.

अँतरी-सं., पेटक शिरा समूह, भोंटी । सं. तद्भव

अतल-सं.,पातालक सात तह मे पहिल तहक नाम । अतल, वितल, सुतल, धरातल, रसातल, महातल आ पाताल एहि सब मे पहिल । मै.

अताइ-विशे., राक्षसक आचरण केनिहार, उद्दण्ड-ता सँ लोकक अनिष्ट टा करैवाला । मै.

अतासबाजी-सं., उछाही मे फोड़ैवाला पटाखा, आकाश मे उड़ाकय प्रदर्शित करैक ज्योति । उ. तत्सम

अति-अव्यय, अधिक, बहुत (उपसर्ग) । सं. तत्सम

अतिकाल-अव्यय, विलम्ब, समयक अतिक्रमण । सं. तत्सम

अतिखाइल-विशे., कनेक तीत स्वाद भरल । मै.

अतिखाह-विशे., कनेक तीत स्वादवाला । मै.

अतिथि-विशे., अभ्यागत, पाहुन, आगन्तुक । सं. तत्सम

अतिशय-अतिसैं-विशे., आवश्यकता सँ अतिरिक्त । सं. तद्भव

अतीचार-सं., अशुद्ध समय । विवाह उपनयन आदि शुभ कार्य करैक हेतु गुरु शुद्धि बिना अयोग्य काल । मेष, सिंह आ धनु राशि मे तथा सूर्यक स्थिति वाला राशि मे एवम् विशेष ग्रहक नीच स्थान मे बृहस्पतिक रहने मिथिला मे शुभ कार्यक लेल अशुद्ध काल मानल जाइत अछि । वर्ष सँ अधिक भेला पर महातीचार आ छ मासक भेला पर लघ्व-तीचार कहल जाइछ । सं. तत्सम

अतीत-विशे., बीतल काल । सं. तत्सम

अतीव-अव्यय, बहुत, अत्यन्त । सं. तत्सम

अतीस-सं., औषध, जड़ीबुटी । मै.

अतीसार-सं., रोग विशेष, वेदना भरल आँओ मेने मलक संग पेट झरब । सं. तत्सम

अतुल-विशे., तुलनाहीन । सं. तत्सम

अतोह-विशे., अविराम स्पन्दनवाला । मै.

अतोह-अव्यय, अनन्त, निरवधि, अविराम । मै.

अथक-विशे., विश्रामहीन । मै.

अथबल-विशे., असमर्थता सँ नहि चलि फिरि सकनिहार । वृद्ध आ रोगग्रस्त । मै.

अथर्व-सं., चारू वेद मे अन्तिम वेद । सं. तत्सम

अथर्वा-विशे., अर्थव वेदक ज्ञाता । सं. तत्सम

अथरबोन-सं., सघन झाड़ झंखार वाला वोन । मै.

अथरा-सं., पैघ आ फैल मुहवाला गहीँरगर माटिक बासन आ धातुक वर्त्तन । मै.

अथारि-सं., अथराक आकार मे आरि बान्हिकय पानि उपछि माछ मारैक स्थान । मै.

अथाह-विशे., अगाध, गहीँर जलाशय, तरीघटी नहि पबैक योग्य । मै.

अथी-अव्यय, मनक बातक स्थान मे सुननिहार कें साकांक्ष करैक शब्द । मै.

अथगुथ-अव्यय, मन मे आगाँ पाछाँ करब । विस्मय आ अनिश्चयक स्थिति । मै.

अदण्ड-विशे., देखू-'अडण्ड' । सं. तत्सम

अदत्त-विशे., कहियो ककरो किछु नै देनिहार । दान नहि कयनिहार । मै.

अदही-विशे., अबल, तत्वहीन । मै.

अदन्त-विशे., बिना दूधा दाँत टूटलवाला माल मवेशी । कहबी-"अदन्त बाछी दुदन्त गाय ।" मै.

अदना-विशे., सम्पर्क एवं सम्बन्धहीन आनलोक । मै.

अदनार-विशे., काँच, अजोह, परिपाकहीन । मै.

अदनीबात-सं., निरर्थक गप (विषय) बिनहेतु । मै.

अद्भुत-सं., साहित्यिक रस विशेष ।

अव्यय-आश्चर्य, अद्भुत । सं. तत्सम

अदरख-सं., आद (स्थान भेदेँ शब्द भेद) । मै.

अदरबियाह/अदहियाह-विशे., दृढ़ताहीन, निर्बल । मै.

अदलाबदला-सं., हेर फेर, विनिमय । मै.

अदहन-सं., दालि-भात रन्हैक खौलैवाला पानि । मै.

अदालति-सं., न्यायालय, कचहरी । उ. तद्भव

अदिष्ठ-सं., भाग्य, प्रारब्ध । सं. तद्भव

अदूस-विशे., अधलाह कहैक योग्य, दूसैक योग्य । प्रयोग-वरक विदाइ आ कनियाँ सेहो एकोरती अदूस नै छैक । मै.

अदृश्य-विशे., दृष्टि सँ बाहर रहैवाला । मै.

अदृष्ट-सं., अगोचर वस्तु, भाग्य, नियति । सं. तत्सम

अदृष्टघट्टू-विशे., अभागल, कर्महीन । मै.

अदेय-विशे., नहि देबाक योग्य । सं. तत्सम

अदौ-अव्यय, आदि सँ चल अबैत व्यवहार । परम्परा । मै.

अदौड़ी-सं., छोट-छोट धाठिक गुल्लीजकाँ बनाओल सुखाएल बड़ी । मै.

अध्यक्ष-विशे., कोनो संस्थाक प्रधान सत्ताधारी । सं. तत्सम

अध्ययन-सं., ज्ञान अर्जनक प्रक्रिया । सं. तत्सम

अध्यवसाय-सं., गम्भीरता सँ शास्त्रीय विवेचना । सं. तत्सम

अध्यात्म-सं., आत्माक अधीनक विचार दर्शन । सं. तत्सम

अध्यापक-विशे., शास्त्रीय विषयक निर्देश करैवाला । सं. तत्सम

अध्याय-सं., ग्रन्थक मध्य विषय खण्डक सीमा । सं. तत्सम

अधक्की-विशे., सतत अधिक वस्तु चाहैवाला । मै.

अधकच्चू-विशे., आधाकय छोड़ल काज । मै.

अधकट्टू-विशे., अपूर्ण काज एवं वस्तु । मै.

अधकट्टी-विशे., आधा काटल प्रमाणक पत्र । मै.

अधकपन-सं., प्रयोजनक अधिको लेबाक इच्छा । मै.

अधकपाड़ी-सं., कफ जमला सँ आधा कपाड़क पीड़ा । मै.

अधखँड़-विशे., आधा खण्ड वा टुकड़ा कयल । मै.

अधखल-विशे., आधे भरल बासन । मै.

अधछिज्जू-विशे., आधा पर छोड़ल काज । मै.

अधछ्ड़ा-सं., छोट आकार क पक्षी । मै.

अधच्छ-अव्यय, अस्तित्व, सामने । मै.

अधजक-विशे., आधाजरल पदार्थ । मै.

अधजनमू-विशे., आधा जन्मैक स्थिति मे रही । मै.

अधर्डरेर-सं., आधा आधीक बीचक अंश । मै.

अधन्नी-सं., एक आनाक (चारि संख्याक) आधा। मै.

अधनेठ-विशे., अकृतज्ञ, अधम, नीच, कृतघ्न। मै.

अधपक्कू-विशे., आधा पाकल। मै.

अधपहरा-सं., आध पहरक मान। काल वेलाक त्याज्यमान। विशेष-विशेष दिनक बीच आध पहरक समय दूषित मानल गेल अछि। शुभ कार्यक हेतु ओ सब आध पहरक समय अयोग्य होइछ। यथा "रवौ वर्ज्यचतुःपञ्च सोमे सप्तद्वयन्तथा। कुजे षष्ठद्वयञ्चैव बुधे बाणास्तृतीयकम्। गुरौ सप्ताष्टकञ्चैव त्रिचत्वारि च भार्गवे। शनावाद्यन्तषष्ठञ्च दिनार्द्धप्रहरा मता।" सं. तद्भव

अधपै-सं., किलोक आठम भाग। १२५ ग्राम। मै.

अधबहुँओ-विशे., आधे बौहिक अंश। मै.

अधबाड़-सं., आधा सम्पन्न काज। मै.

अधबैसू-विशे., आधा बीतल वयसवाला। मै.

अधबोलिया-सं., शब्दक आधे अंशवाला वचन। मै.

अधमर-सं., ईंटा खपड़ाक आधा टुकड़ा। मै.

अधम-विशे., नीच, कुवृत्ती, कुकर्मी। मै.

अधमल-विशे., आधा मुड़ल जकाँ भेल। मै.

अधमौगल-विशे., आधा मुइल। मरणासन्न। मै.

अधमोनी-सं., आधा-मनक मानवाला वासन। मै.

अधर्म-सं., लोक वेदक कर्मक विपरीत आचरण। सं. तत्सम

अधर्मी-विशे., विरुद्ध धर्मवाला। नीच कर्म करैवाला। सं. तत्सम

अधर-सं., निचला ठोर। सं. तत्सम

अधर-विशे., आधारहीन स्थान, नीचा दिश लटकल। देशज

अधरतिया-विशे., आधा रातिक समय। मै.

अधरम-सं., (ग्राम्य उच्चारण) देखू-अधर्म। सं. तद्भव

अधलाह-विशे., नहि नीक। अनसोहाँत। मै.

अधलाहा-विशे., १. अनिष्ट भावी। २. मुहक रोग। मै.

अधसार-विशे., धामन गहुँमनक संयोग सँ आधा अंग धामन आधा गहुमन भय उत्पन्न साँप। मै.

अधसिज्झ-विशे., आधा सिद्ध भेल अन्न। मै.

अधहर-विशे., रेल आदि मे आधा भाड़ा लगैवाला। मै.

अधाठी-सं., आधा जरल वा जरैत उठवा योग्य चेरा वा फट्ठीवाला जारनि। मै.

अधार-सं., आधार वा आहार। सं. तद्भव

अधिक-विशे., बेसी। सं. तत्सम

अधिकरास-विशे., बहुतायति, बहुत बेसी। सं. तत्सम

अधिकार-सं., दावी, दाहित्वक भाग वा प्रमाण, दखल। आधिपत्य। सत्ता। सं. तत्सम

अधिकार-सं., विवाह सम्बन्धक निर्णय। मिथिला मे विवाहक समय वर कन्याक किछु पीढ़ी धरि सम्बन्धहीनता देखल जाइत अछि। तदुपरान्त सम्बन्ध स्थापित करैक अधिकार बूझल जाइत अछि। एकर सामान्य नियम एहि प्रकारक अछि– "मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्वा पितृतः सप्तमीं भजेत् त्रिकात्पूर्वं वराद् ज्ञेयः" इत्यादि पञ्जी प्रबन्धक अनुसार पञ्जीकारक निर्णय अधिकार थीक। सं. तत्सम

अधिकार-सं., मानव जीवन स्तरक सामाजिक विशेष अस्तित्व। लौकिक मान्यता। सं. तत्सम

अधिकारमाला-सं., वैवाहिक सम्बन्धक उपयुक्त परक निर्धारित नामावली। सं. तत्सम

अधिकारी-विशे., अधिकार रखैवाला। सत्ताधारी। सं. तत्सम

अधिकांश-विशे., अधिकतर, बेसी भाग। सं. तत्सम

अधिया-विशे., आधा होइक वस्तुवाला। यथा अधिया चाउर, बटाइ खेतक आधा उपजा। मै.

अधियाएब-क्रि., कोनो काजक आधा सम्पन्न होएब। आधा होएब। मै.

अधिरथी-विशे., रथक सेनाक सेनापति। सं. तत्सम

अधिवास-सं., देव पूजा सँ पूर्वदिन देव स्थल मे पूजा सामग्रीक संघटन। सं. तत्सम

अधीन-विशे., अधिकार, शासन वा आज्ञा मे रहैवाला। सं. तत्सम

अधीर-विशे., अगुताह, धैर्यहीन। सं. तत्सम

अधीश-विशे., शासक पर शासन करैवाला। सं. तत्सम

अधेड़-विशे., आयुक आधा पर रहैवाला। मै.

अबेला-सं., सब सँ छोट देवालक कोन बनबैवाला करनी। मै.

अधोखा-सं., लोकक सोझ अर्थात् दृष्टि सँ बचैले देल टाट वा ओहार पर्दा। मै.

अधोगति-सं., पतन, नरक होएब। अपन स्थिति सँ नीचाँ मुह् जाएब। सं. तत्सम

अधोदशा मे रहब-क्रि., अत्यन्त क्षीण स्थिति होएब। मै.

अन्टबन्ट-सं., अनर्थक प्रलाप। मै.

अन्टसन्ट-सं., सम्बन्धहीन, अपमानजनक बात। मै.

अन्टा-सं., १. तागक बड़का लच्छा, डोरी भीरी। २. फलक गाछ मे डारि छीलिकय नव गाछ बनबैक हेतु माटि बन्हैक प्रक्रिया। कलम लगौनाइ। मै.

अन्टाह्-विशे., सब खन तमतम कयनिहार। बात-बात मे कसि बैसनिहार। मै.

अन्टी-सं., तागक मोल लच्छी। मै.

अन्टीटस-विशे., अप्रिय, मर्मभेदी असम्बद्ध बात। मै.

अन्टोटाह्-विशे., सदिखन खिसियाएले बात बज-निहार। मै.

अन्ठाएब-क्रि., उपेक्षा करब। अनसुनी करब। ध्यान नै देब। अवहेलना करब। मै.

अन्ठानबे-संख्या, आठ एकाइ नौ दहाइक अंक। मै.

अन्ठामन्ठाकय-अव्यय, सब दिस सँ ध्यान समेटि-कय। मै.

अन्ठिया-विशे., अपरचित, अनचिन्हार। मै.

अन्ठेकामारब-क्रि.,माथ पर वस्तु राखि बिन पकड़ नै निधोख चलब। मै.

अन्त्याक्षरी-सं., अन्तिम अक्षर सँ पद्य आरम्भ कहब। सं. तत्सम

अन्त-सं., समाप्ति, मृत्यु, निशेष। सं. तत्सम

अन्तक-सं., यमराज, अन्त कयनिहार। सं. तत्सम

अन्तःकरण-सं., हृदयक सूक्ष्मतम प्रकृति। सतत आत्माक लागल सूक्ष्म शरीर। चेतना। सं. तत्सम

अन्तर्यामी-विशे., आन्तरिक विषय जानि लैवाला। सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक ज्ञान रखैवाला। सं. तत्सम

अन्तर-सं., विभेद होएब, (उ. फर्क) भिन्नता। सं. तत्सम

अन्तरा-सं., आरोह अवरोहक पद। संगीत मे स्थायी (ध्रुपद) क अतिरिक्त बीचक गबैक पदा-वली। सं. तत्सम

अन्तरीक्ष-सं., आकाश। सं. तत्सम

अन्तस्तल-सं., भीतरक निचला तह। सं. तत्सम

अन्तर्हिया-विशे., आन प्रदेशक लोक। आन ठाम रहनिहार। मै.

अन्ता-सं., बाँधक कामि सँ बनल माछ मारैक विशेष साधन। मै.

अन्तिम-विशे., अन्त मे भेनिहार। सं. तत्सम

अन्देशा-सं., अनिष्टक आशंका सँ मनक विकलता। मै.

अन्ध-विशे., आन्हर। नेत्रहीन। सं. तत्सम

अन्ध-सं., अन्हार। सं. तत्सम

अन्धाधुन्ध-सं., बिन जनने बुझने कयल जाइक क्रिया। मै.

अन्धुन-सं., अनठेकान। मै.

अन्न-सं., खेतक उपजल धान गहुम आदि। मै.

अन्नप्राशन-सं., नवनेना कें पहिले-पहिल अन्न चटबैक विधि। पुरुष कें सम मास मे, आठम मास सँ आ स्त्री कें सातम सँ विषम मास मे नियम। सं. तत्सम

अन्तर-सं., अन्तःपुर, भीतरी आङनक एकान्त स्थान। मै.

अन्यत्र-अव्यय, आनठाम, अनतय। सं. तत्सम

अन्यथा-अव्यय, दोसर रुपें, आन प्रकारें, नहि तँ। मै.

अन्याय-सं., औचित्य सँ भिन्न, लोकक अहित। सं. तत्सम

अन्यायी-विशे., समाजक प्रतिकूल करैवाला। सं. तत्सम

अन्वेषण-सं., खोज, पुछारी, ताकब। सं. तत्सम

अन्हड़-सं., धूराक संग सुखाएल बिहारि। मै.

अन्हमुन्ह्-विशे.,जर आदिक प्रकोप सँ मूर्छित तथा चेतना आ चेष्टारहित। मै.

अन्हरजाली-सं., (लाक्षणिक) मन बुद्धि कें फेरि-दैक प्रयास। यथार्थक ज्ञान करैक कुण्ठा। मै.

अन्हरा-विशे., (अनादर मे) सूझै मे असमर्थ। मै.

अन्हराएब-क्रि., घनीभूत होएब, अन्हार जकाँ लागब। धूआ आदि सँ नहि देखल जा सकब। मै.

अन्हरिया-विशे., अन्धकार भरल रातिवाला पक्ष। मै.

अन्हरोख-सं., अन्हारे रहैत प्रभातक समय, भोर अन्हारी। पौह फटै सँ पहिलुक काल। मै.

अन्हरौन-विशे., अधिक जंगल झारक द्वारे आ मेघ लागल रहैक द्वारें असमय मे अन्हार बनल। मै.

अन्हाक आहिल-सं., (लाक्षणिक) भविष्यै पर निर्भर भ' क बाल धैने चलै मे ध' तानब। मै.

अन्हार-सं., अन्धकार। मै.

अन्हार घरजनु सातें साँप -विशे., (लाक्षणिक) बिन बूझल गमल स्थान। अत्यन्त भयावह। मै.

अन्हारीदेब-क्रि., कुसियारक गाछ भेला पर ओकर जड़ि कें माटि सँ भरिदेब। मै.

अन्हरे-सं., अनर्थ, मनमानी, लोकक उत्पीड़न। मै.

अन्हैया-विशे., भरि दिना। मै.

अन्है साँप-सं., साँपक आकार-प्रकारवाला गाछ। मै.

अनकर-सर्व., आनक, दोसराक। मै.

अनकहर-विशे., अविश्वसनीय बात। मै.

अनका-सर्व., दोसरा कें। मै.

अनखद-विशे., केवल अन्नेटा खाइवाला। मै.

अनखालागब-क्रि., अप्रिय लगैक कारणें तामस जागब। मै.

अनखाह-विशे., सब बात कें अधलाहे मानि तमसय-निहार। स्त्री० अनखाहि। मै.

अनखुनाह-विशे., आनक नीक नहि सहन कय-निहार। स्त्री० अनखुनाहि। मै.

अनखौक-विशे., अन्न खाइवाला बच्चा। मै.

अनगनित-विशे., असंख्य, बहुत। मै.

अनगर-विशे., १. अन्नक सम्पर्कवाला। २. अन्न मे विशिष्टता वाला। अन्न भरल। मै.

अनगुति-सं., उदय सँ पूर्ववाला समय, भोर। मै.

अनगौआँ-विशे., अपन गाम सँ भिन्न गामक वासी। मै.

अनघोल-सं.,१. गुप्त बातक सभरे प्रकाश। २. बहुत लोकक एके संग ऊँचे बजैक विभिन्न शब्द। मै.

अनङ्ग-सं., कामदेव। सं. तत्सम

अनचहू-विशे., कनेक-कनेक सीझल अन्नक रस पटैवाला नेना। मै.

अनचिन्हार-विशे., अपरिचित। मै.

अनजनुआँ-विशे., अवैध पुरुष सँ उत्पन्न सन्तान। मै.

अनजर-सं., अधिक भोजनक कारणें भेल ज्वर। मै.

अनजान-विशे., ज्ञानहीन। अज्ञान। मै.

अनटबनट,अनटसनट-अव्यय, (विशे.) अप्रयोजन, असंबद्ध। मै.

अनठेकान-सं., अनिश्चिय। मै.

अनठेकानी-विशे., बिन जानल बूझल। अनिश्चित। मै.

अनठेकामारब-क्रि., माथ पर बैल आदि भारी लय निधोख चलब। मै.

अनतय-अव्यय, अन्यत्र, आनठाँ। मै.

अनदिना-विशे., यात्रा वा शुभकर्म नहि करैवाला दिन। मै.

अनदेख-विशे., अदृश्य मे रहैवाला, अदृश्य। मै.

अनधना-सं., एक स्वक धान मे मिलल भिन्न धान। मै.

अनधैर्य-सं., धैर्यक अभाव, असन्तोष, अनाश्वासन। मै.

अनन्त-विशे., अन्तहीन, अतोह। सं. तत्सम

अनन्तमूल-सं., सारिवा, औषध विशेष। सं. तत्सम

अनपच-सं., नहिपचैक कारणें पेटक विकार। मै.

अनपचार-सं., अपवित्र चालि, अशुद्ध व्यवहार, घृणित कर्म। मै.

अनपट-विशे., पत्रकुल अनगनित रुपक। मै.

अनपेक्ष-विशे., लागि रखै सँ उदासीन, अपेक्षाहीन। सं. तत्सम

अनबल-सं., आन्तरिक विरोध। मै.

अनबूझ-विशे., अबोध। ज्ञानरहित। मै.

अनभरोस-सं., अधैर्य। मै.

अनभल-सं., अनहित, अमंगल। मै.

अनभुआर-विशे., अपरिचित। अनचिन्हार। मै.

अनमनस-विशे., दूर मे मन कें ओझराएल रखै-वाला। मै.

अनमना-सं., मनोरंजन, मनबहलैक साधन। मै.

अनमनाएब-क्रि., मनक विफल रहने मन्द रहब। मै.

अनमुनाह-विशे., आन्तरिक कष्ट सँ विकल। मै.

अनमुह-विशे., मनक बात प्रकट कर्इ मे असमर्थ। मै.

अनमेल-विशे., परस्पर समानता नहि रखनिहार। मै.

अनमोल-विशे., अमूल्य। मै.

अनर्गल-विशे., अनुचित, असंगत। मै.

अनर्थ-सं., अन्याय, अनहित घटना। मै.

अनरस-सं., खाएल अन्नक पचैक अभाव मे उत्पन्न विकार। मै.

अनरसा-सं., पकवान विशेष। मै.

अनरीत-सं., परम्परा तथा नियमक प्रतिकूल व्यवहार। मै.

अनलेख-विशे., असंख्य, लेखा-जोखा सँ बाहर। मै.

अनवधान-अव्यय, अप्रत्याशित रूपें। सं. तत्सम

अनवरत-अव्यय, सविघ्न। सं. तत्सम

अनवस्था-सं., अनियमितता, व्यवस्थाक उनटफेर। सं. तत्सम

अनवसर-सं., अनुपयुक्त समय। सं. तत्सम

अनशन-सं., भोजन नहि करैक नियम। सं. तत्सम

अनस्थरि-सं., अनुपयुक्त, अव्यवस्थित, अयोग्य स्थान। मै.

अनस्था-सं., उपेक्षा, अनास्था। सं. तद्भव

अनसाह-विशे., आनक नीक नहि सहन करैवाला। स्त्री० अनसाहि। मै.

अनसुन-विशे., सुनलौ पर अनठाओल। मै.

अनसुनी-सं., सुनलौ पर अनठा दैक चेष्टा। मै.

अनसैन-सं., घमासान रुपक अनहोनी घटनाक भय-युक्त घबराहटि। मै.

अनसोहांत-विशे., नहि नीक लगै योग्य। मै.

अनहद-विशे., सीमा सँ बाहर, सीमारहित। उ./मै.

अनहित-सं., अनको बखरा हड़पैक विचार। मै.

अनहोनी-सं., असंभावित घटना। मै.

अनाइत-अव्यय, दैवयोगें। मै.

अनाएब-क्रि., मङाएब। मै.

अनाड़ी-विशे., अनजान, बेलूरि। मै.

अनाथ-विशे., असहाय, संरक्षणहीन। सं. तत्सम/मै.

अनाध्याय-सं., अध्ययनक हेतु दोषयुक्त दिन। सं. तत्सम

अनामिका-सं., हाथक चारिम आङुरक नाम। मै.

अनायास-अव्यय, बिना यत्नें, सरलता सँ। मै.

अनार्य-विशे., आर्य संस्कृति कें नहि माननिहार। सं. तत्सम

अनार-सं., दाड़िम। देशज मै.

अनासुनी-सं., विरोधी लोकक विषय मे किछु नहि सुनैक व्यवहार। मै.

अनासुरती-अव्यय, बिना बूझल-सूझल, बिना पूर्व सूचनाक। मै.

अनाह-विशे., अन्नक संयोगवाला वासन। मै.

अनिल-सं., बसात। सं. तत्सम

अनिश-अव्यय, सदखन। सं. तत्सम

अनुकरण-सं., देखा-देखी (उ.) नकल। सं. तत्सम

अनुकल्प-सं., कोनो विधि विधानक दोसर सरल रुप। सं. तत्सम

अनुकूल-विशे., विचारक अनुसार होमऽवाला। सं. तत्सम

अनुक्षन-अव्यय, सदति काल। अनुक्षण। सं. तद्भव

अनुग्रह-सं., कृपा। सं. तत्सम

अनुचर-विशे., सेवाक ध्येय सँ संग रहनिहार। सं. तत्सम

अनुचित-अव्यय, तथा विशे., अधलाह, प्रतिकूल। सं. तत्सम

अनुपम-विशे., अतिसुन्दर, उपमाहीन। सं. तत्सम

अनुपात-सं., समानता वा अपेक्षाक संगति। सं. तत्सम

अनुपान-सं., औषधक संग खाइवाला आवश्यक वस्तु। सं. तत्सम

अनुभव-सं., पहिने घटल घटनाक स्मृति। सं. तत्सम

अनुमति-सं., आज्ञा, विचारक पुष्टि, स्वीकृति। सं. तत्सम

अनुमान-सं., तर्क, लक्षण सँ लक्ष्यक निर्धारण, अन्दाज। सं. तत्सम

अनुरक्त-विशे., प्रेम, प्रणय, स्नेह मे डूबल फँसल आ पड़ल। सं. तत्सम

अनुराग-सं., १. प्रेम। २. कृत्रिम आत्मीयता। सं. तत्सम

अनुराधा-सं., नक्षत्र विशेष। मै.

अनुरुप-विशे., एके आकार प्रकारवाला। सं. तत्सम

अनुरोध-सं., उपदरयुक्त कर्त्तव्यक प्रति प्रेरणा। सं. तत्सम

अनुशंसा-सं., विचारक सम्पोषण। सं. तत्सम

अनुष्ठान-सं., कोनो नीक काज साधना। सं. तत्सम

अनुस्वार-सं., आनुनासिक मात्रा, अक्षर पर देल बिन्दु। सं. तत्सम

अनुसन्धान-सं., विषय वस्तुक मूल धरि अन्वेषण । सं. तत्सम

अनुसार-अव्यय, विषयक अनुकूल रूपेँ । सं. तत्सम

अनूकाल-अव्यय, सदिखन । "अनूकाल जनि बिसरह मोहि" विद्यापति । मै.

अनूप-विशे., अप्राप्य, अपूर्व । जलप्राय भूमि । मै./सं. तत्सम

अनेक-सर्व., बहुत, एक सँ अधिक । सं. तत्सम

अनेर-विशे., व्यर्थ, बिन कारण, अनियन्त्रित । प्रयोग-'अनेर बढ़ेतऽ हरिन सूगर बढ़े' । मै.

अनैँ-सं., मौलिक-कौलिक सम्बन्ध । अन्वय । सं. तत्सम

अनैँत-विशे., निकट कौलिक सम्बन्धक लोक । मै.

अनोख-विशे., १. अपूर्व, आश्चर्यजनक घटना । २. असुन्दर । मै.

अनोन-विशे., १. नोन शून्य वा थोड़ नोनवाला । २. (लाक्षणिक) अप्रिय बात । मै.

अनोना-विशे., नोन नहि खाइवाला दिन । मै.

अनोर उठब-क्रि., अनघोल होएब । कोलाहल । मै.

अप्रचाल-विशे., चलै फिरै मे असक वृद्ध । मै.

अप्रतिम-विशे., अतुलनीय । सं. तत्सम

अप्री-विशे., अप्रिय । सं. तत्सम

अपक्व-विशे., बिन पाकल, बिन पचल । असिद्ध । सं. तत्सम

अपक-सं., भोजनक नहि पचला सँ उत्पन्न रोग । मै.

अपकर्म-सं., अनुचित कर्म । सं. तत्सम

अपकर्मी-विशे., अनुचित काज करनिहार । सं. तद्भव

अपकार-सं., अनहित । सं. तत्सम

अपकीर्ति-सं., अपजस, दुर्नाम, अपयश । सं. तत्सम

अपखोरा-सं., जल रखैक पैंच बासन । मै.

अपगराति-सं., आत्महीनता सहित पश्चात्ताप । सं. तद्भव

अपङ्ग-विशे., कोनो अंगक हीन, लुल्ह नाङर आन्हर । मै.

अपच-सं., नहि पचला सँ उपजल पेटक विकार । मै.

अपचार-सं., अनुचित तथा दूषित व्यवहार । पाप । सं. तत्सम

अपचेष्ट-विशे., उचित चेष्टा नहि करैवाला । अपनो देहक परिष्कार नहि करैवाला । सं. तत्सम

अपटीखेत-सं., १. अपमृत्यु । २. श्मशान । ३. अपुरखा सँ सत्यानाश । मै.

अपटु-विशे., अलूरि । उचित काजक ज्ञान नैं रखैवाला । सं. तत्सम

अपढ़-विशे., नहि पढ़ैवाला, मूर्ख । मै.

अपथ-विशे., अपथ्य, स्वास्थ्यक प्रतिकूल । सं. तद्भव

अपथ-सं., कुमार्ग, अहित बाट । सं. तत्सम

अपन-सर्व., निज, निजी सम्बन्धी । मै.

अपन उल्लू सोझ करब-क्रि., (लाक्षणिक) अपने स्वार्थ साधब । मै.

अपनकज्जी-विशे., अपने काज टा सँ अपेक्षा रखैवाला । मै.

अपनरब-सं., अपनापन, अपन बूझैक प्रवृत्ति । मै.

अपना-अपनी-अव्यय, व्यक्तिगत रूपेँ भिन्नता सँ । मै.

अपनाएब-क्रि., अपना मे मिलाएब । आत्मसात करब । मै.

अपनापन-सं., आत्मीयता, अपनत (त्व) । मै.

अपनाभरि-अव्यय, यथा शक्ति, अपन शक्तिक अनुसार । मै.

अपने-अव्यय, सम्मानतीय सम्बोधन, स्वयम् । मै.

अपनैती-सं., आत्मीयता, अपनापनक प्रवृत्ति । मै.

अपमान-सं., तिरस्कार, अप्रतिष्ठा । सं.तत्सम

अपमृत्यु-सं., अकाल मृत्यु । सं. तत्सम

अपयश-सं., बदनामी, अपजस । सं. तद्भव

अपरपच्छ-सं., पितृपक्ष, आश्विनक अन्हरिया पक्ष । मै.

अपरपात-सं., जेठ श्रेष्ठक समक्ष छोट सम्बन्धीक मरण । सं. तत्सम

अपरस-सं., हाथक चर्म रोग विशेष । मै.

अपराजित-सं., लती मे होमऽवाला फूल विशेष । मै.

अपराध-सं., दोष, चूटी, अधलाह कर्म । सं. तद्भव

अपराहु-विशे., अपराध करैक प्रवृत्तिवाला । मै.

अपरिहार्य-विशे., नहि छोड़ैक योग्य । सं. तत्सम

अपरूप-विशे., अत्यन्त सुन्दर । मै.

अपरोजक-विशे., अवण्ड, कोनो काजक जोग नहि, बेलूरि । मै.

अपलाप-सं., कोनो बात कें नुकबैक चेष्टा । सं. तत्सम

अपवाद-सं., अनुचित प्रचार, लाञ्छनक उद्घोष । सं. तत्सम

अपवृत्ति-सं., अधलाहू आचरण । सं. तत्सम

अपशोच-सं., पश्चात्ताप पूर्वक गम्भीर दुख । मै.

अपस्मार-सं., मृगी रोगक विशेष रूप । सं. तत्सम

अपसराहि-विशे., शरीर सँ चरित्र धरि अपवित्रता धरलि स्त्री । मै.

अपसुइआ-विशे., अप्रसूतिका, बिन सन्तान भेल स्त्री । मै.

अपसेआँत-विशे., परिश्रान्त, अपथान्त, थाकल । मै.

अपहँत-विशे., शुद्ध-अशुद्ध आ पवित्र-अपवित्रक विचार शून्य । विचार आचार मे घिनौन । मै.

अपहरण-सं., चोरि, लूटि । बलात् लऽजाएब । सं. तत्सम

अपाहक-विशे., नूरि मुहक हीन । अपटु । मै.

अपात्र-विशे., अयोग्य, अक्षम । सं. तत्सम

अपान-सं., देहक पाँच वायु मे अधोवायु । सं. तत्सम

अपार-विशे., अन्त नहि पर्वक योग्य । मै.

अपालन-सं., बिना देख-रेखक मुइल गाइक प्राय-श्चित । सं. तत्सम

अपियारी-सं., माछ बभर्वक हेतु तात्कालिक कृत्रिम खत्ता । मै.

अपुछ-सं., परिमोन, अपान, अधौं । मै.

अपूर्व-विशे., विलक्षण, अतिसुन्दर । सं. तत्सम/मै.

अपेक्षा-सं., बिना सम्बन्धी परस्पर सद्भाव । सं. तत्सम

अपैत-विशे., अशुद्ध, अपवित्र । मै.

अपोआइ-सं., नमहर, हरियर आ कोमल घास । मै.

अफजल-विशे., भीतर बहार दूनू विधियेँ घिनौन । मै.

अफड़-विशे., नहि फड़ैवाला गाछ । मै.

अफनाएब-क्रि., १. तामस सँ तमतम करब । २. कौतूहल सँ छटपट करब । मै.

अफरब-क्रि., १. अत्यन्त भोजन सँ अकसक करब । २. अफरा रोग सँ माल जाल केँ आक्रान्त होएब । मै.

अफरा-सं., माल जालक रोग विशेष । मै.

अफरात-विशे., अधिकतर, अधिकता सँ भेटैवाला । मै.

अफार-विशे., बिन जोतल खेत । मै.

अफुआएब-क्रि., तामस सँ मुह फुलौने रहब । मै.

अबखूस-सं., फलक रस । मै.

अबल-विशे., हवान्स शुन्न, शक्तिहीन । मै.

अबंच-विशे., शेष, बाँकी, बाँचल नै रहल । मै.

अबढब-सं., छातीक धड़कनक प्रतीक शब्द । मै.

अबढंग-विशे., नूरिविहीन, सामान्यो कलारहित । मै.

अबढंगाह-विशे., अबढंग जकाँ करैवाला । स्त्री० अबढंगाहि । मै.

अबन्डु-विशे., अकर्मण्य, किछु करै मे अक्षम । ज्ञान आ क्रिया कलाहीन । मै.

अबतब-अव्यय, (लाक्षणिक) कोनो क्षण मे मृत्युक संभव । मै.

अबतीकाल-सं., अबैक बेर । मै.

अबरख-सं., खान सँ बहराएल विशेष द्रव्य । एकर भस्म सँ रासायनिक औषध । मै.

अबरजात-सं., अर्थ-जाइक व्यवहार । मै.

अबरा चढ़ब-क्रि., अतिरिक्त आमदनी सँ भरैत जाएब । मै.

अबलगर-विशे., शक्तिहीनता भरल । मै.

अबला-सं., स्त्री जाति । मै.

अबला निदिहा-विशे., अनाथ स्त्री । मै.

अबलाहा-विशे., अबल रहैवाला । मै.

अबाइ-सं., अबैक सम्भावना, आगम । मै.

अबाक-विशे., विस्मय, भय आदि सँ किछु नै बजैवाला । चुप । मै.

अबाद-विशे., फसिल लागल खेत । मै.

अबाध-विशे., बिना बाधावाला । मै.

अबारचढ़ब-क्रि., माछक प्रवाहक विरुद्ध चलब । मै.

अबारा-विशे., उद्दण्ड, अनुशासनहीन, दुर्वृत्ती । स्वेच्छाचारी । मै.

अबाह-विशे., कष्टयुक्त अंग, विशेष विहून आ कष्टवाला । अक्षम । मै.

अबीर-सं., अनेक रंगक रेणु, उत्सव त्योहारक मनोरञ्जक वस्तु । मै.

अबुझान-विशे., बातक अर्थ बुद्धि मे जकरा नहि जाँक, केवल मुह तर्कैवाला । मै.

अबूझ-विशे., बातक मर्म नहि जाननिहार आ बुझ-निहार । मै.

अबूह-विशे., असम्भावित, सामर्थ्यक अनुकूल नहि रहनिहार । मै.

अबेर-सं., विलम्ब, अतिकाल । मै.

अबेल-अबेल-अव्यय, अबेक चेष्टा करितें । मै.

अबेया-सं., अबेक निश्चय । अबेक सम्भव । मै.

अबोध-विशे., अज्ञान, किछु नै बूझैवाला । मै.

अभ्यन्तर-अव्यय, अन्तस्तल, भीतर । सं. तत्सम

अभ्यर्थना-सं., अनुनय विनय, दीनता सँ प्रार्थना । सं. तत्सम

अभ्यागत-विशे., अतिथि, पाहुन । सं. तत्सम

अभ्यास-सं., १. आदति, लतुक । २. बराबरि पढ़ैक चेष्टा । सं. तत्सम

अभ्युदय-सं., उन्नति, बढ़बाक प्रकृति । सं. तत्सम

अभच्छ-विशे., मनुष्यक अखाद्य । अभक्ष्य । सं. तद्भव

अभट्ट-विशे., अशिक्षित समाजवाला विषय । सं. तत्सम

अभड़ब-क्रि., अनदेख मे देह सँ भीड़ब । सम्पर्क होएब । मै.

अभनीगबनी-सं., बहुत दिन सँ संचित उबहन उपदर आ आक्रोश बात । मै.

अभय-विशे., डरहीन । सं. तत्सम

अभरन-सं., आभरण, गहना । सं. तद्भव

अभाग-सं., अभाग्य, अधलाह अदृष्ट । सं. तद्भव

अभागल-विशे., अदृष्टघट्टू । भाग्यहीन । मै.

अभार-सं., अप्रतिष्ठा, दोष भरल अपवाद । मै.

अभाव-सं., अस्तित्वक लोप । मै.

अभावुत-अव्यय, अप्रत्याशित, अकस्मात् । मै.

अभास-सं., आभास, झलक । सं. तत्सम

अभिजित-सं., उत्तम गुणवाला सूक्ष्म नक्षत्र । मै.

अभिझंक-सं., मन वा शरीर पर अचानक चोट सँ बाधक शून्यता । मै.

अभिप्राय-सं., आशय, तात्पर्य । सं. तत्सम

अभिमत-विशे., आन्तरिक विचार सिद्ध । सं. तत्सम

अभिमान-सं., घमण्ड, मिथ्या अहंकार । सं. तत्सम

अभियान-सं., कोनो काजक बुद्धि विचार सँ पूर्ण सम्हरिक प्रवृत्ति । सं. तत्सम

अभिराम-विशे., सुन्दर । सं. तत्सम

अभिलाषा-सं., आन्तरिक इच्छा । सं. तद्भव

अभिष्ठान-सं., सम्मान दैत उठिकय ठाढ़ होएब । मै.

अभिषेक-सं., सिचन, स्नान, सिक्त करब । सं. तत्सम

अभिसार-सं., चुपचाप प्रणयीक लग गमन । सं. तत्सम

अभिसारिका-विशे., लोकक आँखि बचा कय प्रणयी लग गेनिहारि । सं. तत्सम

अभीर-विशे., प्राचीन जाति विशेष । सं. तत्सम

अभीष्ट-विशे., इच्छा कयल, अभिलषित । सं. तत्सम

अभुक्त-विशे., बिन भोजन कयल, भूखल । सं. तत्सम

अभूख-सं., थोड़ खाइक इच्छा, पूर्ण भूखक अभाव । मै.

अभेला-सं., उपेक्षा, सेवा मे अनठाएब, उचित परिचर्याक अभाव । अवहेलना । मै.

अम्बर-सं., १. आकाश । २. कपड़ा । ३. चरखा विशेष । सं. तत्सम

अम्बा-सं., माता, देवी । सं. तत्सम

अम्बात-सं., आम वात । वायु विकारक रोग । मै.

अम्बार-सं., समूह, ढेरी, बहुतायत । उ. तत्सम

अम्मट-सं., पाकल आमक रस केँ सुखा कय बनाओल पदार्थ । मै.

अम्मत-सं., छ स्वादक रस मे रस विशेष । अम्ल । मै.

अम्मर पीयब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक दिन धरि जीयब । मै.

अम्मल-सं., कोनो वस्तुक व्यसन, निश्चित समयक अभ्यास । मै.

अम्मा-सं., माय, जननी । मै.

अमचुकारी-सं., अम्मत ढेकार । अपच रहैक ढेकार । मै.

अमचूर-सं., काँच आमक खण्ड केँ सुखाकय बनाओल चूर्ण । मै.

अमजिहुल-विशे., कनेक-कनेक अम्मत स्वादवाला । मै.

अमठा-विशे., आमक काठवाला वस्तु । मै.

अमड़ा-सं., आमसन अम्मत छोटफल । मै.

अमताइ-सं., खट्टापन । मै.

अमताइल-विशे., अम्मतसन स्वादवाला । मै.

अमताएब-क्रि., अम्मत स्वादवाला होएब । मै.

अमताह-विशे., अम्मतक स्वादयुक्त । मै.

अमती-सं., काँटवाला छोट वनष्पति विशेष । मै.

अमतौआ-विशे.,अम्मतवाला, अम्मत प्रभेदक पदार्थ । मै.

अमनियाँ-विशे., शुद्ध रूपक, पवित्र काजक हेतु पवित्र कयल । मै.

अमरकन-विशे., जीवनी शक्ति नष्ट नै होइक कन्द-वाला । मै.

अमरलत्ती-सं., बिन जड़िक लत्ती, उपरे उपर गाछ पर पसरैवाली लत्ती । मै.

अमरस-सं., आमक रस अथवा उत्तर वा आमक रसवाला समय मे उत्पन्न छोट बच्चाक रोग । मै.

अमरसा-सं., आमक समय मे वातावरण मे पसरल अम्लता । मै.

अमरुख-विशे., मूर्ख, कोनो ज्ञान नै रखैवाला । मै.

अमरै-सं., अमराई, दूरधरि आमक गाछी । मै.

अमरौड़ा-सं., अमताह स्वादिष्ट सुपाच्य साग । मै.

अमल-सं., १. सम्भावित समय । २. बीतल कालक व्यक्तिक समय स्थिति । ३. देखू-अम्मल । मै.

अमलतास-सं., औषधक वनष्पति विशेष । मै.

अमलपित्त-सं., अम्लपित्त रोग विशेष । सं. तद्भव

अमलबेंत-सं., पतरका बेंतक वन । मै.

अमशूल-सं., व्यथाक संग अमातशय । मै.

अमहाउर-सं., दही जनमउबैक प्रक्रिया मे सुसुम काउर छाँछ आदि बासन तरने देबाक विधि । मै.

अमा-सं., १. माय (सं. तद्भव) । २. अमावास्या । सं. तत्सम

अमाघोर-सं., मैंही धानक प्रभेद । मै.

अम.त्य-विशे., विचार देनिहार । सं. तत्सम

अमात-सं., जाति विशेष । मै.

अमानर्स-सं., आँखों (लज्जा) लेने वेदनाक संग मल क उतरब । मै.

अमामाइक पहिलैयाम-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) पहिले काज मे गौरव करैक चेष्टा । अनुभवहीनो भ' क' दावी विशेष । मै.

अमार-सं., अम्बार । उ. तद्भव

अमारी -सं., सबठाँ आमक अधिकता । मै.

अमाल (एमाल)-सं., वर्षा भेला पर धनखेती मे जागल घास । मै.

अमावास्या-सं., कृष्ण पक्षक १५म तिथि । मै.

अमिअ-सं., अमृत । सं. तद्भव

अमिट-विशे., कहियो नहि मेटाइवाला । मै.

अमित-विशे., अनुमान सँ बाहर, मानरहित । सं. तत्सम

अमिरती-सं., जिलेबीक प्रक्रिया सँ बनाओल जाइ-वाला स्वादिष्ट मधुर । मै.

अमिलगर-विशे., विशेष आमिलक स्वादवाला । मै.

अमिलाएब-क्रि., तीमन मे आमिल (अम्मत) देब आमिल मिलाएब । मै.

अमिलाह्-विशे., आमिलक सम्पर्की । आमिलवाला । मै.

अमिलौन-विशे., आमिलक अधिक स्वाद भरल । मै.

अमीन-विशे., खेत भूमि नपैक विशेषज्ञ । मै.

अमुक-सर्व., फलाँ, फलना । सं. तत्सम

अमृत-सं., जीवनी शक्ति । सं. तत्सम

अमेचब-क्रि., झटकाक संग कोनो वस्तुकेँ कनेक घुमाएब । मै.

अमेट-विशे., नहि मेटबैक जोग । मै.

अमेठब-क्रि., घुमा-घुमा कय गुन देब । मै.

अमेड़ब-क्रि., घुमाकय झोंक सँ ऐंठब । मै.

अमेड़ी-सं., अमेड़बाक प्रक्रिया । मै.

अमैया-विशे., आमवाला (काल) । मै.

अमोल-विशे., अमूल्य, दाम नहि लगाओल जा सकै-वाला । मै.

अयना-सं., १. अपन प्रतिबिम्ब देखैक सीसा । २. पौराणिक राधाक भाइक नाम । मै.

अयना-अव्यय, बीतल वा भविष्यत काल मे अबैक मान । मै.

अय !/अयि !/अये ! -अव्यय, शिष्ट सम्बोधन । मै.

अर्क-सं., १. कोनो वस्तुक यन्त्र द्वारा चुवाओल रस । औषध । २. सूर्य । मै.

अर्घ-सं., ककरो उद्देश्य क'क' भक्ति सँ अर्घा द्वारा अथवा अञ्जलि सँ देल जल । सं. तद्भव/मै.

अर्घा-सं., जल समर्पित करैक द्रव्यक पात्र । मै.

अर्घासन-सं., श्राद्ध धरि मृत व्यक्तिक उद्देश्य सँ देल अर्पक संग भोज्य पदार्थ । सं. तत्सम

अर्घी-सं., छोट अर्घा । मै.

अर्घौती-सं., सूर्य केँ अर्घक संग दैक छोट-छोट वस्तुक सामग्री । मै.

अर्चना-सं., पूजा । सं. तत्सम

अर्जन-सं., कमाइ, श्रम सँ उत्पादन । सं. तत्सम

अर्जा-सं., १. लेखा करैक विधि । २. उपार्जन । मै.

अर्जुन-सं., १. वृक्ष विशेष । २. मध्यम पाण्डव । मै.

अर्तल-विशे., सद्यः आवश्यक, उपस्थित आवश्यक । मै.

अर्थ-सं., १. धन । २. शब्दक संकेतित विषय । ३. प्रयोजन । सं. तत्सम

अर्थाएब-क्रि., बुझलो बात कें दोसराक मुह सँ बारम्बार कहाएब । मै.

अर्थात्-अव्यय, स्पष्टीकरणक प्रकारान्तर । मै.

अर्थी-सं., शव यात्राक विमान, चचरी । देशज

अर्धङ्ग-सं.,लकवा, पक्षाघात रोग । मै.

अर्धङ्गी-विशे., आधा गौरी आ आधा अपन शरीरवाला महादेव । मै.

अर्धाङ्गिनी-सं., पत्नी, स्त्री । शरीर सँ सम्पत्ति धरिक अधिकार करैवाली । सं. तत्सम

अर्धोदक-सं., तीर्थस्थान मे मृत्युक समय मृतकक आधा शरीरक जलशयन । सं. तत्सम

अर्धोदय-सं., माघक अमावास्या दिन बहुत-बहुत दिन पर विशेष दिन नक्षत्र सभक योग सँ भेल महापुण्य पर्व । सं. तत्सम

अर्पण-सं., छोड़नाइ, त्यागब, दान । सं. तत्सम

अर्र-अव्यय, बकरी कें सोर करैक शब्द । मै.

अर्रबर्र-अव्यय, उपराग सँ भरल असम्बद्ध अनेक रूपक अनवसरक गप । मै.

अर्रबोंकरब-क्रि., महिसीक विकृत शब्द द्वारा अपन बारम्बार अभिप्राय जनाएब । भैंसिक बाजब । मै.

अर्राहटि मारब-क्रि., पीड़ाक अधिकता सँ चिकरिचिकरिकय कुहरैत छटपटाएब । मै.

अर्रोंठल-विशे., बेलसि, अप्रिय आ कठोर वचन । मै.

अर्हणा-सं., सम्मान मे देल उपयोगी विशेष सामग्री । सं. तत्सम

अरकचबरकच-सं., अनुपयोगी, घिनाओन आ गदौस सभक समूह । मै.

अरकसिया-विशे., आरा चलाकय काठ चीरैक व्यवसाय करैवाला । मै.

अरगजा-सं., अनेक जड़ीबूटीक संग पकाओल तेल । मै.

अरगई-अव्यय, बिन बात जननैं बूझि जाइक दावी सँ । मै.

अरगनी-सं., नूआ वस्त्र कें रखैंले बाँसक टोटा सँ तानल स्थान । मै.

अरघब-क्रि., कण्ठ सँ नीचाँ होएब । पेट मे अँटकब । मै.

अरजब-क्रि., कमाएब । उद्यम सँ उपार्जन करब । मै.

अरधना-सं., आराधना, विधि विधान सँ पूजापाठ । सं. तद्भव

अरना-विशे., बनैया विशाल महिस । मै.

अरपटांग उठाएब-क्रि., बीचैं मे बखेड़ा ठाढ़ करब । मै.

अरबझल-विशे., अपने बातक जिद् वा हठ सँ रगड़ केयनिहार । मै.

अरबड्-विशे., अपने बातक टेक रखैंले अड़ल रहनिहार । मै.

अरबधिकय-अव्यय, विशेष कय, निश्चित बेर पर कुलिम कय । मै.

अरबा-विशे., बिन उसिनल वा उलाओल, असिया, अपन प्राकृतिक स्थिति मे वर्त्तमान । मै.

अरबैठ-विशे., अरबा जकाँ लगैवाला । मै.

अररापरब-क्रि., आकस्मिक अनहोनी शोकक घटना सँ सामूहिक लोकक हाहाकार करब, विलाप करब । मै.

अरसट्ठा-सं., कोनो विशेष बातक भरोसैं काजक गतिक बाधा । मै.

अरसा-सं., कोनो ककरो प्रतीक्षा सँ बाधा । मै.

अरसाअरसी-अव्यय, ककरो भरोसैं समयक क्षतिकय । मै.

अरहना-सं., देखू-अर्हणा । सं. तद्भव

अरारि-सं., पुरान वैर सधबैक निमित्त युद्धक आभास । मै.

अराह-सं., धनहर खेत के धान रोपैले माटि कें फुलबैले पनियाएल खेतक पहिलुक कादो करैक जोत । मै.

अरि-विशे., शत्रु, वैरी । सं. तत्सम

अरियाएब-क्रि., आनक खेत कें छाँटि कय अपन खेतक आरि कें घुसकाएब । मै.

अरिकञ्चन/अरिकोंच-सं., नमहर पातवाला कन्नुक साग । मै.

अरिपन-सं., सिनूर पिठार सँ स्त्रीगण द्वारा विशेष शुभ अवसर एवं उत्सव मे भूमि पर विभिन्न यन्त्र-मय चित्रण । मै.

अरिया-विशे., अपन खेतक आरि लागल खेतवाला । मै.

अरिया पटिया-विशे., आरि लागल खेतवाला एवं अपन खेतक परोपट्टाक खेतवाला । मै.

अरियात-सं., अगुआनी, अनुगमन । किछु दूर धरि पाछू लागि संग चलैक व्यवहार । मै.

अरियातब-क्रि., किछु दूर सँ आ किछु दूर धरि संग लागि चलब । मै.

अरिया मथान-विशे., आरि कें नाघि (उपर देने) बहैत पानिवाला (वर्षा) । मै.

अरिष्ट-विशे., ग्रह आदिक अधलाह योग, अज्ञात कर्मक फल । सं. तत्सम

अरोखम्मी-सं., आकस्मिक आवश्यकता परक अभाव । मै.

अरुआ-सं., तरुआ तरकारीवाला विशेष कन्द । मै.

अरुआइन-सं., सिद्ध अन्न आदि वस्तुक बासि भेला पर विकृत स्वादक लक्षण । मै.

अरुआएब-क्रि., अधिक कालक राखल अन्न मे बसियाइन विकार होएब । मै.

अरुआठल-विशे., विचार आ व्यवहारक मूर्खता-पूर्ण अन्टोटले बातचीत कयनिहार । मै.

अरुचि-सं., कोनो वस्तुक प्रति वितृष्णा वा इच्छाक जागति नै होएब । सं. तत्सम

अरुझल-विशे., मौलाएल, झरैक स्थिति मे आएल, कान्तिहीन, उदास । मै.

अरुबी-सं., हरदिक कन्द सँ मोट तरकारीवाला कन्द । पेंची । कच्चू । मै.

अरू-विशे., मुख्य रुपें उत्तम, आवश्यक, सुन्दर । मै.

अरूप-विशे., जकरा रुपें नहि होइक, रुपहीन । सं. तत्सम

अरे ! -अव्यय, भय विस्मय शब मे स्वतः बहराएल शब्द । नीचक प्रति सम्बोधन । विरोधक लल-कारा । सं. तत्सम

अरेबा ! -अव्यय, कौतुक आश्चर्य आदि सँ स्वतः प्रकटित सम्बोधन । मै.

अरोस परोस-विशे., अपन स्थानक लग रहनिहार । परिसरक निकटवर्ती । मै.

अरोह-सं., चढ़ब, आरोह. (विशे.) जकर मन मे स्नेह सद्भावक रोष नै रहैक । सं. तत्सम/मै.

अरौतोरीके ! -अव्यय, आश्चर्य डर सँ बहराएल शब्द । मै.

अरौबा !-अव्यय, भय, आश्चर्य, विरोध आ व्यथाक शब्द । मै.

अरौ बाप/रौ बाप !-अव्यय, अन्तर्व्यथा सँ बहराएल शब्द । (अरौ बाप रौ बाप बर देखि लगँये सन्ताप—विद्यापति) मै.

अलहक-विशे., कोनो काजक ढंग नहि रखैवाला । मै.

अल्हुआ-सं., कोमल खाद्य कन्द, सकरकन्द । मै.

अलक-सं., माथक केशक लट, गुच्छ, झोंटकी । मै.

अलफल-अव्यय, शक्तिक अभाव सँ कोनहुना अपन स्थिति मे रहैत । बलहीन । मै.

अलख जगाएब-क्रि., लोकक मनोबल बढ़ाएब । वस्तु-स्थिति दिश साकांक्ष करब, प्रेरणा भरब । मै.

अलग्न-विशे., ध्यान आ धारणाशून्य । सं. तत्सम

अलग-विशे., फूट, पृथक, भिन्न । मै.

अलगटेंट-विशे., श्रेष्ठक बीच पहिनें बाजि उठ-निहार । मै.

अलगट्टे-अव्यय, बिना तर्क कयनें बुझैक दाबी सँ बजैक क्रम । मै.

अलगनी-सं., देखू-'अरगनी' । मै.

अलग फुनगी-सं., अत्यन्त ऊँच, सब सँ उपरक स्थान । मै.

अलगबलग-अव्यय, अनायासँ, उपरें उपर, अलक्षित रुपें भपट्टा मारि, अचानक । मै.

अलगल-विशे., सतह सँ उपरें उठल । उपर आएल । जकर बुद्धि स्थिर नै हो (लाक्षणिक) । मै.

अलगलपप्पा-विशे., जकरा बुझौनो बात बुद्धि मे नहि आबय, जकर बुद्धि बातक गम्भीरता नहि पकड़ि सकय । मै.

अलगब-क्रि., धरातल सँ उपर आएब, पानिक सतह पर निराधार रहब । मै.

अलगा-विशे., चञ्चल, जकर बुद्धि कखनो धरातल पर नहि बैसैक । गम्भीरता सँ जे तर्क नहि कय सकय । स्त्री० अलगी । मै.

अलगाएब-क्रि., उपर उठादेब । प्रयोग-"कने बोझ अलगा दिअऽ" । मै.

अलगौजा-सं., बिना प्रयासें अधिक इच्छानुसार प्राप्ति करब, उठाएब, आनब, भोगब । मै.

अलङ्-विशे., सतत अपने धुनि मे रहने कोनो विषयक ध्यान नै रखनिहार । अलग्न । मै.

अलङ्-सं., आलयक, घरक खण्ड वा विभाग । प्रयोग-"हम अपन मकानक एक अलङ् भाई पर लगौने छी" । मै.

अलङ्करण-सं., भूषण, गहना । सं. तत्सम

अलंकार-सं., गहना, काव्यक उपमा उत्प्रेक्षा आदि । सं. तत्सम

अलङ्घ-विशे., धरतीक समतल सँ अधिक ऊँच अथवा गहींर स्थान जे नँघैक योग्य नहि रहय, अलङ्घ्य । सं. तद्भव

अलच्छ-विशे., जकर शुभ काज मे अशुभ पड़ि जाय। जे अशुभ कामना राखय वा बाजय । (संज्ञा) अशुभ वा अशुभ कथा । मै.

अलच्छन-सं., अशुभ उपस्थित करैक व्यवहार वा गुण । प्रयोग-"कोइलाक चीच पाड़ब अलच्छन थिकैक" । मै.

अलट बिलट करब-क्रि., कोनो काजक वस्तु कोनो काज मे लगादेब । मै.

अलता-सं., मह रङ्क रंग, अलक्तक । सं. तद्भव

अलदलवा-विशे., बिना दालि देल खिच्चरि । मै.

अलप-विशे., थोड़, कम, अल्प । सं. तद्भव

अलबजीया-विशे., थोड़ शक्तिवाला, कनेके दम लगौला सँ टूटैवाला वा नष्ट होइवाला । मै.

अलबटाह-विशे., ओरिया कय अर्थात् उचित ढंगें काज करैक लूरि नैं रखनिहार । स्त्री० अलबटाहि । मै.

अलबल-विशे., असम्बद्ध, अन्टसन्ट वचन । मै.

अलबाबलबा उठब-क्रि., आशंका भरल अनेक लोकक एक संग मानसिक विह्वलता सँ शब्द होएब । मै.

अलबेला-विशे., स्वेच्छाचारी, विनोदी, दुख-सुख दुहू मे एके रंग रहनिहार । मै.

अलबौक-विशे., वजैक लूरि रहितौ किछु कहला पर बकर बकर मुह तकनिहार । मै.

अलसाएब-ना-क्रि., अनेरो आलस करब । आलस सँ भरल रहब । मै.

अलहकरन-सं., देखू-"अलंकरण" । सं. तद्भव

अलहलरैनी-विशे., असावधानी भरल, लापरवाही पूर्ण । तत्परतारहित । मै.

अलाइक धन बलाइ करब-क्रि., लापरवाही सँ काज करब, विमन सँ पतिकरनी काज करब । उपेक्षाक भाव राखब । मै.

अलहाइ मलहाइत-विशे., आसकतिक द्वारें काल कटैत । मै.

अलान-सं., लत्ती कें आश्रय देबाक साठह् । पसरैक हेतु देल वस्तु । मै.

अलाप-सं., १. सद्भाव प्रदर्शनक अभिनय, फूसि आवेस । २. संगीत सँ पूर्व स्वर बान्हब । आलाप । सं. तद्भव

अलापब-क्रि., १. संगीतक आरम्भ मे स्वर बान्हब । अर्थात् स्थिर लय सातो स्वर कें ताल मात्रा दिश लय जायब । २. लोक देखावक बढ़ि चढ़िकय आवेसक (स्नेहक) शब्द सुनायब । मै.

अलापी-विशे., फूसि अकारण ककरो पर स्नेहक बखान केनिहार । मै.

अलार-सं., अबोध बच्चाक मन कें स्नेह सँ अपना दिश आकर्षित करैक चेष्टा । मै.

अलि-सं., भँमरा । सं. तत्सम

अलिसाएब-क्रि., सुखायल जकाँ होएब । पनिमरु भऽ जाएब । मै.

अलीक-सं., मिथ्या, फूसि । सं. तत्सम

अलेमाली-सं., ठाढ़ चौकोर खटालवाला । सन्धूकवा सदृश वस्तुजात रखैक वस्तु । अं.-आलमिरा । हि.-आलमारी । मै.

अलेल-विशे., अधिक सुलभ । सबठाँ सरलता सँ अधिक मात्रा मे प्राप्य । मै.

अलैचड़ब-क्रि., अत्यधिक उत्कण्ठा सँ उन्मन होएब । मै.

अलैचड़ाएब-प्रे. क्रि., उताहुल बनाएब । उत्प्रेरित करब । उत्कण्ठा बढ़ाएब । मै.

अलँबलँ-अव्यय, उपादेयतारहित वस्तु । अनेक अनुपयुक्त पदार्थ । मै.

अलोकी-विशे., लोक सब सँ सम्पर्क नै रखैवाला । सतत् लोक सँ अलगे रहैवाला । मै.

अलोपित-विशे., अदृश्य भेनिहार । विलीन (उड़ि) गायब । मै.

अलौकिक-विशे., सामाजिक व्यवहार मे अपटु। लोकचर्य्या ज्ञान शून्य। सं. तत्सम

अव्यक्त-विशे., अप्रकट, जे कोनो इन्द्रिय सँ प्रत्यक्ष नहि कयल जा सकय। ईश्वर, पुरुष (चैतन्य)आत्मा, सूक्ष्म शरीर (मन बुद्धि हृदय एवं अन्तःकरण) कारण शरीर (आत्मा) चेतना (प्रकृति)। अर्थात् स्थूल शरीरक भीतर इन्द्रिय कें अर्थ स्थूल पदार्थ सँ सम्पर्क कराकय चेतना धरि विविध प्रक्रिया द्वारा उपस्थित करैवाला समस्त तत्व। सं. तत्सम

अव्यय-विशे., १. नाशहीन, क्षयरहित, ईश्वर, पुरुष, ब्रह्म। २. विभक्ति नहि लगैवाला शब्द। सं. तत्सम

अव्यवस्था-सं., अनियम, नियमपूर्वक क्रियाक अभाव। सं. तत्सम

अवकहूराचक-सं., जाहि चक्रक अक्षर क्रम सँ तान्त्रिक विधि कयल जाइत अछि। मै.

अवकाश-सं., अवसर, शून्य स्थान, बिना काजक समय। सं. तत्सम

अवकुल्ली-विशे., सतत कुदैं फनैं मे अत्यन्त चंचल आ कखनो कोनो अंग शान्त नहि रखैवाला बेन्ना। मै.

अवग्रह-सं., संकट, प्राकृतिक दुखदायी स्थिति। विकट (अवार्य्य) आपत्ति। सं. तत्सम

अवगति-सं., बूझैक शक्ति, ज्ञान, बुद्धि। सं. तत्सम

अवगुण-सं., दोष। सं. तत्सम

अवजस-सं., अप्रतिष्ठा, दुर्नाम, अपयश। सं. तद्भव

अवतार-सं., विशिष्टता सँ भरल व्यक्तिक प्रादुर्भाव। (लाक्षणिक विशे.) (निन्दा मे) लोक सँ भिन्न प्रकृति आ रुप रंगवाला, जकरा देखि कुल मे लोक बाजि उठैत अछि "अवतारे बिकधि की"। सं. तत्सम

अवदात-सं. एवं विशे., निर्मल, स्वच्छ कुल, पवित्र चरित्र। सं. तत्सम

अवध-सं., एहि नामक भूखण्ड (उत्तरप्रदेश)। सं.तत्सम

२. वध नहि करैक योग्य, अवध्य। सं. तद्भव

अवधारन-सं., कोनो विषय वस्तुक नीक जकाँ श्रवण कय विचारि कय बुद्धि मे जमाएब। सं. तद्भव

अवधारब-क्रि., नीक अथवाह कोनो वस्तुक भवितव्यक हेतु मन कें दृढ़ कय दृष्टावृत्ति करब। मै.

अवधि-सं., ठेका, सीमा, आदि। सं. तत्सम

अवधी-सं., अवधक भाषा। मै.

अवधूत-विशे., ओ सन्यासी जे अमृत विष दुहु कें समाने बूझैत अछि। नाम रुप सँ उपर उठल। सं. तत्सम

अवनति-सं., नीचाँ खसब, झुकब, अपन स्थिति सँ उतरि आएब। सं. तत्सम

अवरोध-सं., रोक, सभक आवाजाहीक निषेधवाला स्थान। घेराओ। मै.

अवरोह-सं., नीचाँ उतरब, कोनोलय पर संगीतक गति कें नीचाँ दिश आएब। सं. तत्सम

अवलम्ब-सं., आधार, आश्रय, शरण। (हिन्दी–सहारा)। सं. तत्सम

अवश्य-अव्यय, निश्चय। सं. तत्सम

अवशिष्ट-विशे., बाँचल, उगरल, शेष रहल। सं. तत्सम

अवशेष-सं., उगार, बाँचल रहैक भाव। सं. तत्सम

अवस्था-सं., स्थितिक विशेषता, दशा, (उ. तद्भव हालति)। सं. तत्सम

अवसन्न-विशे., नष्ट प्राय स्थिति मे गेल, समाप्त प्राय, मृत्युक निकटवर्ती। सं. तत्सम

अवसर-सं., समय, अनेक व्यस्तताक बीच फाँक काल। सं. तत्सम

अवसि-अव्यय, देखू-"अवश्य"। सं. तत्सम

अवाच-विशे., अवाच्य, नहि बजैक योग्य, अर्थहीन, गारि। सं. तद्भव

अविध-विशे., अविधि, नियम विरुद्ध, विधानक अनुसार नहि कयल गेल। सं. तद्भव

अश्रु-सं., नोर, आँखिक जल। सं. तत्सम

अश्विनी-सं., १. ऐ नामक नक्षत्र विशेष २. घोड़ी। सं. तत्सम

अश्विनी कुमार-सं., वैद्य शास्त्रक देवताक नाम। सं. तत्सम

अंश-सं., भाग, बखरा। हिस्सा। सं. तत्सम

अशक्य-विशे., नैं सक होइक योग्य, शक्ति सँ बाहर, असाध्य। सं. तत्सम

अशंक-विशे., शंकारहित, निर्भय, निश्चित। सं. तत्सम

असावी-विशे., जकर प्राण हठें नहि बहराइत होइक, चिचरी कटनिहार स्त्री, अस्तव सेहो प्रयोग। मै.

अश्विनी-विशे., आसिन मासक फसिल। मै.

अशीस-सं., आशिष, आशीर्वाद। सं. तद्भव

अशुचि-विशे., अपवित्र, अशुद्ध अवस्थाक व्यक्ति, पुण्य कार्यक अयोग्य समय स्थान। सं. तत्सम

अशुद्ध-विशे., १. अपवित्र। २. विवाहादि काज मे विना शुद्ध शुद्धिक समय। सं. तत्सम

अशुभ-सं., अमंगल। सं. तत्सम

अशेष-विशे., सम्पूर्ण, अन्तहीन। सं. तत्सम

अशोक-सं., १. शोकहीन (विशे.)। २. शोकक अभाव। ३. वृक्ष विशेष। ४. प्रसिद्ध ऐतिहासिक मौर्य्य सम्राट। सं. तत्सम

अशौच-सं., छुतका, अपवित्रता, कोनो शुभक बाधा जन्म-मरणजन्य। सं. तत्सम

अष्टगन्ध-सं., आठ सुगन्धित वस्तु मिलाकय बनल धूप अगरु, गुग्गुलु धूमन, श्रीखण्ड, सरर, मोथा, कम्द कपूर, लोध एहि आठ वस्तुक मिलान सँ बनल धूप। सं. तत्सम

अष्टद्रव्य-विशे., आठो भौतिक धातु सँ बनल वस्तु विशेष। सं. तत्सम

अष्टमी-पूरक संख्या विशेष, पक्षक आठम तिथि। आठ संख्यावाली स्त्री। सं. तत्सम

अष्टावक्र-सं., पौराणिक महाविद्वान्। (विशे. कुत्सा मे) जकर अनेक अंग टेढ़ हो। सं. तत्सम

अषाढ़-सं., मास विशेष। आषाढ़। सं. तद्भव

अषाढ़ीलक-विशे., खेती प्रसंगक आषाढ़ैटा मे होमऽ वाला कार्य। मै.

अस्त्र-सं., घातक प्रक्षेप, मारैवाला हथियार। सं. तत्सम

अस्त-सं., विशे., अदृश्य होएब। तिरो भाव। प्रयोग-"अस्तक समय आएल। सूर्य अस्त भेला।" सं. तत्सम

अस्तविस्त-विशे., अस्तव्यस्त, नै सम्हरैक द्वारें अत्यन्त विकल। सं. तद्भव

अस्तूरा-सं., केश कटैक अस्त्र, खूर, क्षुरा (सं.) उ. तत्सम

अस्थि-सं., हड्डी, शरीरक सप्तम धातु। सं. तत्सम

असमानखोंचा-विशे., (आसमान कें खोंचारैक लाक्षणिक) गप्पी, असाध्य काजक गप्प मारनिहार। मै.

अस्यास-सं., आयास सँ उत्पन्न व्याकुलता, दुर्बलताक कारणें अधिक श्रम सँ जागल विकलता। मै.

अस्सी-संख्या, शून्य एकाइ आठ दहाइक अंक। मै.

असक-विशे., दुखित, अशक्त। सं. तद्भव

असकताह-विशे., अशक्त जकाँ भेल, अस्वस्थ। मै.

असकताएब-क्रि., कोनो काज मे उत्साहहीन होएब। मै.

असकतिपाह-विशे., आसकति करनिहार। मै.

असकर-विशे., एक मात्र, एकाकी। मै.

असंख्य-विशे., अगणित, संख्या शून्य। सं. तत्सम

असगन्ध-सं., अश्वगन्धा, बड़ी विशेष। मै.

असगनी-सं., डोरी वा बाँस काठक तानिकय बनाओल कपड़ा रखैक स्थान। मै.

असगुन-सं., अमंगलक लच्छन, अशुभक संकेत। मै.

असञ्ज्ञ-विशे., अत्यधिक रोग वेगक द्वारें अथवा प्रबल मानसिक आघातक कारणें मनक दृष्टि गेला सँ बाहरक ज्ञान शून्य। एक प्रकारें मूर्छित। सं. तत्सम

असज्जाति-विशे., असंयत, उपद्रवी, असंयती, स्थिर नहि रहनिहार। प्रयोग-"बकरी जाति बड़ असज्जाति।" मै.

असनान-सं., स्नान, नहाएब। प्रयोग-"कामिनि कर असनाने"-विद्यापति। सं. तद्भव

असपताल-सं., दातव्य औषधालय। देशज

असवार-विशे., सवारी (वाहन) पर चढ़निहार वा चढ़ल। अश्ववार। सं. तद्भव

असबाब-सं., विभिन्न प्रकारक वस्तुक ढेरी। उ. तत्सम

असम्भव-सं., असम्भव। सं. तत्सम

असमर्थ-विशे., दुरूह, सोचैं सँ बाहर, असम्भव। सं. तद्भव

असम्मति-सं., घृणा, विमुखता, विरक्ति। सं. तत्सम

असमञ्जस-सं., कोनो बात मे मनक आगाँ-पाछाँ करैक स्थिति, संकल्प विकल्प, विरोध। सं. तत्सम

असर्थ-विशे., घिनाओन, अभद्र। सं. तद्भव

असरफी-सं., मुगलकालिक स्वर्ण मुद्रा। उ. तत्सम

असरा-सं., प्रतीक्षा, आस। मै.

असराएब-ना. क्रि., १. आशा मे राखब। २. प्रभावित रहब। ३. कोनो द्रव्य कें ठोंकि-ठोंकि कय पसारब। मै.

असरेस-सं., श्लेषा, एहि नामक नक्षत्र । सं. तद्भव

असल-विशे., यथार्थवस्तु, तात्त्विक । उ. तत्सम

असलक्खन-सं., उचित स्वभाव सँ भिन्न नै चलैवाला स्वभाव । अस्वलक्षण । सं. तद्भव

असलाखसला-सं., अस्तव्यस्त अनेक सामग्री । मै.

असलगित-विशे., मनलग्गू, जाहिपर आस लागल रहए । मै.

असहै-सं., शिथिलता, कोनो काजक प्रवृत्तिक तारतम्य । मै.

असाइ-सं., कोनो दुर्गन्ध वस्तु पर माछीक द्वारा कीटाणु (पीलु) क प्रजनन । मै.

असान-वि., १. सरल । २. सामान्य स्थिति । मै.

असामी-विशे., प्रजा, जनता, अधिकारक लोक । मै.

असार-सं., १. आसार, सम्भावना । (विशे.) २. तत्वरहित । मै.

असारपसार-सं., वस्तु सबक पसारल रहैक प्रक्रिया । मै.

असारी पसारी-विशे., गृहस्थाश्रमक सहयोगी वस्तुक आपूर्ति कयनिहार श्रमजीवी । यथा—कमार, लोआ, कुम्हार आदि । मै.

असावरी-विशे., छिड़िया कय पसारल वस्तु सभ । मै.

असावरी-सं., संगीत शास्त्रक विशेष रागिणी जे दिनक प्रथम पहर मे गाओल जाइत अछि । मै.

असिजल-विशे., असिद्ध । सं. तद्भव

असिनहरि-सं., आसिन मासक प्रकृतिक आभास । मै.

असीतर-विशे., घतपत अस्सी वर्षक लोक । मै.

असुआएब-क्रि., सुखाएल वस्तु मे भीतरे भीतर आर्द्रता अपने सवकत बनि जाएब । मै.

असुआसपड़ब-क्रि., आश्वासन पड़ब । शान्तिक अनुभव सँ सुख होएब । मै.

असुर-सं., श्रमजीवी पौराणिक जाति । सद्धिया । मै.

असुस्त-विशे., रोग सँ आक्रान्त, अस्वस्थ । मै.

असेरा-सं., आध किलोक बाट । मै.

असोआसन-सं., आश्वासन । सं. तद्भव

असोच-विशे., विचारहीन, कर्त्तव्यक ज्ञान शून्य, दयारहित । मै.

असोथगित-विशे., स्थगित, थाकनि भरल, श्रम सँ शिथिल । मै.

असौकर्य-सं., कठिनता, अभावक कारण व्यतिक्रम । सं. तत्सम

असौजन-सं., असौजन्य, सद्भावक अभाव कौटुम्बिक व्यवहार भेद, परस्पर सहानुभूतिक ह्रास । सं. तत्सम

असौजनिया-विशे., कौटुम्बिक व्यवहार सँ भिन्न रहैवाला । सिद्धान्न भोजन सँ पृथक् । मै.

अहँ !-अव्यय, कोनो बातक निषेध मे वा विरोध मे उच्चरित । पद्य मे "अहाँ" क अर्थ मे प्रयोग । मै.

अहँक्-अव्यय, निषेध मे प्रयोगक शब्द । मै.

अहगर-विशे., पुष्ट रुपक, यथेष्ट, परिपूर्ण । मै.

अहङ्कार-सं., घमण्ड, अपने महत्त्व । सं. तत्सम

अहथपन/अहथीपन-सं., कोनो काज मे प्रवृत्तिक अभाव, काज से देह चोरबैक चेष्टा । मै.

अहदी-विशे., कामचोर, कोनो काज मे उत्साह नै रखैवाला आलसी अकर्मण्य । मै.

अहनटहन बाजब-क्रि., अनुरोध निन्दा आ विरोध भरल उलहन करब तथा दोष प्रकट कय नीच बनाएब । मै.

अहरपहर-अव्यय, बहुत कालक प्रतीक्षा, प्रतीक्षा मे समयक अनन्त परिमाण । मै.

अहरा-सं., भूईं चुलहा, भूमि खोधिकय बनाओल विशाल चुलहा जे भोजक भानस मे काज अबैछ । मै.

अहराबाँटब-क्रि., चिड़ै चुनमुनीक अपन बच्चा केँ आहार (भोजन) बँटैक व्यापार । मै.

अहरी-सं., भूमि केँ नाली (बाहा) जकाँ कोड़ल चुलहा जाहि पर एक संग अनेक बासन चढ़ाकय भोजन बनै अछि । मै.

अहलबिली-सं., घबराहटि, भय, आशंका, उत्कट हर्षक द्वारेँ चञ्चलता सँ उठल धड़कन । मै.

अह्लाद-सं., स्नेह सम्मान भरल आवेश, आह्लाद । सं. तद्भव

अहलादब-क्रि., स्नेह आ सम्मान सँ आवेश करब । मै.

अहह !-अव्यय, दुख, उत्कर्ष आ प्रशंसा सूचक । मै.

अहा !-अव्यय, आनन्द प्रशंसा सम्वेदाक ध्वनि । मै.

अहाँ-सर्व., सदृश, आदरणीय वा श्रेष्ठ लोकक प्रति सम्बोधन । मै.

अहाङ्-सं., अहङ्कार, गौरव । मै.

अहार-सं., आहार, भोजन, खाद्य सामग्री । सं. तद्भव

अहिथाएब-क्रि., मनेमन विचारि अनुमान कय स्थिर करब । मै.

अहिवात-सं., सोहाग, अवैधव्य, पति सुख । मै.

अहिवातक पातिल-सं., विवाह आदि सन शुभ कार्य मे आगू मे सौभाग्यक (शुभक) दीप जराकय पाकल रंगल विशेष रूपक माटिक बासन टुइटा राखल जाइछ । मै.

अहिवाती-विशे., सधवा, सोहागिन । मै.

अहीर-सं., जाति विशेष । पशुधन पर निर्भर जाति । मै.

अहुँछिया काटब-क्रि., प्रतीकार मे असमर्थ रहने विषमताक द्वारें चिन्ता व्यग्रता आ दुख सँ अशान्त होइत रहब । मै.

अहुरियादेब-क्रि., अन्देसा सँ छटपट करब । विवशता आ विकलता सँ व्यग्र आ चञ्चल होएब । मै.

अहोभाग्य-अव्यय, आनन्द आह्लाद मे भाग्यक प्रशंसा । सं. तत्सम

आ

आ-सं., स्वर वर्णक दोसर दीर्घ अक्षर 'आ' कार । मै.

आ-अव्यय, समुच्चयबोधक-आओर, आर, और । मै.

आ-क्रि., अधम पुरुषक लेल ललकारा, अबैक आदेश । मै.

आ-सं., संगीतक आलापक प्रथम ध्वनि । देशज

आः-अव्यय, व्यथा तथा ललकार मे बहराएल शब्द । मै.

आइ-अव्यय, अद्य, वर्तमान दिन जे बीतैत हो । मै.

आइकाल्हि-अव्यय, निकटवर्ती भूत भविष्यक संग वर्तमान काल बोधक । मै.

आइकाल्हि करब-क्रि., समय लेपब, काल हारब । मै.

आइपाइ करब-क्रि., एम्हर सँ ओम्हर अनेक काज करब । मै.

आइमाइ-विशे., वृद्धि, प्रतिष्ठित आ गुणी स्त्रीगण । मै.

आउर-अव्यय, सब, आदि आदि, लोकनि । प्रयोग— "हमरा आउर दिश ततेक बाढ़ि एलै जे सब धान बहा गेलै ।" मै.

आएब-क्रि., अबैक क्रिया, आगमन । मै.

आओँ-सं., विकृत पाचन शक्तिक द्वारें वेदना सहित आएल पेटू पोटा सँ भरल मल । आम मल । मै.

आओ-अव्यय, हर जोतैक काल बरद कँ मोड़ लैक हेतु हरवाहक आदेश । मै.

आओंड़-विशे., पीड़ित, व्याकुल, आर्त । मै.

आओन-सं., गाड़ीक पहियाक लोहाक सामी, हाल । मै.

आओर-अव्यय, समुच्चयबोधक, आर । मै.

आकन्द-सं., जोर जोर सँ कानब । सं. तत्सम

आक्षेप-सं., फूसि वा सत्य आरोप लगाएब । मै.

आक-सं., अर्क पुष्प तथा गाछ । मै.

आँक-सं., अंक, चिह्न, रेखा । मै.

आगछ-विशे., विरक्त, विकल, विमुख । मै.

आँकड़-सं., पाथर वा भिटकाक सूक्ष्म कुन्नी, दानाक बीच कठोर छोट कण । मै.

आकण्ठ-अव्यय, भरि कण्ठ, भरि गरसों । सं. तत्सम

आँकब-क्रि., अनुमान सँ अङ्कित करब तथा निश्चित करब । मै.

आकर-सं., कोष, भण्डार, उत्पत्ति स्थान । सं. तत्सम

आकरि-विशे., युवावस्था प्राप्त बाछी वा पाड़ी । मै.

आकस्मिक-विशे., अचानक होइवाला । सं. तत्सम

आकांक्षा-सं., इच्छा, अभिलाषा । सं. तत्सम

आकार-सं., १. मुहक ढब, वर्ण, आकृति । २. 'आ' अक्षर । सं. तत्सम

आकाश-सं., आकाश । सं. तत्सम

आकाशवाणी-सं., अनेक मुह सँ उड़ैत अबैवाला गप । सं. तत्सम

आँकी पड़ब-क्रि., छापी पड़ब, अधिकारक चिह्न होएब । मै.

आँकुर-सं., देखू-'अङ्कुर' । मै.

आकुल-विशे., अत्यन्त विकल, घबरायल, आरत । सं. तत्सम

आँकुस-सं., अँकुशी, नोकवाला अस्त्र, प्राणी कें चेता कय उचित मार्ग पर चलैक निर्देशक । सं. तद्भव

आकृति-सं., वर्ग, ढब, चेहरा (हि.) सं. तत्सम

आखर-सं., अक्षर । सं. तद्भव

आखरि-सं., धीयापूताक अक्षर अभ्यासक पाटी, स्लेट । मै.

आखहि उकटब-क्रि., सिह सँ माटि डाहब। मै.

आँखि-सं., अक्षि, दर्शनेन्द्रिय, नयन। मै.

आँखि गुड़रब-क्रि., क्रोध, भय एवं निषेधक भाव व्यक्त करैक हेतु विकृत रूपें आँखि पसारब। मै.

आँखि देखाएब-क्रि., (लाक्षणिक) भयभीत करब। अपन महत्त्व अन्तर्गत अभिभूत करब। मै.

आँखिदेब-क्रि., अभिलाषा पूर्वक दृष्टि गड़ाएब। मै.

आँखि पाँखि होएब-क्रि., (लाक्षणिक) शरीर एवं बुद्धिक विकास सँ चालू होएब। मै.

आँखि मिलाएब-क्रि., समान पुरुषार्थीक गुण प्रकाश करब, निर्भीक होएब। मै.

आँखि मे पानि होएब-क्रि., (लाक्षणिक) प्रतिष्ठा, सम्मान देब। मै.

आँखि मे राखब-क्रि., (लाक्षणिक) मन सँ प्रिय होइक कारणेँ सतत ध्यान मे राखब। मै.

आँखि लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) मौजरदेब, महत्व देब। मै.

आँखि लागब-क्रि., निन्न पड़ब, (लाक्षणिक) अनिष्टक भावना सँ पमिन्न मे करब। मै.

आग्रह-सं., हठ, जिद्द, कोनो बात पर अधिक जोर। सं. तत्सम

आग्रही-विशे., जिद्दी, हठी, एकै बात केँ पकड़ने रहैवाला। सं. तत्सम

आगत स्वागत-सं., अतिथि सत्कार। सं. तत्सम

आगन्तुक-विशे., अबैवाला, अबैक सम्भावनावाला, अतिथि। सं. तत्सम

आगम-सं., १. भविष्यक लक्षण, अनुमान द्वारा संभावना, आभास। २. मूलशास्त्र। मै.

आगमविगम-सं., लक्षण देखि आ सोचि भविष्यक पूर्वाभास करब। मै.

आगर-सं., रौद बसातक सम्मुख, रौद बसातक बाधारहित स्थान। मै.

आगरकय-अव्यय, उचित सँ अधिक परिणाम। मै.

आगरि-विशे., परिपूर्ण, भरलि पुरलि। पु०-आगर। प्रयोग-"जगत विदित बैद्यनाथ सकल गुन आगर हे" नचारी। मै.

आगाँ-अव्यय, सम्मुख, आगू। मै.

आगामी-विशे., भविष्य मे अबैवाला होइवाला। सं. तत्सम

आगार-सं., घर, अक्षय स्थान। सं. तत्सम

आगि-सं., अग्नि। सं. तत्सम

आगि उठाएब-क्रि., (लाक्षणिक) फूसि निर्मूल अपवाद लगाएब। मै.

आगिछय-पुण्य सं., आगिक गुणक संग दोषो लागल रहै छै अर्थात् जँ आगि जीवनो दै अछि तँ विनाशो कैनिहार थीक। मै.

आगु/आगू-अव्यय, देखू-'आगाँ'। मै.

आगू अनमल घोड़ लगाबय-लोकोक्ति, पाछू भेनिहार वस्तुक आगू भऽ गेने एकर प्रयोग होइछ, वयसेँ छोट रहनो सम्बन्धेँ जेठ भेने घोड़ लगै पड़ै छै। मै.

आगे माइ-अव्यय, आश्चर्य भय वा आनन्दक वेग मे स्त्रीगणक मुह सँ स्वतः बहरायल काकु स्वर। मै.

आगाँ आगाँ-अव्यय, आगुए आगू क्रियाक प्रवृत्ति। मै.

आघात-सं., चोट, प्रहार, ढेहा। सं. तत्सम

आङ-सं., अङ्ग, शरीर। सं. तद्भव

आङन-सं., अङना, चारु दिश सँ घेरल ओ स्थान जतय स्त्रीगण स्वेच्छा सँ विचरय। मै.

आङनवाली-विशे., आङनक अधिकारिणी, पत्नी। मै.

आङरहब-क्रि., (लाक्षणिक) स्त्रीक गर्भ जमब। मै.

आङलगाएब-क्रि., अंग सँ छुआएब। मै.

आङलागब-क्रि., (लाक्षणिक) अपन आप्तक आश्रित रहब। मै.

आङसोआङ-सं., दुख वेकल शरीरिक स्वास्थ्यक स्वास्थ्य। मै.

आङी-सं., अङ्गक अनुसार सीयल देहक आवरण। मै.

आङुर-सं., हाथक प्रशाखा अंग अंगुलि। मै.

आच्छन्न-विशे., व्याप्त कयल, छाएल। सं. तत्सम

आँच-सं., पाकक क्रिया मे ज्वालाक तेजी। मै.

आँचब-ना. धा. क्रि., अधिक प्रज्वलित करब। मै.

आचमन-सं., मुह हाथ केँ जल सँ शुद्ध करब। सं. तत्सम

आचमनी-सं., आचमन करैक वा करबैक लघुतम भाजन। मै.

आँचर-सं., अन्चल, अखण्ड वस्त्रक कातक अंश। मै.

आचरण-सं., व्यवहार, चर्या, चालि। सं. तत्सम

आँचलागब-क्रि., कोनो वस्तुक हेतु चिन्ता आ व्यग्रताक तेजी (लाक्षणिक)। मै.

आचार्य-विशे., जकर आचरण (सदाचार आन-ज्ञान) क अनुकरण कयल जाय, जाहि व्यक्ति सँ सर्वाङ्गीण शिक्षा प्राप्त हो, गुरु। सं. तत्सम

आचार-सं., सामाजिक चालनि, व्यवहार। सं. तत्सम

आच्छन्न होएब-क्रि., आच्छन्न। १. (लाक्षणिक) प्रलय होएब। २. पसरले रहब। ३. मन घबराएब। मै.

आज्ञा-सं., आदेश, कोनो कर्त्तव्य मे अकाट्य प्रेरणा। सं. तत्सम

आज्ञा लेब-क्रि., आज्ञा प्राप्त करब। विशेष अव-सरक। प्रयोग—विवाहक समय विवाहक प्रक्रिया आरम्भ करैक वर सँ स्वस्ति माङब वा आदेश आनब। मै.

आज-अव्यय, आइ, वर्त्तमान दिन। मै.

आजन्म-अव्यय, जीवन भरि। सं. तत्सम

आँजन-सं., अञ्जन, काजर। स. तद्भव

आँजब-क्रि., आँखि कें आँजन सँ भरब। मै.

आँजब माँजब-संयुक्त क्रि., शरीरक स्वच्छता सौन्दर्यक हेतु विशेष प्रसाधन करब। मै.

आँजी-सं., अंकुश मुद्रा। बालक कें अक्षरारम्भक समय पहिने एही मुद्रा सँ लेखन आरम्भ कयल जाइत अछि। एकर अर्थ थीक जे शिष्य सर्व-प्रथम अपन मन पर अंकुश राखथि अर्थात् शिष्यक मूल वस्तु ध्यान आ धारणा राखि सतत ओ सतर्क रहथि। एही तात्पर्यें शुभकार्यक पत्रक पहिने ई शुभ सूचक मुद्रा देल जाइत अछि। ई मिथिलाक व्यवहार थीक। मै.

आजु-अव्यय, आइ "हम नहि आजु रहब एहि आङन"। नचारी—विद्यापति। मै.

आजुक-विशे., अजुका, केवल आइक विषय। मै.

आँजुर-सं., दुनू हाथ कें मिलाकय बनाओल पात्र (वामन)। मै.

आञ् ! -अव्यय, आश्चर्य, भय विस्मय आ अत्यन्त हर्षं अकस्मात् उच्चरित शब्द। मै.

आँट-सं., अँटैक योग्य स्थान, बीचक अवकाश। मै.

आँट-विशे., आकुल, विकल, विरक्त। मै.

आँट-अव्यय, अवधि, अड्डा, सीमा। मै.

आँटकुआँट-अव्यय, कठिन अवसर अथवा पर। सम्भावित आपत्ति काल मे। मै.

आँटा-सं., चिक्कस, महुम आदि खाद्य पदार्थक पिसान। मै.

आँटी-सं., खढ़ वा अन्न आदिक नाल सहित छोट बोझ। मै.

आटोप-सं., आडम्बर, भड़कताली। सं. तत्सम

आठ-सं., एक अंकक आठम संख्या। मै.

आठम-संख्यापूर्वक सर्वनाम, आठ संख्या मे रहै-वाला। मै.

आँठी-सं., फलक बीच बीज रुप मे रहैवाला कठोर पदार्थ। बीज। मै.

आड्वाल-सं., छोटो काज मे कयल गेल विस्तार। मै.

आड़-सं., १ अड़बैक वस्तु। २. रोकैक लेल सक्कत सामग्री। ३. पर्दा करैक अर्थात् सोझ बारै हेतु देल गेल वस्तु। मै.

आडम्बर-सं., भड़कताली, देखाउटी। आड्वाल लोक देखाओ। मै.

आड़ा-सं., अपन अधिकारक भूमि (खेत मे चारु दिश देल ऊँच आरि)। मै.

आँडा-सं., अण्डज जीवक अण्डा, गर्भ। मै.

आड़ी-सं., आड़ीचक पक्षी, कारी रंगक पैंच गर्दनि-वाला बक जकाँ पानिक पक्षी। मै.

आढ्य-विशे., धनिक। सं. तत्सम

आढ्यता-सं., धनिकपनक प्रदर्शन, धनिकपन। सं. तत्सम

आड़लि-सं., वनीजक वस्तु कें उत्पादक सँ कोनो रूपें छेकि रखैक अर्थात् नीति रखैक प्रक्रिया। मै.

आँण-सं., पुरुष चिह्न, अण्डकोष। मै.

आणी बढ़ब-क्रि., दू अण्डकोष मे एकक पैघ होएब। मै.

आत्मा-सं., चैतन्य, जीव। सं. तत्सम

आत्मीय-विशे., अप्पन लोक, अपनापन वाला। सं. तत्सम

आत्मीयता-सं., अपनापन। स. तत्सम

आँत-सं., अँतरी, पेटक शिरा समूह। मै.

आँत उतरब-क्रि., (हार्निया) अण्डकोषक रोग। मै.

आततायी-विशे., अन्यायी, असामाजिक काज कय-निहार। मै.

आँतममोरब-क्रि., १. पेटक व्यथा होएब। २. (लाक्षणिक) विवशता सँ प्रतीकार मे असमर्थ रहला सँ अत्यन्त दुःख करब। मै.

आँतर-सं., आन्तर्य्य हरजोतै मे सिराउर सँ बना-ओल एक-एक खण्ड दूरी। सं. तद्भव

आतिख-विशे., कषायरस कनेक तीतक स्वादवाला वस्तु। मै.

आतिथ-सं., आतिथ्य, अतिथिक सत्कार। सं. तद्भव

आँती-सं., अण्डकोष मे अँतरीक उतरैक रोग। मै.

आँती उठब-क्रि., आँती उतरला सँ व्यथाक द्वारेँ छटपटाइक सन छटपटाएब। (लाक्षणिक)। मै.

आतुर-विशे., कोनो कार्यक व्यग्रता सँ आकुल। सं. तत्सम

आतू-अव्यय, कुकूर कें सोर करैक सम्बोधन। मै.

आद्योपान्त-अव्यय, आदि सँ अन्त धरि। सं. तत्सम

आद-सं., हरदिक कन्द सन कन्दवाला स्वादिष्ट आ औषधीय कन्द। मै.

आदगुड़-मिश्रित सं., गुड़ मे आद मिलाकय परसौतीक खाइक औषध। मै.

आदङ्क-सं., आतङ्क। डर सँ अकस्मात् छाती धक-धक करब। देह थरथराएब। सं. तद्भव

आदमी-सं., लोक। दम्पत्ती मे कयो एक। उ. तत्सम

आदर्श-सं., अयना, अनुकरणीयताक प्रतीक। नमूना। सं. तत्सम

आदर-सं., सत्कार, सम्मान, आवेश पूर्वक प्रतिष्ठा। सं. तत्सम

आदि-अव्यय, विशे., पहिलुक, आरम्भक, प्रथमवाचक। सं. तत्सम

आदी-सं., [स्थान भेदे शब्द भेद] आद। मै.

आदेश-सं., आज्ञा। सं. तत्सम

आध्मान-सं., जोर सँ शब्द, जोर सँ ढेकार, वायु वृद्धि सँ भीतरैभीतर फूलब। सं. तत्सम

आध-अव्यय, कोनो वस्तुक दू भागक एक भाग अर्द्ध। सं. तद्भव

आधा-अव्यय, कोनो एक वस्तुक समान रूपक दू अंशक एक अंश। मै.

आधा आधी-अव्यय, कोनो वस्तुक समान रूपें दू भागक विभाजन। मै.

आधार-सं., १. भोजन, कोनो वस्तुक आश्रय अर्थात् अधिकरण। सं. तत्सम

आधि-सं., मनक अकथनीय पीड़ा, नै मेटैवाला दुख। सं. तत्सम

आधिक-सं., अधिकता, आधिक्य। सं. तद्भव

आधी-सं., शतरञ्ज खेलक आधा जीतैक प्रक्रिया। मै.

आधी-विशे., कोनो वस्तु मे आधाक भागी। मै.

आधीन-विशे., अधीन, वश मे रहनिहार। मै.

आधेय-विशे., कोनो ठाम आश्रित रहैवाला। सं. तत्सम

आन्दोलन-सं., क्रान्ति, हल्ला मचाएब, व्यापक रूपेँ उथल-पुथल कराएब। सं. तत्सम

आन्हर-विशे., आँखि रहितौ देखैक शक्ति सँ हीन। दर्शनेन्द्रिय शून्य। मै.

आन्ही-सं., बिहारि, सुखायल महावायु, आन्धी। हि. तद्भव

आन-सर्व., दोसर, अन्य, भिन्न व्यक्ति। सं. तद्भव

आनन्द-सं., प्रसन्नता सुखद आन्तरिक सम्वेदन। (विशे.) प्रसन्न, हर्षित। प्रयोग—"लोकवेद आनन्द अछि किने।" सं. तत्सम

आनन-सं., मुह। सं. तत्सम

आनब-क्रि., लाएब, ल' आएब। मै.

आना-सं., भारत मे पहिने एक रुपैया मे १६ आना आ एक आना मे चारि पाइ होइत छल। मै.

आनाकानी-सं., अस्वीकारक भावनाक अभिव्यक्ति करैक चेष्टा। अरुचिक द्वारेँ कोनो विशेष विषय सँ लागि नै रखैक मुद्रा। मै.

आनि-सं., आत्म गौरव, स्वाभिमानक प्रकृति। मै.

आनि अपमानि-सं., युग्म शब्द, आत्म गौरव एवं आत्महीनताक भय। नीचताक बोध। मै.

आनी मानी-अव्यय, बात कें अर्थाएब। बात कें बेथारब। मै.

आनुपूर्वी-विशे., प्रतिरूपी, प्रतिमूर्ति, रूप मे कनेको भेद नहि करैवाला। सं. तत्सम

आप्त-विशे., अपनलोक, अङ्गित, अति निकटक सम्बन्धी। सं. तत्सम

आपकय-अव्यय, स्वतः स्वाभाविक रूपेँ। प्रयोग—"हमर मित्र दुर्बल आपकय आ बुड़ आपकय तैं कोनहुना काल काटि रहल छथि।" मै.

आपकता-सं., अपनैती, परस्पर हितक चिन्तन। मै.

आपद उठाएब-क्रि., कोनो कालक अवसर पर गम्भीर समस्या ठाढ़ करब। मै.

आपत्ति-सं., दोष उठाएब संकट जगाएब। सं. तत्सम

आपद-सं., विपत्ति, कष्ट, दुःख। सं. तत्सम

आप मौजी-सं., स्वच्छन्दता, इच्छानुसार चलैक प्रवृत्ति। मै.

आपर पर-अव्यय, आधुनिक युग मे, अर्वाचीन समय पर, निकट भूतकाल मे। मै.

आपरस-सं., रोग विशेष, देखू-'अपरस'। मै.

आपरुपी-विशे., स्वयम्भू, अपनैं भेनिहार। मै.

आपस्वार्थी-विशे., अपनेटा प्रयोजन सिद्ध केनिहार। मै.

आपस-सं., घुरबैक भाव, घुमिकय चल अबैक भाव, वापस। उ. तद्भव

आपस मे-अव्यय, परस्पर, एक दोसरक प्रति। मै.

आपसी-सं., घुरती, घुरौती, पारस्परिक। मै.

आपाधापी-सं., दौड़बरहा, दौड़धूप। हि. तत्सम

आफद-सं., संकट, उपद्रव, विघटन, विपत्ति। उ. तत्सम

आफदी-विशे., संकट अननिहार, झमेल बेसाहनिहार। मै.

आफन तोड़ब-क्रि., बन्धन तोड़िकय बहराइक प्रयास करब। मै.

आब-अव्यय, एखन, वर्त्तमान आ भविष्यत मे। मै.

आबनूस-सं., फल विशेष। अं. तत्सम

आबरजात-सं., आएब, जाएब। मै.

आबल-सं., आबल्य, निर्बलता। सं. तद्भव

आबह-क्रि., १. नीचता सँ विरोधीक ललकार। २. अपना सँ छोटक प्रति अबैक आदेश। मै.

आबा-सं., कुम्हारक माटिक वस्तु पकबैक गोल भट्ठा। आपाक। सं. तद्भव

आबाजाही-सं., अनिवार्य रुपें अबै जाइक व्यवहार। मै.

आबाद-विशे., कृषि भरल खेत, उपयोगी। मै.

आबालवृद्ध-अव्यय, बच्चा सँ बुढ़ि धरि सब लोक। सं. तत्सम

आभ्युदयिक-विशे., कर्म विशेष, कोनो शुभ कार्य करै सँ पहिने प्रातः काल बिना पिण्डदानक पितरक कर्म। सं. तत्सम

आभड़खुभड़-विशे., ऊँच-नीच, कत्तौ गहींर आ कत्तौ उपर उठल ढेप चेपबाला भूमि। मै.

आभा-सं., छवि, कान्ति, लावण्य। सं. तत्सम

आभास-सं., झलकी, अंश मात्र, लक्षण सँ लक्षित होएब। सं. तत्सम

आभूषण-सं., गहना, सौन्दर्यवर्द्धक। सं. तत्सम

आम्रेडन-सं., एकै बात कें बारम्बार घोर्षेत रहब। सं. तत्सम

आम-सं., भारतक राष्ट्रिय फल, आम। मै.

आमद-सं. अर्थक आगम, आय। उ. तत्सम

आमदनी-सं., निश्चित आर्थिक आयक स्रोत। उ. तत्सम

आमय-सं., रोग, व्याधि, अधिकता। प्रयोग—"बरिसाति मे चारु दिश जलामय रहैत छैक।" सं. तत्सम

आमला-सं., धात्री फल, आमलक। सं. तद्भव

आमवात-सं., शरीरक जोड़ सँ आखा धरि पीड़ा दैबाला बात रोग। सं. तत्सम

आमा-सं., अम्मा, माता, अम्बर। सं. तद्भव

आमाशय-सं., पेट मे मेल अन्नक कोष्ठ, पित्तक परिधि। सं. तत्सम

आमिल-सं., स्वादक हेतु तीमन मे देबाक अम्मत वस्तु, अजोह आमक सुखायल खण्ड। मै.

आमिष-सं., माछ मास सँ सम्बन्ध रखैवाला भोज्य पदार्थ। सं. तत्सम

आमूल-अव्यय, जड़ि सँ उपर धरि। सं. तत्सम

आमेख-सं., ईर्ष्या सँ भरल भितराएल क्रोध, अमर्ष। सं. तद्भव

आमोद करब-क्रि., अत्यन्त सुगन्धि सँ चारुभर सुवासित करब। मै.

आमोद प्रमोद-सं., खेल धूप, मनोरञ्जनक आनन्द। सं.तत्सम

आय-सं., आमदनी, धनागमक स्रोत। सं. तत्सम

आयत-विशे., नमहर कम चाकर बेसी अथवा नाम पैघ चाकर चोड़ रेखा। सं. तत्सम

आयत-क्रि., अन्य पुरुषक लेल भविष्यत्कालक हेतु अबैक क्रिया। आएत। मै.

आयत-सं., घर, स्थान, गोष्ठी अर्थात् अधिक लोकक एकट्ठा होइक स्थान। सं. तत्सम

आयतन-सं., देवता अथवा पवित्र कर्मक घर मन्दिर। सं. तत्सम

आयाम-सं., प्रसार, विस्तार, फैलाओ। सं. तत्सम

आयास-सं., अभ्यास, यत्न, उपाय, जोर लगाएब। सं. तत्सम

आयु-सं., उमेर, और्दा, वयस । सं. तद्भव

आयुर्दा-सं., जीवन, वयसक गति । मै.

आयुर्वेद-सं., वैद्यक शास्त्र, औषध विज्ञान । सं. तत्सम

आयुष्मान्-विशे., दीर्घजीवी । सं. तत्सम

आर्त-विशे., विकल, अधलाह मनोदशा भरल । सं. तत्सम

आर्तंचार्त-सं., स्थिति सँ बेसी खर्च, व्यवहारक आडम्बर मे उचित सँ बेसी अपव्यय । मै.

आर्तव-सं., स्त्रीक मासिक धर्म, रजःस्राव । सं. तत्सम

आर्ति-सं., व्याकुलता, पीड़ा, कोनो वस्तुक लेल मनक चरम आग्रह । सं. तत्सम

आर्द्र-विशे., सरस, सिमसिम, भीजल, गील । सं. तत्सम

आर्द्रा-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तत्सम

आर्द्रा करब-क्रि., आद्रा नक्षत्रक विशेष कर्म करब । मै.

आर-अव्यय, समुच्चयबोधक । आओर (हि.) और । मै.

आर-सं., चक्रक धार, चातक कोर । मै.

आरक्त-विशे., सम्पूर्ण लाल । लाल रंग आलता । सं. तत्सम

आरत-विशे., देखू-'आर्त' । सं. तद्भव

आरत-सं., गोसाउनि (गृह देवता) क सीरा देब हेतु तूरक बनाओल लाल रंगक गोल पत्र । मै.

आरतकपात-सं., विशेष पर्व मे सूर्य आदि देवता वा गृह देवताक पूजा मे उपयोगी पैघ आ छोट व्यासक तूरक बनाओल गोल पत्र । मै.

आरति-सं., चिन्ता भरल व्यग्रता, आर्ति । सं. तद्भव

आरती-सं., देवता आगू दीपक परिक्रमा करब, विधि—तीन बेर पैर पर आ एक बेर सम्पूर्ण मूर्ति कें गोल परिधि मे अर्थात दीप घुमाएब । आरातिक । मै.

आरपार होएब-क्रि., ऐ पार सँ ओहि पार धरि चल जाएब । मै.

आरब-विशे., आम अर्थात् अग्नि सँ अछूत अन्न । बिनु उसिनल । मै.

आरबल-सं., भाग्यक जोर, नीक भावीक परिणाम । मै.

आरम्भ-सं., कोनो काजक प्रति सक्रियता, कोनो क्रियाक प्रवृत्ति । सं. तत्सम

आरसि-सं., काँच माटिक बनाओल आगि रखैक चाकर पात्र । बोरँस जकाँ । मै.

आरसी-सं., कोनो कारणेँ कार्यक गति मे शिथिलता । आलस । मै.

आरा-सं., काठ चीरैक काँट सन धारवाला अस्त्र । मै.

आराध्य-विशे., आराधनाक इष्ट देवता वा व्यक्ति । सं. तत्सम

आराधब-क्रि., कोनो क्रियाक आरम्भ करब । ठानब । मै.

आराम-सं., अंग आ मनक विश्राम । रोगक वेग मे शिथिलता । मै.

आरि-सं., डाँड़, बान्ह, सीमा, विभाजन चिह्न । मै.

आरी-सं., काठ चीरैक काँटसन धारवाला छोट अस्त्र । मै.

आरु-सं., फर, पसरैवाली लत्ती विशेषक मोट लम्बाकार कन्द जकर तरकारी होइत अछि । खम्भारु । मै.

आरू-अव्यय, समस्तता बोधक, आदि आदि, लोकनि सब । प्रयोग-ऐ बेरी हमरा आरु के खूब धान उपजलैहै । मै.

आरोग्य-सं., रोग मुक्ति, शारीरिक व्याधिक दूर होयब । सं. तत्सम

आरोप-सं., ककरो दोषक विश्वास, लाञ्छन । सं. तत्सम

आरोतोरी भला के-अव्यय, भय, विस्मय आ आनन्द सँ स्वतः बहराएल शब्द । मै.

आल-सं., लाल रंग । मै.

आलन-सं., गृह आदि निर्माण मे लागि वा लागि धरबैवाला साधन, जेना टाट बन्है मे खढ़ माटि लेबै मे भूसा । मै.

आलमारी-सं., अनेक उपर नीचाँ खटालवाला पट्टाबन्न करैवाला वस्तु रखैक ठाढ़ सन्दुकचा । अं. तद्भव

आलय-सं., घरक परिवेश । घरक परिसरक भूमि । सं. तत्सम

आलस्य/आलस-सं., मनक शिथिलता, उत्साह-हीनता। सं. तत्सम/सं. तद्भव

आला-सं., शरीरक भीतरक शब्दक परीक्षा हेतु डाक्टरी यन्त्र। देशज

आलाप-सं., १. शास्त्रीय संगीत मे स्वर के सम पर अनै सँ पहिने स्वरक स्थिर प्रस्तार। २. पर-स्पर गप्प। सं. तत्सम

आलाप विलाप-सं., ककरो प्रति आवेश आ सहा-नुभूतिक देखाउटिक गप। मै.

आलि-सं., समूह, पंक्ति। सं. तत्सम

आली-विशे., सखी, बहिनपा। सं. तत्सम

आलू-सं., प्रसिद्ध कन्दवाला व्यञ्जन। मै.

आलेख-सं., कोनो विषयक संक्षिप्त विवेचना। सं. तत्सम

आलेप-सं., कोनो वस्तु कें सम्पूर्ण रुपें लेपैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

आलेरंग-सं., देखू-"आल"। मै.

आलै-सं., १. आगि जरैत रहैवाला स्थान। धुनी (हि.) अलाव। ज. तद्भव

आलैं-सं., देखू-"आलय"। सं. तद्भव

आलोक-सं., प्रकाश, इजोत। सं. तत्सम

आलोड़न-सं., जल आदि कें घोंकव। बातक विषय मे अर्थाएब। अन्य वस्तु हेतु व्यतिक्रम। सं. तत्सम

आवन्टन-सं., लोक सब मे बाँटब। सं. तत्सम

आवरण-सं., झाँपनि, छाजनि, ओढ़ना। सं. तत्सम

आवश्यक-अव्यय, जरुरी, अनिवार्यता। सं. तत्सम

आवास-सं., कोनो अवधि धरि रहैक स्थान। सं.तत्सम

आवासीय-विशे., कोनो विशेष क्रियाक आवधि पर्यन्त रहनिहार। सं. तत्सम

आवाहन-सं., शब्द वा मन्त्र सँ ककरो अबैक आग्रहक प्रक्रिया। सं. तत्सम

आवृत्ति-सं., एके बात कें बारम्बार दोहराएब। स्वाध्याय। सं. तत्सम

आवेश-सं., मन मे हठात् भावनाक तरंग। सं. तत्सम

आवेस-सं., हृदय सँ बहराएल विशुद्ध स्नेह व्यव-हार। मै.

आश्चर्य-अव्यय, छगुन्ता, एक प्रकारक चित्तक विस्तार जे अलौकिक अप्रत्याशित दर्शन सँ जगैत अछि।(विशे.) अद्भुत वा अजगुत। (सं.) विस्मय। देशज

आश्रम-सं., जाति। (मै.) रहैक स्थान (सं. तत्सम) भारतीय जीवन पद्धतिक अनुसार मानवक अवस्था, कर्म एवम् विचारक गुणें चारिआश्रम होइत अछि। ब्रह्मचर्य्य, गार्हस्थ्य, वाणप्रस्थ आ सन्यास। कुमारा-वस्था मे शिक्षालैक अवस्था ब्रह्मचर्य, युवावस्था मे लोकवेदक उपयोगी कर्म संग्रहक प्रवृत्ति गृहस्था-श्रम, अगिला पीढ़ी कें अर्धवृद्धावस्था भेला पर गृहस्थीक भार दयके संसार सँ लागि हटबैक अभ्यास वाणप्रस्थ आर पूर्ण वृद्धावस्था मे वासना सँ मुक्त भय सम्पूर्ण रुपें अपना कें ईश्वर मे लय करैक रीति सन्यास आश्रम थीक। सं. तत्सम

आश्रय-सं., जतय निर्भर रहल जा सकैत हो। सं. तत्सम

आश्वासन-सं., बोल भरोस, मनक विकलता मे धैर्य धरबैक वाचनिक चेष्टा। सं. तत्सम

आश्विन-सं., मास विशेष। सं. तत्सम

आशय-सं., आन्तरिक भावना। सं. तत्सम

आशा-सं., भविष्यक हेतु नीक सम्भावना। सं. तत्सम

आशावुभ्थी-सं., भविष्यक हेतु सिद्धिक लोभें व्यग्र-तापूर्वक प्रतीक्षा। मै.

आशिन-सं., आश्विन मास। सं. तत्सम

आशीर्वाद/आशीष-सं., शुभकामना, नीकक इच्छा प्रकट करब। सं. तत्सम

आषाढ़-सं., मास विशेष। सं. तत्सम

आस्तिक-विशे., अव्यक्त ईश्वर पर विश्वास कय-निहार। सं. तत्सम

आस्तीक-सं., नाग वंशीय पौराणिक ऋषि। सं. तत्सम

आस्ते-अव्यय, नहूँ नहूँ, धीरें-धीरें। मै.

आस्था-सं., १. विश्वास पूर्वक श्रद्धा। २. सेवा परिचर्या मे आदर बुद्धि। ३. सम्पत्ति। सं. तत्सम

आस्थापात-विशे., आस्थाक पात्र अर्थात् सम्पत्ति-वाला। मै.

आस-सं., आशा। सं. तद्भव

आस-सं., भुनबैक हेतु साहब, संचाल करब। गति। मचकीक डुहुदिश सँ धक्का देब। आस कहबैं अछि। मै.

आसक्त-विशे., कोनो विषय मे निमग्न रहनिहार। सं. तत्सम

आसक्ति-सं., सांसारिक विषय वासना मे निमग्न रहैक क्रिया। सं. तत्सम

आसकति-सं., कोनो काज मे आलसक द्वारें शिथिलता। मै.

आसकती-विशे., कोनो काज मे उत्साहक अभावें हटल रहैक भावना रखनिहार। मै.

आसकूर-अव्यय, दूर, कनेक हटिकय, फुटापन। मै.

आसङ्ग-सं., कथू मे तृष्णाक संग तल्लीनता। सं. तत्सम

आसन/आसनी-सं., बैसैक आधार। सं. तत्सम

आसपास-सं., नेन्हा भुटकाक खेल विशेष। (विशे.) समीप, लगक स्थान। मै.

आसमर्द-सं., अनघोल। अनेक बाजन आ बहुत लोकक उच्च स्वरें ध्वनि। मै.

आसरा-सं., आसाबाटी, प्रतीक्षा, भरोस। मै.

आसर्व-सं., सिद्ध कयल पेय औषध, मद्य। सं. तत्सम

आसाबाटी-सं., उत्कण्ठा आ आतुरता सँ प्रतीक्षा। मै.

आसासोंटा-सं., बन्धित श्रमिकक द्वारा सामन्तक आडम्बर हेतु उघहल जाइत विभिन्न सुसज्जित दण्ड छत्र। मै.

आसीन-विशे., बैसल, आरूढ़। सं. तत्सम

आह !-अव्यय, १. वीरक ललकारा। २. व्यथाक शब्द। ३. शोक भय हर्षक स्वतः उच्चरित शब्द। मै.

आह-सं., रौदक कनेको अंशक ताप। प्रयोग-"मरआ एकं आह मे सुखा जाइत छै"। मै.

आहटि-सं., १. सूक्ष्म आ बड़ कम ध्वनि। २. वातावरणक द्वारा ज्ञान। मै.

आहत-विशे., घालि, चोट खायल। सं. तत्सम

आहर-सं., जल संचयक स्थान, जलाशय। मै.

आहल-सं., काटल धान आदिक सस्यक चारि मुट्ठीक समूह जे एक हाथें सम्हारल जाइत अछि। वस्तुतः काटल सस्यक चारि मुट्ठी एक आहल होइछ, चारि आहल एक पाँज आ चारि पाँजक एक बोझ होइछ। मै.

आहा !-अव्यय, पीड़ा, कृपा, प्रसन्नता आ प्रशंसासूचक। मै.

आहार-सं., भोजन। भूखक संग खाएब। सं. तत्सम

आहि-अव्यय, व्यथा, आ पीड़ाक असहृता सँ कुहरब। मै.

आहि-सं., लोकक उत्पीड़न सँ उत्पन्न पाप। मै.

आहि आएब-क्रि., पश्चात्ताप सँ दुःख होएब। ग्लानि भरल दुष्कर्मक पश्चात्ताप। मै.

आहिगमिकय-क्रि., आश्रय, आगु पाछु सोचि, नीक अधलाह विचारि। मै.

आहिरे-अव्यय, निषेधात्मक बुझनैक साकांक्षताक शब्द। मै.

आहि रे बा-अव्यय, निषेधक सम्बोधन। मै.

आही-सं., कम तापवाला रौद। मै.

आहुर काटब -क्रि., विवशता, कोनो क्रिया कें करैक असमर्थताक द्वारें भीतरें भीतर उद्विग्न होएब। मै.

आहे माहे-अव्यय, निष्प्रयोजनक गप, उबहन उपदरयुक्त नवपुरान बात। मै.

इ

इ-सं., ह्रस्व इकारक स्वर वर्ण। मै.

इ:-अव्यय, निषेधक काकु स्वर। मै.

इआर-विशे., १. एक पुरुषिक घास। २. एक संख्या मे भेनिहारि। ३. एकेटा सन्तानवाली स्त्री। मै.

इङ्गित-सं., इसारा, अंगक विभिन्न चेष्टा सँ विशेष प्रकारक अर्थक प्रकाशन। मै.

इच्छा-सं., मनोनुकूल वस्तुक चाह, अभिलाष। सं. तत्सम

इच्छुक-विशे., इच्छा रखनिहार। सं. तत्सम

इचना-सं., माछ विशेष। मै.

इछाइन-सं., माछक दुर्गन्ध। मै.

इछनीबच-सं., औषध विशेष। मै.

इज्जड़-सं., वनस्पति विशेष। मै.

इजमलिया-सं., केबाड़क लोहाक छड़। मै.

इजोत-सं., ज्योति, प्रकाश। मै.

इजोर-सं., आलोक, प्रकाश। प्रयोग-"एकहि पख इजोर"-विद्यापति। मै.

इजोरिया-विशे., चन्द्रमाक प्रकाशवाली राति। मै.

इठलाएब-क्रि., गौरवेँ ऐँठैत रहब। घमण्ड सँ उन्मत्त जकाँ आचरण करब। मै.

इडहर-सं., अन्न सँ बनल व्यञ्जनक नाम। प्रकार-उड़ीदक दोखड़ा बेसन केँ कठगर कऽ कऽ सानि केँ नाम नाम मुठरा बनाओल जाइत अछि तकरा उसिनिकय ठंढा भेला पर पातर चक्का काटि तेल मे तरल जाइछ। पेआउजि छोड़ि माँसक सब कटुक एवं प्रक्रिया सँ रान्हल गेला पर उत्तम व्यञ्जन होइत अछि। मै.

इड़ा-सं., योग क्रियाक प्रथम नाड़ी। सं. तत्सम

इत्तर -विशे., जकरा कोनो कर्म करैक धरानि नै रहैक एहन नीच लोक। मै.

इतराएब-नाम धातु क्रि., अपन सुख समृद्धिक मदे उच्छृंखल जकाँ करब। नीचताक पराकाष्ठा देखा-एब। मै.

इतस्तत करब-क्रि., १. एम्हर ओम्हर घूमल करब। २. कोनो बात मे आगाँ पाछाँ करैत रहब अर्थात् हँ नै मे निश्चिय नै करब। मै.

इति-अव्यय, १. ई (प्रत्यक्ष निर्देश)। २. कथुक समाप्तिक संकेत। स. तत्सम

इतिहास-सं., देश विदेशक विशेष व्यक्तिक क्रमबद्ध काल एवं स्थितिक यथार्थ वर्णन। सं. तत्सम

इन्द्र-सं., १. देवताक राजा। २. स्वामी। सं. तत्सम

इन्द्रकमल-सं., वनस्पतिक फूल विशेष। मै.

इन्द्रजाल-सं., लोक केँ अन्हर जकाँ दऽ कऽ भ्रम उत्पादन करब अर्थात् जादू टोनाक प्रदर्शन। सं. तत्सम

इन्द्रजीत-सं., मेघनाद। इन्द्रो केँ जीतैबाला। सं. तत्सम

इन्द्रदारु-सं., वनस्पति विशेष। मै.

इन्द्रधनुष-सं., मेघ मे धनुषाकार उगल भिन्न-भिन्न रंगक वृत्त रेखा। सं. तत्सम

इन्द्रनील-सं., मणि विशेष। सं. तत्सम

इन्द्रिय-सं., शरीरक ओ सब अंग जकरा सँ लोक भौतिक ज्ञान आ क्रिया करैत अछि। विशेष-इन्द्रिय दसटा होइत अछि ज्ञानेन्द्रिय ५ एवं कर्मे-न्द्रिय ५। आँखि, कान, नाम, जिह्वा एवं त्वचा एहि पाँचो सँ लोक दर्शन, श्रवण, घ्राण (सूंघब) स्वाद लेब आ स्पर्श करब ज्ञानेन्द्रियक काज थीक। ए सब इन्द्रिय द्वारा बुद्धि मन केँ बाहरी ज्ञान दै अछि। मन ओकर मनन कय हृदय केँ दै अछि। हृदय संवेदन कय अन्त:करण केँ दऽ दै अछि। ई सब प्रक्रिया ततेक सूक्ष्म समय मे होइत छैक जे लक्षित नै भऽ सकैत छैक। पाँच ज्ञानेन्द्रियक अति-रिक्त ५ टा कर्मेन्द्रिय होइत अछि—हाथ, पैर, मुह, मल मार्ग आ मूत्र मार्ग। ई पाँचो इन्द्रिय मनक आज्ञा तथा बुद्धिक प्रेरणा सँ सक्रिय होइत अछि। ई दशोटा इन्द्रिय मानव मात्रे केँ सजग रहैत अछि। स. तत्सम

इन्द्री-सं., पुरुष चिह्न वा। स्त्री चिह्न मात्र। मै.

इनरजौ-सं., जौक आकारक विशेष अन्न। मै.

इनहोर-विशे., तप्पत कयल जल। मै.

इनाम-सं., पुरस्कार। उ. तत्सम

इनार-सं., कूप, कुइआँ, छोट पेय जलाशय। मै.

इयँ !-अव्यय, आदरक सम्बोधन। मै.

इर्याविर्ता-सं., अपने सन व्यर्थ वा सार्थक काज करैक प्रक्रिया। मै.

इरवप-सं., फूनि प्रभावक दाबीक रोआब। मै.

इराक-सं., देश विशेष। देशज

इरोत-सं., १. बाहर सँ आएल प्रकाश। २. अड़ ३. लोक बारैक हेतु बीचक व्यवधान। मै.

इलची-सं., चीनक राष्ट्रिय फल (लीची)। मै.

इलमसिया-विशे., काज केँ शीघ्र समाप्त करैले छटपट केनिहार। केवाड़क लोहक छड़। मै.

इशारा-सं., अंगक चेष्टा आ बातक ध्वनि सँ विशेष ज्ञान देब। उ. तत्सम

इष्ट-विशे., आप्त, अभिलषित। सं. तत्सम

इष्टदेवता-सं., जाहि मन्त्रक दीक्षा होअए तकर मुख्य देवता अर्थात् व्यक्तिगत आराध्य शक्ति। सं. तत्सम

इष्टापत्ति-सं., नीक अवगाह सभक सम्भावनीक अवधारण। संकट केँ उठाइयै केँ प्रवृत्ति। सं. तत्सम

इस्स-अव्यय, पीड़ा, विरोध, आश्चर्य आ आनन्दक ध्वनि। मै.

इसकी-विशे., वेश परिवेश मे विलास विनोदक अतिप्रिय। उ. तद्भव

इसपात-सं., शुद्ध एवं ठोस लोह। देशज

इसबगोल-सं., औषध रूपक पदार्थ जे पुरान आ-औंक रोग मे प्रयोग होइछ। मै.

इसरगद-सं., सर्पगन्धा जड़ी। जकर प्रयोग सँ साँपक विष मरैछ। मै.

इसलाम-सं., मुसलमानक व्यापक धर्म। ऊ. तद्भव

ई

ई-सं., इकारक दीर्घ स्वर, ईकार। मै.

(तालु स्थानीय आभ्यन्तर प्रयत्न) मै.

ई-सर्व., प्रत्यक्ष निर्देशक अर्थात् वक्ताक अत्यन्त लगक वस्तुक प्रति निश्चय वाचक। मै.

ई:-अव्यय, तर्जन एवँ क्रोध, विरोध आ निषेध सूचक शब्द। मै.

ईंटा-सं., इष्टका, पजेबा। कोठा बनबैक उपादान। मै.

ईर्ष्या-सं., डाह, ककरो नीक नैं सहन करैक भाव। सं. तत्सम

ईरान-सं., अरब उपमहाद्वीपक एक मुसलीम देश। देशज

ईश्वर-सं., सर्वशक्तिमान्। (विशे.) समर्थ। स्त्री० ईश्वरी। सं. तत्सम

ईशानकोन-सं., पुब आ उत्तर दिशाक बीचवाला कोन। सं. तद्भव

ईशाई-सं., पाश्चात्य देशक विशेष धर्म। (विशे.) एहि धर्म कें मानैवाला। देशज

ईह्-अव्यय, पीड़ा एवं आनन्दानुभूतिक ध्वनि। मै.

ईह्-अव्यय, तर्जनात्मक ध्वनि। मै.

उ

उ-सं., ओठक स्थानवाला बाह्य प्रयत्नक ह्रस्व स्वर वर्ण उकार। मै.

उँ!-अव्यय, टोकला पर अपन अस्तिक आ साकांक्षताक परिचायक। मै.

उँ: !-अव्यय, निषेध आ विरोधक स्वर। मै.

उड़नउड़ल करब-क्रि., क्यो मानय वा नैं मानय अनेर अपनें कोनो बात आ काज मे अपनत्व आ हुलासक द्वारें धरती पर पैर नहि रोपब। मै.

उक्का उक्की-विशे., उल्का भ्रमण। दीपावलीक राति। जकरा ऊक फेरें सँ सम्बन्ध छैक। मै.

उक्खरि-सं., कूटैक हेतु बनाओल मोट काठक एक कोर मे गहींर पात्र आ लोहाक यन्त्र। मै.

उक्ति-सं., कथन, वचन, विचार कहब। सं. तत्सम

उकछाओल-विशे., मन उचटऔबाला काज। मै.

उकटन-सं., देहक मैल भारैले त्वचा कोमल बनबैले प्रयोग-अनेक पदार्थक बुकनी मिलाओल हेल। मै.

उकटब-क्रि., जमल वस्तु कें कोड़िकय ढील करब। मै.

उकटाएब-प्रे. क्रि., जमल वस्तु कें कोड़वाकय उपर नीचाँ करब। मै.

उकटापैंची-सं., दबल, बिसरल, छिपल भीतरक आक्रोश एक दोसरा पर भारब। मै.

उकटाफेरी-सं., उपटि आ उजरिकय अव्यवस्थित रहैक स्थिति। मै.

उकटावास-सं., उखड़ि-उखड़ि बसैक क्रम। अव्यवस्थित रुपें जमब। मै.

उकटार-सं., सामूहिक रुपक उकटैक क्रम, कोड़िकय अव्यवस्थित करब। मै.

उकठ-सं., दोसरा कें तामस जगबैक उपद्रव। अरुचिकर क्रिया। मै.

उकठकाठ-सं., आपत्तिजनक काज जाहि मे कनेके चूक भेला सँ संकटक सम्भावना रहए। मै.

उकठाह-विशे., आपत्तिदायक, उपद्रावक, कठिनगर। मै.

उकठीभंगठी-सं., मुख्य काज सम्पन्न करै सँ पहिने ओकर संबन्धक अनेक छोट-छोट सम्हारब। जेना-"घर छारै सँ पहिने टूटल कोरोबाती आ बन्हन कें ठीक करब।" मै.

उठाठी-विशे., उकठ करैवाला। मै.

उकड़्-सं., आपत्तिजनक ढङ्ग, कठिन स्थिति। मै.

उकलन-सं., जड़ि सँ समाप्त होइक रुप। मै.

उकलब-क्रि., जड़ि मूल सँ समाप्त होएब। मै.

उकसपाकस-सं., अङ्गक व्यर्थ चालन सँ अस्थिरताक प्रकाश। मै.

उकसाएब-क्रि., उत्प्रेरित करब, उत्तेजना भरब। मै.

उकसुक करब-क्रि., क्रियाक (चेष्टाक) हेतु उत्कंठित होएब। उत्प्रेरित रहब। मै.

उकहब-क्रि., १. फूसि बातक आरोप करब। २. काठक शक्तिहीन होएब। ३. ऊक देखाकय हिंसक पशु कें खेहारब। मै.

उकाठी-विशे., १. उकठ (उपद्रव) कयनिहार। २. मृतकक मुह मे आगि देनापर फेंकल ऊक। मै.

उकापतङ्ग-सं., १. आकाश मे उल्कापात। २. (लाक्षणिक विशेषण) एकै क्षन मे सगरे अनुचित घटना एवं अप्रत्याशित प्रचार कय देनिहार। मै.

उकारी-सं., पैघ बाँस मे बान्हल ऊक। मै.

उकसी-सं., कफ रोग सँ उत्पन्न खोंखी, कास। मै.

उकिल-सं., उक्ति (लाक्षणिक) बुद्धि। प्रयोग-"इः ई हमरा उकिल बुझबैं छथि।" मै.

उकूबा-सं., अनेर दोषारोपण कय लोक मे प्रचार द्वारा दुर्नामी बनबैक चेष्टा। मै.

उकौर-सं., देखू-"उकारी"। मै.

उखड़ब-क्रि., १. भाव मे विचलित होएब, गरिमा सँ खसि पड़ब। २. धरती सँ सम्बन्ध छूटब। मै.

उखड़ा लागब-क्रि.,धान आदि सस्य मे लागल रोग विशेष। जकरा लगला सँ अधिक गाछ सुखा जाइछ। मै.

उखड़ाह-विशे., १. कोनो बात पर लगले उत्तेजित भेनिहार। २. धरती सँ अलग होइ मे अत्यन्त सरल। मै.

उखड़ौड़-सं., उखरि सँ छिलकल चूरा। मै.

उखराहा-सं., दुपहरियाक पहिने आ पाछू दिनक विभाग। प्रयोग-"बाबू हम एके उखराहा जन रहब।" मै.

उखरि मुसरा-सं., विशेष प्रकारक साग, जिबलिङ्गी जड़ी। मै.

उखाड़ पुखार-सं., अनेक वस्तु कें उखाड़िकय व्यवस्थित करैक क्रम। मै.

उखाड़ब-क्रि., खूट्टा एवं गाछ वृक्ष कें धरती सँ सम्बन्ध तोड़ब। मै.

उखिआर-सं., मधुर रसवाला सस्य, कुशियार, इक्षुदण्ड। मै.

उखिनब-क्रि., बैसल माटि कें यत्र तत्र व्यर्थ कोड़ब। मै.

उखिनाखूहनि-सं., सर्वत्र व्यर्थ कोड़ैक क्रिया। मै.

उखीबिखीलागब-क्रि., कोनो विषयक निष्पादन हेतु मन सँ देह धरि अस्थिर होयब। मै.

उखेलब-क्रि., बहुत गहीँर धरि कोड़ि कय माटि कें ढील करब। मै.

उग्र-विशे., अधिक तेज, स्वाभाविक स्थिति सँ विकट। सं. तत्सम

उगास-सं., कण्ठ सँ बाहर होएब, मोख, । प्रयोग-ग्रहणक विषय मे। सं. तद्भव

उगब-क्रि., प्रकट होएब, उदित होएब। मै.

उगरन-सं., खर्च कयला पर बाँचल वस्तु। मै.

उगरब-क्रि., खरच कय कें बाँचल रहब। मै.

उगरा पुगरा-विशे., खर्च कयला पर थोड़ बहुत बाँचल। मै.

उगारब-प्रे. क्रि., खर्च सँ बुद्धि पूर्वक बचा राखब। मै.

उगलाहा-विशे., उगल सूर्य। मै.

उगिलन-सं., मुह सँ वा कण्ठ सँ बाहर कयल वस्तु। मै.

उगिलब-क्रि., मुह मे देल भोज्य वस्तु बाहर करब। मै.

उगिला-विशे., उगिलि उगिलि कय बाहर कयल। मै.

उगहनि-सं., इनार सँ जल भरैक हेतु डोलक डोरी। मै.

उगहब-क्रि., एकठाँ सँ दोसर ठाँ वस्तु लय जायब। मै.

उघरन-सं., परस्पर वस्तुक लपेटक छूट। मै.

उघरब-क्रि.,वस्तु मे परस्पर लपेट वा लागि छूटब। मै.

उघरा-सं., आपस मे वस्तुक सम्बन्ध वा लपेटक छूटि। मै.

उघराभोङ्र-सं., (लाक्षणिक) व्यवस्थित वस्तु कें बनाकय अव्यवस्थितता। मै.

उघराह-विशे., परस्पर लागि छूटैक सम्भावनावाला। दू वस्तु आपस मे विश्लिष्ट भेनिहार। मै.

उघाउघी-सं., वस्तु उठा उठाकय एम्हर सँ ओम्हर लय जाइक क्रम। मै.

उघार-विशे., प्रगट, झापनिहीन, देखार। मै.

उघारब-क्रि., देखार करब। आवरणहीन बनाएब। मै.

उघारि-सं., गुप्त कें प्रकाश मे आनब। कोनो वस्तु कें सभक समक्ष खोलब। मै.

उङारब-क्रि., उकटन आ तेल सँ मर्दनकय देह कें चिक्कन करब। अंग कें माजब। मै.

उच्च-अव्यय, उपर। मै.

उच्चाटन-सं., उपटि जाइक मनोभाव, वास (स्थिति) अन्यत्र लय जाइक उद्वेग। सं. तत्सम

उच्चारण-सं., शब्दक वर्णात्मक स्पष्ट ध्वनि। सं. तत्सम

उच्चावच-सं., कोनो प्रकारक आहटि। सं. तत्सम

उच्चैःश्रवा-सं., इन्द्रक घोड़ा। चौदह रत्न मे एक रत्न। मैं.

उच्छिन्न-विशे., जड़ि सँ कटल। सं. तत्सम

उचक्का-विशे., देखितँ-देखितँ लऽ उड़ँबाला चोर, अनेर चञ्चलता सँ एम्हर ओम्हर कयनिहार। मै.

उचकब-क्रि., शरीर कें उछला कय कोनो चेष्टा करब। मै.

उँचगर-विशे., बेसी ऊँचक स्थान। मै.

उचड़ब-क्रि., अप्रत्याशित रूपें आबिलऽ पड़ाएब। शीघ्रता सँ उपरँ उपर लोकि लेब। मै.

उचड़्डा-विशे., सदिखन उछलँ कूदँबाला नेन्ना, अपन चञ्चल चेष्टा सँ संकट अनँबाला। हाथ सँ छीनि लँबाला चोर। मै.

उचटब-सं., परिवेश आ परोसी सँ मनक लागि टूटब। मै.

उचटन लागब-क्रि., अपन स्थान कें छोड़ि दैक प्रबल आवेग होएब। मै.

उचिती/उचती-सं., कहनिहारक नम्रता भरल सुननिहारक महत्ववार्ता। विनती। विनय प्रदर्शन। मै. विशेष-विवाहक उपरान्त बरबधू दुनू पक्षक मुख्य व्यक्ति अपन-अपन परस्पर नम्रता देखबैत छथि। कन्या पक्षक स्त्रीगण नम्रताक गीत गबैत छथि। मै.

उचरब-क्रि., लेखा-जोखा एवं विधि विचार सँ स्पष्ट होएब। मै.

उचरीड़-सं., फतिङ्गा विशेष। मै.

उँचाइ-सं., ऊँच होइक मान। मै.

उचाट-सं., विरक्ति, उपटि जाइक प्रबल परम्पराक स्थान सँ वितृष्णा। मै.

उचाटन-सं., देखू-"उच्चाटन।" सं. तत्सम

उचाड़-सं., १. कोनो क्रियाक हेतु बिन सोचनँ आवेग। २. घरक चार कें मुह मे मुह मिलँ मे बाधाबाला कोड़ो। मै.

उचारन-सं., देखू-'उच्चारण'। मै.

उचारब-क्रि., मुह सँ अथवा बाद्य सँ स्पष्ट शब्द बाहर करब। मै.

उचाबच-सं., देखू-"उच्चावच"। सं. तद्भव

उचौंस-विशे., उन्नत स्थान। मै.

उचित-विशे., अनुकूल, ठीक। सं. तत्सम

उचित कल्यान-सं., श्राद्ध, विवाह आदि अशुभ आ शुभ कर्त्तव्य। मै.

उचितवक्ता-विशे., बिन पुछनँ। बुधियारी देखबैत उचित बजनिहार। मै.

उचिला-सं., नव बीनल वस्त्र मे अकस्मात् पड़ल फाँक। मै.

उचिलाचाल-विशे., विभिन्न उद्वेग बगला सँ अस्थिर। मै.

उछटब-क्रि., निशान चुकला सँ अस्त्रक अनिश्चित दिशा मे बजरब। मै.

उछती-सं., देखू-'उचिती'। मै.

उछन्न-विशे., आसक्तिहीन, हटल रहैक इच्छाबाला। मै.

उछन्नर-सं., स्थित कें समूल उखाड़ैक दुष्टता सँ उकठ। मै.

उछरिओछरि-विशे., यावत् धीयापूता नहि भेल रहैक तावत कालक नारी अर्थात् बिना बच्चा वाली। मै.

उछरै-सं., उच्छ्राय, उन्नति, उर्ध्वमुख वृद्धि। सं. तद्भव

उछलकूद-सं., हर्ष आ क्रोध मे हाथ आ पैरक अस्थिरता पूर्वक संचालन। मै.

उछलब-क्रि., कोनो कारणें हठात् सम्पूर्ण शरीर कें धरती सँ बेलाथि कयलेब। मै.

उछला-सं., कपड़ा बीनैक काल यन्त्रक द्वारें सूत उछलि गेला सँ विकृत विभोट। मै.

उछाँट-सं., आकस्मिक भौतिक प्रभाव, अकस्मात् भूत प्रेतक सन्दिग्ध दोष। मै.

उछाल-सं., सीमा सँ उपर बैने पानिक छिड़ियाएल प्रवाह। मै.

उछाँसलेब-क्रि., (लाक्षणिक) विश्रामक अवसर पाएब। मै.

उछाह-सं., शुभक आनन्दें उत्पन्न उत्साह। सं. तत्सम

उछाही-विशे., १. उत्साह बढ़बैक हेतु देल वस्तु (इनाम)। २. उछाह मे करैक योग्य विशेष क्रिया। मै.

उछेहब-क्रि., १. घरक पुरान खड़ हटाएब। २. देहक वस्त्र हटाकय अंग प्रकट करब। अर्थात् आवरण कें समेटिकय हटाएब। मै.

उछौत-विशे., प्रसन्न, उत्साहयुक्त। मै.

उज्जर-सं., श्वेतवर्ण, निर्मल। (विशे.) उज्जर रंगवाला। मै.

उज्झट-विशे., असभ्य, अपशब्द। मै.

उजगी-सं., रातुक जागरणा, अपूर्ण निद्रा। मै.

उजड्डु-विशे., महामूर्ख, पशुक समकक्ष बुद्धिवाला। मै.

उजरब-क्रि., छिन्न-भिन्न होयब, विनष्ट होएब, स्थिति मे अस्तव्यस्त बनब। मै.

उजरा-विशे., उज्जर रंगक। मै.

उजरी-विशे., (लाक्षणिक) उज्जर रंगक समता सँ लक्षित पदार्थ अर्थात् "दही"। मै.

उजबिजाएब-क्रि., अनेक वस्तुक उपस्थिति सँ कोनो वस्तुक ग्रहण करै मे मनक अस्थिरता सँ उथल पुथल मचब, उद्विग्न होएब। मै.

उजहब-क्रि., प्रथम वर्षा सँ मत्त भऽ कऽ पानिक वेगक विपरीत माछक चलब। मै.

उजहिया-सं., उन्मत्त माछक प्रथम वर्षाक हर्षे यत्र-तत्र बाहर होएबाक क्रिया। मै.

उजागर-विशे., प्रकाशित, बहुत मे पहिल लक्षित होमऽवाला। मै.

उजाड़ि-सं., सामूहिक रूपें ध्वंस। मै.

उजियार-विशे., चमत्कृत, प्रकाशवान्। मै.

उझक-सं., हल्लुक धक्का, अनवधानक वेग। मै.

उझकब-क्रि., अकस्मात् टगि जाएब, कनेको आस लगने टगि जाएब। मै.

उझकाएब-प्रे. क्रि., टेढ़ करब, जानिकय झुकाएब। मै.

उझकुन-सं., उपर उठाकय अडबैक वस्तु, चुल्हाक उपर बर्तन टेकैक हेतु देल ऊँच शृंगा। मै.

उझट-सं., अनदेखक झटका। मै.

उझाँट-सं., अदृश्य वस्तुक अधलाह प्रभाव। मै.

उझिलब-सं., एक बासन सँ दोसर बासन मे वस्तु कें करैक प्रक्रिया। मै.

उझिलब-क्रि., कोनो बासन सँ अन्य बासन वा स्थान पर कोनो पदार्थ कें धरब। मै.

उझिला-सं., एकठाँ सँ दोसर ठाँ वस्तुक परिवर्तन। मै.

उझिलापुझिला-सं., लगातार वस्तु कें एतय सँ ओतय करैक क्रम। मै.

उझुक्का-सं., आकस्मिक वेग, कार्य सम्पादनक चेष्टा। मै.

उझुक-अव्यय, झोंक, मनक सक्रियताक वेग। मै.

उट्ठाकाज-विशे., नियम सँ व्यवस्थापूर्वक सीमित काज। मै.

उट्ठापटक-सं., बात सँ क्रिया सँ निरन्तर एक दोसरा कें हरबैक चेष्टा। मै.

उटकरी-अव्यय, अनुमानें सँ बिन बुझलो बात मे गप्पक दखल। मै.

उटङ्ग-विशे., उत्तुङ्ग, अत्यन्त ऊँच। स. तद्भव

उटपटाङ्ग-विशे., विरुद्ध, जटिल, ओझराह। मै.

उटेङ्गल-विशे., उच्च स्थान मे धयल। मै.

उठकी बैसकी -सं., विवशता सँ अधिक उठैं बैसैक मुद्रा। मै.

उठँघन-सं., भोरका पहर उठङ्गिकय खाइक विधान। जितियाव्रत सँ पूर्व राति मे ई प्रचलित अछि। मै.

उठङ्गब-क्रि., कोनो वस्तु पर देह कें निर्भर करब (लाक्षणिक) अपन कर्त्तव्य छोड़ि आनक भरोस करब। मै.

उठङ्गाएब-प्रे. क्रि., कोना पदार्थक भार कतौ स्थापित करब। मै.

उठन्ती-सं., उत्थान, उन्नति (विशे.,) अभ्युदयक अभिमुख भेल। मै.

उठनगर-विशे., उपर मुह होइवाला, उन्नतिशील। मै.

उठब-क्रि., उन्नति करब, सूतल सँ जागब, ठाढ़ होयब। अपन स्थिति सँ उपर उठब। मै.

उठल्लू-विशे., समाज मे महत्वहीन। मूर्ख बनल, लोकक दृष्टि मे हल्लुक भेल। मै.

उठाइनि-सं., खर्च (खपत (उर्दू) क शब्द) प्रयोग- "अखन घर-घर मे चाहक उठाइनि छैक।" मै.

उठाएब-क्रि., जगाएब, स्वीकारब, नीचाँ सँ उपर करब, लोप कय देब। प्रयोग-१. "दौआ सुतले छथि उगा दियौन। २. आब नीको लोक अधलाह काज उठा लेलक। ३. कनेक जन कें बोझ उठा दियौक। ४. आइ काल्हि मे लोक कें समाज आ धर्मक भय उठि गेलै।" मै.

उठाओ-सं., कोनो क्रिया आ व्यवहारक लोप। मै.

उठाओन-सं., प्रकाश मे अनैक, उठबैक, जगबैक आ लोप करैक भाव। मै.

उठानहारब-क्रि., उठैबैसँ मे असमर्थ होएब। क्षीण होएब। (लाक्षणिक) बल घटब। धनहीन होयब। मै.

उठानैसी-सं., लगले लागल उठि बैसिकय करैक काज। मै.

उठौना-सं., नित्य नियम सँ नियत काज। मै.

उड़कन-सं., कोनो वस्तु कें अड़ा रखैवाला वस्तु। मै.

उड़कब-क्रि., १. कपू मे टिकल रहब। पंजा भरें उछलैत सन चलब। मै.

उड़काएब-प्रे. क्रि., कोनो वस्तुकें कपू सँ लागि धराकय अस्थायी रुपें हिलै डोलै सँ रोकब। प्रयोग-"बड़ें बसात मे केवाड़ फटफट करैत अछि कपू सँ उड़का दियौक।" मै.

उड़कुस्सी-सं., विषाक्त रोइआँवाली सत्ती जकरा छूला सँ पीड़ा आ नोचनी उठैत अछि। मै.

उड़खड़-विशे., उद्दण्ड, नियन्त्रणहीन, अविवेकी। सं. तद्भव

उड़ता-विशे., उड़ैक स्थितिवाला, अचानक अनठेकान उपस्थित होमऽवाला, उपरें उपर पहुँचैवाला। स्त्री० उड़ती। मै.

उड़न्तीगप-विशे., किम्वदन्ती, जाहि बातक आधारक ठेकान नै रहैक। मूलहीन बात। आकाशवाणी। उड़ि पसरैवाला गप। मै.

उड़नखटोला-सं., अस्थायी रुपें आकाश मे उड़ैवाला भौतिक यन्त्र। (लाक्षणिक) अस्थिर भेल एम्हर ओम्हर घुमनिहार। मै.

उड़नपुरन जाएब-क्रि., लेखाहीन होयब। जाहि वस्तुक कोनो गिनती नहि होअए। मै.

उड़नबाज-विशे., जकर गति लक्षित नहि रहए। छनहि मे कत्तौ सँ कत्तौ चल जाइवाला। मै.

उड़ब-क्रि., शून्य मे विचरण करब। (लाक्षणिक) एकें छन मे कत्तौ सँ कत्तौ भागिकय अदृश्य होएब। मै.

उड़रपड़ब-क्रि., व्यग्रता भरल लोकक मेला लागब। जनसमूहक एकें लक्ष्य पर एकट्ठा होएब। मै.

उड़रा-सं., माछ विशेष। मै.

उड़ाएब-क्रि., बसातक गर पर छोड़ब। शून्य दिश फेंकब, (लाक्षणिक) अनावश्यक व्यय करब। मै.

उड़ाओन-सं., उड़बैक काज, बसातक गर मे अन्नक दानाक परिष्कार। पतंग कें आकाश दिश छोड़ैक खेल। मै.

उड़ाक-विशे., उड़ै मे निपुण, उड़ैक अभ्यासवाला। मै.

उड़ांत-विशे., उड़ैक योग्य, उड़िकय जाइक क्षमतावाला। मै.

उड़ान-सं., उड़ैक क्रियाक दक्षता, उड़ैक प्रवृत्ति। मै.

उड़ान भरब-क्रि., उड़ैक क्रम आरम्भ करब। वायुयान उड़ाकय विदा होएब। मै.

उड़ाहब-क्रि., वस्तुक पहिले-पहिल व्यवहार करब। व्यवहार मे लायब। पोखरि, इनारक पुनरुद्धार करब। मै.

उड़िया-विशे., उड़ीसा राज्य मे होमऽवाला। प्रयोग-"बाबा हौ विराजै उड़िया देश में"। मै.

उड़िलाइन-विशे., उड़ीसक गन्धवाला। (लाक्षणिक) अरुचिकर, घृणास्पद। मै.

उड़ीत उड़ीत-अव्यय, बकरीक संग प्रसंगक हेतु बत्तू कें बजबैक शब्द। मै.

उड़ीस-सं., शोणित चूसैवाला बिछाओन ओछाओन मे स्वेदज कीट। मै.

उड़ुर-सं., हरजोतैक समय हरक नास लागि एकट्ठा खड़पात आ माटि। मै.

उड़ेहब-क्रि., पुरखा-पुरखाकें अपमानजनक बात सँ जोड़ब। कुलक अधलाह टा निखारब। मै.

उड़ौनी-सं., बसातक गर मे भूसा उड़ाकय अन्नक परिष्कारक क्रम। मै.

उढ़कन-सं., कोनो वस्तु कें गड़कै सँ रोकैले देल ठोस वस्तु। मै.

उढ़काएब-क्रि, केवाड़ कें अस्थायी रुपें सटाएब। वस्तुकें कत्तौ अवलम्बित करब। मै.

उढ़रब-क्रि., यौन सम्पर्कक द्वारें आन-आन पुरुष स्त्री कें चोराकय भागि जायब। मै.

उढ़रा-विशे., स्त्री० उढ़री, वासना संवन्धें पुरुष वा स्त्रीक संग भागि गेनिहार। मै.

उत्कट-विशे., उचित सँ अधिक स्थिति। सं. तत्सम

उत्कण्ठा-सं., ककरो प्रति मानसिक आतुरता । सं. तत्सम

उत्कल्ली-विशे.,चञ्चलतापूर्ण उपद्रवी । मै.

उत्तप्त-विशे., अव्यक्त वेदना आ विषमता सँ व्याकुल । सं. तत्सम

उत्तम-विशे., सब सँ बढ़िकय नीक । अति सुन्दर । सं. तत्सम

उत्तर-सं., १. पूब दिश मुह कयला सँ बाम हाथक दिशा । २. पत्र वा प्रश्नक समाधान । जबाब (उ.) सं. तत्सम

उत्तर फल्गुनी-सं., नक्षत्र विशेष, सूर्यक गति सँ भादव मे ई नक्षत्र होइछ जकरा लोक "कनहा" कहैछ । सं. तत्सम

उत्तर भाद्र-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तत्सम

उत्तराषाढ़-सं., नक्षत्र विशेष । सं. तत्सम

उत्तरीय-विशे., देह परक बिना सीयल दोसर वस्त्र ।

उत्ताप-सं., शोक, चिन्ता, आदिक आवेग उठला सँ व्याकुलता । सं. तत्सम

उत्तार-विशे., बहुत ऊँच उठल । सं. तत्सम

उत्ताल-विशे., उच्छृंखल रूपक । सं. तत्सम

उत्तीर्ण-विशे., पार उतरल, पार टपल । सं. तत्सम

उत्तोलन-सं., उठाएब, उड़ाएब, फहराएब । सं. तत्सम

उत्थर-विशे., समतल जकाँ बनल गहीँर, बिना गहिराइवाला वस्तु । मै.

उत्थान-सं., उठब, उन्नति, अभ्युदय । सं. तत्सम

उत्पत्ति-सं., जन्म, आविर्भाव । सं. तत्सम

उत्पन्न-विशे., प्रादुर्भूत, जनमल । सं. तत्सम

उत्पात-सं., उपद्रव, अनहोनी घटना । सं. तत्सम

उत्पाती-विशे., अनहोनी घटना कयनिहार । सं. तत्सम

उत्पादन-सं., उत्पन्न करब, उपैद बढ़ाएब । सं. तत्सम

उत्फाल होयब-क्रि., उद्धत बनब, सीमा सँ बहार होएब । मै.

उत्सर्ग-सं., त्याग, दान । सं. तत्सम

उत्सव-सं., शुभ काजक निमित्त विशेष आमोदक समारोह । प्रसन्नतासूचक आयोजन । सं. तत्सम

उत्साह-सं., कोनो विषय मे आ काज मे आस्थाक संग मनक विस्तार । वीर रसक स्थायी भाव । सं. तत्सम

उत्साही-विशे., कोनो सन्दर्भ मे आस्थासहित विस्तृत भावना भरल । सं. तत्सम

उत्सुक-विशे., ककरो प्रति विशेष उद्वेग रखनिहार । सं. तत्सम

उतकिरणा-सं., लोक मे देखार आ बिन्हार बनैक क्रिया । समाज मे महत्वक इच्छा सँ कयल चेष्टा । मै.

उतनुआँ-विशे., उताने रहैक बयस धरिक नेन्ना । मै.

उतपथ-सं., अनुचित बाट, कुमार्ग । सं. तद्भव

उतपैल-सं., जनम, प्रादुर्भाव । मै.

उतरंग-विशे., उत्तर दिशाक बसात । मै.

उतरब-क्रि., ऊपर सँ नीचाँ आएब, अपन पद आ वैचारिक दृष्टि सँ नीच खसब । मै.

उतरबारि-विशे., उत्तर दिशावाला । मै.

उतरबरिया-विशे., उत्तर दिशा मे भेनिहार । मै.

उतरा-सं., उत्तर फल्गुनी नक्षत्र । मै.

उतरा-सं., नाओक खेवा अर्थात् पार उतरैक भाड़ा । मै.

उतराइ-सं., नदी पार करैक नाओक भाड़ा । मै.

उतराचढ़ी-सं., एकबाही उतरै चढ़ैक क्रम । मै.

उतराचौरी-सं., कटुतापूर्वक उत्तर प्रत्युत्तर, कथोपकथन । मै.

उतराढार-विशे., उत्तर दिस ढलानवाला । मै.

उतराहा-विशे., उत्तर दिशा मे भेनिहार पशु वा मनुष्य । मै.

उतराहुत-विशे., कनेक उत्तर दिस बढल । मै.

उतरि जाएब-क्रि., १. नीचाँ आएब । २. फलक कुस्वाद होएब । मै.

उतरी-सं., उत्तरीय, मृतक केँ मुखाग्नि देबा सँ पूर्व चारि आङुर चाकर नव वस्त्रक बीच फाड़ि माला वा जनौ जकाँ धारण कयल वस्त्र । मै.

उताओ-सं., छर्नै मे उत्पन्न आवेग । मै.

उतान-विशे., उत्तान, उपर मुह पड़ल । मै.

उतार-विशे., १. प्रतिरूप, एके रंगक दोसर प्रति । २. क्रमिक एक दिस पातर । मै.

उतारब-क्रि. उपर सँ नीचाँ आनब, नदी आदि पार कऽ देब । मै.

उतारा-सं., उत्तर, पत्र वा मौखिक वार्ताक जबाब । मै.

उताहुल-विशे., उत्कण्ठा भरल, उद्वेगयुक्त । मै.

उतेढ़-सं., पञ्जी प्रबन्धक कुल पुरुषक नामावली जे वैवाहिक सिद्धान्त मे पड़ल जाइत अछि। मै.

उथर-विशे., उचित सँ थोड़ गहीर। मै.

उथलपाथल करब/उथलपुथल मचाएब-क्रि., कोनो विषय ल'क' हर्ष अथवा भय, विस्मय आदि भाव सँ चंचलतापूर्वक अव्यवस्था मे रहब। मै.

उद्गम-सं., प्रकटता, आविर्भाव, निष्क्रमण। सं. तत्सम

उद्द-सं., उदबिलाड़ जे जलाशय मे रहि छोट-छोट जल जीव खाइत अछि। मै.

उद्‌घड़ब-क्रि., अत्यन्त उद्वेग होएब। अनिवार्य उत्कण्ठा सँ गतिशील रहब। मै.

उद्दण्ड-विशे., उच्छृंखल, अनुशासनहीन। मै.

उद्दाम-विशे., उन्मुक्त, अवार्य, नुकवेक वा रोकैक असाध्य। सं. तत्सम

उद्दिष्ट-विशे., उद्देश्य सँ कयल कार्य। सं. तत्सम

उद्देश्य-सं., ठेकाना, लक्ष्य, कर्त्तव्यक मुख्य केन्द्र। सं. तत्सम

उद्धत-विशे., अनुशासनहीन, अविवेकी। सं. तत्सम

उद्धवधाव-सं., बाजन, नाच गान सँ भरल बाला-बरणवाला समारोह। सं. तद्भव

उद्धार-सं., संकट सँ बचा कय नीक स्थिति मे कय देब। सं. तत्सम

उद्यम-सं., श्रम, जीवन निर्वाहिक उपाय करैक प्रवृत्ति। सं. तत्सम

उद्यत-विशे., तैयार, प्रस्तुत। सं. तत्सम

उद्यान-सं., उपवन, फुलवाड़ी। सं. तत्सम

उद्यापन-सं., दीर्घ व्रतक समापन कृत्य, आयोजन पूर्वक उठाओ। सं. तत्सम

उद्योग-सं., श्रम, प्रबन्ध, कोनो बातक ब्योंत। सं. तत्सम

उद्योगी-विशे., उद्योग कयनिहार। सं. तत्सम

उद्विग्न-विशे., कोनो विषयक हेतु चञ्चलतापूर्वक व्यग्र रहनिहार। सं. तत्सम

उद्‌वृत्त-सं., उपद्रव भरल व्यवहार। सं. तत्सम

उद्‌वृत्ती-विशे., उपद्रव करैवाला, उनटफेर कय दूरि करैवाला, नटखट। सं. तत्सम

उद्वेग-सं., ककरो प्रति उत्कण्ठा भरल मनक खिचाओ सँ आतुरता। सं. तत्सम

उधकब-क्रि., स्वाभाविक रूपेँ उपर नीचाँ होएब। मै.

उधङ्गर-सं., उजारि सँ अव्यवस्थित रूप, विनाशक लीला। मै.

उदबिलाड़-सं., देखू—"उद्द"। मै.

उधमाउर चढ़ब-क्रि., अत्यधिक उत्कण्ठा बढ़ब। अनिवार्य्य आवेग बढ़ब। मै.

उधमाहल-विशे., प्रस्तुत, उद्यत, वृत्त। मै.

उदय-सं., उगब, उपर मुहेँ गति, आविर्भाव। सं. तत्सम

उदवर्त-सं., देखू—"उद्‌वृत्त"। मै.

उदान-सं., प्राणीक कण्ठ देश मे रहनिहार वायु। सं. तत्सम

उदाम-विशे., हानिकारक, उन्मुक्त। मै.

उदार-विशे., मन वचन कर्मक व्यापकता आ उच्चता रखनिहार। सं. तत्सम

उदास-विशे., श्रीहीन, प्रसन्नताक अभावेँ कान्ति-हीनता भरल। सं. तत्सम

उदासी-सं., १. मुखाकृतिक क्षीण एवं अशोभनीय स्थिति। २. वैराग्य गीत विशेष। सं. तत्सम

उदाहरण-सं., दृष्टान्त, प्रयोग। सं. तत्सम

उदीष्ट-विशे., देखू—"उद्दिष्ट"। सं. तद्भव

उदीष्ट-पूजा-सं., बिना मूर्तिक बिना चिन्हक कोनो देवता कें भावना सँ आवाहन कय कयल पूजा। सं. तद्भव

उदेबक्खा-विशे., सब दिश सँ खूजल, आवरण (ओट) शून्य, बेढ़ खोढ़रहित। मै.

उदेस-सं., सन्धान, प्रयोग—"सपनहु नहि पायब सखि हे हमर उदेस"—विद्यापति। उद्देश्य। सं. तद्भव

उदैँ-सं., देखू—"उदय"। सं. तद्भव

उदोग-सं., देखू—"उद्योग"। सं. तद्भव

उधकन-सं., स्वतः उपर नीचाँ होइक गति। मै.

उधकब-क्रि., मनुष्य शक्ति सँ भिन्न शक्तिक द्वारा निरन्तर उठैक खसैक गति होएब। मै.

उधार-विशे., सावधिक बिना सूदिक लेल द्रव्य। मै.

उधारनि-विशे., उद्धार कयनिहारि स्त्री (गंगा मे प्रयोग)। मै.

उधारब-क्रि., १. उद्धार करब। २. (लाक्षणिक) कलंकित करब। मै.

उधारी-विशे., सावधिक समय मे शोध करैक बिना सूदिक लेल द्रव्य । मै.

उधियाएब-क्रि., १. आँच लगला पर फेनिल पदार्थक बर्तन सँ उपर आएब । २. आनन्द आ उल्लासक द्वारेँ मनक चञ्चलता सँ अस्थिर होएब । ३. बसातक द्वारेँ पातपात आ वस्त्रक शून्य मे उड़ैत रहब । मै.

उधियान-सं., मुख्यतः दूधक विषय मे फेन बनिकय उपर उठैक नाम । मै.

उधुक्का-सं., उपरेँ उपर जोर सँ धक्का । मै.

उधेड़ब-क्रि., रत्ती-रत्ती खोलि वस्त्रक वस्तु केँ छिन्न भिन्न करब । शरीरक शल्य क्रियो मे प्रयोग । मै.

उधेड़बुन-सं., मन मे भावनाक आलोड़न, मनकथा । मै.

उधेंतब-क्रि., तितिर-बितिर करब, अव्यवस्थित करब । एक प्रकारेँ उजाड़ब । मै.

उधोरनि-विशे., उद्धार करैवाली "अधम उधोरनि गंगे ।" मै.

उन्नति-सं., उपर उठब, नीक स्थिति मे गमन । सं. तत्सम

उन्मत्त-विशे., बताहु, अपने भावना मे बहुनिहार । सं. तत्सम

उन्मन-विशे., गम्भीर परिस्थितिक द्वारेँ मन के परोक्ष वस्तु मे निमग्न रखनिहार । सं. तत्सम

उन्मुक्त-विशे., बन्धनमुक्त, उबेर घरैवाला । सं. तत्सम

उन्माद-सं., बतहुपना, भावनाक अनियन्त्रित गति । सं. तत्सम

उनकूर-सं., कलहक स्रोत, झगड़ाक लाथ । मै.

उनचालीस-संख्या, नौ एकाइ तीन दहाइक अंक । मै.

उनचास-संख्या, नौ एकाइ चारि दहाइक अंक । मै.

उनटन-सं., उनटि जाइक रूप । मै.

उनटफेर-सं., स्थितिक व्यतिक्रम, विपरीत । मै.

उनटब-क्रि., सामान्य स्थिति सँ विपरीत भय जाएब । चित सँ पट, पट सँ चित होएब । मै.

उनटा-विशे., विपरीत मुहक अवस्थित । मै.

उनटाएब-क्रि., विपरीत मुहेँ वा प्रतिकूल रूपेँ करब । मै.

उनटा बसात-विशे., (लाक्षणिक) लोकक चलनिक विरुद्ध काज । मै.

उनतीस-संख्या, नौ एकाइ दू दहाइक अंक । मै.

उनमुनाएब-क्रि., उत्सुकता भरल चेष्टा सँ प्रवृत्ति जगाएब । उन्मुख होएब । मै.

उनरब-क्रि., खुजब, वाम दहिन फैल होएब, विस्तृत मुह होएब । मै.

उनसठि-संख्या, नौ एकाइ पाँच दहाइक अंक । मै.

उनहत्तरि-संख्या, नौ एकाइ छः दहाइक अंक । मै.

उनारब-क्रि., धातु सँ बनल वस्तुक मुह केँ बल सँ पसारब । मै.

उनासी-संख्या, नौ एकाइ सात दहाइक अंक । मै.

उनाह-सं., गरम पानि सँ गुर (पाओ) वाला, बात रोगवाला आ चोटवाला स्थान मे सेदक, भाफ सेब । सेकक प्रक्रिया । मै.

उनाहब-क्रि., सरस खेत मे उपरेँ छीटल बीआ केँ दू एक दिनुक उपरान्त जोति कय माटिक तर करब । मै.

उनैस संख्या, नौ एकाइ एक दहाइक अंक । मै.

उपकारिकय-अव्यय, बिन कहनौ हितक भावना सँ कयल । मै.

उपकार-सं., हितक चेष्टा, बिना कोनो स्वार्थक कल्याण कामना । सं. तत्सम

उपकारी-विशे., उपकार कयनिहार । सं. तत्सम

उपकुलपति-विशे., शिक्षा संस्थानक उच्चतर अधिकारी । सं. तत्सम

उपकृत-विशे., उपकार सँ अभिभूत, जकर उपकार भेल हो । सं. तत्सम

उपगत-विशे., लग पहुँचल, प्राप्त । सं. तत्सम

उपचार-सं., कोनो वस्तुक बहारक प्रक्रिया, अतिरिक्त बाह्य उपाय, प्राथमिक क्रिया । सं. तत्सम

उपछन-विशे., उपछि देबाक योग्य द्रव पदार्थ । मै.

उपछब-क्रि., द्रव वस्तु केँ एकठाँ सँ दोसरठाँ उठा-उठा फेंकब, दोसर बासन मे उठा कय राखब । मै.

उपछा-सं., एकठाँ सँ दोसरठाँ पानि उठा कय फेंकैक चेष्टा । मै.

उपज-सं., खेती सँ उत्पादित अन्न । मै.

उपजब-क्रि., खेती सँ अन्नक उत्पादन होएब । मै.

उपजा-सं., फसिल, सस्य, खेतीक उत्पादन । मै.

उपजाएब-क्रि., भूमि जोति कय अन्नक उत्पादन करब । मै.

उपजाबाड़ी-सं., खेती सँ उपलब्ध लब्ध । पूर्णरूपक फसिलक उत्पादन । मै.

उपटब-क्रि., एक स्थान सँ दोसर स्थान मे बास करब । मै.

उपटाएब-क्रि., १. ककरो एकठाँ सँ दोसरठाँ कय-देब। २. वनस्पति तथा झार पात कें निर्मूल करब। मै.

उपटाटार-सं., अनेर सविधान व्यवस्थित वस्तुकें एतय सँ ओतय लय जाकय अव्यवस्थित करैक क्रम। मै.

उपटार-सं., सामूहिक लोकक उपटब, विनाश। मै.

उपड़ब-क्रि., जड़ि सँ अलग भऽ जाएब। मै.

उपतनि-सं., उद्‌गम, जन्म, उद्भव। मै.

उपद्रावक-विशे., उपद्रव कयनिहार। उत्पाती। सं. तत्सम

उपद्रो (द्रव)-सं., विध्वंसक चेष्टा, उजाड़ि, संहार। सं. तद्भव

उपबर-सं., दोषारोपक कथन, उपराग, उपालम्भ। मै.

उपदेश-सं., बुद्धि विकासक विषयक निर्देश। सं. तत्सम

उपनयन-सं., संस्कार विशेष। द्विजक यज्ञोपवीत संस्कार। सं. तत्सम

उपनीत-विशे., समीप आनल, उपनयन संस्कार सँ दीक्षित किशोर बकरा जनौक चिह्न रहैत छनि। बहुत प्राचीन काल मे मनुष्यक विषय प्रवृत्ति सँ चारि जाति बनाओल गेल। ताहि मे गिरिचर वन-चर मनुष्य कें अन्त्यज कहि सेवा वृत्ति अर्थात् श्रमिक कहि शिक्षाक अधिकार सँ वञ्चित कय आर्य लोकनि जे तीन जाति रखलैन ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्य ताहि जाति सभक किशोर सब कें शिक्षा दीक्षा मे प्रवेशक हेतु विशिष्ट प्रकारक विधान बनौलनि जे उपनयन संस्कार कहौलक। ओही संकार सँ दीक्षित अध्ययनक अधिकारी उपनीत कहबैत अछि। सं. तत्सम

उपनैनियाँ-विशे., १. उपनयन सम्बन्धी काज वा वस्तु। २. उपनयनक हेतु निहुछल बरुआ। मै.

उपपत्ति-सं., हेतु अर्थात् कारण समेत कार्यक सम्भावनाक उक्ति। सं. तत्सम

उपपादन-सं., फरिछाकय विषयक स्पष्टीकरण। सं. तत्सम

उपमा-सं., उपमान सँ उपमेय मे समानधर्मिताक द्वारें तुलना। मै.

उपर-अव्यय, ऊर्ध्वदेश, उपरि। सं. तद्भव

उपरका-विशे., उपर मे स्थित। मै.

उपर चटकी-विशे., अनजान मे अलगें अलग बिना परिश्रमें उपस्थित। मै.

उपर झटकीमारब-क्रि., उपरें उपर अंटकरें गप हाँकब। बिन बुझनौ बात बनाएब। मै.

उपर चापर-अव्यय, उद्‌गार एवं उल्लासें अनिवार्य चञ्चलतापूर्ण। प्रयोग- "नङटा तन पर पड़ल कापड़ तन करे उपर चापर।" लोकोक्ति। मै.

उपरपट्टी-सं., ऐ जीवन सँ बहार, मृत्युक उपरा-न्तक लोक वा परलोक। मै.

उपर फाँटी-अव्यय, उपरें उपर अर्थात् अनायासें आकस्मिक रूपें प्राप्त। मै.

उपर बदरा-विशे., चैथ वर्षाक बाद खेतक हाल कें सुरक्षित रखैवाला जखन तखन छोट छीन अढ़ार। मै.

उपर सहकिया उपर सहैक-विशे., कोनो कार्यकर्ताक बहारक सहायक। मै.

उपरा-विशे., वस्तुक अतिरिक्त उपर सँ अधिक देब। मै.

उपराँ उपरी-विशे., क्रमबद्ध मे एक दोसराक प्रति-योगी। कालक अन्तर भेलौ पर स्थिति मे नाम मात्रक भिन्न। मै.

उपराग-सं., दोषीक आप्तक सम्मुख दोषक प्रका-शन। मै.

उपरारि-विशे., उँचगर खेत। मै.

उपरिष्ठात्-अव्यय, उपर उपर सँ। सं. तत्सम

उपरी-विशे., नियत लेखा सँ अतिरिक्त बाहर (अलग) सँ प्राप्य। मै.

उपरी लापड़ी-विशे., जाहि मे कोनो वास्तविकता नहि हो। मै.

उपरें उपर-अव्यय, बिना धरातल छुनहि। (लाक्ष-णिक) बिना समुचित जानकारी कें। मै.

उपरें घाड़ें रहब-क्रि., (लाक्षणिक) भरोसें रहला पर अनजानें मे अवसर चूकि जायब। मै.

उपरोटा-विशे., वस्त्रक उपर अथवा उपरक अंग मे पहिरैवाला वस्त्र। मै.

उपरौंस-सं., प्रतियोगिता, अपना अपनी वर्चस्व जमबैक भावना। मै.

उपलक्षण-सं., बातक पुष्टि करैवाला दृष्टान्त। सं. तद्भव

उपलाएब-क्रि., अधिकताक द्वारें आधार सँ बहिर्भूत होएब। प्रयोग-"क्षुद्र नदी भोड़बहि उपलाए।" मै.

उपवास-सं., भोजनक त्याग, निराहार रहि मन सँ देवताक समीप रहब। सं. तत्सम

उपस्कार-विशे., अनाहूत, अर्थात् बिना बजाओल। मै.

उपस्थित-विशे., पहुँचल, वृत्त, प्रस्तुत। मै.

उपसंहार-सं., परिणामस्वरुप सारभाग। सं. तत्सम

उपहृत-विशे., अशुद्ध, दूषित, सँखरी। मै.

उपहार-सं., सोगाइत, स्नेह सूचक भेंट, दैन। सं. तत्सम

उपहास-सं., निन्दायुक्त हँसी, हँसी उड़ाकय लोकक बीच निन्दित करब। सं. तत्सम

उपाड़-सं., आधार सँ अधिक खिचाओ। मै.

उपाड़ब-क्रि., धरती सँ कथुक जड़ि अलग करब। मै.

उपाति-सं., शिष्ट व्यक्तिक शिष्टाचारक क्रम मे असिद्ध भोजन सामग्री। सिदहा। मै.

उपाध्याय-विशे., एक प्रकारक उपनाम, शिक्षक। सं. तत्सम

उपाधि-सं., १. पदवी, उपनाम। २. मनक गम्भीर व्यथा। ३. कोनो रोगक अवधि मे विशेष उत्पातक प्रादुर्भाव। सं. तत्सम

उपाम-विशे., उत्कृष्ट, अनुपम, दिव्य। मै.

उपाय-सं., साधन, प्रतीकार, उद्योग। सं. तत्सम

उपार्जन-सं., कमाएब, जीविका, जीवन निर्वाह। सं. तत्सम

उपास-सं., उपवास, निराहार स्थिति। मै.

उपासब-क्रि., उपास करब। आराधना करब। मै.

उपांशुक-विशे., अप्रत्याशित अभ्यागत। मै.

उपेक्षा/उपेच्छा-सं., अन्नासक्ति, अवहेलना। सं. तत्सम

उपेखब-क्रि., तिरस्कार करब, अनठाएब। ध्यान नै देब। मै.

उपैं-सं., देखू-"उपाय"। सं. तद्भव

उपैत-सं., उत्पादन, उत्पत्ति। मै.

उफांट-सं., निर्जनताक भय सँ भौतिक उपद्रवक आशंका। मै.

उफांटि-विशे., पचीसीक अरक्षित स्थान मे फँसल गोटी। मै.

उबभी-सं., बहार आएल गड़ैवाला नोक। मै.

उबकी-सं., जीओकाइक लक्षण। वमनक वेग। मै.

उबटन-सं., देखू-"उकटन" (स्थान भेदें शब्द भेद) मै.

उबडुब-विशे., पानि मे डूबैक स्थिति मे छने मे उगब आ छनै मे डूबैवाला। मै.

उबब-क्रि., वितृष्णा होयब, अरुचि करब, विरक्त होएब। मै.

उबरब-क्रि., संकट सँ बहार होएब। उद्धार पाएब। मै.

उबलब-क्रि., १. हठात् मन वचन कर्म सँ उद्धत भऽ जाएब। २. खौलैत पानि मे पदार्थक सिद्ध होएब। मै.

उबहब-क्रि., उद्वहन करब। देखू-"उगहब"। मै.

उबानि-विशे., बेउरेब बन्धन, क्रमहीन बीनन। मै.

उबार-सं., उद्धार, उबीर। स. तद्भव

उबारब-क्रि., उद्धार करब, संकट सँ बचाएब। कष्ट सँ बहार करब। मै.

उबेर-सं., बदरीक समाप्ति, मेघ सँ आकाशक मुक्ति। उन्मुक्ति। मै.

उबेर करब-क्रि., बिना खेतीक समय मे मालजालक उन्मुक्त चरब। (लाक्षणिक) छूटि कय विचरण करब। मै.

उभड़ खाभड़-विशे., निम्नोन्नत भूमि, असँगत स्थान ऊँच नीच आ ढेला कंकड़वाला बाट। मै.

उभाड़ब-क्रि., रहस्यक बात कहि उत्तेजित करब। मै.

उभें-सर्व., उभय, दुनू। सं. तद्भव

उमकब-क्रि., छूटिकय लेखाएब। मै.

उमकी-सं., कोनो वस्तुक उन्मादक क्रीड़ा। मै.

उमगब-क्रि., प्रादुर्भाव होएब, उत्तेजना जागब। मै.

उमङ्ग-सं., उल्लास एवं आनन्दविभोर मनोवृत्ति। मै.

उमजब-क्रि., प्रादुर्भाव होएब। मालजाल आ कृषिक पुष्ट होयब। मै.

उमटाम-विशे., बासन सँ उपटय वर्णक स्थिति मे भरल। मै.

उमठब-क्रि., विरक्त होएब, विरसता जागब। अति तृप्ति सँ अनिच्छा बढ़ब। मै.

उमड़ब-क्रि., एक संग धन भय उठब। वेगशील होएब। मै.

उमड़ाएब-क्रि., उचित सँ अधिक भरि देब। खसैक वा भरैक स्थिति मे कय देब। मै.

उमतब-न० क्रि., उन्मत्तक आचरण करब। मै.

उमताह-विशे., सुधि-बुधिरहित किछु के किछु कय देनिहार, बताह। मै.

उमसाम-विशे., सीमा सँ बहार होइक स्थिति मे भरल। मै.

उमसुम-विशे., देखू—"उमसाम"। मै.

उमा-सं., शिव पत्नी, गौरी, पार्वती। मै.

उमेद-सं., (उ.) उम्मीद, संभावना, आशा। उ. तद्भव

उमेर-सं., आयु, वहिक्रम, वयस, उमर। उ. तद्भव

उर्दम खुर्दम-सं., मुख्य काज कें साधैले, क्षुद्र काजक पहिने कर्त्तव्य। मै.

उर-सं., छाती, हृदय। सं. तद्भव

उरकुस्सी-सं., विषाक्त पदार्थ। जकर स्पर्शमात्र भेला सँ पीड़ाक संग नोचनी उठैत छैक जे क्रमशः पसरितौ छैक, एहन रोममय पातवाला कवाउछ नामक लत्तीक डाँट आ पात कें सुखा कय गर्दा बना कय वदलालैक तथा धूर्त्त करैक ध्येय सँ दुष्ट लोक ककरो पर प्रयोग करैत अछि। मै.

उरड़पड़ब-क्रि., एक संग असंख्य लोकक असंयत रूपें रहब एवं शब्द करब। मै.

उरम्हुब्ब-क्रि., बेर-बेर रोग आ पीड़ाक जागि उठब। मै.

उरीन-विशे., रीनमुक्त। मै.

उरेब-विशे., संतुलित हृत्यक द्वारें देखैमे उचित। मै.

उरोज-सं., मनुष्य जातिक स्तन। सं. तत्सम

उल्का-सं., १. ऊक। २. आकाशक गतिशील रेखाकार तेज प्रवाह। सं. तत्सम

उल्कापात-सं., आकाश सँ तेज प्रवाह वा ज्योति पिण्डक पतन। सं. तत्सम

उल्कामुख-विशे., जाहि गीदड़ कें मुहबओला सँ मुहक वाष्पें तेज बहराइत अछि। सं. तत्सम

उल्लड़-विशे., लोकक दृष्टि सँ पछुआएल। समाज मे निन्दित बनल। अव्यवस्थित हल्लुक। मै.

उल्लास-सं., विशेष नीक परिस्थितिक कारणें आनन्दक विकास। सं. तत्सम

उल्लू-सं., रात्रिचर पक्षी विशेष। लक्ष्मीवाहन। मै.

उल्लेख-सं., विशेष रुपक चरचा, प्रतिवादन। सं. तत्सम

उलझन-सं., जटिल समस्या, ओझर। हि. तद्भव

उलड़ होएब-क्रि., सामाजिक दृष्टि मे खसब, हल्लुक होएब। मै.

उलकुत्तौआ-विशे., ओहेन लाभ जकर गणना नहि कयल जाय। मै.

उलबा-विशे., आधा भूजल अर्थात् सुखायल वस्तु कें खापड़ि मे दय आगिक रसौ सँ आर शुष्क बनाओल। मै.

उलबुलाएब-क्रि., कोनो प्रसंग मे भावना घुमाकय परतारैक चेष्टा करब। मै.

उलहन-सं., दोषीक निकट तथा ओकर श्रेष्ठजन लग अभियोग तथा दोषक प्रकाशन। मै.

उलाएब-क्रि., तप्पत मात्र करैक हेतु अन्न कें खापड़ि मे दय कें भूजब। मै.

उलापब-क्रि., बड़प्पन पर जोर दैत वार्तालाप करब। मै.

उलार-विशे., पाछू दिश बेसी भार पड़ला सँ आगू दिश हल्लुक भ' क' उपर उठल। मै.

उलोच-सं., बिछाओनक आवरण वस्त्र। चद्दरि, उल्लोच। सं. तद्भव

उबकन-सं., १. उद्वेगयुक्त उत्कण्ठा। २. जी फेंडिमाइक वेग। मै.

उबियाएब-क्रि., उद्वेग भरल उत्कण्ठा होएब। मै.

उष्ण-विशे., तप्पत, गरम। सं.तत्सम

उषा-सं., सूर्योदय सँ पहिलुक बेला। सं. तत्सम

उस्सर-विशे., ऊस सँ भरल स्थान, ऊस सँ भरल भूमि। मै.

उस्सम-सं., ऊष्मा, गरमी, ताप। सं. तद्भव

उसकब-क्रि., चलनशील होएब। स्पन्दन करब। देह चलाएब। मै.

उसकाएब-प्रे. क्रि., १. चलाएब, प्रेरित करब। २. ढेकी चलैक काल छिड़िआएल अन्न कें उक्खड़ि दिश समेटब। मै.

उसअब-क्रि., उन्नति करब, गाछ पातक उपर मुहें पन भ' क' बढ़ब। मै.

उसट्ठ-विशे., १. रसहीन, सुखाएल, (लाक्षणिक) मृदुताक अभावें हृदयहीन, निरपेक्ष। मै.

उसरग-सं., उत्सर्ग, त्याग, दान। सं. तद्भव

उसरगा-विशे., उत्सर्ग कयल वस्तु । मै.

उसरन-सं., समूल नाश, सर्वथा लोप । मै.

उसरब-क्रि., कोनो काज करै मे शीघ्रता होयब । मै.

उसराड़-विशे., उसमिसहर माटिवाला खेत । मै.

उसराह-विशे., क्षार प्रधान खेत । मै.

उसराहु-विशे., शीघ्र सम्पादन करैक योग्य काज । मै.

उसाओस-सं., सहयोग, सहायता, संवर्धन । मै.

उसार-सं., उठाओ, एकत्रीकरण । मै.

उसारब-क्रि., समेटब, संकुचित करब । अन्तर्हित करब । प्रयोग-"मीना पसारल सामा उसारल" अर्थात् मीना पंचमी सँ पावनिक क्रम आरम्भ भय, सामा अर्थात् कातिक पूर्णिमा धरि चलैत अछि । मै.

उसांस-सं., उच्छ्वास, दमलेब (लाक्षणिक) विश्राम प्रयोग-"काजक द्वारेँ कखनो उसांस नै अछि ।" मै.

उसासदेब-क्रि., सहायता करब, संगदेब । मै.

उसाहब-क्रि., चोट करैले अस्त्र उठाएब । घात करैले निशान साधब । मै.

उसाहब-क्रि., बिना थमहि, चोरानुकाकय चुप-चाप अधिक मात्रा मे धन उठालैक चेष्टा राखब । मै.

उसाहि टारिकय-अव्यय, परतारि वा ठकि फुसिया क' हटा कय । मै.

उसिनब-क्रि., कोनो पदार्थ कें पानि मे दय आगिक ताप सँ सिद्ध करब । मै.

उसिनहरि-सं., धान आदि उसिनैक निरन्तर प्रक्रिया । मै.

उसिना-विशे., उसिनल वस्तु । प्रयोग-"उसिना चाउर ।" मै.

उसिनियाँ-सं., उसिनैक कार्यक्रम, लगातार उसि-नब । मै.

उसिनिहार-विशे., उसिनैक हेतु नियत व्यक्ति । स्त्री० उसिनिहारि । मै.

उसौस-सं., विश्रामक अवसर । मै.

उहु !-अव्यय, कुकूर आदि जीव कें हुलकयबाक तथा भगयबाक शब्द । मै.

ऊ

ऊ-सं., ओष्ठ स्थानक दीर्घ ऊकार । मै.

ऊ !-अव्यय, १ कष्टक ध्वनि, प्रत्यक्ष निर्देशक हेतु स्थान भेदेँ निश्चयवाचक सर्वनाम । मै.

ऊंक-सं., १. दीपावली दिन आगि लगाकय फेरै-वाला नमहर खढ़क मुट्ठा । २. मृतकक मुह मे दाहि द्वारा आगि देल जाइत अछि ।

दूनू ऊंक मे अन्तर ई होइत अछि दिवालीक ऊकक आगू दिश खढ़ैक बीड़ी खोंसि कय स्वस्तिक क चिह्न बनाओल रहैत अछि । मै.

ऊख-सं., कुसियार, उखियार । हि. तत्सम

ऊगब-क्रि., उदय पायब । मै.

ऊखब-क्रि., वस्तु कें एतय सँ ओतय लय जायब । एकरै ध्वहब सेहो प्रयोग होइछ । मै.

ऊंच-अव्यय, उपर । मै.

ऊंट-सं., सवारी करैक योग्य सब सँ नमहर मरु-भूमिक विशेष जीव । मै.

ऊठब-क्रि., १. उपर दिश अंगक भार करब । उपर मुहेँ स्पन्दन करब । २. सूतल सँ जागब । ३. उन्नति करब । मै.

ऊठि बैसब-क्रि., अत्यन्त लाभ सँ सुखी होएब । मै.

ऊद्-सं., जलाशय मे डुबकी मारिकय माछ खय-निहार बिलाड़क आकारक जीव । उद् । मै.

ऊधर-विशे., सरसता अर्थात् हालरहित खेत । मै.

ऊन-सं., जन्तुक कोमल रोम सँ बनल सूत । मै.

ऊन सँ दून-विशे., कनेकें सँ बहुत बेशी । मै.

ऊनी-विशे., ऊन सँ बनल वस्तु । मै.

ऊपर-अव्यय, उर्ध्व देश, ऊच्च स्थान, शिरक भाग (वैकल्पिक) उपर उपर । मै.

ऊरीबीरी लागब-क्रि., उच्चाटन लागब । परम्परा-गत स्थान वा व्यवस्था सँ अनिष्ठा जागब । मनक असन्तुलन होयब । पलायनक प्रबल इच्छा जागब । मै.

ऊश्म-सं., ताप, वातावरणक उष्णता । मै.

ऊस-सं., नोनगर माटि, क्षार माटि, कपड़ा धोइक लेल धोबी जकर उपयोग करैछ । मै.

ऊंह-अव्यय, विरोधात्मक स्वर । मै.

ऊहापोह-सं., नीक अधलाहक विवेचना । दूरगामी विचार । सं. तत्सम

ऊहि-सं., भावी विषयक बुद्धि लगाकय स्वयं तथ्यक दर्शन करब । सं. तत्सम

ऊहिगर-विशे., यथार्थ कें शीघ्र पकड़ैवाला । मै.

अहुँक्-अव्यय, निषेधात्मक स्वर। मै.

ऋ-सं., मूर्द्ध स्थनीय ऋकार मात्राक स्वर वर्ण। मै.

ऋग्वेद-सं., चारू वेदक प्रथम वेद, आदिवेद। सं. तत्सम

ऋचा-सं., वेदक श्लोक अथवा वेदमन्त्र। सं. तत्सम

ऋण-सं., कोनो नियम सँ आवद्ध लेल गेल द्रव्य राशि। मै.

ऋतु-सं., वायुमण्डलक परिवर्तनक अनुसार बारहो मासक छः विभाग। आश्विन कातिक शरद् होइछ। एही क्रमें क्रमशः हेमन्त, शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म आ वर्षा ऋतु होइछ। मै.

ऋतु-सं., स्त्री जातिक मासिक रजःस्राव। सं. तत्सम

ऋषि-विशे., तपस्वी, जे सत्यक दर्शन कय सिद्धान्त करथि। सं. तत्सम

ए

ए-सं., कण्ठतालु स्थानीय 'ए' मात्राक स्वर। मै.

ऐं-अव्यय, १. बहुत छोट नेन्नाक कनैक स्वर। २. सरस्वतीक बीज मन्त्र। मै.

एँ:-अव्यय, विशेषतासूचक वयस्कक ध्वनि। प्रयोग—"एँ: एतबे मे अहाँ कें आश्चर्य भेल।" मै.

ए-अव्यय, संस्कृतक 'एव' शब्दार्थक द्योतक, निश्चय सूचक। प्रयोग—"बाबूए गाम जाथु"। एतय बाबू मे 'ए' जोड़ला सँ निश्चयक ज्ञान करबैत अछि। मै.

ए:-अव्यय, निषेधात्मक ध्वनि। प्रयोग—"ए: एना जुनि कहु।" मै.

एक्का-सं., १. एक चिह्नवाला तासक पत्ती। २. सब सँ छोट पुरान समयक घोड़ा गाड़ी। मै.

एकघरिया-विशे., अपन समाजक एकमात्र व्यक्ति। मै.

एकङ्गू-विशे., एकँटा पर निर्भर, एकदिश झुकल। मै.

एकचारी-विशे., १. एक घरक चार मे पृथक् सँ जोड़ल चार। २. एकै चारक घर। मै.

एकचोपा-विशे., जिन बकुल वच्छा, जकरा प्रधान रूपें देह अंगठा देखार रहै। मै.

एकछाहा-विशे., जाहि वस्तु मे दोसर जातिक वस्तु नहि मिझहर रहैक। एकै रंगक पदार्थ। मै.

एकजनिआँ-विशे., एकै व्यक्तिक उपभोग योग्य। मै.

एकजूती-विशे., जाहि घर मे एकै व्यक्तिक जूति अर्थात् शासन चलैक। मै.

एकटठा-अव्यय, एकत्र, एकठाँ कयल। (विशे.) एकँठाँ गोठियाएल। मै.

एकटक/एकटक्की-अव्यय, सं., अचल पलकवाला दर्शन, एकाग्र भ' क' दृष्टिक जमब। मै.

एकटक्की लागब-क्रि., एकै दिश तकितै रहब। मै.

एकटङ्गा-सं., एकै टाङ्ग पर ठाढ़ रहैक अभ्यास। मै.

एकटङ्गादेब-क्रि., (लाक्षणिक) ककरो लग स्वार्थ सिद्धिक हेतु निरन्तर दयनीयता सँ प्रार्थना करब। मै.

एकटप/एकटप्पी-सं., शीघ्रता सँ एक बेरक गमन। मै.

एकटार-विशे., नीक अधलाह सब एकँठाँ मिझहर। अशुद्ध सँ शुद्धो मिलि गेल। मै.

एकठहुरी-विशे., सामूहिक वस्तु कें एकत्र कय एकता मे आनल। समष्टि। मै.

एकठाँ/एकठाम-अव्यय, एक स्थान मे। मै.

एकड़-सं., भूमिक मान विशेष। मै.

एकराड़-सं., प्रतिज्ञा, अप्पन वचनक निर्वाहक नियम। मै.

एकराड़नामा-सं., प्रतिज्ञा पत्र। उ तद्भव

एकड़बा-विशे., सदा एकाकी रहनिहार, बेरफुट्टू। मै.

एकत्र-अव्यय, एकठाम बहुतक स्थिति, एकठाँ। सं. तत्सम

एकत-सं., एकता, एकमत रहब। सहवृत्ति। -अव्यय, एकत्र, एकठाँ वा एक एकठाँ कयल। सं. तद्भव

एकतरफा-विशे., परस्पर मे एकै दिशक व्यक्तिक कर्त्तव्य। मै.

एकता-सं., वैचारिक भेदक अभाव। सामूहिक अनुकूलता। सं. तत्सम

एकतारा-सं., ओड़नी, एकै तारक सारंगी जकाँ वाद्य। मै.

एकतारा उठब-क्रि., एकाएक कोनो बातक अनिवार्य आवेग होएब। मै.

एकतालीस-संख्या, एक एकाइ चारि दहाइक अंक। मै.

एकतीस-संख्या, एक इकाइ तीन दहाइक अंक। मै.

एकदम-अव्यय, अत्यन्त, एकै बेरें। मै.

एकदिना-विशे., १. एकै दिनक अवधि मे सम्पन्न होमऽवाला। २. एकैदिन मे अनेक ठाम एके काज होइवाला। ३. एकैदिन मे अनेक प्रकारक विषय होमऽवाला। मै.

एकदिशाह-विशे., अपेक्षा मे एके पक्ष सँ उचित वा अनुचित कर्त्तव्य। मै.

एकन्नी-सं., प्राचीन मुद्रा (रुपैया) क सोलहम अंश। मै.

एकपट्टा-सं., एके पाटक बनल ओढ़ना। मै.

एक पलंग-विशे., (लाक्षणिक) सम्पूर्ण कुल वा घर मे एक मात्र रहनिहार। मै.

एकपरलर-अव्यय, कोनो एक समयक्रमक। मै.

एकपिठिया-सं., एकक उपरान्त पाछू लागल दोसरक जन्म। तँ उत्तरोत्तर बेठाई छोटाई भेला सँ सबठाँ प्रतियोगिताक प्रवृत्ति। मै.

एकपिढ़िया-विशे., फुल मे एक मात्र पुरुष भेनिहार परम्परावाला वंश। मै.

एकपुरुखिया-विशे., एके पुरुषक भरोसेँ चलैवाला वंश। मै.

एकपेरिया-विशे., एक संग एके व्यक्तिक चलै जोग बाट। मै.

एकपोरा-विशे., बहुत दूर दूर पर गीरहवाला बाँस। मै.

एकफसिला-विशे., वर्ष मे एक फसिल मात्र दैवाला खेत। मै.

एकबट्टी-विशे., एक व्यक्तिक चलैक योग्य बाटक ठाओं। मै.

एकबतरिया-विशे., एकै रंग बयसवाला। मै.

एकबरखा-विशे., एक वर्षक बयसवाला। मै.

एकबार-सं., समाचार पत्र, अखबार। उ. तद्भव

एकबाहि-सं., एक दिश अधिक भार। मै.

एकबाही-अव्यय, निरन्तर, लगातार। मै.

एकबोलिया-विशे., अपन एके बात पर अचल रहनिहार। जे बाजब से करब। मै.

एकभग्गू/एकभगाह-विशे., एकदिश झुकल। मै.

एकभुक्त-विशे., आहोरात्र मे एकाहार। सं. तत्सम

एकम्मा-विशे., एक मात्र देखि पड़ैवाला फल आम। मै.

एकमसु-विशे., एक माय मात्र पूर्व जनमल बच्चा। मै.

एकमहला-विशे., एकेटा छतवाला कोठा। मै.

एकमुड़िया-विशे., सभक मूड़ी एकेदिश कयल। मै.

एकमुहरी-विशे., एके दिशक मुहवाला समूह। मै.

एकर-सर्व., प्रत्यक्ष निर्देशक 'ई' शब्दक सम्बन्धक शब्द। मै.

एकरगड़ी-विशे., एके बात पर सदति अड़ल रहैवाला। मै.

एकरंगा-विशे., एके रंगे रंगल नूआ। मै.

एकरा-सर्व., प्रत्यक्ष निर्देशक 'ई' शब्दक कर्म। मै.

एकलबक्त-अव्यय, बराबरि, लगातार। मै.

एकलगना-विशे., एके समय सबठाँ होइवाला आवश्यक काज। मै.

एकलेब-विशे., माँटि सँ चिकनाओल एके बेरक भीत वा टाट। मै.

एकलै-सं., एकारक मात्रा। मै.

एकसठि-संख्या, एक एकाइ छ दहाइक अंक। मै.

एकसम्हर-सं., सबटाक एकैठाँ मिलान। सब कें सब सँ जोड़ल सम्पर्क। मै.

एकसर-विशे., एक मात्र व्यक्ति, एकाकी। अकेला। मै.

एकसरुआ-विशे., एकसेर रहि काज कयनिहार। मै.

एकसौ-विशे., समग्रो एक रंगक समधरि भय एदिश भुकल फसिल। मै.

एकहड्डा-विशे., पातर शरीर प्रकृतिवाला माल। मै.

एकहत्तरि-संख्या, एक एकाइ सात दहाइक अंक। मै.

एकहत्थू-विशे., एके लोकक हाथ पर लगैवाला माल। मै.

एकहरी-विशे., एके तह बीनल डाली, पाती पथिआ आ आन कोनो बाँसक बासन। मै.

एकहारा-विशे., १. एके चक्रक पत्तीवाला फूल। २. स्थूलताहीन देहवाला। मै.

एकहेड़िया-विशे., एके दलक लोक। मै.

एकाएक-संख्या, एकाइ पढ़ैक प्रथम पाठ। मै.

एकाएक-अव्यय, अकस्मात्, अचानक। मै.

एकाएकी-अव्यय, बेराबेरी, उत्तरोत्तर। मै.

एकाकरन-अव्यय, लगातार, निरन्तर। मै.

एकाकार-विशे., दु मिलि एके बनल। सं. तत्सम

एकाग्र-विशे., एकेटा पर ध्यान रखैवाला। सं. तत्सम

एकाङ्की-विशे., एके अंकक नाटक। सं. तत्सम

एकाङ्गी-विशे., एके पक्ष पर अवलम्बित। सं. तत्सम

एकाटार-विशे., नीक अधलाह सब एके संग मिलल। मै.

एकाड़-विशे., जेर फुट्ट, एकबारे रहब के पसिन्न केनिहार। मै.

एकादशाह-विशे., मृत्युक एगारहम दिन, पहिल श्राद्धक दिन। सं. तत्सम

एकादशी-सं., प्रत्येक पक्षक एगारहम तिथि। सं. तत्सम

एकान्त-विशे., जनशून्य स्थान। सं. तत्सम

एकानबे-संख्या, एक एकाइ नौ दहाइक अंक। मै.

एकावन-संख्या, एक एकाइ पाँच दहाइक अंक। मै.

एकामय-विशे., मिलिजुलिकय एक बनियेल सब किछु। मै.

एकार्गवा-सं., (लाक्षणिक) एकत्र भऽकऽ भेदक अभाव। सं. तत्सम

एकारमारब-क्रि., नीच सम्बोधन करब। प्रयोग-"लेब देब मे एकार जोड़ब—यथा-लेबें देबें।" मै.

एकारि-विशे., आस परोसक खेत मे फसिल कटि गेला सँ बीच मे बाँचल फसिल लागल खेत। मै.

एकासी-संख्या, एक एकाई आठ दहाइक अंक। मै.

एकिक नियम-सं., एकक लेखा सँ बहुतक अनुपात बहार करैक प्रक्रिया। मै.

एकैस-संख्या, एक एकाइ दू दहाइक अंक। मै.

एकोद्दिष्ट-सं., वार्षिक श्राद्ध। मृत्यु तिथिक कर्म। सं. तत्सम

एकौर-सं., लागि रहित कुडौरि स्थान। मै

एकौर-विशे., १. एक दिशक कम भारवाला। २. एके साँझ कय लगैवाली (दूध दैवाली) गै महिस। मै.

एकौस-विशे., एक दिश लवल (नत) मै.

एकौसियाह-विशे., एक भाग मे भुकल जकाँ बनल। मै

एखन-अव्यय, ऐ छन मे। अखन, अखैन सेहो प्रयोग कयल जाइत अछि। मै.

एखनुका-विशे., एहि समय मे भेल अथवा होमऽ वाला। 'एखुनका' सेहो प्रयोग होइत अछि। मै.

एगरबेगर-विशे., क्रमहीन, विघटित, अस्तव्यस्त। असंयत। मै.

एगारह-संख्या, एक एकाइ एक दहाइ। मै.

एगो-अव्यय, एकटा, एक मात्र। मै.

एगोइ-अव्यय, एक संख्याक मात्र। एक। मै.

एँड़-सं., पैरक पाछू दिशक ठोस अंग। मै.

एँड़ा-सं., भीत आदि ऊँच वस्तुक जड़ि बलगर रखैक हेतु बाम्हल अंश। मै.

एँड़ाठब-न०-क्रि., एँड़ सँ मारि मारिकय धाड़ब। एँड़ी सँ चोट देब। मै.

एड़ियाएब-क्रि., एँड़ी सँ ककरो पीटब। मै.

एँड़ी-सं., पैरक पाछू भाग, पैर आ टाङक जोड़ लग बढ़ल अंशवाला अंग। मै.

एँड़ीदौड़ी-सं., अनिच्छा सँ आवश्यकता आ क्षमता सँ अधिक जाइ अबैक क्रम। मै.

एड़ीदोरी-सं., गुल्ली डंटाक खेल मे चुच्चा आ गुल्लीक बीच नपैक गजाना। मै.

एत्ता-अव्यय, अवधि, सीमा इयत्ता। मै.

एतनी-अव्यय, थोड़क संकेत, एतबेक परिमाणक। मै.

एतने-अव्यय, देखू-"एतनी"। मै.

एतबा-अव्यय, परिमाण बोधक संकेत। मै.

एतबाक/एतबी/एतबेक-अव्यय, देखू-"एतबा"। मै.

एतय-अव्यय, एहि ठाम, अहि ठाम। मै.

एतीकाल-अव्यय, एतेक समय धरि। मै.

एतेक/एते-अव्यय, एहि परिमाणक। मै.

एनय-अव्यय, एम्हर। मै.

एना-अव्यय, एहि रुपें। मै.

एनाएनी-अव्यय, चेष्टा द्वारा कयल दिग्दर्शन। मै.

एनो-अव्यय, एम्हर, ऐदिस। मै.

एम्हर-अव्यय, ऐ दिश। एम्हर। मै.

एमाल-सं., नव नव धनखेतीक खढ़। मै.

एसकर/एसकरुआ-विशे., एके समाङ, संग देनिहार-हीन। मै.

एह !-अव्यय, क्रोध विवशता प्रकाशक सम्बोधन। मै.

एहन-विशे., उपमान सँ उपमेय के मिलबैक संकेत। एहि प्रकारक। मै.

एहि-अव्यय, प्रस्तुत वस्तुक निर्देश। मै.

एहिना-अव्यय, एहो प्रकारें। मै.

ऐ

ऐ-सं., कण्ठतालु स्थानीय वर्ण, ऐकार स्वर। मै.

ऐं-सं., (अव्यय) सरस्वतीक बीज मन्त्र। जन्मक उपरान्त शिशु कें एहि प्रकारक ध्वनि सँ प्रथम प्रथम वाक्‌शक्ति प्रवाहित होइत छैक। मै.

ऐ-अव्यय, एहि। प्रयोग—"ऐ (एहि) बातक अर्थ की ?" मै.

ऐ-सर्व., अति समीपक प्रत्यक्ष निर्देशक। संस्कृत "एतत्" शब्दक अर्थ। मै.

ऐआम-विशे., उपयुक्त आ अनुकूल समय। मै.

ऐक्य-सं., एकता, मेल। मै.

ऐंचब-क्रि., भोंक मारि टेढ़ करब। झटका सँ घूमब। मै.

ऐचानाना-विशे., दुन् दु दिशा मे स्थित आँखिवाला। प्रयोग—ऐंचाताना कहय पुकारि हम मानी कुहरा सँ हारि। मै.

ऐजन-अव्यय, पुनः पूर्वोक्ते विषय। मै.

ऐञ्जन-सं., ग्राम्य उच्चारणक इञ्जिन। मै.

ऐंठ-विशे., दोसराक मुहक सम्पर्कवाला पदार्थ। मै.

ऐंठकबार-विशे., ऐंठ अन्न आ पानि सँ व्याप्त वा दूषित। मै.

ऐंठ काठ-सं., ऐंठ एवं अन्य घृणास्पद वस्तुक समूह। मै.

ऐंठकूठ-सं., अनुपयोगी सब ऐंठाओल पदार्थ। मै.

ऐंठब-क्रि., १. घुमाएब। २. अत्यन्त गौरवें इतराएब। मै.

ऐंठलाह-विशे., गौरवक द्वारें ऐंठि ऐंठिकय बात कयनिहार। मै.

ऐंठा-सं., स्त्रीक केश सज्जाक फुदनावाला विशेष डोरी। मै.

ऐंठाएब-क्रि., कोनो वस्तु कें मुह सँ लगाकय आनक हेतु दूषित कयदेब। मै.

ऐंठार-सं., ऐठ हाथ धोइक, ऐंठ वस्तु फेंकैक निश्चित स्थान। मै.

ऐंठी-सं., १. घुमा घुमाक देल पाक। अत्यन्त गौरव सँ टेढ़ गप आ क्रिया। मै.

ऐंठन-सं., कोनो ढील वस्तु कें घुमाकय पाक देबाक देबाक प्रक्रिया। मै.

ऐंढब-क्रि., कोनो वस्तु कें पाक दैक क्रम मे घुमाएब। मै.

ऐंढ़ी-सं., १. अधिक घुन (पाक) (लाक्षणिक) उचित सँ बेसी टेढ़ी। मै.

ऐल-विशे., सुन्दर, सुदर्शन, कटगर। मै.

एलगर-विशे., सुन्दरता सँ भरल। मै.

एलिस-सं., स्वाभिमानक आडम्बर। मै.

ऐतिह्य-सं., सिद्धान्तक गप, आदेशक निर्द्धारण। सं. तत्सम

ऐतिहासिक-विशे., इतिहास सम्बन्धी वस्तु। सं. तत्सम

ऐनक ऐन-विशे., वास्तविक, यथार्थ रुपक, औचित्य सँ भरल न्यायपूर्वक। मै.

ऐनमैन-विशे., अनुरुप, एकरंग, एकैरुप। प्रतिमा। मै.

ऐब-सं. दोष, अवगुण। उ. तत्सम

ऐला-सं., देहक रोग विशेष। जे रोग छोट छोट बढ़ल मांसक कणक रुप मे होइत अछि। मै.

ऐश्वर्य-सं., सम्पत्ति। कोनो रुपक विशेष शक्ति। स. तत्सम

ऐंसतैंस-सं., क्रोधक आवेश मे अनेक हावभावक प्रदर्शन। मै.

ऐहब-विशे., सधवा, अहिवाती, एकपतिका सोहागिन स्त्री। मै.

ऐहबककड़-सं., नववधूक शुभागमनक अवसरक विशेष पकवान। द्विरागमन दिन मोल आ नाम नाम पकवान पकाकय बासन मे द' क' ढँकना सँ बन्न कय देल जाइछ। आएल नवकनियाँ ओकरा खोलैत अछि तखन लोक कें बाँटल जाइत अछि। ई मिथिलाक व्यवहार थीक। मै.

ओ

ओ-सं., कण्ठतालु स्थानक स्वरवर्ण। ओकार। मै.

ओ-सर्व., दूरवर्ती वस्तु कें निर्देश करैवाला संस्कृत क 'तत्' शब्द क मैथिली शब्द। मै.

ओऽऽ-अव्यय, स्वरण, आश्चर्य आ कौतूहल द्योतक। मै.

ओः-अव्यय, निषेध, विरोध आ पश्चात्ताप व्यञ्जक। मै.

ओ-अव्यय, संस्कृत क 'अपि' शब्दक अर्थ द्योतक। प्रयोग-"ऐ गाम मे साधुओ आ चोरो बसैत अछि। मै.

ओइरी-सं., धानक एक प्रभेद। सं० नीवार। मै.

ओइलन-सं., कोनो वस्तु कें ओलला सँ बहरायल निकृष्ट पदार्थ। मै.

ओकर-सर्व., परोक्ष निर्दिष्ट वस्तुक सम्बन्ध कारक-क रूप। मै.

ओकरा-सर्व., परोक्ष निर्दिष्ट वस्तुक कर्मकारकक रूप। मै.

ओंकरा-सं., पाकी सभक डाँर मे खोंसल लोहक अंकुसी जाहि मे ताड़ी ढारिकय रखैलेल लबनी लटकल रहैछ। मै.

ओंका-सं., बाँसक काइम सँ बनल गोल आ नाम डाड़ वर्का बासन जाहि मे मखानक गुड़ी पानि सँ छानि राखल जाइछ। मै.

ओकाइत-सं., क्षमता, वैभव। ओकात। उ. तद्भव

ओकाएब-क्रि., वमनक वेग होयब। मै.

ओकार-सं., ओऍ ओऍ कयला पर बहराएल पदार्थ। मै.

ओंकियाएब-क्रि., जिराह बरदक गाइक प्रति ओं ओं शब्दक संग छुच्छ वासना व्यापार होएब करब। मै.

ओकील-विशे., अधिवक्ता, दण्ड नीतिक जानकार। वकील। उ. तद्भव

ओगरब-क्रि., संरक्षण करब। निरन्तर लग मे रहि ककरो रक्षा करब। मै.

ओगरबाह-विशे., नियत संरक्षक। मै.

ओगरबाहि-सं., सदिखन रक्षाक तत्परता। मै.

ओगरिया-सं., नियमित रूपक ओगरैक काज। मै.

ओगारब-क्रि., आवश्यकता सँ अधिक भोजन पदार्थ भोजनकर्त्ताक आगू धरब। मै.

ओंघराएब-क्रि., भूमि पर पड़िकय सम्पूर्ण शरीर कें उनटा पुनटाकय चलाएब। मै.

ओंघराओब-प्रे. क्रि., कोनो वस्तु कें लोटाकय चला-एब। मै.

ओंघरिया मारब-क्रि., शोक वा पीड़ा सँ भूमि पर लोटाएब। मै.

ओंघाएब-क्रि., तन्द्रा मे रहब, निद्राक पूर्वाभास मे होएब। मै.

ओंघी-सं., निद्राक प्रबल इच्छा, आँखि आ मनक शिथिलतापूर्वक लटपटाएब। मै.

ओङ्कार-सं., ओइम् शब्द, प्रणव। सं. तत्सम

ओठङन-सं., जितिया व्रत सँ पूर्व रातिक शेष मे स्त्रीगणक भोजन करैक विधि। मै.

ओठङनी-सं., ओठङैक वस्तु जाहि पर पीठक भरेँ टिकि सकी। मै.

ओठङब-क्रि., देखू– "उठंघब"। कोनो वस्तु मे पीठ टिकाकय बैसब। एकरा "ओठंघब शब्दें सेहो प्रयोग होइछ। मै.

ओडार पोडार-सं., बिना स्नानें तेल उबटन सँ जनमौटी सेन्नाक देहक परिस्कार। मै.

ओडारब-क्रि., तेल आ उबटन सँ देहक परिस्कार करब। मै.

ओछ-विशे., १. अनुपात मे छोट। २. कोनो वस्तुक माप मे नहि पुरनिहार। अधम। मै.

ओछमर-विशे., नाम चाकर मे घटब। नीचता सँ भरल। मै.

ओछाएब-क्रि., विस्तृत करब, बिधारब। मै.

ओछाओन -सं., सूतैक हेतु बिछबैक वस्तु। मै.

ओछाह-विशे., नीचता, क्षुद्रता सँ भरल, लघुता-युक्त स्वभाववाला। मै.

ओज-सं., शरीरक तेज, प्रभावशालिता। सं. तद्भव

ओज-सं., अनुदारता, कृपणता, कन्जूसी। प्रयोग– "भोज मे ओज कयने नै बनै छै। मै.

ओजन-सं., तौल, गुरुता, भारीपन। वजन। उ. तद्भव

ओजस्वी-विशे., प्रभावी, जोश भरल, तेजस्वी। सं. तत्सम

ओजी-अव्यय, बदला मे, स्थान पर। मै.

ओझर-विशे., १. ओझल, दृष्टि विन्दु सँ बहार। २. झंझट, समस्या। मै.

ओझराएब-क्रि., आपस मे गुत्थी लागि जाएब। मै.

ओझराह-विशे., आपस मे घुरची लगैवाला। मै.

ओझा-विशे., १. झा उपाधिवाला क सम्मानक सम्बोधन। २. भौतिक उपद्रव मे झार फूँक टोना आदि करैवाला गुनी आ धामि। मै.

ओझा-सं., डोरी सँ खाट बीनैक काज मे डोरी कें अड़ाकाय बभ्भैक हेतु गीरह देल छोट डोरी । मै.

ओझागिरी-सं., तन्त्र मन्त्र आ झार फूँक करैवाला गुण । मै.

ओझा बियाहल गाम सुखले-लोकोक्ति- (लाक्षणिक) अनावश्यक धन बुद्धियारक भोग । मै.

ओट-सं., आंशिक परोक्ष, आड़ । मै.

ओंटी-सं., पेटक नीचाँक बस्ति प्रदेश, मूत्राशय लगक अंग । मै.

ओठ-सं., १. उपरक ठोर । २. गाड़ी कें गड़कें सँ रुधें लेल देल अड़ना । मै.

ओठँघन-सं., देखू—"ओडठन" । स्थान, व्यक्ति आ व्यवहार भेदें शब्द भेद । मै.

ओठँघब-क्रि., देखू—"ओडठब" प्रयोग भेद । मै.

ओठर-सं., १. कर्त्तव्यताक अत्यन्त समीप काल । २. कहनी । ३. अन्तिम समय । मै.

ओठ लगाएब-क्रि., कोनो वस्तु कें बिना खयने केवल ठोर सँ भिड़ाएब । मै.

ओठ लागब-क्रि., कोनो कठिन वस्तुक द्वारें गाड़ीक चक्काक अड़ि जाएब आ फँसि जाएब । मै.

ओड़नी-सं., एकै तारवाला सारङ्गीसन साधुक बाजा । मै.

ओड़ब-क्रि., आवश्यक रूपें कर्त्तव्य होयब । मै.

ओड़ल-विशे., अवश्य कर्त्तव्य रूपें उदमाहल । मै.

ओड़हा-सं., आगि मे झरकाओल गाछ समेत काँचे खाद्यान्न । मै.

ओड़हाडाढ़ी-विशे., आकुलतापूर्ण, व्यग्र । मै.

ओड़ाहब-क्रि., काँच बदामक गाछ समेत वा एहन आनो गाछ समेत अन्न कें खाइक हेतु झरकाएब । मै.

ओड़िका-सं., दूध चलबैक हेतु नारिकेरक खोइया मे पातर नमहर डन्टी लागल करौछ जकाँ बनल पात्र । मै.

ओढ़न पहिरन-विशे., ओढ़ै पहिरैक वस्त्र । मै.

ओढ़ना-सं., पैघ मोट सामान्य ओढ़ैक वस्त्र । मै.

ओढ़नी-सं., छोट आकारक सामान्य स्त्रीक ओढ़ैक वस्त्र । मै.

ओढ़ब-क्रि., विशेष रूपें विशेष वस्त्रें उपरक देह कें झाँपब । मै.

ओड़ुल-सं., लाल रंगक फूल विशेष । जपा पुष्प । मै.

ओतऽ/ओतय-अव्यय, परोक्ष निदिष्ट स्थान, ओहि ठाम । मै.

ओतनी/ओतने-अव्यय, दूर निर्दिष्ट परिमाण । मै.

ओत प्रोत-विशे., विलीन, अवलिप्त, व्यापित । मै.

ओतबस्थित-विशे., दृष्टपूर्व अवस्था मे स्थित । मै.

ओतबा/ओतबेक-अव्यय, दूरवर्ती परोक्ष निदिष्ट परिमाण । मै.

ओतीकाल/ओतीखन-अव्यय, भावनाश्रित समयक परिमाण । मै.

ओतुका-विशे., अनको सम्भावित स्थान सम्बन्धी । मै.

ओतेक-अव्यय, ओहि परिमाणक । मै.

ओदरब-क्रि., प्राकृतिक लागि छूटब, विच्छिन्न होयब । मै.

ओदराह-विशे., स्वतः बिलग होइवाला । मै.

ओदाखजि-सं., समानान्तर मे रहैक भाव, प्रतिद्वन्द्विता । मै.

ओदार-सं., स्वतः विभक्त भऽ जाइवाला जोड़ । मै.

ओदावर्त-सं., बदरी आ उबेरक अनुकूल क्रम । मै.

ओदासूखा-सं., पानि पड़ैक आ सुखाइक अनुकूलता । मै.

ओदि-सं., गर्भिणीक स्वाभाविक अभिलाषा । दोहद । मै.

ओधबाध-विशे., जीवन मरणक संशय दशामे आनल । मै.

ओधि-सं., काटल गाछ आ बाँसक पुरान जड़ि । मै.

ओनऽ-अव्यय, ओहि दिश । मै.

ओना-अव्यय, १. अन्यथा । २. ओहि प्रकारें । मै.

ओनाओनी-अव्यय, हाथ सँ दिशा निर्देशक क्रम सँ । मै.

ओनाही-अव्यय, (ग्राम्य शब्द) ओहि रूपें । मै.

ओनी-अव्यय, देखू—"ओनऽ" । मै.

ओफ-अव्यय, श्रमसूचक शब्द ।

सं., सूर्यक मधुर ताप । मै.

ओबा-सं., मरकी, हैजा, महामारी । मै.

ओम्हर-अव्यय, देखू—"ओनऽ" । मै.

ओर-सं., अन्त, अवसान। प्रयोग—"सखि हे हमर दुखक नहि ओर।" विद्यापति। मै.

ओरब-क्रि., रोकब, अवरुद्ध करब। मै.

ओरल-विशे., उपस्थित, बाधक रूपें सम्मुख मे वृत्त। मै.

ओर लागब-क्रि., कोनो काज समाप्त प्राय होएब। मै.

ओराएब-क्रि., अन्त ठेकब, समाप्तिक लग पहुँचब। मै.

ओरानी-सं., घर मे लगाओल मुख्य चार सँ अलग अस्थायी चार। मै.

ओरि-सं., भार (बहँगी)क पहिल भागक भारीपनक समान भार करैक हेतु दोसर भाग मे देल जाइ-वाला वस्तु। मै.

ओरि फूलब-क्रि., गर्भक परिपक्व होइक स्थिति मे गर्भिणीक देह फूलब। मै.

ओरियाएब-क्रि. १. नीक जकाँ अर्थात् यत्न सँ राखब २. उचित रूपें काज कयल होएब। मै.

ओरियाओन-सं., प्रबन्ध, व्यवस्था, सामग्रीक जुटान। मै.

ओरियाकए-अव्यय, सावधानीपूर्वक। मै.

ओरियानी-विशे., तिलें तिलें वस्तु जुटौनिहार। मै.

ओल-सं., व्यञ्जनक हेतु स्थूलकन्द विशेष। मै.

ओलती-सं., चारक निचला भाग, जेम्हर देने पानि नीचाँ खसैत अछि। मै.

ओलन-सं., खेतक खढ़पात बीछि कय तथा अन्नक जमा कयल निरसल पदार्थ। मै.

ओलब-क्रि., कोनो वस्तु कें चलाकय सार भाग लय निरसल वस्तु कें अलग करब। मै.

ओलरब-क्रि., कत्तौ अपन शरीरक भार छोड़ि देब। निर्भर होएब। आत्मसमर्पण करब। मै.

ओला-सं., मेघ सँ बरिसल पाथर कण सन वर्फ। हि. तत्सम

ओलाओचोलाओ करब-क्रि., अनुचित हँसी ठट्ठा कय अकच्छ करब। मै.

ओलाबिलम-सं., आश्वासन, सान्त्वना, धैर्य धरा-एब। मै.

ओलार-विशे., आगू (मुहरा) दिस हल्लुक। मै.

ओलि-सं., प्रतिशोध, बदला, विरोधक प्रतिक्रिया। मै.

ओलियालि-सं., कोनो वस्तु कें व्यर्थ अव्यवस्थित करैक चेष्टा। उपर नीचाँ करैक मुद्रा। छिड़ियएबैक क्रिया। मै.

ओस-सं., शीतक विन्दु, पाला। मै.

ओसबेराएब-क्रि., घासपात परक ओस बिलाएब। मै.

ओसर-सं., जाड़क भोरका समय। मै.

ओसाएब-क्रि., बरसातक पर पर भूसी उड़ाकय अन्न (गहूम आदि) क परिष्कार करब। मै.

ओसाओन-सं., गहूम आदि अन्नक परिष्कारक क्रम। मै.

ओसारा-सं., घर मे लागल खुलता भाग। मै.

ओसारी-सं., कूटैक पीसैक समय अन्नक लगाओल क्रमक अनुसार भाग। मै.

ओसौनी-सं., देखू—"ओसाओन"। मै.

ओह !-अव्यय, व्यथा, खेद, निषेध, ग्लानि आ आनन्द व्यञ्जक शब्द। मै.

ओहदा-सं., प्रतिष्ठा, पदवी, सत्ता। उ. तद्भव

ओहन-अव्यय, ओहि प्रकारक, परोक्षवर्ती वस्तु जकाँ। ओहेन सेहो प्रयोग होइछ। मै.

ओहसब-क्रि., क्षीण होएब, गलब। मै.

ओहाएब-क्रि., पशुक मैथुन करब। मै.

ओहाओब-प्रे. क्रि., स्त्री पशु कें पुरुष संगम करा-एब। मै.

ओहान-सं., पशु मैथुन क इच्छाक क्रम। मै.

ओहार-सं., आवरण, आड़ करैक हेतु कपड़ाक वस्तु। मै.

ओहाल-विशे., पानिक संग बहल घासपात। मै.

ओहासी-सं., नीचाँ दिस बहैत पानिक वेग। मै.

ओहिठाम-अव्यय, दूरस्थवर्ती स्थान पर। मै.

ओहिना-अव्यय, बिन कारणें वा गुप्त कारणें। मै.

ओहो !-अव्यय, अफसोच, कष्ट मे उच्चरित शब्द। सर्व.,-ओ वस्तु, ओ। मै.

औ

औ-सं., कण्ठ तालु स्थानक स्वरवर्ण औकार। मै.

औ !-अव्यय, सम्मानसूचक सम्बोधन। मै.

औअलि-विशे., उत्तम। अव्वल। उ. तद्भव

औआएब-क्रि., व्यग्रताक कारणें बुद्धि कुण्ठित भय गेला सँ समक्षोक वस्तुक ध्यान नै रहने व्याकुल होएब। मै.

औक-सं., बोकरैक वेग, वमन, उनटी। मै.

औकब-क्रि, वमन करब, बोकरब। मै.

औकी-सं., वमन करैक शंका। मै.

औंट-सं., आँच सँ फेनाएल दूध आदि मे ओड़िका सँ चलाएब। मै.

औटन-सं., औटैक क्रम। मै.

औटब-क्रि., दूध आदि द्रव वस्तु कें उधियाकय चलाएब। मै.

औंठ-सं., कपड़ाक किनार। कातक अंश। मै.

औंठा-सं., हाथ पैरक बुड़बा (मोट मुह) आङुर। मै.

औठा निशान-विशे., वाम हाथक औंठाक छाप। मै.

औंठिया केश-विशे., घुरमि कय औंठी जकाँ गुथल केश। अलक। मै.

औंठी-सं., आङुरक गहना, मुद्रिका। मै.

औंड़ मारब-क्रि., १. पाप्य करैक संग भावशालक छटपटाएब। २. पेट मे व्यथाक संग वायुक चलब। मै.

औँन्ह-विशे., अन्धकार सँ भरल। मै.

औन्हब-क्रि., कोनो वस्तुक मुहक धरनीचाँ दिश करब। मै.

औन्हा-विशे., औन्हल मुहवाला। मै.

औन्हानूर-विशे., भीतर दिश मुहवाला गूर। मै.

औन्हापथारी-सं., अन्देशा भरल चिन्ता सँ भरल चञ्चलता। मै.

औन्हौ-सं., ऐ नामक पैरक आङुरक गहना। मै.

औनाएब-क्रि., विकलता सँ इतस्ततः अन्वेषण मे व्यग्र होएब। मै.

और-अव्यय, समुच्चयबोधक शब्द। मै.

औरस-विशे., अर्धाङ्गिनी सँ अपन उत्पन्न कयल सन्तान। सं. तत्सम

औरब-क्रि., पेट मे शब्दक संग वायुक संचार सँ वेदना होएब। मै.

औरमारब-क्रि., बाम्हन मालक चञ्चलता आतुरता सँ घूमब। मै.

औँल-सं., ताप, गर्मी, उष्णता। मै.

औँलबौँल-विशे., वायुमंडलक विषमताक द्वारें व्याकुल। मै.

औलिया-विशे., १. उचित सँ वेशी उदार। २. सिद्ध साधु। मै.

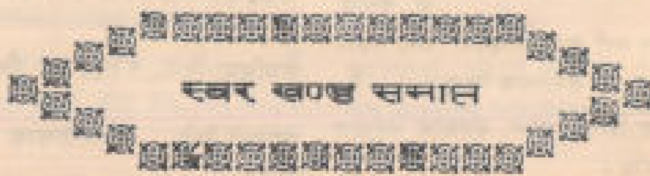
औषध-सं., औषद, दवाई। सं. तत्सम

औषधार्थ-विशे., औषधक रूपें प्रयोगक योग्य। सं. तत्सम

औषधी-सं., औषध करैक व्यवसाय। मै.

औलब-क्रि., लेपब, पोछब, गलब। मै.

औहरि मारब-क्रि., दौड़ैक रूपें अन्वेषण करैक ध्येय सँ इतस्ततः ताकब। मै.



क्य

क्यारी-सं., पानि बसबैक हेतु आरि बान्हल छोट छोट खेत । छनका । मै.

क्यास-सं., स्मरण कय बातक निष्कर्ष बहार करैक चेष्टा । उ. तद्भव

क्यो-अनिश्चयवाचक सर्व., अनिश्चित लोक । मै.

क्योला-सं., केतक फूल (केवड़ा) । मै.

क्रम-सं., डररा, सिलसिला, शृंखला । सं. तत्सम

क्रमशः-अव्यय, एक एक क्रमें । सं. तत्सम

क्रय-सं., कीनब, मूल्यक स्थान मे वस्तु लेब । सं. तत्सम

क्रिया-सं., १. व्यवहार । २. श्राद्ध आदि कर्म वाक्यक पूर्तिक हेतु धातु सँ बनल तिङन्त शब्द । सं. तत्सम

क्रीस्तान-विशे., इसाई धर्मावलम्बी पाश्चात्य जाति । मै.

क्रूर-विशे., कठोर, निर्दयी । सं. तत्सम

क्रोड़ि-संख्या, कोटि, करोड़ । सं. तद्भव

क्रोध-सं., प्रतिहिंसात्मक उग्रभाव । तामस । सं. तत्सम

क्वाक-सं., जलाशयक लग रहनिहार पक्षी चक्रवाक । मै.

क्षण-सं., समयक सूक्ष्मतम मान । सं. तत्सम

क्षत विक्षत-विशे., काटल खोंटल । खण्डित । सं. तत्सम

क्षति-सं., हानि, नाश । सं. तत्सम

क्षीण-विशे., दुब्बर पातर, अब्बल, घटल । सं. तत्सम

क्षुब्ध-विशे., दुःख आ विवशता आदि भाव सँ प्रभावित । सं. तत्सम

क्षोभ-सं., पीड़ा विवशता आदि हीन भावेँ भरल मनक कुण्ठा । सं. तत्सम

क-सं., १. व्यञ्जन वर्ण तथा क वर्गक कण्ठ स्थानीय स्पर्श वर्ण । २ मै. सम्बन्धक चिह्न । मै.

कइएक-सार्वनामिक विशे., अनेक, गणनाक अनुमान सँ बहार । बहुत गोट । मै.

कएनिहार-विशे., करैवाला । मै.

कएम-प्रश्नवाचक सार्वनामिक पूरणार्थक विशे., कोन संख्यावाला । मै.

कक्षा-सं., खण्ड, वर्ग, श्रेणी । सं. तत्सम

कंकड़-सं., १. पाथर आ भुटकाक छोट छोट कठोर कण । २. अनेक सुगन्धित पदार्थ मिलाओल धूम्रपानक द्रव्य । मै.

कँकड़ी-सं., लत्ती मे फड़ैवाला सुस्वादु फल विशेष । फूटि । वतिया । मै.

ककरोहटि-सं., धनखेतीक आरि कें छेदिकय काँकोड़ द्वारा बनाओल काँच माटिक ढूह । मै.

ककवा-सं., केश थकरैक साधन । मै.

ककवा कोइल-विशे., (लाक्षणिक) जेना कौआ कोइलीक झगड़ा मे अनेक कोइली सोचैक आ बजैक चेष्टा सँ कौआ कें आकुलकऽ दैत अछि तहिना एकेबेर अनेक लोकक टोकला सँ आकुल । मै.

ककर-प्र. वा. सर्व., सम्बन्ध कारकक रूप । मै.

ककरा-प्र. वा. सर्व., के शब्द कर्मक रूप । मै.

ककरासिंगी-सं., एक बूटी । मै.

ककरेजा-सं., औषध विशेष । मै.

ककरैल-सं., जड़ीक रूप मे विशेष औषध । मै.

ककरी-अनि. वा. सर्व., सम्बन्धक रूप । मै.

ककरी-अनि. वा. सर्व., कर्मक रूप । मै.

ककहरा-सं., क, ख, आदि अक्षर सीखैक क्रम । मै.

ककहा-सं., ककवा, (स्थान भेदेँ शब्द भेद) । मै.

ककार-सं., 'क' अक्षरक निर्देश । मै.

कखन-प्र. वा. अव्यय, कोन बेर मे, कोन समय मे । मै.

कखनो-अ. वा. सर्व. अव्यय, कोनो अनिश्चित क्षण मे । मै.

कखनुक|कखनुका-विशे., कोन समयक सम्बन्धी । मै.

कँखियाएब-क्रि., १. छोट छोट गाछ मे गीरह पर मूड़ी उगब । २. काँख तर दबाएब । मै.

कँखौर-सं., काँख मे होमऽवाला गूर (घाओ) । मै.

कगजंघ-विशे., कौआ जकाँ छोट पैघ जाँघवाला । मै.

कगजिया-विशे., कागज पर लिखैवाला पेन्सिल । मै.

कगतही-विशे., नित्य लेखाक कागज रखैवाला पेटी । मै.

कँगनी-सं., ऊँच स्थानक अन्तिम कोर । मै.

कँगहिया-सं., छोट ककवा वा कँगही । मै.

कंक-विशे., अत्यन्त खिन्न, मांसहीन देह । गुप्तवास मे युधिष्ठिरक नाम । मै.

कज्जला-सं., सट्टा परक प्रसिद्ध गहना। एकरा कंगना आ कड़ना सेहो प्रयोग होइछ। प्रयोग—"जे ग्रोरा कहल उगना उदेस तकरा देव हम कड़ना सनेस। मै.

कज्जाक-सं., आस्ट्रेलियाक प्रसिद्ध वन्य जीव। मै.

कज्जाल-विशे., जकरा धन नामक वस्तु रहबे नै करैक। अत्यन्त भिखहारि। मै.

कचकच-सं., छोटका स्थान जाहि सँ काठ मे पातर खत गड़ल जा सकैछ। कमारक अस्त्र। मै.

कच्चा-विशे., अजोह, अनधिकृत, काज मे अनूरि। हि. तत्सम

कच्ची-विशे., अनधिकृत लेख, ठोस नहि रह-निहार। मै.

कच्छ-सं., १. अलड़ वा खण्ड। प्रयोग—अध्ययन कच्छ। २. भारतक एक प्राचीन प्रदेश। मै.

कच्छप-सं., जलजन्तु काछु। सं. तत्सम

कच्छा-सं., १. देखू—"कक्षा"। २. कुस्ती लड़ैक बेर पहलवानक पहिरैक नाममात्र वस्त्र। स. तद्भव

कच्छाछोप-विशे., पहिरल कच्छा अर्थात् जाँघक राग धरि पहुँचवाला पानि। मै.

कच्छी-सं., गुप्ताङ्गक आवरण मात्रक वस्त्र। नडोटा। मै.

कच्च-सं., बेसन मे मसाला दय बड़ जकाँ पैघ तरल भोज्य पदार्थ। मै.

कचकच-विशे., दाँत तर कच द' उठिकय देह सिहरअैवाला पदार्थ, बालु। मै.

कचकचाएब-क्रि., कोनो बात मे तमसाएब तथा क्रोधक प्रवृत्ति राखब। विशेष बात सँ ककरो खिसिअ'बैक चेष्टा करब। मै.

कचकचाह-विशे., सदिखन तामसक प्रवृत्तिवाला। मै.

कचकड़ा-सं., काच मिश्रित मृदु धातु। मै.

कचकब-क्रि., कोनो अंगक जोड़ पर अंग संचार भेला पर अचानक दुखा उठब। मै.

कचकूह-विशे., नीक जकाँ नहि पाकल माटिक बासन। कनेको टोला लगने फूटैवाला वस्तु। मै.

कचठ-विशे., किछु अंशेँ काँचि पदार्थ। पूर्णतया नहि पाकल। मै.

कचड़ा-सं., घर झारक परिष्कार सँ जमा घृणित वस्तुक समूह। मै.

कच द' उठब-क्रि., दाँत तर बालु आ पाथर आदि कठोर कण दबला सँ देह सिहरब। दाबल गेला सँ मृदु वस्तुक छहोछित टूटब। मै.

कचनार-सं., बासन्ती फूल विशेष। मै.

कचब-क्रि., अन्धाधुन्ध काटब। मै.

कचबच करब-क्रि., अनेक लोकक एकैबेर असंबद्ध कर्णकटु बाजब। मै.

कचबचिया-सं., बहुत अप्रिय शब्द केनिहार पक्षी। मै.

कचरबचर-विशे., आक्रोश आ उलहनपूर्वक निन्दा घृणा आ दोष रागक वचन। मै.

कचरब-क्रि., इच्छानुसार खाएब। सुखद दुखद बिनु सोचने खाएब। मै.

कचरस कूट-विशे., १. अनधुन आघात। २. भिन्न भिन्न प्रकारक खाद्य। मै.

कचरा-सं., केहुनी पर काचक मोटगर चूड़ी जकाँ पहिरैवाला गहना। मै.

कचरी-सं., कचल प्याउजक संग बेढ़नक बनल चापट बड़ जकाँ बनल भोज्य पदार्थ। मै.

कचरीबचरी-सं., दोषराग, निन्दा घृणा आ उलहन-उपदर सँ भरल गप। मै.

कचलोहिया-विशे., अबल, प्रकृतिक प्रभाव केँ सहन करैमे असमर्थ। मै.

कचहरी-सं., न्यायिक एवं प्रशासनिक निर्णय स्थल। उ. तत्सम

कचार-सं., घरक ऐंठ काँठ आ बासन धोअन आदि दूषित आ घृणित वस्तुक समूह। मै.

कचारब-क्रि., कचार सँ सगरे घृणित राखब। मै.

कचाल-सं., पानिक संग असर्ध वस्तु सभक मिलने बनल घृणित थाल। मै.

कचिया-सं., फसिल आ घास कटबाक मेहीं काँट-सन धारवाला चन्द्राकार लोहक पत्तीक अस्त्र। मै.

कँचियाएब-क्रि., काँची (नेत्र मल) सँ आँखि भरि जाएब। मै.

कचिदेब-क्रि., अस्त्र सँ अनठेकान घातकय क्षत विक्षत करब। मै.

कचुरी-सं., कबै माछक बच्चा। मै.

कचूर-सं., कर्पूर। हरदिक आकार प्रकारक मोट कन्दवाला सुगन्धित द्रव्य। जकर प्रयोग–"प्राचीन काल मे श्रृंगारक छोव सँ मुह मे लगवैक हेतु सुगन्धि चूर्ण (पाउडर) बनवै मे होइत छल।" सं. तद्भव

कचैठ-विशे., आंशिक रुपेँ काँच। काँचे सन अनुभव दैवाला पाकल फल आदि। मैं.

कचौआवध-सं., मारि मे अनघुन अस्त्र चलाकय असंख्य लोकक हत्या। मैं.

कचोट-सं., ममता भरल पश्चात्ताप अर्थात् पछतावक। मैं.

कचौड़ी-सं., पूरी जकाँ फूलल फूलल अनेक स्वादिष्ट मसाला सँ युक्त तेल वा घी मे छानल मैदाक भोज्य पदार्थ। मैं. ऐ प्रसंग मे क्यो कवि प्रशस्ति गौने छथि-माणोदरी सुभग हिंगु सुवास युक्ता शुण्ठयादि जीर भरि चादिभिरचिता च। हे हे कचौड़ि घृत चौरि नमो नमस्ते। मैं.

कछटा-सं., गुप्ताङ्ग मात्र झँपैक जोग उपनयनक बरुआक पहिरैक नव वस्त्रक खण्ड। मैं.

कछनीकाछब-क्रि., गमछा अथवा कोनो नूआक टुकड़ा सँ लज्जा निवारण करब। मैं.

कछब-क्रि., माटि पर हेराएल तेल वा घी सन द्रव पदार्थ कें हाथ आ आङुर सँ पोछिकय उठाएब। मैं.

कछमछ करब-क्रि., आन्तरिक आकुलता अथवा अस्थिरता आ चञ्चलता सँ अनेर अंग चालन करब। मैं.

कछमछी-सं., रोग आ आन्तरिक पीड़ाक द्वारेँ अशान्त मनेँ देहचालन एवं अस्थिरता। मैं.

कछमछाएब-क्रि., कछमछी सँ मन सँ शरीर धरि अस्थिर रहब। मैं.

कछबी-सं., यकृत वृद्धि, पेटक रोग विशेष, एकरा कछुवी सेहो प्रयोग होइछ। मैं.

कछार-सं., १. भोंकैवाला लोहाक सुलफावाला अस्त्र। २. जलाशय कातक भूमि। मैं.

कछिआ पछार-विशे., प्रतिदिन बढ़ैत नवयुवतीक यौवनक द्वारेँ पहिरल सिकस्त साड़ी जे केहनो आत्म संयमीक मनकें पछारि दै अछि। मै.

कछुआ-सं., काछु, दीर्घजीवी जलजन्तु। मै.

कछुआढाबर-विशे., जाहि जलाशय मे पाँकिक कमीक द्वारेँ काछुए टा रहैत हो। मै.

कछुआपीठ-विशे., कछुआक पीठसन बीच मे ऊँच चारू दिश ढालू भूमि। मै.

कछेर-सं., गहींर स्थानक कातक कड़ेंगी ठाढ़ ऊँच स्थान। मै.

कछोर-सं., जलाशयक सटल भीजल स्थान। मै.

कज्जल-सं., स्निग्ध वस्तुक द्वारा उत्पादित कारी द्रव, आंखिक अलंकार। काजर। सं. तत्सम

कज्जी-विशे., कोनो अंगक विफलता सँ अक्षम। मै.

कजरंक-विशे., गाढ़ कारी रंगक देहवाला। मै.

कजरकाठी-सं., काजर करैक शलाका, काठी। मै.

कजरगौर-विशे., कारी रहितौ शरीरक कान्ति सँ सुन्दर। मै.

कजरब-क्रि., काजर करब। प्रयोग–"कजरल नयनक कोरजनु हिय मे दैछ नठोरा।" जयराजा सलहेस मैथिली महाकाव्य। मै.

कजरा-सं., १. बाँहि परक गहना विशेष। २. धुआँ धुकुर सँ जमल कारिख। मै.

कजराह-विशे., काजर सन रंगवाला, काजर भरल। मै.

कजराएब-क्रि., काजर क' देब। काजर भरब। मै.

कजरी-सं., १. सीतल भूमिक जमल प्रदूषण। २. विशेष लयवाला गीत। मै.

कजरौट-सं., गर्दा मे पहिरैवाला स्त्रीगणक गहना। जे मास स्नान (मसनही अर्थात् नहनही) क समयक भार मे नव विवाहित कनियाँक सासुर सँ उपहार मे अबैक परम्परा अछि। मै.

कजरौटी-सं., लोहक कैंचवाला चापट काजर पाड़ैक बासन। मै.

कजली-सं., खापड़िक पेन आ डिबियाक रासि सँ देवाल मे जमल कारिख। मै.

कञ्च-विशे., अपन रंग मे निर्मल। प्रयोग–गंगा जल हरियर कञ्च होइत छैक। मै.

कञ्चन-सं., सोन, सुवर्ण धातु। सं. तद्भव

कञ्चु-सं., नाम चाकर पनमा आकारक साग। मै.

कञ्छब-क्रि., पेट मे निरन्तर नाम मात्रक वेदना होएब। मै.

कञ्ज-विशे., सुशोभित, सुन्दर। मै.

कट्टर-विशे., नियम सँ नत्र विचल नहि भेनिहार। कठोरता सँ वातक पालन केनिहार। मै.

कट्टा-विशे., मदिखन कटैक व्यवसाय करैवाला। मै.

कट्ठिस-सं., विनाशक विच्छेद। लिखै पढ़ै मे कोनो अंश कें काटब। मै.

कट्ठम -विशे., काठ जकाँ कठोर। पाक रहित। गुन मुल नहि। (फल)। मै.

कट्ठर-विशे., १. (लाक्षणिक) कठोर हृदयवाला। २. अपक्व फल। मै.

कट्ठा-सं., खेतक परिमाण विशेष। मै.

कट-सं., १. अवधि, समयक सीमा (उर्दू-करार)। २. निश्चयात्मक वचन (प्रतिज्ञा)। ३. छवि छटा आ आकार प्रकार। प्रयोग-"एहि नेन्नाक कटगर मुह छै। कट सेहो सुन्नर छै।" मै.

कटकट-अव्यय, कठोर वस्तु कें चिबबै मे दाँतक तर मे उठल अव्यक्त ध्वनि। प्रयोग-"कटकट विकट ओठपुट पाँडरि"—विद्यापति। मै.

कटकटाएब-क्रि., कड़ा वस्तु कें दाँत सँ शब्द समेत चिबाएब। मै.

कटकी-सं., कण्ठक गहना विशेष। मै.

कटकुट-सं., १. ठाम ठाम अक्षर कटैक चिह्न। २. आंशिक रूपें छाँटब। मै.

कटकेना-विशे., १. सावधिक ऋण। २. निश्चित समयक बात। मै.

कटगर-विशे., छवि छटाक सन्तुलन सँ अत्यन्त ऐंठ। मै.

कटगैनी-सं., १. जड़ीबूटी विशेष। २. साग। मै.

कट द' उठब-क्रि., हड्डी पर हड्डी बैसला सँ तथा कठोर वस्तु कें चिबौला सँ अव्यक्त शब्द होएब। मै.

कटधारा-सं., समान भारक नाप जोख। मै.

कटनियाँ-विशे., १. धान आदि फसिल कटैवाला जनक समूह। २. गाछ वृक्ष काटि काठक व्यापारी। मै.

कटनियाँ-सं., वेगक वा तरङ्गक चोट सँ नदी कछेरक भूमिक कटब। मै.

कटनिहार-विशे., कटैवाला, स्त्री॰ कटनिहारि। मै.

कटनी-सं., फसिल कटैक क्रम आ चलती। मै.

कटमीती-विशे., काटिकय राम्हल जाइवाला तीमन। मै.

कटब-क्रि., १. अपनें सँ कटि जाएब। २. ककरो सँ सम्पर्क छोड़ा लेब। मै.

कटबन्धक-सं., सावधिक कोनो द्रव्य पर रुपैयाक ऋण। मै.

कटबी-विशे., सावधिक ऋण जे थोड़बो दिन मे सम्पूर्ण सूदिक योग्य होइछ। जेना कातिक मे लेल धान ऋणक अगहनैं मे डेढ़बर भय जाइत अछि। मै.

कटमड़ी-सं., अभावक द्वारें अन्न वस्त्रक क्लेश। मै.

कटर्मी-सं., चमड़ा सीबैक अस्त्र जकरा भोंकि दोसर दिश सँ ताग आनि आनि चमार चमड़ा सीबै अछि। मै.

कटरा-सं., माटि कटला सँ बनल खद्धा जे मटिकट्टा सब बनबै अछि। मै.

कटसरि-विशे., १. कटैक अवस्था मे आएल फसिल। २. कण्ठक गहना विशेष। मै.

कटहर-सं., ऊपर खोइछा पर काँट जकाँ रूपवाला पैघ परेल फल। सं. पनस फल। मै.

कटहरी चम्पा-सं., चम्पा फूलक आकारक विशेष फूल जकर सुगन्धि पाकल कटहर सन होइछ। मै.

कँटहा-विशे., काँट सँ भरल। काँटवाला। मै.

कटाइ-सं., कटैक कार्यक्रम। काटनि। मै.

कटाउझि-सं., कोनो वस्तुक हेतु आपस मे झगड़ा। मै.

कटाएब-क्रि., कटैक हेतु अनका प्रेरणा करब। अपन समक्ष मे फसिल कटैक व्यवस्था राखब। मै.

कटाओ-सं., पानि बाढ़िक वेग सँ तटक कटैक क्रम। मै.

कटाक्ष-सं., १. आँखिक कोरक दृष्टिपात। २. व्यङ्ग्यबाण। मै.

कटाकटि-अव्यय, कटकट शब्द करैत चिबाएब। मै.

कटाकटी-सं., सम्पर्क तोड़ब। एक दोसरक गर्दनि कटैक सतत प्रयास। मै.

कटाकटीअलि-सं., अपन स्वार्थ सँ बैर क'क' एक दोसराक मूड़ी कटैक प्रयास। मै.

कटाक द' उठब-क्रि., कड़ा वस्तुक दाँततर दबने अचानक कटाक शब्द होएब। मै.

कटार-सं., सोझ तरुआरिक आकारक काटल भोंकल जाइवाला छोट अस्त्र। मै.

कटारि-सं., पानि बहैक हेतु बान्ह वा आरि मे काटल स्थान। मै.

कटारी-सं., अत्यन्त छोट आकारक टेढ़ तरुआरि (चन्द्रहास)सन तीक्ष्ण अस्त्र जे वीराङ्गना सब खोपा मे खोंसैं अछि। मै.

कँटाह-विशे., काँटक अधिकतावाला। मै.

कटाह-विशे., दाँत सँ कटैवाला जीव। मै.

कटिया-सं., दूध दुहैक माटिक बासन। डाबा। मै.

कड़बी-बारह बरस गोआरि कटिया सोम्हाबय। मै.

कँटीला-विशे., काँट उगाओल सोहक वस्तु। मै.

कटुक-सं., भोज्य वा पेय पदार्थ मे देम' योग्य मसाला। सं. तत्सम

कटुता-सं., आपस मे मनैमन विरोधक द्वारेँ सद्भा-वक अभाव। मै.

कटुबी-सं., बाँहि परक गहना विशेष। कुशियारक गेंड़ी। मै.

कटैल करब-क्रि., सामान्यो स्थिति मे परिस्थितिक अनुसारेँ कम करब। मै.

कटैया-सं.,१. एकदिश सँ काटि क' खसबैक काज। २. धारक कातक भूमिक कटि कटि क' धँसना खसैक स्थिति। ३. काँटवाला भाड़। मै.

कटैल-सं., चूड़ी लहठीवाला लाह। मै.

कटोरा-सं., फैलगर पैंघ बाटी। छोट कटोरी। छोटकी बाटी। मै.

कटौअ-सं., देखू-"कटाउज"। मै.

कटौटी-सं., व्यर्थक वाद विवाद वा असंगत तर्क वितर्क सँ परस्पर पछारैक प्रयास। मै.

कटौती-सं., अनावश्यक बूझि उचित मान सँ घटय-बाक प्रक्रिया। मै.

कठकी-सं., पातर छोट काठी। मै.

कठकीड़ी-सं., चुप्पेचाप काठ मे छेद करैवाला छोट कीड़ा। मै.

कठकेरा-विशे., पकलो पर बिन पूलल केरा। मै.

कठकोंकाधि-विशे., अत्यन्त कृपण, धन केँ दाँत सँ धयनिहार। मै.

कठखोधी-सं., थोल सँ काठ छेदैवाला पक्षी। मै.

कठगर-विशे., सक्कत, कड़ा। मै.

कठघरा-विशे., काठक छोट छीन दोकानक घर। मै.

कठजीब-विशे., हड्डुँ नहि मरैवाला, कोनो उपाय कयलो पर नहि मरैवाला। मै.

कठताल-सं., काठक छोट चापट पट्टी जाहि सँ गीन मे ताल देल जाइत अछि। मै.

कठपुतरी-सं., व्यवसायीक द्वारा नचाओल जाइत काठक छोट छोट मूर्ति। मै.

कठबाद-सं., बिना प्रयोजनक वितण्डा, निरर्थक अनर्गल तर्क वितर्क रूप कूनि विवाद। मै.

कठबाप-सं., मायक पुनर्विवाहक स्वामी। मै.

कठबेड़-विशे., काठक छेद मे रहैवाला बेड़। मै.

कठबेटा-सं., पुनर्विवाह कय आनल पत्नीक संग आएल पूर्व पतिक पुत्र। स्त्री० कठबेटी। मै.

कठबेली-सं., बनबेली फूल। मै.

कठमन-विशे., १ कट्ठा खेत मे उपजल १ मन अन्न। मै.

कठमस्त-विशे., सक्कत, पुष्ट आ सबल देहवाला। मै.

कठमाम-विशे., सतमैक भाय। नामक मामा। मै.

कठरा-सं., न्यायालय मे वादी प्रतिवादी केँ ठाढ़ करैक हेतु बनल घेरा। मै.

कठरियाएब-क्रि., भीजल माटिक कठोर ढेला बनल। मै.

कठलाज-सं., अनेर लाज अथवा लाजक नाटक। मै.

कठलेघ-विशे., १. धनाह खेतक धानक बीआ (अंकुर) उखाड़ला सँ जड़ि लागल माटि नेमहि अर्थ अछि तथा ओहेन खेत जोतने हूर नहि ससरि सकै अछि आ थाल सटि जाइत अछि। मै.

कठहँसी-सं., मन सँ हास, हँसै मे अनका संग देब। खुशामदी हँसी। मै.

कठाइन-विशे., अनसोहाँत, असंगत, अप्रिय। मै.

कठार-सं., ऐँठ फेँकैक धोऐक स्थान। ऐंठार। मै.

कठाल-सं., गाछ काटि काठ चीरल फाड़ल जाइ-वाला स्थान। मै.

कठिन-विशे., कठोर, जटिल, कष्ट साध्य। सं. तत्सम

कठिनता-सं., ओकरौट, कठोरता, विषमता। सं. तत्सम

कठिनाइ-सं., कष्टक स्थिति, आपत्ति, संकट। मै.

कठिनाहा-विशे., दुःसाध्य, अधिक विषम वा जटिल। मै.

कठुआएब-क्रि., काठ जकाँ कठोर बनि जाएब । मै.
कठुऐनी-सं., कड़ा बनि जाइक स्वभाव । मै.
कठुला-विशे., माटिक बनाओल छोट सन हल्लुक कोठी । गोल लाम मुहवाला छोट कोठी । मै.
कठुली-विशे., माटिक बनल अत्यन्त छोट कोठी । मै.
कठोर-विशे., सक्कत, कड़ा, निर्दय । सं. तत्सम
कठोहि-विशे., जीवित गाछक धोधरि मे रहैवाला साँप । मै.
कठौत-सं., अढ़िया जकाँ पसरल मुहवाला काठक बनल बासन । मै.
कड़कड़-विशे., अत्यन्त सुखाएल होइक कारणें कड़-कड़ शब्द कय कड़ा बनल । मै.
कड़कड़ाएब-क्रि., कड़कड़ शब्दपूर्वक दाँत तर कड़ा वस्तु कें दबाएब । (लाक्षणिक) सक्कत करब तथा बल सँ दमन करब । मै.
कड़कड़ा क'-अव्यय, १. सक्कत । २. कड़कड़ शब्द करैत । मै.
कड़कड़ाहटि-सं., जोर सँ कड़कड़ ध्वनि । मै.
कड़कब-क्रि., १. एक लक्खत बिजलोताक छिट-कब । २. बिजलोता छिटकैत मात्र मेघक शब्द करब । ३. कोनो बातक हेतु आवेग होएब । ४ वस्तुक दाम चढ़ब । प्रयोग– "हमर मन कड़कैत अछि जे एहि चोर कें चारि लाठी मारी । आइ काल्हि सोन कड़कि गेल छै ।" मै.
कड़कड़ौआ-विशे., पराकाष्ठा पर पहुँचल । कड़-कड़ौआ जाड़ मे कतौ यात्रा करैक नहि थिकैक । मै.
कड़किकय-अव्यय, क्रोध भरल रोबदार निर्भीक शब्दें । मै.
कड़गर-विशे., सक्कत, बलगर । मै.
कड़ड़ब-क्रि., अनिष्टक भावना सँ अशुभ बातक अधिक चरचा करब । मै.
कड़ड़ पड़ब-क्रि., मलक सूखिक' अत्यन्त कड़ा बनब । मै.
कड़रा-सं., हंस जातिक पक्षी । कारण्डव । मै.
कड़रा छाउर-विशे., सुखाएल गोबरक छाउर । मै.
कड़रा पड़ब-क्रि., अनहोनी शोकक आवेग मे जोर सँ हाहाकार मचब । मै
कड़रि-सं., केराक गाछ । मै.
कड़लत-सं., सक्कत मोटगर बनैया लत्ती । मै.
कड़मसि-सं., एक हार मे अनेक छड़ । मै.
कड़हा-सं., अनेक औषध मिलाकय औटल पानि । क्वाथ । मै.
कड़हिया-सं., १. पैघ लोहिया (पकवान तथा मधुर छानै वाला) २. दिवाल ओड़ैक काल मसाला उठ-बैक बासन । मै.
कड़ही-सं., बेसन सँ बनाओल मसाला देल झोर (सूप) । मै.
कड़ा-विशे., अपन रूप मे अत्यन्त सक्कत । मै.
कड़ाई-सं., कठोरता सँ नियमक पालन । कड़ापन । मै.
कड़ाक द'-अव्यय, कोनो वस्तुक अकस्मात् टुटला सँ फटला सँ कड़ द' ध्वनि । मै.
कड़ाकुल-सं., बड़का टांगवाला मछखौक बड़का पक्षी । मै.
कड़ाम-सं., दाओन करै मे एकै डोरी मे अनेक बड़द कें बन्हैक डोरी । मै.
कड़ारी-विशे., १. कड़ा माटिक भूमि । २. निश्चित समयक देल वचन । मै.
कड़ाह-सं., लोहियाक आकारक पैघ उत्थर लोहक बर्त्तन । मै.
कड़ाही-सं., चपोल मुह आ चाकर पेनवाला माटिक बासन । मै.
कड़ियल-विशे., कड़ा स्वभाववाला । मै.
कँड़ियाएब-क्रि., छत्ती लदबैक वर्ग समेटि कय राखब । मै.
कड़ियौत-सं., कड़ी विशेष । मै.
कड़ी-सं., शृंखला, एक सँ दोसर फँसाक' जोड़ल पातर गोल धातुक खण्ड सँ बनल वस्तु । मै.
कड़ुआएब-क्रि., कड़ु जकाँ लागब, कड़ु बनाएब । मै.
कड़ुआह-विशे., कड़ुक अनुभव देमउवाला । मै.
कड़ुऐ-सं., कड़ुक स्वाद । मै.
कड़ु-सं., रस विशेष । कटु । सं. तद्भव
विशे., कड़ु स्वादवाला । सं. तद्भव
कड़ुतेल-सं., गोट तोड़ी आ रैंची सँ बहार कयल तेल । मै.

कड़ेकमान-विशे., कोनो काज मे सावधानी सँ चौकस । मै.

कड़ोरि-संख्या, सौ लाखक एकमान । संज्ञा, एक चलता फिरता (उर्दूक खानाबदोस) जाति । मै.

कड़ीत-सं., मेह मे देल रस्सी जाहि मे दाओनिक काल कड़ाम जोड़ल जाइत अछि । मै.

कड़ौरिया-सं., एकठाँ निश्चित निवास नै रखैवाला जाति । मै.

कढ़ब-क्रि., कोनो वस्तु पर हस्तकला सँ चित्र निखारब । मै.

कढ़ाइ-सं., हस्तकला सँ चित्र निखारैक कर्म । मै.

कढ़ी-सं., अन्नक दाना रहित भोर । मै.

कढ़ैया-सं., अढ़ियाक आकारक माटिक बासन । मै.

कण्टक-सं., काँट, पीड़ादायक । सं. तत्सम

कण्टाहा-विशे., पितृ कर्मक पुरोहित महापात्र । मै.

कणियाएब-क्रि., एकठाँ छल्ली लगाकय जमा करब । मै.

कण्टिरवा-विशे., छोट नेन्ना । बेटा । मै.

कण्ठ-सं., गर्दनिक आगू सँसरीवाला भाग । सं. तत्सम

कण्ठगत-विशे., १. कण्ठधरि पहुँचल । २. कण्ठे मे रहैवाला । सं. तत्सम

कण्ठडाह देब-सं., भोजनक पाकक अभाव मे कण्ठक वेदना । मै.

कण्ठमलिया-विशे., झोरी मे भगवान (शालिग्राम) राखि सदिखन कण्ठ मे लटका कय भक्तक दावी कयनिहार । मै.

कण्ठ लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त आवेश करब अर्थात् स्नेहक लेल सतत कण्ठ लगौने रहब । मै.

कण्ठा-सं., कण्ठक गहना विशेष, यन्त्र । मै.

कण्ठिया-विशे., कण्ठीधारी । मै.

कण्ठी-सं., तुलसी डाँटक दाना बनाकय बनल कंठक माला वैष्णवक चिह्न । मै.

कण्डली-सं., बनस्पति विशेष । कन्दली । स. तद्भव

कण्डा-सं., शरपतक मोटका डाँट । मै.

कण-सं., सूक्ष्म सँ सूक्ष्म खण्ड, दाना, कंकर । सं. तत्सम

कणा-सं., कोनो वस्तुक सूक्ष्म रूप । सं. तद्भव

कत्त'-अव्यय, कोन ठाम । मै.

कत्ता-सं., बैंगकोवाला तरकारी कटैक हाँसू । मै.

कत्तिन-विशे., चरखा कटैवाली स्त्री । मै.

कत्ते-अव्यय, कतेक परिमाण मे । मै.

कत्थ-सं., बेलक आकारक अम्मत फल । मै.

कत्थक-सं., शास्त्रीय नृत्य विशेष । मै.

कत्था-सं., पान मे देक मुख्य मसाला । हि. तत्सम

कत'-अव्यय, कोनठाम । मै.

कत-परि. वा. सर्व., कतेक परिमाण (प्रश्न) । प्रयोग–"कत सुखसार पाओल तुअ तीरे"–विद्यापति । मै.

कतका-विशे., कात मे रहैवाला वा कात मे होमं वाला । मै.

कतनी/कतबे-अव्यय, कतेक थोड़ परिमाणक । मै.

कतब-क्रि., सूत कटैक क्रिया । केवल सूत मात्र कटैक क्रिया । मै.

कतय-अव्यय, कोनठाम । मै.

कतरन-सं., कागज वा कपड़ा कतरला सँ अनुपयोगी टुकरीक समूह । मै.

कतरनी-सं., कतरैक अस्त्र, कैंची आदि । मै.

कतरनी धान-सं., भागलपुरक प्रसिद्ध मेहीं आ सुगन्धित धान । मै.

कतरब-क्रि., बिना चोटक कैंची आदि अस्त्र सँ कागज आदिक खण्ड करब । मै.

कतरा-सं., कोनो वस्तुक कतरल छोट अंश । मै.

कतराएब-क्रि., लोकक दृष्टि सँ बँचैक हेतु कातै-कात होएब । हँटल रहब । मै.

कतराझाड़-सं., कातर नामक खढ़क सघन अढ़ि । मै.

कतहु-अव्यय, कोनो ठाम, अनिश्चित स्थान मे । मै.

कतार-सं., पाँती, धारी । उ. तत्सम

कतिकहर-सं., कातिक मासक लक्षण, प्रकृति आ वातावरण । मै.

कतिका-विशे., कातिक मास मे भेनिहार । कातिकक रंग सँ भरल । मै.

कतिकास्तर-विशे., कातिक मास मे करैक खेती । मै.

कतिकी-विशे., कातिक मास मे होमऽवाला । मै.

कतिया-सं., नाम चाकर आ पातर धारवाला अस्त्र । मै.

कतीकाल-अव्यय, समय मे परिमाणसूचक प्रश्न । मै.

कतीखन-अव्यय, बीतल समयक परिमाण सूचक । मै.

कते/कतेक/कतोक-अव्यय, अधिक परिमाणक प्रश्न-वाचक । मै.

कथ-विशे., कहबाक, कहैक विषय, कथ्य । सं. तद्भव

कथक्कर-विशे., कथा कहैवाला । मै.

कथन-सं., कहैक भाव । सं. तत्सम

कथनी-सं., कहैक तात्पर्य्य । मै.

कथा-सं., १. ककरो कोनो चरित्रक विस्तारपूर्वक वर्णन । २. वैवाहिक विषयक तथा गम्भीर बातक वार्ता । ३. गारि । सं. तत्सम

कथाकथान्तर-सं., कलहक क्रमें गारि पर गारि । मै.

कथाकार-विशे., कथा साहित्यक रचाना करैवाला । सं. तत्सम

कथानक-सं., ककरो चरित्रक अन्त:सुखदायी विस्तृत आ रोचक आख्यान । मै.

कथावस्तु-सं., कथाक मूलभूत संक्षिप्त विषय तथा निचोड़ । सं. तत्सम

कथासार-सं., कथाक निचोड़ । सं. तद्भव

कथी-अव्यय, कोनो विषय कें बुझैले फेर कहैक हेतु प्रेरक प्रश्न । मै.

कथू-अनि. सार्व./विशे., कोनो वस्तु । मै.

कथोपकथन-सं., परस्पर बातचीत, उत्तर प्रत्युत्तर । सं. तत्सम

कद्दू-सं., सजमनि, लत्तीक फल विशेष । मै.

कद्दूकस-सं., चदराक बनल कापूक आकारवाला मेहीं-मेहीं छेद मे धारवाला चारि पायाक कुम्हड़ आदि गुद्दावाला फल कें खड़रि (घसि) मेहीं बनबै-वाला यन्त्र । मै.

कदन्न-विशे., सुपाच्य अन्न सँ भिन्न अनुपयोगी अन्न । मै.

कदवा-सं., रोपनीक हेतु खेतक कादो । मै.

कदवापसार-सं., रोपनीक हेतु कादो करैक प्रक्रियाक समाप्ति । मै.

कदम्ब/कदम-सं., एहि नामक विशाल गाछ एवं केसरवाला ओकर गोल फूल । सं. तद्भव

कदम्बीडोरि-सं., फुदनावाला खोपा बन्हैक डोरी । मै.

कदमचालि-सं., घोड़ाक चालि विशेष, खुर कें मोड़ल खन कय उपर उठा कय ठुमुक-ठुमुक चलैक क्रम । मै.

कदमताल-सं., सैनिक प्रशिक्षणक व्यायाम विशेष । एकै तालें समूहक डेग (पैर) उठैक आ खसैक अभ्यास । मै.

कदर्य्य-विशे., कृपण, धन रहितौ दीनहीन बनल । सं. तत्सम

कदराएब-क्रि., कोनो क्रिया मे उत्साहित नहि होएब । मै.

कदरियाएब-क्रि., अपन असमर्थता आ अहदपना सँ कोनो चेष्टा मे उत्साहहीन होएब तथा दीनता प्रकट करब । मै.

कदरियाह-विशे., कदराइत रहनिहार । मै.

कदरी-सं., १. लोटा आदि बासन मे जमल मैल । २. पोखरि आदि जलाशयक पानिक दूषित रंग । मै.

कदा च-अव्यय, अनिश्चितकाल । कहुखन । सं. तत्सम

कदाचित्-अव्यय, कखनो । सं. तत्सम

कदापि-अव्यय, कौखन, कखनो । सं. तत्सम

कदीमा-सं., लती मे फरैवाला व्यञ्जन पदार्थवाला पैघ फल । मै.

कदै-सं., बाढ़ि पानिक संग भसाठ मे आएल माटि जे पातर परत जकाँ घास पात पर जमि जाइत अछि । मै.

कदौआ-सं., रोपैक हेतु पनियाएल खेत कें जोति कय बनाओल पाँक । मै.

कदोई-सं., गहाइक काल पैरक धपाड़ सँ उखरल पोखरिक पाँक । मै.

कन्छी-सं., कोनो बातक डरें दूरैं सँ अपना कें नुक-बैत मुख बाट काटि कय गुप्त मार्गें पलायन । मै.

कन्छी काटब-क्रि., आँखि बचा कय भागल फिरब । मै.

कन्टह-विशे., (लाक्षणिक) दुखदायी । कन्टक । सं. तद्भव

कन्टहा-विशे., पितरक कर्म करबैवाला पुरोहित । (अनादर मे) । मै.

कन्टाह-विशे., देखू—"कन्टहा" । मै.

कन्त-विशे., प्रणयी, प्रियतम, पति । प्रयोग—"भय गेल शरदीक अन्त । लिखल पतियोने कन्त ।" मै.

कन्ताकनैल-सं., फुल विशेष । मै.

कन्तोड़-सं., गहना गुड़िया रखैक हुथलमू छोट-पेटी । मै.

कन्तोड़ी-सं., प्रसाधन सामग्री रखैक अत्यन्त छोट हुथलमू पेटी । मै.

कन्तोप-सं., शीत सँ बचवैवाला कान मे सटल टोपी । मै.

कन्था-सं., आवश्यक सामग्रीक पोटरी । सं. तत्सम

कन्न-सं., भिटका आ पाथर सभक मेहीका खण्ड जे अन्नक संग मिलल होअए । मै.

कन्नकन्न-सं., क्रोध आ आक्रोशक द्वारेँ चढ़ल आँखि सँ दर्शन । प्रयोग—"अन्यायी लोक पर कें नहि कन्नकन्न कर' लगैत अछि ।" मै.

कन्ना-सं., १. साग विशेष । २. तामस दबौने पछा-रैक अवसरक ताक । मै.

कन्नारोहट-सं., लोकक स्थिति मे सामूहिक नोर सँ कनैक वातावरण । मै.

कन्नी-सं., धानक दानाक जड़ि मे रहनिहार अखाद्य ठोस कण जे चाउरक संग रहै अछि । मै.

कन्नी-अव्यय, कनेक परिमाण । मै.

कन्नीकाटब-क्रि., कोनो काजक डरेँ लोकक आँखि बचाकय कातेँ कात पड़ायल नुकायल फिरब । मै.

कन्या-सं., राशि विशेष । मै.

कन्या-सं., पुत्री बेटी । सं. तत्सम

कन्यागत-विशे., विवाहक प्रसंगे कन्या पक्षक लोक । मै.

कन्यादान-सं., पुत्री कें वरक हाथ मे पत्नीक रुपें समर्पण । सं. तत्सम

कन्यादानी-विशे., पुत्रीक दान कयली उत्तर संपत्ति दय अपनें ओतय अर्थात् नैहरे मे बसाओल कन्या । मै.

कन्याराशी-विशे., अधिक संख्याक बेटीवाला । मै.

कन्हगर-विशे., उँचगर कान्हवाला बड़द । मै.

कन्हा-सं., बाँहिक जड़िक उपरवाला अंग । मै.

कन्हुआएब-क्रि., प्रतिहिंसा भरल दृष्टि सँ ताकब । मै.

कन्हेठब-क्रि., कन्हा पर उठा लेब । मै.

कन्हौर-सं., साँड़क पीठ पर उपर उठल अंग । मै.

कन-सं., अन्नक संग अनेक सूक्ष्म आ कड़ा आँकड़ । मै.

कनउलास-सं., अन्न कें फटकि अनुपयोगी पदार्थ-वाला कण कें आगू निछोरैक क्रिया । मै.

कनकजीर-सं., मेंही धानक प्रभेद । मै.

कनकन-सं., हाथ पैर मे जड़ता शून्यता उत्पन्न करै-वाला जाड़क प्रकोप । मै.

कनकट्टा-विशे., १. उत्कर्ष पर्वैवाला । २. कान काटल रहैवाला । मै.

कनकन करब-क्रि., शीतक द्वारेँ विकलताक बोध होएब । २. क्रोध भारैक अवसर देखब । मै.

कनकनाएब-क्रि., छेदैक बर्फ अन्तर्मुख वेदना होएब । मै.

कनकनी-सं., अंग कें छेदैक सन जाड़ । मै.

कनकुत-सं., अनुमान सँ उपजाक निर्धारण । मै.

कनखरब-क्रि., बदला लैक विचार सँ क्रोधित रहब । मै.

कनखा-सं., फुटल सीसा, माटिक बासन आ द्रव्यक बर्तनक उगल पैघ टुकड़ा । भाँड़क मुह दिशुक भाग । मै.

कनखी-सं., १. कच्चुक अंकुरक प्राकृप । २. आँखिक कोर सँ तकैक मुद्रा । कटाक्ष । मै.

कनखुर-सं., १. माछक कनपट्टीक अंग । २. भग्न खपटा । मै.

कनखुराह-विशे., कनखुर आ खपटा सँ भरल । मै.

कनगब्बर-विशे., शब्द सुनलो पर प्रतिक्रियाहीन भय अनठा दैवाला । मै.

कनगुज्जी-सं., कानक मैल । मै.

कनगुरिया-सं., सब सँ पातर आ छोटका आङ्गुर । मै.

कनगोज-सं., कानक जड़ि । मै.

कनगोजर-सं., सूत सन पातर नाम कीड़ा जे कान मे पैसैत अछि । मै.

कनचटक-सं., १. कानक उपरक अंगक रोग विशेष । २. कानैक आकार मे आमक गाछक डारि मे होई-वाला ओहि रोगक अचूक औषध । मै.

कनछत बहब-क्रि., अतृप्त रहब (भोजन मे) । मै.

कनछेदी-सं., कान छेदैक विधि । कर्णवेध कर्म । मै.

कनझक्का-विशे., माण पसौला उत्तर तुरन्त तप्पत दूध मे द' क' भाँपल भात । मै.

कनझप्पा-विशे., कान झँपैक वस्त्र । मै.

कनटनकी-सं., कानक दर्दक रोग । मै.

कनटर-सं., नाम चौखुट टीनक बासन । मै.

कनडेरि-विशे., आँखिकोर सँ दृष्टिपात। कटाक्ष। मै.

कननमुह-विशे., कनै-कनैसन मुहवाला। मै.

कनना-विशे., बात बात मे कानि उठैवाला नेन्ना। स्त्री० कननी। मै.

कनपट्टी-सं., कान आ आँखिक बीचक अंग। मै.

कनपासा-सं., कानक गहना विशेष। मै.

कनफट्टा-विशे., फाटल कानवाला। मै.

कनफुसकी-सं., कान मे मुह लगाकय फुसुर-फुसुर गप करैक ढंग। मै.

कनबह-सं., पानि बहैक छोट सन बाहा। मै.

कनबधा-सं., एकठाँ सँ दोसरठाँ पानि बहा कय लय जाइक उत्थर बाट। मै.

कनबहीर-विशे., सुनैक सामर्थ्य रहितौ कोनो कारणेँ अनसुन कयनिहार। मै.

कनभर-सं., अन्न मे छोट-छोट दूषित कण समूह। मै.

कनमटक-विशे., सुनियोकय बहीर बनल। मै.

कनमन-सं., भीतरक रुष्ठता, आन्तरिक क्रोध। मै.

कनमन करब-क्रि., भितराएल कानि सधैक अवसर देखब। मै.

कनमनाएब-क्रि., भितराएल कानि सधबैक तरंग होएब। मै.

कनमा-सं., प्राचीन तौलवाला सेरक सोलहम भाग। मै.

कनमाही-सं., एक कनमाक बाट। मै.

कनमुन्ना-विशे., कान कें मूनि लेनिहार। नैं सुननिहार। मै.

कनरी-सं., जीवित छोट गाछ उखाड़ैक हेतु बढ़ि लागल सीरवाला माटि। मै.

कनसाग-विशे., खुद्दी आ साग सन तुच्छ भोजन। मै.

कनसार-सं., भजाभूजीक व्यावसायिक स्थान। मै.

कनसुन्न-विशे., कानक सुन्न। ऊँचेँ सुनैवाला। मै.

कनसुपती-सं., बाँसक कोपड़क गीरह परक पात। मै.

कनसोह-सं., नुका कय सावधानी सँ आनक बात सुनैक चेष्टा। मै.

कनहा-विशे., जकर एक आँखि काजक नहि रहैक। (अनादर मे) स्त्री० कनही। मै.

कनात-सं., चारू दिश अड़ करैक कपड़ाक बनाओल घेरन। उ. तत्सम

कनाती-सं., पर्दा करैक टाट। मै.

कनारि-सं., १. नाकक बलेँ ऊँच स्वरेँ उठल मुहक अव्यक्त शब्द। २. आन्तरिक झगड़ा। मै.

कनारो उठब-क्रि., एक संगेँ बहुत लोकक शोक सँ आकुल कनैक शब्द होएब। मै.

कनाह-विशे., १. एक आँखिक अबाह। २. छिद्रवाला दूषित फल। ३. कन सँ भरल अन्न। मै.

कनाह कोतर-विशे., अंगभंग, मुख्य अंगेँ असमर्थ। मै.

कनियाँ-विशे., विवाहक हेतु प्रस्तुत कन्या तथा सासुर बसनिहारि नववधू। मै.

कनियाँ पुतरा-सं., छोट-छोट बालिकाक मनोरंजन हेतु नुआ सँ हस्तकला द्वारा स्त्री आ पुरुषक पुत्तलिका बनाकय विवाह रचैक खेल। मै.

कनियेँ-अव्यय, अल्प मात्राक परिमाण। मै.

कनिक-प्रश्नवाचक सर्वनामक सम्बन्ध कारक, ककर। मै.

कनिक/कनिकबे-अव्यय, थोड़बेक। मै.

कनीटा-अव्यय, थोड़ परिमाणक। मै.

कनेठब-क्रि., कान धऽ कऽ ऐंठब। मै.

कनैठीदेब-क्रि., कान पकड़िकय ऐंठब। (लाक्षणिक) कोनो विषय सँ विमुख रहैक प्रतिज्ञा करब। मै.

कनैल-सं., फूल विशेष। मै.

कनैल-सं., हरक फालोक दुहु कातक छेद मे अड़दक कान्ह कें अड़बैले देल कील। मै.

कनैसी-सं., कानक उपरी भाग मे कनौसी सन पहिरैवाला सोनक गहना। मै.

कनोजरि-सं., अंकुर। बीज तथा गाछक डंटी पर सँ फुटल अंकुर। मै.

कनोत-सं., खुट्टा, खाम्ही आ चार सँ सम्बन्ध जोड़ैक (लागि जोड़ैले) बन्धन। मै.

कनोतब-क्रि., घरक पाढ़ि लगा खुट्टा क कसिकय बान्हब। मै.

कनौजिया-विशे., कन्नौजक भेनिहार आ रहनिहार। मै.

कनौसी-सं., सोनाक तारक बनल छोट गोल व्यासक कानक नीचाक गहना। कर्णवेध मे प्रयोग। मै.

कप्पा-सं., कपड़ाक छोट टुकड़ा। मै.

कप-सं., चाह पीबैक बासन । अं. तत्सम

कपचब-क्रि., १. उचितो मान मे कम करब । २. कोड़ोवाती आ लाठी आदि बाँसक वस्तु क छिलि चिक्कन करब । मै.

कपट-सं., छल, फुसि आचरण सँ धोखा देबैक चेष्टा । सं. तत्सम

कपटी-विशे., कपट व्यवहार करैवाला । सं. तत्सम

कपड़बीनी-सं., सूत तनैवाली काठक खोली जाहि मे सूतक पोला रहै अछि आ वाम दहिन होइत तानी पर भरनी सूत पसारि कपड़ा बीनल जाइछ । मै.

कपड़ा-सं., कर्पट, नूआ वस्त्र । सं. तद्भव

कपड़िया-विशे., कपड़ाक बनौनिहार कयनिहार । मै.

कँपनी-सं., स्वाभाविक रूपें अंगक थरथराएब । जकरा रोकब अपन बश नहि रहए । मै.

कँपब-क्रि., स्वतः अंग अंग दलकब । थरथराएब । मै.

कपहा-विशे., चमड़ा चीरैक अस्त्र । मै.

कपाड़-सं., भौंह सँ उपर माथक केशक नीचाँक अंग । मै.

कपाह-विशे., अकस्मात् अंग कें क्षत करैवाला धारवाला खड़, पात आ अन्य कोनो वस्तु । मै.

कपियाएब-क्रि., वाती कर्चीक क्षत करैवाला काप कें चिक्कन करब । मै.

कपिलकन्द-विशे., व्यर्थ तर्क दए बतकुटौबलि कयनिहार छोट खाटक लोक । मै.

कपिलवस्तु-सं., प्राचीन ऐतिहासिक स्थान । मै.

कपिलीगाय-विशे., सरगोश उज्जर गाय । मै.

कपील-सं., (रंग) उज्जर मे पीयर आभा । मै.

कपूत-विशे., दुर्जन आ दुर्बुद्धिक पुत्र । मै.

कफ-सं., शरीर धारक जलीय तत्व । मात्रा सँ अधिक भेने दोष (रोग) पोटा । मै.

कफज्वरा-विशे., बढ़ल कफक द्वारें उपजल ज्वर । जाड़ । मै.

कफाह-विशे., कफ बढ़बैवाला आ कफ सँ भरल । मै.

कफी-विशे., सतत् कफ भरल । मै.

कब्जू-सं., अधिकार, सामर्थ्य, अधीन । मै.

कब-अव्यय, (निम्न कोटि मे) कखन । हि. तत्सम

कबकब-विशे., जकरा खएला सँ मुह मे छेदै सन पीड़ाक अनुभव हो । मै.

कबकबाएब-क्रि., (लाक्षणिक) कटु सत्य पर खिसिआएब । मै.

कबकबी-सं., कबकब स्वाद । मै.

कबज-विशे., कोठी (पेटक) बान्हैक वस्तु । मै.

कबजा-सं., कुल्हुआ सँ उपरक अंग । गट्टा बाँहि आ हाथक जोड़ । उ. तद्भव

कबजंघ-विशे., कौआ जकाँ डेङ बाड़ जाँघवाला । मै.

कबड्डी/कबडौल-सं., खेल विशेष, आ कबड्डी खेलाइक शब्द । मै.

कबरा-विशे., चित्तिर बित्तिर रंगवाला । स्त्री० कबरी । मै.

कबाएब-क्रि., उचित सँ बेशी सुखाएब । पाक लेब । मै.

कबाछु-सं., विषाक्त पातर लत्ती जकर सब अंग मे मेहीं काँट जकाँ रोइआँ होइत अछि जकर स्पर्श मात्र सँ अनायास खुजलाहटि आ पीड़ा पसरल जाइत अछि । मै.

कबारब-क्रि., बाछि बाछिकय धान सभक बीआ उखारब । मै.

कबाहुटि-सं., सदिखन कोनो वस्तुक तगेदा । मै.

कबिलकाठी-विशे., अयोग्य उपदेशक, केवल बात बनबैवाला व्यक्ति । मै.

कबीर-सं., एक सम्प्रदायक प्रवर्त्तक महात्मा । मै.

कबीरपन्थी-विशे., कबीरक सम्प्रदायक कें माननैवाला । मै.

कबीरा-सं., १. गारिक संग संगीत जे होरी मे गाओल जाइत अछि । २. कबीर दासक गेय रचना । मै.

कबीला-सं., बस्ती, टोल । उ. तत्सम

कबुलखोर-विशे., अपन कयल कबुला कें छिपबैवाला । मै.

कबुलापाती-सं., कोनो लक्ष्य पूर्तिक हेतु देवताक आगू विशेष उपासनाक प्रतिज्ञा । मनौती । मै.

कबूची-सं. छोट छोट उपद्रावक नेनाक समूह । मै.

कबै-सं., मभोला माछ विशेष । मै.

कबैयाइथोड़-विशे., कबै माछ जकाँ एक बाद एक आधा आगू आधा पाछू भ' क' पाछू धयनिहार । मै.

कम्प-सं., अस्थिरता सँ अंगक स्वतः स्पन्दन । सं. तत्सम

कम्पास-सं., गणितक चित्र एवं रेखा आदि रचैक यन्त्र । अं. तत्सम

कम्पन-सं., भीतर सँ उद्भूत विवश स्पन्दन । मै.

कमबल/कम्मल-सं., रोइयाँ "ऊन" सँ बनल ओढ़ना आ आसन । सं. तत्सम एवं तद्भव

कम्म-विशे., थोड़, अल्पमात्रा । कम सेहो प्रयोग होइछ । मै.

कम्मी-सं., त्रुटि, अल्पता, घट्टी । मै.

कम्मे-अव्यय, थोड़बेक । मै.

कमचा-सं., बाँसक पातर चाकर चीरा रूप । मै.

कमचालि-विशे., कम चलैवाला । मन्दगति । मै.

कमची-सं., बाँसक बहुत पातर कम चाकर काइम । मै.

कमठाओन/कमठान-सं., फसिल लागल खेत सँ घड़ पात उखाड़ि कय कोड़ैक प्रक्रिया । मै.

कमण्डल-सं., टोंटी सँ धारावाला पवित्र जलपात्र । साधु आ पूजाक उपयोगी जलपात्र । सं. तद्भव

कमतिया-विशे., खेती बाड़ीक काज मे नियुक्त । मै.

कमती-सं., एवं विशे., १. निम्न श्रेणीक प्रतिष्ठित व्यक्तिक सम्बोधन । २. वस्तुक अल्पता, कमी । मै.

कमब-क्रि., थोड़ होएब, घटब । मै.

कमवाएब-क्रि., १. कमकराएब । २. काजक श्रम कराएब । मै.

कमयनिहार-विशे., १. उपार्जन कयनिहार । २. खेत के अनुपयुक्त घड़ पात सँ स्वच्छ कयनिहार । ३. निर्धारित व्यय मे आ काज मे कम कयनिहार । मै.

कमरकस-सं., देखू—"डँरकस" । मै

कमरसारि-सं., कमारक काज करैक नियत स्थान । मै.

कमरख-सं., ऐ नामक जड़ी । मै.

कमरथुआ-विशे., गंगा जल लय बैद्यनाथक पैदल यात्री जे कामौर मे जल लय जाइछ । मै.

कमरसाहू-विशे., एक संग एक स्त्रीक दोसर पति । मै.

कमरा-सं.,१. कमारक तिरस्कारक शब्द । २. घरक कोठली । हि. तत्सम

कमरिया-विशे., कामर लय कें बैद्यनाथक पदयात्री । मै.

कमरी-सं., कटहर फलक भीतर अनुपयोगी अंश । मै.

कमल-सं., भारतक प्रसिद्ध राष्ट्रीय फूल । सरोज, पद्म । मै.

कमलगट्टा-सं., कमलक फूल सँ उत्पन्न बीज । मै.

कमलपत्ती-सं., लाल कमलक रंग सन रंग विशेष । मै.

कमला-सं., १. मूत्र, आँखि, जीह कें पीयर करैवाला रोग विशेष । २. मिथिला क्षेत्रक प्रसिद्ध नदी । ३. विष्णुक पत्नी लक्ष्मी । सं. तत्सम

कमलाक्ष-सं., कमल फूलक कठोर बीजक दाना । सं. तत्सम

कमसरही-विशे., थोड़ लगान (कर) वाला खेत । मै.

कमसल-विशे., थोड़ महत्वक वस्तु । मै.

कमहिया-विशे., बोनि करै मे बाधित, बिना मज-दूरी कयनहि । मै.

कमाइ-सं., उपार्जन, श्रमक मूल्यक उत्पत्ति । मै.

कमाइल-सं., उद्यमक ओगाड़, अर्जनक स्रोत । मै.

कमाइल-सं., नौआ कमारक वार्षिक पारिश्रमिक । मै.

कमाउ-विशे., कमाइक जोग, उपार्जन करैक क्षमता-वाला । मै.

कमाएब-क्रि., १. थोड़ करब, छोट बनाएब । २. उद्योग धन्धा करब । ३. खेत कें स्वच्छ करब । मै.

कमानी-सं., लोहाक पातर कड़ा समकत छड़ । मै.

कमाप्त-विशे., त्रुटिपूर्ण, थोड़ । मै.

कमार-सं., बरही, काठ के गढ़ि कय व्यवसाय करै-वाला जाति । मै.

कमासुत-विशे., अधिक कमाइवाला उपार्जन करै-वाला । कमाइक सूरि रखैवाला । मै.

कमी-सं., त्रुटि, घट्टी, भूल । मै.

कमैन-सं., कमारक स्त्री जाति । मै.

कमोठ-सं., सन्डासवाला शुचिशालाक कचकड़ाक बनल बैसकी । अं. तद्भव

कमौआ-विशे., जीविका चलबैवाला। अर्जन करै-वाला। मै.

कमौनी-सं., खेतक फसिल कें स्वच्छ रखबाक हेतु घड़ पात कें उखाड़ि बहार करब। मै.

कमनिहार-विशे., करैवाला। मै.

कर्क-सं., १. राशि विशेष। २ कांकोड़। सं. तत्सम

कर्कश-विशे., कठोर, कड़ा, निर्दय। सं. तत्सम

कर्कशाह-विशे., कठोरता सँ भरल। निर्दय, कड़ा। मै.

कर्णफूल-सं., फूल सन कानक गहना। सं. तद्भव

कर्णवेध-सं., कान छेदैक संस्कार। सं. तत्सम

कर्णमूल-सं., कानक जड़ि तथा कानक जड़ि मे फूलै-वाला रोग। सं. तत्सम

कर्ता-विशे., १. करैवाला। २. पितरक क्रिया कर्मक अधिकारी। ३. ईश्वर। सं. तत्सम

कर्तृति-सं., कृति, कयल कर्म। मै.

कर्तौत-सं., श्राद्धक अधिकार सँ प्राप्त दाय भाग। पिण्ड दत्वा धनं हरेत्। एहि नियमक अनुसार पिण्डदेबाक द्वारें प्राप्त विशेष सम्पत्ति। कर्तृत्व। मै.

कर्तौता-सं., मरणासन्न व्यक्तिक द्वारा अपन क्रिया कर्मक अधिकारीक व्यवस्था। मै.

कर्पूर-सं., सुगन्धित उज्जर रासायनिक पदार्थ। सं. तत्सम

कर्म-सं., कयल गेल क्रिया, कर्मक तीनटा भेद होइत अछि। क्रियमाण, संचित आ प्रारब्ध। वर्तमान अर्थात् प्रत्यक्ष मे जे क्रिया कयल जाइछ से क्रियमाण कर्म थीक। वैह जखन अन्तःकरण मे जमल रहै अछि तँ संचित कहबै अछि। कालक्रमें वैह संस्कार अदृश्य शक्तिक द्वारा फलक रूपें प्रकट होइछ तँ प्रारब्ध, भावी, अदृष्ट आ भाग्य कहबै अछि। सारांश ई जे क्रियमाण प्रत्यक्ष संचित आ प्रारब्ध अप्रत्यक्ष कर्म थीक। एही तात्पर्य्यें लोक कहै अछि। "सत्कर्म करू"। एहि सँ प्रत्यक्ष कर्मक निर्देश आ कर्मपट्टू एवं कर्म सांढ़ सँ अप्रत्यक्ष कर्मक संकेत होइत अछि। ई सबटा कर्म माता पिताक संस्कारो सँ सन्तति मे संक्रमित होइत छै। सं. तत्सम

कर्मकाण्डी-विशे., लोक वेदक कर्मक निर्देश आ व्यवहार (प्रक्रिया) मे निपुण। सं. तत्सम

कर्मकीट-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त कृपण। मै.

कर्माधर्मा-विशे., भादवक इजोरियाक एकादशी। भगवानक करौट फेरैक तिथि। सं. तत्सम

करंकर्र-अव्यय, १. कौआक कटु शब्द। २. कर्ण कटु अव्यक्त शब्द। मै.

करां-सं., पक्षी विशेष। मै.

करांछाउर-विशे., कठोर बिन पाचल गोबरक गोंइठाक छाउर। मै.

करांआ-सं., केराक गाछ मे लगैवाला रोग। मै.

कर-सं., लगान। सं. तत्सम

कऽर-सं., भोजनक ग्रास। डिब्बा मुनैक खप्पा। मै.

कऽऽऽर-सं., भाग, वस्तुक व्यवस्थित घर। प्रयोग—"एक कऽऽऽर मुतने देह दुखायब उचिते थीक।" मै.

करकच-सं., बहारला सँ जमा कयल दूषित पदार्थ। मै.

कऽर करब-क्रि., दाँत सँ हबक मारब। मै.

करकरोआ-सं., रंग विशेष। सेहुक समान रंग। मै.

करकुटुम्ब-विशे., अत्यन्त निकटक सम्बन्धी वर्ग। मै.

कऽऽरगर-विशे., अधिक खयनिहार। मै.

करघा-सं., कपड़ा बीनैक कल। यन्त्र। मै.

करझू-विशे., घोर कारी रंगवाला। मै.

करची-सं., गीरह गीरह पर सँ बहराएल बाँसक पातर कमोजरि। मै.

करछब-क्रि., एक दिश करब। करौटिए हैब। मै.

करछु-सं., नाम डंटीवाला कटोरी सन बर्तन। भात दालि चलबैक साधन। एक प्रयोग "करौछ" सेहो होइत छैक। मै.

करछुल्ली-सं., छोट आकारक करछु। मै.

करजनी-सं., बनैया लत्तीक गोल आ लाल छोट छोट दानावाला विषाक्त फड़। मै.

करजा-सं., रीन। उ. तद्भव

करजान-सं., केराक बाड़ी। केराक वन। मै.

करतेबता-सं., उपनयन विवाह आदि शुभाशुभ काज। कर्तव्यता। सं. तद्भव

करनाल-सं., नाओ घुमबैक काठक पट्टीवाला कील। मै.

करनी-सं., १. पजेबा जोड़ै मे काज अबैवाला शिल्पीक अस्त्र। २. विधि करैक पद्धतिक निर्देश। मै.

करनी-विशे., नीक वा अधलाह कर्तव्य। प्रयोग—"अपने करनी पार उतरनी।" करणीय। सं. तद्भव

करब-क्रि., करैक प्रवृत्ति। मै.

करबीर-सं., फूल विशेष। मै.

करमघट्टू-विशे., अभागल। अधलाह प्रारब्धवाला। मै.

करमसह-अव्यय, धीरें धीरें क्रमशः। सं. तद्भव

करमसाँढ़-विशे., भाग्यशाली, उज्ज्वल प्रारब्धवाला। मै.

करमान-सं., समूह, मेला। प्रयोग—"दुर्घटनास्थल पर करमान लागल लोक रहैक।" मै.

करमा लागब-क्रि., धन भ' क' लोकक एकट्ठा होएब। मै.

करमी-सं., जलाशयक लत्ती विशेष जकर साग खाएल जाइत अछि। मै.

करर-विशे., सुखाकय कठोर बनल मल। मै.

करराह-सं., निम्न मे अथवा आगल मे दाँतक शब्द करैवाला। मै

करसी-सं., अपनै वन मे सुखाएल गोबर। मै.

करहा लागब-क्रि., भूखक डारें पेटक पीठ मे सटब। मै.

करही-सं., पीसल दालिक घोर। मै.

कराकुल-सं., पातर टाङ आ गर्दनि वाला नमहर पक्षी। (लाक्षणिक) एक समान शरीरवाला मनुष्य। (अनादर मे) मै.

कराल-विशे., भयावह। सं. तत्सम

कराहब-क्रि., रोग शोकक पीड़ा सँ रहि रहि व्यथित शब्दक उच्चारण करब। मै.

करिअम्मा-सं., कारी रंगक आमक नाम। मै.

करिआ-विशे., कारी रंगक व्यक्ति। मै.

करिआइन-विशे., कारी रंग बनिगेल वा भरल। मै.

करिआझुम्मरि-सं., स्त्रीगणक खेल विशेष। दू माउगि परस्पर कसिकय हाथ पकड़ि एकटा पैर कें सटाकय एक दोसरक भरें तेजी सँ नर्तत अछि। प्रयोग—"करिया झुम्मरि खेलै छी वगरा बच्चा मारै छी।" मै.

करिऔती-सं., रब्बी कटला पर खेतीक क्रम। मै.

करिक्का-विशे., कारी रंगवाला। मै.

करिछौंह-विशे., कारी सन आभा भरल। मै.

करिछौन-विशे., कालिमा सँ प्रभावित। मै.

करिन्ना/करिन्हा-विशे., कार्य कुशल, कारीगर, स्थापत्य कला मर्मज्ञ। मै.

करिनबह-विशे., करीनक पानि बहैक बाड़ा। मै.

करिनाह-विशे., करीन चलाकय पानि उपछैवाला। मै.

करिनवाहि-सं., करीन चलबैक काज। मै.

करिनार-सं., करीन डूबबै योग्य बनाओल खत्ता। मै.

करिहारी-सं., रब्बी फसिल सम्बन्धी अनेक कार्य। कृषि कार्य। मै.

करीन-सं., नीचाँ सँ उपर पानि उपछि खेत पटबैक काठक बनल बाड़ा जकाँ एक दिस विशेष चाकर नम्मा खेतीक विशेष साधन। मै.

करुआरि-सं., नाओ चलबैक हेतु पानि कें ठेलै लेल दाबि जकाँ नमहर डंटा मे एक छोर पर काठक पट्टी ठोकल वस्तु। प्रयोग—"भैरव धरु करुआरि औ भोला नाथ।" विद्यापति। मै.

करुण-सं., रस विशेष। सं. तत्सम

करुणा-सं., दयालुता। सं. तत्सम

करुना करब-क्रि., अत्यन्त शोकें कानब, दयनीय रुपें कानब। मै.

करुर-विशे., निर्दय, दयाक लसियो नै रखनिहार। क्रूर। मै

करेज-सं., हृदय पिण्ड। भीतरी अंग। मै

करेजी-सं., हृदय पिण्डक मांस। मै.

करेड़-विशे., दाँत कड़कड़ा कय अनिष्टक इच्छा प्रकट कयनिहार। मै

करेत-सं., परम विषाह साँप विशेष। मै.

करैला-सं., लत्ती मे फड़ैवाला तीत स्वादवाला रुचिगर व्यञ्जन। मै.

करोट-सं., वाम दहि भाग देहक फेर। मै.

करौना-सं., काँटवाला गाछ मे फड़ैवाला नमोन गोल छोट दानाक अम्मत फड़। मै.

करौछ-सं., देखू—"करछु"। मै.

कल्लर-विशे., माड़ँ माड़ँक आ ऐंठो कूठ खाइक विचार नैं राखि खाइक हेतु आतुर भिखारी। मै.

कल्ला-सं., मुहक नीचाँ उपरक जोड़, जबड़ा। (हि.) मै.

कल्ला तोड़ब-क्रि., उपर नीचाँ दाँतक पाँती कें जोड़ैक मूल स्थान कें अलग करब। मै.

कल्ला पहाड़-विशे., (लाक्षणिक) पहाड़ सन सक्कत कल्लावाला, अत्यन्त बलगर। मै.

कल्पवृक्ष-सं., (लाक्षणिक) दान करैले उद्यत। सं. तत्सम

कल्हुका-विशे., आइ सँ पहिने वा पाछूक। मै.

कउल-सं., शान्ति, चैन, असुआस। मै.

कल-सं., यन्त्र। मै.

कल-सं., दूनू हाथ पसारिकय जोड़ैक मुद्रा। अञ्जलि। मै.

कलकल-विशे., मधुर ध्वनि। मै.

कलकल करब-क्रि., १. सतत कोनो वस्तु खाइक हेतु लालायित हैब। भूखक द्वारें खाइक हेतु आतुर रहब। २. अनेक धीयापूताक हल्ला गुल्ला करब। मै.

कलकलाएब-क्रि., खयबाक हेतु व्यग्र होएब। मै.

कलकलि-सं., हौहटि (चर्मरोग) कें कुडिऔला सँ उत्पन्न सगरे घाओ। मै.

कलकली-सं., भूखक द्वारें भोजनक आतुरता। मै.

कउलकुशल-अव्यय, स्थिरता आ शान्तिपूर्वक। मै.

कलँगी-सं., मुकुटक उपर देल पंख। मै.

कलगेंआ-विशे., भिन्न आकार प्रकारक पितरिया लोटा विशेष। मै.

कलचब-क्रि., भारी वस्तु कें गड़र घुमबैक लेल चालित करब। मै.

कलछप्पन-सं., अपलाप अर्थात् बहाना बनाकय वास्तविकता कें झाँपब। मै.

कलछब-क्रि., भारी वस्तुक अनुचित ढंगें अपनैं घुमि जाएब। मै.

कल जोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) दूनू हाथ जोड़ि कय प्रार्थना करब। मै.

कलजोड़ी-सं., प्रार्थनाक क्रम मे बान्हल अञ्जलि। मै.

कलटब-क्रि., १. भारी वस्तुक एकदिश उनटि जाएब। २. कोनो वस्तु कें एक बासन सँ दोसर बासन मे करब। मै.

कलटाएब-क्रि., १. एक बासन सँ दोसर बासन मे उझिलब। २. भारी वस्तु कें गर धरबैले उनटाएब। मै.

कलनाद-सं., संगीत एवं वाद्यक प्रिय शब्द। सं. तत्सम

कलपन-सं., पीड़ा देनिहार प्रति आह्। मानसिक व्यथाक प्रभाव। सं. तद्भव

कलपनाथ-सं., जड़ीबूटी विशेष। मै.

कलपब-क्रि., दुखी होएब। दुखदायी पर आक्रोश करब। मै.

कउलबल-अव्यय, शान्तिपूर्वक, चुपचाप। मै.

कलबार-सं., वैश्य जाति विशेष। मै.

कलम-सं., लेखनी, लिखैक नोकवाला साधन। मै.

कलम-विशे., बीज सँ उत्पन्न गाछ कें विशेष गाछक डारि मे जोड़िकय बनाओल विशेष गाछ। मै.

कलम काठी-सं., १. कलम बनबैक योग्य डाँट। २. धानक प्रभेद। मै.

कलमदान-सं., कलम रखैक बासन। मै.

कलमबाग-सं., जोड़लवाला आमक गाछी। मै.

कलमी-विशे., जोड़ डारिवाला गाछक फल। मै.

कलमुहाँ-विशे., कारसन मुहवाला। दुष्ट। स्त्री० कलमुही। मै.

कलयफिरब-क्रि., अनुकूल परिस्थिति आएब। मै.

कलरव-सं., पक्षी सभक मधुर बोली। नेनाक बाजब। मै.

कलर साही-सं., महगीक द्वारें कोनो वस्तुक हेतु सब लोक कें किनबो मे कल्लर जकाँ बनैक स्थिति आ आतुरता। मै.

कलराह-विशे., कल्लर जकाँ करैवाला। स्त्री० कलराहि। मै.

कलश स्थापन-सं., कोनो शुभ काजक अवसर पर कलसा बैसाएब। मै.

कलश-सं., आम आदि गाछक अमिला मुड़ी। मै.

कलसगर-विशे., उपर उठल नमहर छाती गर्दनिवाला हृष्ट पुष्ट लोक। मै.

कलसा-सं., पैंत, तथा पैंतक आकार प्रकारवाला द्रव्यक जलपात्र। मै.

कलसी-सं., बसनी, छोट पैंत बसनीक आकारक धातुक जलपात्र। मै.

कलह-सं., झगड़ा, विरोध। मै.

कलहन्त-विशे., हृदय सँ व्यथित, ग्लानि आ दुख सँ भरल। मै.

कलहाल-सं., हाहाकार, कोलाहल, महगी। मै.

कलही-विशे., झगड़ाहू, झगड़ाक प्रवृत्तिवाला। सं तत्सम

कला-सं., खूरि, गुण। सं.

कलावत्-सं., दाँत पर जमाओल सोनक पत्र। मै.

कलामी-विशे., नामवर, प्रभावशाली। मै.

कलाल-विशे., मद्यक व्यवसायी। मै.

कलाली-सं., दारूक दोकान, मद्यशाला। मै.

कलि-सं., चारि युगक अन्तिम युग। मै.

कलिकाल-विशे., पापमय समय। मै.

कलिङ्ग-सं., देशक एक राज्य। मै.

कलियुग-सं., वर्तमान युग। मै.

कलियुगाहि-विशे., लाजघाखहीन, उद्दण्ड स्त्री। मै.

कली-सं., अविकसित फूल। कोंढी। मै.

कलेकलें-अव्यय, धीरें धीरें। क्रमहि। मै.

कलेजगर-विशे., सबल छातीवाला। हृदयक मजबूत। मै.

कलेजा-सं., छातीक भीतरक छलासन कोमल अंग। फँफड़ा। मै.

कलेश-सं., कष्ट, वेदना। क्लेश। सं. तद्भव

कलै-सं., धातुक द्रवक लेप, पोत। मै.

कलोल-सं., बहुत लोकक एक संग अव्यक्त ध्वनि। मै.

कलौ-सं., मध्याह्नक भोजन। मै.

कलौआ-सं., दुपहरिया दिनक भोजन व्यापार। मै.

कवच-सं., १. अस्त्रक चोट सँ बचबैक हेतु देहक धातुक बनल अंगा टोपी। २. भौतिक (भूत प्रेत आदि अदृश्य) विषय सँ बचबैक हेतु मन्त्र तन्त्रात्मक विधि। सं. तत्सम

कवि-विशे., काव्य कला मे निपुण। सं. तत्सम

कवित्त-सं., कवित्व, कविक पद्यमय कल्पना। छन्द विशेष।

कविता-सं., कविक पद्यमय कृति। सं. तत्सम

कवितास-विशे., कवितामय गप। मै.

कविराहा-विशे., कबीर सम्प्रदाय कें मानैवाला। मै.

कष्ट-सं., दुख, रहै सहैक अव्यवस्था सँ उत्पन्न क्लेश। सं. तत्सम

कषाय-सं., छौ रस मे एक रस विशेष। सं. तत्सम

कस्तन-सं., अंकुश, कार्य करै प्रति जोर दैक चेष्टा। मै.

कस्तर-सं., चिनाओन वस्तुक ढेरी। कूड़ा करकट। मै.

कस्तरा-सं., दही पौरैक बासन। मै.

कस्त-सं., प्रसवक उपरान्त परसौतीक गर्भाशय मे रुकल रक्तविकार (अपरा)। मै.

कसक-सं., हृदय कोन मे दबल व्यथा, पश्चात्ताप। हि. तत्सम

कसकल-विशे., कसिकय बैसल। कानोकान कसल। मै.

कसकस करब-क्रि., देह मे उत्तेजना भरल रहब। देह तन तन करब। मै.

कसकसाएब-क्रि., १. सक्कत कय बैसाएब। २. उत्तेजना सँ देहक ऐंठी बढ़ब। मै.

कँसकूट-सं., काँस पित्तरि मिलल धातुक बर्त्तन। मै.

कसना-सं., कसैक साधन। सक्कत करैवाला वस्तु। मै.

कसब-क्रि., सक्कत करब। मै.

कसबाहि-सं., स्त्रीक अधिक रक्तस्राव। मै.

कसमकस-विशे., अधिक भरल। आँट सँ बेसी कसल। मै.

कसमस करब-क्रि., अधिक भोजन तथा असुविधा सँ विकलताक संग अस्थिरता। मै.

कसमसाएब-क्रि., मानसिक उत्तेजना सँ शरीर चञ्चल होएब। मै.

कसरति-सं., शरीरक गठन बढ़बैले व्यायाम, अंग चालन। मै.

कसरात-सं., कनेक अवशेषक स्थिति। मै.

कसरि-सं., अवशिष्ट स्थिति, बाँकी, शेष। मै.

कसरियाह-विशे., रोगक शेषवाला। मै.

कसरेस-विशे., १. शेष रहैक सम्भावनावाला। २. कठिनता सँ खर्च करैवाला। मै.

कँसहुंडी-सं., काँसक हुण्डी। काँसक वट्टुक। मै.

कसाइ-विशे., निर्दयता सँ जीव कें कटैवाला। वधिक। मै.

कसाइन-विशे., विकृत स्वादवाला, तिताइन। मै.

कसामसी-अव्यय, लगभग, धलफल, कसमस करैक प्रकृति। मै.

कसार-सं., गुड़क संग अनेक मसाला दय चाउरक चिक्कसक मुठरा (लड्डू) जकाँ बनाकय एक प्रकारक मधुर जकाँ पदार्थ जे छठिक डाली मे पड़ैं अछि। भुसवा सेहो कहल जाइछ। मै.

कसाल-सं., बड़का मोटका राड़ी खढ़ जकरा काश सेहो कहल जाइछ तकर वन। मै.

कसीदा-सं., कपड़ा पर सूइ ताग सँ चित्र काढ़ैक विशेष कला। उ. तत्सम

कसीस-सं., औषध, जड़ी विशेष। मै.

कसुआ-विशे., अनेक मसाला मिलाकय कसल भेरि-चाइक अँचार। मै.

कँसेरा-विशे., काँसक तथा आनो धातुक बर्तन गढ़-निहार आ काँसक बनौज कयनिहार। मै.

कसँ-सं., देह मे लगबैवाला प्राचीन कालक सुगन्धित चूर्ण जे कचूर, लोध आदि सुगन्धित द्रव्य मिलाकय बनैं अछि। मै.

कसैया-सं., किशोरक दाँत मे लगैवाला रोग। मै.

कसौटी-सं., सोन जँचैवाला पाथर। मै.

कहकह-अव्यय, दीप्तिमान्, प्रज्वलित (आगि)। मै.

कहकहा लगाएब-क्रि., खूब जोर सँ हँसब। मै.

कहगील-सं., पलस्तर कें समतल करैवाला चौकोर नाम राजमिस्त्रीक काठक डंटा सन वस्तु। मै.

कहतरा-सं., सोभ उतार कान्हवाला गहीर पेंध छोछ। दही पौरैक बासन। मै.

कहनसुनन-विशे., गप सपक प्रसंग मे कहल आ सुनल गेल नीक अधलाह। मै.

कहब-क्रि., दोसरा कें सुनैक योग्य बाजब। मै.

कहबी-सं., लोकोक्ति, फकड़ा। मै.

कहबैका-विशे., नामी, प्रसिद्ध, उचितवक्ता। मै.

कहर-सं., अनर्थ, अप्रत्याशित घटना। उ. तत्सम

कहरब-क्रि., औहि औहि कय रोग आ शोक मे व्यथा प्रकट करब। मै.

कहरिया-विशे., डोली उठबैवाला श्रमिक। मै.

कहाँ-अव्यय, १. कतय (प्रश्नवाचक)। २. अस्वी-कारक शब्द। प्रयोग—"हौ तों भोरे कहाँ गेल छलह? बौआ कें नै देखलहुन। हम कहाँ देखलियैन।" मै.

कहाउति-सं., डिरामनक निश्चय विधिवत् कहा पठबैक विधि। मै.

कहाकही-सं., १. निश्चयात्मक बातचीत। २. झगड़ाक क्रम मे कथोप कथन। मै.

कहात-सं., दुर्भिक्ष, अभाव, अकाल। मै.

कहाती-सं., अकालक द्वारें उपस्थित संकट। मै.

कहाँदनि-अव्यय, वाक्य पूरक परोक्षवर्ती अनिश्चय द्योतक। प्रयोग—"कहाँदनि ओ सब आएल छला। कहाँदनि मारि मे बहुत लोक मुइलै।" मै.

कहाँधरि-अव्यय, कत्तऽ पर्यन्त, कत्ते दूर। मै.

कहा पठाएब-क्रि., सम्वाद पठाएब। मै.

कहावदी-सं., निश्चयात्मक बातक व्यवस्था, प्रतिज्ञा, शर्त। मै.

कहार-विशे., देखू—"कहरिया"। मै.

कहारी-सं., डोली उठाकय लय जाइक जीविका। मै.

कहाली-विशे., रोगी, दुखिताह। मै.

कहासुनी-सं., झगड़ाक रूपें उलहन उपदरक संग परस्परक बातःबाती। मै.

कहि-अव्यय, कहैक क्षमता। प्रयोग—"नै कहि ओ कतय गेला।" मै.

कहिया-अव्यय, समयक प्रश्न, कोन दिन। मै.

कहुखन-अव्यय, कोनो अनिश्चित समय मे। मै.

कहुला-सं., छोट कोहा। मै.

कहौआ-विशे., कहैवाला, सामाजिक रूपें कहैक योग्य। मै.

कहौतिया-विशे., कहाउत लय जाइवाला। मै.

कहौली-सं., कहैक तात्पर्य, कहैक बात। मै.

का

काइ-सं., १. जमल मैली। २. शरीरक नाश करै-वाला रोग। मै.

काँइ-विशे., कृपणता भरल दुष्ट। मै.

काइंकाइं-अव्यय, १. कौआक कटु शब्द। २. कौआक सन अप्रिय शब्द। ३. आतुरता सँ उपेक्षणीय प्रार्थना शब्द। मै.

काइट-सं., तेलक नीचाँ जमल दूषित मैली । मै.

काँइल-सं., १. जूआक खेल मे देल गेल बाजीक वस्तु । २. शरीरक आभा, छवि । मै.

काइन-सं., पहिने सँ संचित विरोधक प्रतिशोध भावना । मै.

काइम-सं., १. बाँस कें चीरि चीरि अत्यन्त पातर नम्मा छड़ । २. बातक स्थिरता । कायम । उ. तद्भव/मै.

काइल-विशे., देखार, प्रमाणित, कायल । उ. तद्भव

काइ लागब-क्रि., १. अवनतिक क्रम धरब । २. मैल जमब । मै.

काँउकाँउ-अव्यय, १. नेन्नाक अदृश्य वस्तुक विभीषिका । प्रयोग—"कौआ ही ! चुप रह नै तँ काँउ-काँउ धऽलेतौ ।" २. अनेक लोकक असम्बद्ध शब्द । मै.

काउच-सं., मुहक ठोर सभक व्यास अर्थात् मुहक चीरा, फाड़ि । मै.

काउनि-सं., मेहीं दानावाला भदवरिया पवित्र अन्न । मै.

काक-सं., कौआ । सं. तत्सम

काँकड़-सं., पैर मे गड़ैवाला कड़ा भूटका पाथरक पैघ कण । मै.

काँकड़ि-सं., लत्ती मे फड़ैवाला पैघ स्वादिष्ट फल विशेष । खरबूज । मै.

काँकमाली-सं., औषधि (जड़ी) विशेष । मै.

काकरमुड़िया-सं., औषध विशेष । मै.

काका-विशे., पित्ती, पिताक भाइ । स्त्री० काकी । मै.

काकु-सं., कण्ठ ध्वनिक विविध भिन्नता । मै.

काँकोड़-सं., धनखेती मे होइवाला भदवारिक पैघ कीट विशेष । मै.

काँख-सं., बाँहिक जड़िक निचला भाग । बाँहि आ पाँजरक जोड़वाला भीतरक भाग । मै.

काँखी-सं., पोर आ गीरह सँ उगल अंकुर । मै.

काँखी लागब-क्रि., जाँघक दोगवाला स्थान मे कुड़ि-यैनी सँ छनछनाएब । मै.

काग-सं., १. कौआ । २. सीसी बोतलक कौड़िलाक ढेंपी । मै.

कागज-सं., स्पष्ट । लिखैक आधार पत्र । मै.

कागजीकाज-सं., लिखापढ़ी कय रखैवाला काज । मै.

कागदोस-सं., बैसारी खेल । कोनो वस्तु लोकि लोकि कय खेल । मै.

कागा-सं., कौआ । मै.

काङ्क्षा-सं., इच्छा । सं. तत्सम

काच-सं., सीसा । मै.

काँच-विशे., अजोह, अपक्व । मै.

काँचनोन-विशे., पठनोआ, बिन रान्हल नोन । मै.

काचर कुचर-अव्यय, मेघक सञ्चार, मेघ लगैक क्रम । मै.

काँची-सं., आँखिक विकार, उज्जर मल । मै.

काछ-सं., दून जाँघक जोड़वाला अंग । इन्द्रिय आ जाँघक दोग । राग । मै.

काछब-क्रि., द्रवणशील वस्तु कें पोछि उठाएब । मै.

काछ लागब-क्रि., जाँघक दोग मे छीला पड़ब । मै.

काछु-सं., दीर्घजीवी जल जन्तु विशेष । मै.

काज-सं., कार्य, कर्त्तव्य । मै.

काजक-विशे., काज मे अबै योग्य । मै.

काजर-सं., स्निग्ध द्रवक अंजन, आँखिक सिङार । मै.

काजुल-विशे., काज करै मे दक्ष । मै.

काञ्चन-सं., सोन, सुवर्ण । सं. तत्सम

काँट-सं., १. कन्टक, वनस्पतिक नोकवाला रोम । २. काँटक आकारक दानावाला गहना विशेष । मै.

काट-सं., १. विरोध । २. छवि, रचना शैली । मै.

काट करब-क्रि., भितरैं भीतर विरोध करब । मै.

काट काटब-क्रि., हरदम विरुद्धे व्यवहार राखब । मै.

काँटछाँट-सं., कनेक कनेक काटिकय मनोनुकूल बनाएब । योजना मे थोड़ेक छाँटब । मै.

काटछाँट-सं., कोनो वस्तु कें काटि आ छाँटि थोड़ करब । मै.

काटब-क्रि., खण्डित करब, टुकड़ी करब । मै.

काँटा-सं., १. पैघ नोकवाला ठोर्कक लोहक कील । २. स्वेटर आदि बीनैक नोकवाला वस्तु । मै.

काटि-सं, देखू—"काइट" । मै.

काँठी-सं., गोल नाम लोहाक पातर ठोर्कक वस्तु । मै.

काँटू-सं., दाना झाड़ल मड़ुआक सीस । मै.

काठ-सं., काष्ठ, लकड़ी । सं. तद्भव

काठिन-सं., कठिनता । काठिन्य । सं. तद्भव

काठी-सं., अत्यन्त पातर सक्कत डाँट । मै.

काँडरि-सं., सरिसो आदि फसिलक भोथार पात। मै.

काड़ा-सं., कड़ी जकाँ मोड़ल पैरक गहना। मै.

काँढ़ि-सं., माल जालक मुह मे डारैक लेल बनाओल बाँसक धारदार चोंगा। मै.

काढनि-सं., खाइक हेतु बासन सँ भोजन बहार करैक प्रक्रिया। मै.

काढ़ब-क्रि., एक बासन सँ आन बासन सब मे भोजन परसब। मै.

काढ़ा-सं., औषध हेतु जड़ी बूटीक संग औंटल पानि। मै.

काँण-सं., गेँटि गेँटि कय राखल वस्तुक ढेरी। मै.

काँणी-सं., मालजालक कण्ठक भीतरक धाओ। मै.

कात-सं., हटिकय अलग होइक संकेत शब्द। दूर, किनार ओर। मै.

कात करब-क्रि., हटाएब, अलग करब, किनार होएब। मै.

कातर-सं., १. बाधबोन मे आरिधूर पर चतरल बीटवाला विशेष प्रकारक घास। २. दीन दुखी। सं. तत्सम

काता-सं., धाँह। प्रयोग—"हनहन कर तुअ काता।" —विद्यापति। मै.

काँति-सं., १. शोभा, लावण्य, कान्ति (सं. तद्भव) २. जूआ खेलक बाजी राखब। मै.

कातिक-सं., मास विशेष, कातिक। सं. तद्भव

काती-सं., घासक कुट्टी कटैक अस्त्र। मै.

कादो-सं., पानि सँ घूलल माटि, थाल। मै.

कान्त-विशे., प्रियतम, प्रणयी। सं. तत्सम

कान्तीलोहिया-विशे., काँच एवं मटियाइल लोहक ढकना लोहिया। मै.

कान्ह-सं., धुट्टाक आगू भाग मे अड़बैक लेल दू कुब्बो जकाँ कान। बाहु मूल सँ उपर। मै.

कान्ह लगाएब-क्रि., अपन कन्हा पर उठाएब। (लाक्षणिक) कोनो प्रकारक भार उठबै मे जोर लगाएब। सहायता करब। मै.

कान्ह लागब-क्रि., बहुत दिन पर अथवा अधिक जूआ वा हरक पालो उठबैक कारणें बड़दक कान्ह फटब। मै.

कान्ही लागब-क्रि., अनिच्छाक कारणें अरुचि प्रकट करैक हेतु कनन मुह होएब। मै.

कान-सं., श्रवणेन्द्रिय, कर्ण। सं. तद्भव

कानन-सं., कनैक चेष्टा आ प्रसंग। जंगल। सं. तद्भव

कान पाथब-क्रि., आनक बात सुनैले पूर्ण साकांक्ष बनब। मै.

कानब-क्रि., नोरक संग व्यथित शब्द करैत दुःख प्रकट करब। मै.

काना-सं., खेतक कोनवाला स्थान तथा सिरौड़क मोड़। प्रयोग—"अनन्य एकचास काना पर कँक चास।" मै.

कानाकानी-सं., १. अनेक कान सँ सुनि आएल शब्द। २. भीतरी झगड़ा। मै.

कानाफूसी-सं., फुसर फुसर गुप्त वार्ता। मै.

कानि-सं., मन मे सञ्चित पहिलुक विरोध। मै.

कानी-सं., १. माथक केश कँ कपाड़ दिश काटिकय बनाओल कोन। प्रयोग—"शंकरवा कानी तानी छटाकय बिबाह करय चलल अछि।" २. कोनो वस्तुक बड़ल आवश्यक अंग। प्रयोग—"ऐ खुट्टाक कानी (बड़ल अंग) मारला सँ दउरी नीक नहि बैसत।" ३. घरक दावा (चारू दिशक उँचगर किनार) सीढ़ी आ देवालक कोन। प्रयोग—"गोबर माटि अथवा सुर्खी सीमेन्ट सँ कानी भरि दियौ।" ४. कोनो ऊँच स्थानक कड़नी। प्रयोग—"कानी पर नैं बैसू खसि पड़ब।" मै.

कानुनि-विशे., हलुआइ जातिक स्त्री। मै.

कानू-सं., हलुआइ। मै.

कानून-सं., नियम सँ विधान। उ. तत्सम

काप-सं., बाँसक कमची, खड़पात आदि केर तेज धारवाला कोर जाहि सँ अनायास देह कटि जाइत छैक। मै.

कापी-सं., लिखैक बही। मै.

काफर-सं., जन्मौटि नेन्ना कँ सोन्हाओल दैक सुथनी सन काष्ठौषधि। मै.

काम-सं., १. काज। २. मैथुनक इच्छा। ३. इच्छा। उ./सं. तत्सम

कामचोर-विशे., काज करै सँ देह बचबैवाला। मै.

कामत-सं., खेती बाड़ीक क्षेत्र (विस्तृत)। उ. तत्सम

कामति-विशे., १. कामत परक निर्देशक। २. प्रतिष्ठित उपनाम। मै.

कामदेव-सं., स्त्री पुरुषक वासनाक देवता । सं. तत्सम

कामना-सं., अभिलाषा । सं. तत्सम

कामरि-सं., कटहरक कोआ सँ अतिरिक्त सौँन सन खावावाला पदार्थ । प्रयोग—"की खँच की कामरि खँच ।" मै.

कामहि-विशे., उद्योग धन्धाहीन, श्रम मे बाधित । मै.

कामोद-सं., मेहीँ सुगन्धित धानक प्रभेद । मै.

कामौर-सं., उत्तर वाहिनी (सुलतानगंजक) गंगाक पवित्र जल जाहि बासन मे अर्थात् बाँसक पेटरा मे सुरक्षित कय यात्री पैदल जाकय बैद्यनाथ केँ चढ़बै अछि तकर भार । मै.

कायर-विशे., पुरुषार्थहीन लोक । डेरबुक, कामचोर । मै.

कायस्थ-सं., बुद्धिजीवी जाति विशेष । मै.

काया-सं., शरीर, देह । सं. तद्भव

कार्ज-सं., काज । सं. तत्सम

कार-सं., १. क्रिया, कर्त्तव्य । २. छोट मोटरगाड़ी । अं. तत्सम/मै.

कारक-विशे., १. क्रियाक उत्पत्ति मे सहायक । २. काज कयनिहार । सं. तत्सम

कारण/कारन-सं., हेतु । सं. तत्सम/तद्भव

कारनी-विशे., रोगी, व्याधित । भूत-प्रेत पीड़ित । मै.

कारबार-सं., काजक समूह, अनेक व्यवसाय । मै.

कारा-सं., जहल जेल । बन्दी गृह । सं. तत्सम

कारिख/कालिख-सं., कारी रंगक दाग । मै.

कारी-सं., अन्धकारवाला रंग । खापड़िक पेनक रंग । मै.

कारीगर-विशे., कला मर्मज्ञ, सूतिहार । हि. तत्सम

काल्हि-अव्यय, बीतल निकटतम दिन, अबैवाला निकटतम दिन । मै.

काल्हुक-विशे., १. (लाक्षणिक) अत्यन्त कम समयक । २. काल्हि भेनिहार । मै.

काल-सं., समय । मै.

कालकन्टक-विशे., (लाक्षणिक) दुखदायी । पीड़ाक मुख्य कारण । मै.

कालकाटब-क्रि., कोनो प्रकारेँ समय खेपब । कष्ट सँ जीवन बिताएब । मै.

कालटारब-क्रि., कोनो नियत समय पार कयला सँ आगूक हेतु समय बढ़ाएब । मै.

काली-सं., आदिशक्ति, देवी, शासन शक्ति । मै.

काँवकाँव-अव्यय, कौआक बाजब । मै.

काश-सं., कोशी कातक मोट नाम राड़ी खढ़ । मै.

काशी-सं., ज्योतिर्लिंग विश्वनाथ स्थान । विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थान । सं. तत्सम

काशीवाल-विशे., १. काशी मे भेनिहार । २. देवस्थल काशीक पण्डा । मै.

काष्ट-सं., काठ, हि० लकड़ी । सं. तत्सम

काँस-सं., चानीक भिन्न पाण्डुर रंगक धातु, कांस्य । सं. तत्सम

कास-सं., खोंखी रोग विशेष । कफ रोग । सं. तत्सम

कासश्वास-सं., खाँसी रोग, कफक प्रकोप सँ उत्पन्न दम फूलैवाला रोग । सं. तत्सम

कासर-सं., बनैया भैंसा (नेपाली मैथिली) । सं. तत्सम

काह-सं., धोला उत्तर पानिक संग बहराएल मैली । मै.

काहकूह-सं., भीतरक मैलीक संग उपरक दुर्गन्ध आ घिनाओन द्रव । मै.

काहि काटब-क्रि., व्यथित होइत जीयब । मै.

काहिर-विशे., अहदी आलसी, उत्साहहीन । उ. तद्भव

काहेकुहे-अव्यय, हिन्दी बोली । मै.

कि

कि-सम्बन्धयोजक अव्यय, प्रयोग—"आहाँ रहब कि जाएब ।" मै.

किकियाएब-क्रि., अव्यक्त आर्त शब्द करब तथा कराएब । प्रयोग—"एना कुकुर जकाँ अनेरे किकिआइ छी । व्यर्थ नेन्ना केँ किकियबै छह ।" मै.

किचड़-विशे., पानि हेरयला सँ घूलल माटिवाला स्थान । मै.

किचब-क्रि., उपर सँ जोर दय नीचा दाबब । प्रयोग—"ओ तँ क्रोधक लेल दाँत किचऽ लगला ।" मै.

किचकिच-अव्ययरूपक विशे., पानि, हेराएल माटि पर लात खूँदनि सँ बनल असर्थ स्थान । मै.

किचकिचाएब-क्रि., कोनो विशेष अथवा खिसियाह व्यक्ति कें विशेष बात सँ बारम्बार बिगड़ाएब । मै.

किचकिचाह-विशे., १. अनेरो कोनो बात सँ सतत बिगड़निहार । २. पानि माटि सँ बनल असर्थ । मै.

किचाड़-सं., माटि पानि सँ विकटता । मै.

किचाड़ब-क्रि., माटि पानि एक करब । मै.

किच्चिन-सं., स्त्री जातिक प्रेत विशेष । (यक्षिणी) मै.

किछु-अनिश्चयवाचक सार्वनामिक अव्यय, प्रयोग–"हमरा किछु कहैक अछि ।" मै.

किट किटाएब-क्रि., दाँत बहार कय दाँतक शब्द करब । मै.

किड़री-विशे., भुजली पर आ भिजौली पर पथरायले (कड़ा बनले) रहुवाला दलिहन वा आन भोज्य पदार्थ । मै.

किता-सं., नमती आ चकराइ मे बिस्तृत क्षेत्रक परिधि । मै.

किदनि-अनिश्चयवाचक सार्वनामिक अव्यय, कोनो (अविश्वित) विषय । मै.

किन्नरि-सं., सामान्य मानव सँ भिन्न सुन्दरता मे प्रसिद्ध देव योनिक आ गिरि जनक स्त्री जाति । पु० किन्नर । मै.

किन्नहु-अव्यय, कोनो प्रकारें, कथमपि । मै.

किनक/किनकर-प्रश्नवाचक सर्वनाम, सम्बन्ध कारकक रूप । मै.

किनका-प्रश्नवाचक सर्वनामक कर्मकारकक रूप । मै.

किनलहा-विशे., कीनिकय आनल वस्तु । मै.

किनहेर-सं., ऊँच स्थानक तट, कात । मै.

किनार-सं., कछेर, तट, कात । मै.

किनारि पाड़ब-क्रि., नाकक भरेँ अस्पष्ट शब्द करब । मै.

किनारी-सं., धोती आ शाड़ीक पाढ़िक रूपें देल जाइवाला सुन्दर चमकदार वस्तु । मै.

किनुआ-विशे., कीनल गेल वस्तु । मै.

किने-अव्यय, नाका पूरक काकु । प्रयोग–"बुझलौ किने ? ओजे किने से एतबा कहि चोट्टहि घूमि गेला ।" मै.

किम्मति-सं., १. पराक्रम, पौरुष । २. मूल्य, दाम । उ. तद्भव

कियाल-विशे., जोख तौल करैवाला । मै.

कियै/कियैक-अव्यय, हेतुक प्रश्न, कोन कारणेँ । मै.

किरै-सं., कपड़ा बीनैक कल मे बैं (बय) कें सरियबैत रखनिहार सूतक बनल यन्त्र । मै.

किरकिराएब-क्रि., कटु शब्दें दाँत बजायब । प्रयोग–"अनेर नेन्ना नँ सूतल मे दाँत किरकिरबै छै । मै.

किरण-सं., ज्योति, प्रकाश । सं. तत्सम

किरदानी-विशे., कयल काज, कृत्य । मै.

किरात-सं., पर्वतक वनवासी, असभ्य मानव । सं. तद्भव

किराना-सं., मानव जीवन मे नित्य उपभोग योग्य सामान्य सामग्री । मै.

किरानी-विशे., कार्यालय मे लेखा जोखा मे नियुक्त लिपिक । उ. तत्सम

किरासन-सं., मटिया तेल । अं. तद्भव

किरिया-सं., १. शपथ । २. श्राद्धादि कर्म । मै.

किरीच-सं., काठक गोल नाम छड़ीक खोल मे राखल जाइवाला घातक अस्त्र, गुप्ती । मै.

किरीट-सं., मुकुट । सं. तत्सम

किल्ला-सं., १. माल जाल बन्हैक खूट्टा, कोनो वस्तु मे ठोकैक लेल सक्कत डंटा । केवाड़ बन्न करैक चलता कील । २. गढ़ । मै.

किल्ली-सं., केवाडक, दुनू पट्टा कें भीतर सँ बन्न करैवाला । मै.

किलकारी-सं., छोट छोट नेन्नाक मधुर ध्वनि । मै.

किलहोरि करब-क्रि., व्यर्थ हल्ला मचाएब । मै.

किसलकार-सं., खेती आ खेतीक समय । मै.

किसान-विशे., खेतिहर । खेती मात्र जीवनवाला । मै.

की

की-अव्यय, प्रश्नवाचक ? । मै.

कीचनि-सं., माटि कें पानिक संग लात सँ मिलबैक क्रिया । मै.

कीचब-क्रि., १. खढ़ पातक संग माटि कें लात सँ दाबि दाबि पानि मे घुलाएब । २. दुख दैक ध्येय सँ ककरो लात मारि मारि दबाएब । मै.

कीट-सं., वृक्ष आ स्पर्श दोष सूक्ष्म जीव। मै.

कीड़ा-सं., छोट छोट उड़ैवाला ससरैवाला जन्तु अति सूक्ष्म कीड़ी। मै.

कीपा-सं., छोट सँ छोट लकड़ीक बनाओल डिब्बा। मै.

कीर्ति-सं., सुकर्म सँ उत्पन्न प्रतिष्ठा, नाम, यश। सं. तत्सम

कील-सं., १. स्तोत्र विशेष। २. दू वस्तु कँ जोड़ैवाला छड़। ३. जाँतक पाट अड़ैलेल बीचक खूट्टा। मै.

कु

कुइआँ-सं., सामान्य इनार। मै.

कुइर-विशे., कारी सँ भिन्न (भूअर) आँखिक पुतरी। मै.

कुइरा-विशे., कुइर आँखिवाला। मै.

कुकर्म-सं., शास्त्र लोक सँ भिन्न अधलाह कर्म। मै.

कुकर्मी-विशे., निन्दित कर्म करैवाला। मै.

कुकरानूझि-सं., कुकूर जकाँ एकै बेर, एकै वस्तु कें हथियबैक बहुत लोकक चेष्टा। मै.

कुकुरचालि-विशे., कुकुर जकाँ अनैष्ठिक प्रकृतिवाला। मै.

कुकुरमाछी-विशे., कुकुरक देह पर रहैवाला भिन्न जातिक विशेष माछी। मै.

कुकुरानूझि-सं., कुकुर जकाँ एक वस्तु पर अनेक लोकक झपटैक यत्न। मै.

कुकुहाएब-क्रि., कानक भीतर कुड़ियैनी, अंगुलि दय कानक भीतर कुड़ियाएब। मै.

कुकूर-सं., कुत्ता। स्त्री० कुत्ती। सं. तद्भव/मै.

कुगर-विशे., अनुचित ढंगे, हानिकारक रुपेँ बैसल। मै.

कुङ्कुम-सं., सिन्दूर सँ अतिरिक्त चानन रुपक लाल रंगक गर्दी। मै.

कुच्चर-विशे., फूसि बातक दोष थोपि अनका दोषी, निन्दित करैवाला। मै.

कुच्चा-विशे., आमक अजोह गुद्दा कें चूरिकय बनल अँचार विशेष। मै.

कुच्ची-सं., खढ़, पाट, सोन आ केश आदि मृदु वस्तु कें आवश्यकतानुसार मोट पातर बन्दाक आगू भाग मे बान्हि अगिला छोर काटि अगिमा मुहकें एक रंग चौरस बनाकय चित्र बनबै सँ ल' क' कुम्हारक बासन गढ़ब आ घढौल जाइवाला साधन। मै.

कुच-सं., स्तन, युवतीक स्तन। प्रयोग-"कुच युग चारु चकेवा"—विद्यापति। मै.

कुचकुच-विशे., जकर स्पर्श सँ देह मे कुड़ियैनी आ पीड़ा होअए तेहन खढ़ पात आ झोल आदि पदार्थ। मै.

कुचकुचाहन/कुचकुचाह-विशे., कुचकुच जकाँ विकृत स्वादवाला पदार्थ। मै.

कुचब-क्रि., जड़ि दिस पकड़िकय मूड़ी दिसक भाग कें भूमि पर चूरब। तस्यक दाना झारब। मै.

कुचरकाचर करब-क्रि., मेघक आविर्भाव होयब। मेघक अधिक संचार होएब। प्रयोग—"तिनासँक-रातिक बिचेँ मेघ कुचर काचर करितेँ छै।" मै.

कुचरब-क्रि., मधुर अव्यक्त शब्द करब। प्रयोग—"मिथिला मे दृढ़ विश्वास छै जे आङन मे जँ कौआ कुचरैछ तँ ओ शुभ सम्वादे कहैछ।" मै.

कुचराह-विशे., उपर सँ सिद्ध रहलो पर भीतर सँ असिद्ध अन्न। मै.

कुचाएब-क्रि., चुराएब, कुचि कुचिकय झरबाएब। मै.

कुचाठ-सं., अचानक कुचल जकाँ चोट लगला सँ उत्पन्न वेदनाक संग घाओ। मै.

कुचालि-सं., असामाजिक अधलाह चालि। मै.

कुचेष्टा-सं., आनक निन्दापूर्वक मुद्रा आ आचरणक उद्घोषण। मै.

कुचेष्टी-विशे., कुचेष्टा करैक प्रवृत्तिवाला। मै.

कुचैल-विशे., घिनाओन, असभ्य रहनिहार। मै.

कुचौठ-सं., दाँत तर ठीह दबला सँ उत्पन्न क्लेश। मै.

कुछब-विशे., परस्पर बेमेल। मेल नहि खाइक योग्य। मै.

कुछबि-विशे., आकर्षणहीन देहक छबिवाला। सं. तत्सम/मै.

कुज-सं., मंगल ग्रह। सं. तत्सम

कुजड़ा-विशे., तरकारीक वस्तुक व्यवसायी। मै.

कुजोखी-सं., असावधानी, प्रमाद, गलती। मै.

कुजुक-सं., असावधानीक क्रिया, गलती सँ भेल हानि। मै.

कुञ्ज-सं., सघन वन आदि सँ सुन्दर सुसज्जित स्थान। मै.

कुञ्जवन-सं., कृत्रिम वनवाला स्थान । मै.

कुञ्जी-सं., ताला खोलैक लगवैक यन्त्र । मै.

कुट्टा-विशे., जाँत सिलौट सब कें कूटनिहार । मै.

कुट्टी-सं., १. घास पात कें खण्ड खण्ड कय मालक ग्रास । २. कोनो नियम पर ककरो धान आ चूरा कटैक भार । मै.

कुटकुट करब-क्रि., दाँत सँ कठोर वस्तु फोड़ैक शब्द करब । मै.

कुटकुट काटब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो वस्तुक दायित्व अकच्छ लागब । मै.

कुटकुटाकय लागब-क्रि., तीव्रता सँ वेदना उत्पन्न होएब । मै.

कुटकी-सं., १. कोनो वस्तुक छोट छोट खण्ड । (लाक्षणिक) कटु सत्य अप्रिय लागब । मै.

कुटनियाँ-सं., धान आदि कुटैक सिलसिला । मै.

कुटनिहारि-विशे., धान चूरा कूटैवाली । मै.

कुटनी-विशे., १. कृत्रिम आ स्वत: ठाम ठाम पर हाथ पैर मे बनि गेल खद्धा । २. कूटैक व्यवसाय वाली स्त्री । ३. कुट्टिनी, फुसलाकय स्त्री पुरुषक अनुचित सम्बन्ध आ विरोध करवैवाली स्त्री । मै.

कुटबी-सं., सरस तरकारीवाला पदार्थक छोट छोट खण्ड । मै.

कुटमारय-सं., कुटुम्ब अर्थात् माननीय सम्बन्धिकक ग्राम । मै.

कुटमैता/कुटमैती-सं., सम्बन्ध जोड़ैक योग्यता । सम्बन्ध जोड़ैक स्थान । मै.

कुटाइ-सं., कुटैक कार्यक क्रम, कुटैक पारिश्रमिक । मै.

कुटाएब-क्रि., कुटैक काज कराएब । मै.

कुटाओन-सं., कूटैक बोनि । मै.

कुटिया-सं., १. कूटैक लगातार काज । २. अत्यन्त छोट फूसक घर । मै.

कुटी-सं., पवित्र आलयवाला छोट सन घर । मै.

कुटुम-विशे., अपन समाजक लोक । सम्बन्धी । स्त्री० कुटुमिनी । कुटुम्ब, कुटुम्बिनी । सं. तत्सम

कुटुरकुटुर-अव्यय, कड़ा वस्तु चिबवैक शब्द । मै.

कुठ्ठ-विशे., कठिनता पूर्ण जटिल, काज । मै.

कुठाठ-सं., उग्र विरोधमय बाधा । मै.

कुठार-सं., परशुरामक प्रसिद्ध अस्त्र । कुड़हरि । सं. तत्सम

कुठाम-सं., १. अपरिचित, अनभुआर स्थान । २. गुप्ताङ्ग आ ओकर परिसरक कोमल अंग । ३. अयोग्य स्थान । मै.

कुड़कुड़ाएब-क्रि., भूजल आ तरल वस्तु जे थोड़बैक प्रयास सँ टूटैत हो तकरा दाँतें दबाकय कुड़कुड़ शब्द करब । मै.

कुड़नी-सं., पैसक छोट रूपक माटिक बासन । मै.

कुँड़ली-सं., कुण्डली बिम्ब फल, व्यञ्जनक हेतु सुस्वादु पदार्थ । बरैक पानक बरेब मे अधिक उपजैवाला व्यञ्जन । सं. तद्भव

कुड़िया-सं., भिन्न भिन्न लोक ले अलग अलग लगाओल भाग (अंश) । मै.

कुड़ियाएब-क्रि., १. देहक चमड़ा मे नह सँ मर्दन करैक इच्छा जागब तथा मर्दन करब । २. छिरियाएल वस्तु कें समेटिकय एक ठाम एक कूड़ी (ढेरी) बनाएब । मै.

कुड़ियैनी-सं., चमड़ा पर मर्दन करैक आवेग । मै.

कुड़ूर-सं., मुह मे पानि लय धारा रूपें फेंकब । मै.

कुढ़ब-क्रि., कोनो बात सँ खिसिया उठब । मै.

कुढब-सं., अधलाह आकृति, कुत्सित चेहरा । मै.

कुढ़ाएब-सं., कोनो विशेष बातें ककरो बिगड़ा दैक चेष्टा करब । मै.

कुढ़िया-सं., चाकर कम अधिक ठाढ़ कानवाला कड़ाही । मै.

कुण्ठा-सं., उचित मनोगति तथा प्रतिभाक अवरोध । सं. तत्सम

कुण्डली-सं., १. जन्म कालक राशि एवं ग्रह गतिक चित्रणक संग विवरण । २. लतीक छोट फल विशेष, बिम्ब फल । सं. तत्सम

कुण्ड-सं., प्राकृतिक स्रोतवाला पहाड़ी खत्ता । सं. तत्सम

कुण्डाबोर-विशे., अत्यन्त गाढ़ रंग सँ रंगल । मै.

कुण्डी-सं., १. पाथरक पैघ कटोरा जाहि मे पीसैवाला पदार्थ—भाङ, नोसि विशेष काठक सोंटा (डण्टा) क मूठ सँ घसिकय पीसल जाइछ । २. केवाड़क जिञ्जीर । मै.

कुत्ता-सं., कुक्कुर । मै.

कुत्थनि-सं., अनेर अथवा व्यथा सँ अथवा देहक दुर्बलता सँ अव्यक्त ध्वनिक संग जोर लगवैक स्वभाव । मै.

कुत्थब-क्रि., रोगक व्यथा, दुर्बलता आ अभ्यास वशेँ ध्वनिक संग ओर लगबैक यत्न करब। मै.

कुत्था-सं., मूलव्याधि रोग, जाहि मे बिना कुथने कोनो उपाय नै रहैछ। मै.

कुत-सं., कोनो वस्तुक अनुमान सँ परिमाणक निश्चय। मै.

कुतर्क-सं., अनुचित युक्ति। सं. तत्सम

कुतरब-क्रि, थोड़ थोड़ कय दाँत सँ काटब। मै.

कुतलम सं., चटनीक हेतु फल विशेष। मै.

कुताक-विशे., उचित पाकहीन वस्तु। मै.

कुतिया-सं., कुत्ताक स्त्री जाति। मै.

कुतुरकुतुर-अव्यय, कुत्ताक बच्चा कें बजबैक शब्द। मै.

कुदकब-क्रि., कुदल जकाँ चलब, आने कारणेँ विवशता सँ कूदल जकाँ होएब। मै.

कुदकाएब-क्रि., कुदाकुदा कय चलाएब। छोट नेन्ना कें उपर उछलाएब। मै.

कुदान-सं., १. अनुचित रूपक दान। २. कुदैक निरन्तर क्रम। मै.

कुदिन-सं., अशुभकारी दिन। अधलाह दिन। मै.

कुदेश-सं., अपन समाज सँ भिन्न संस्कार वाला देश। मै.

कुन्द-सं., फूल विशेष। मै.

कुन्नह-सं., दाबल पहिलुक बैर। मै.

कुन्नी-सं., कठोर वस्तुक पैघ कणवाला गर्दी। मै.

कुनेट-सं., विधिहीन क्रिया सँ उत्पन्न दुष्परिणामक प्रभाव। मै.

कुप्पा-सं., नाम आ गोल आकारक धातुक पैघ वर्तन। (विशे.) अन्त: क्रोध आ बढ़ाइ सँ गुम्म। मै.

कुप्पी-सं., कुप्पाक छोटका रुप। मै.

कुप्प होएब-क्रि., भीतरेँ भीतर कुपित रहब। मै.

कुपकड़-सं., शान्तियोक स्थिति मे बल सँ विरोधक उत्पत्ति। मै.

कुपच-विशे., बिन पचल (मल)। मै.

कुपथ-विशे., १. स्वास्थ्य मे हित नहि करैवाला। कुपथ्य। २. अधलाह बाट (लाक्षणिक) दुराचारी। सं. तद्भव

कुपित-विशे., तमसाएल। सं. तत्सम

कुपीठ-विशे., अबैजाइ मे प्रतिकूल लगैवाला। मै.

कुफाड़ी-विशे., बिच्चे मे झगड़ा उपस्थित कय लड़ाइ रोपैवाला। मै.

कुब्बड़-सं., पीठ पर जन्मजात उगल हड्डी आ माँस जाहि सँ शरीर झुकि जाइछ। मै.

कुबड़ा-विशे., कुब्बड़वाला। मै.

कुब्बी-सं., लाठी, ठेङा आ आड़ुरक आगू भागक ठोकर। मै.

कुब्भी-सं., बाँस काठ मे उगल अनावश्यक घातक अंश। मै.

कुबेर-सं., १. अनुचित वा अनुपयोगी समय। २. धनक देवता कुबेर। मै.

कुभाँज-विशे., बेउरेब बनल, कठिनता भरल कठिनाह। मै.

कुभेला-सं., उचित सेवाक अभाव, अनास्था, उपेक्षा। मै.

कुम्भ-सं., १. राशि विशेष। २. घैल। ३. चारि ठाम हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन आ नासिक मे १२ वर्ष पर लगैवाला पुण्यक अवसर। सं. तत्सम

कुम्मठ-सं., इनार सँ पानि खींचैवाला चमड़ाक पैघ बासन। मै.

कुम्मर-विशे., कुमार, सुन्दर, कोमल, किशोर। मै.

कुम्हर-सं., लत्ती मे फड़ैवाला उज्जर पैघ फल। कूष्माण्ड। मै.

कुम्हरा-सं., १. बड़का बिरनीक माटिक बनाओल खोंता। २. माटिक बासन गढ़निहार। मै.

कुम्हरौट-सं., कुम्हारक उपयोगी माटि। मै.

कुम्हरौड़ी-सं., कुम्हर कें मेही भुजकी कें बेसन मे सानि बनाओल रौद मे सुखाओल बड़ी। मै.

कुम्हरार-सं., कुम्हारक बासनक व्यवसायक स्थान। मै.

कुम्हलाएब-क्रि., अधिक ताप सँ मौलाएब। मै.

कुम्हार-सं., माटिक बासन गढ़ि पकबैक व्यवसाय करैवाला जाति। मै.

कुम्ही-सं., पानि पर पसरैवाला जंगल। मै.

कुम्हैन-सं., कुम्हारक स्त्री जाति। मै.

कुमर्म-सं., जाहि ठामक चोट सँ प्राणक डर रहए एहन अत्यन्त कोमल अंग। मै.

कुमरठेला-विशे., अधिक बैस धरि बिन बिवाहल रहनिहार। स्त्री० कुमरठेनि। मै.

कुमरम-सं., कुमार रमण। विवाह आ उपनयन सँ एक दिन पहिने कनिया वरक्षाक विधि। मै.

कुमराएब-क्रि., मात्र बालक निकट भविष्य मे प्रसवक लच्छन स्वरुप थन पुष्ट होएब। मै.

कुमार-विशे., असंस्कृत अर्थात् बिना उपनयन कयल बालक किशोर आ अविवाहित युवक। नेपा भुटका। स्त्री० कुमारि। मै.

कुमुद-सं., सरपोख लाल साँझ मे फुलाइवाला पोखरि मे होइवाला कमल सन फूल। मल कोका। सं. तत्सम

कुमुदनी-सं., १. पानि मे होइवाला राति मे फुलाइ वाला उज्जर फूल। भेट। २. स्थलक छोट छोट गाछक उज्जर फूल। मै.

कुयोग-सं., अधलाह योग, साधन आ समय सन्तुलनक अभाव। सं. तत्सम

कुर्ता-सं., स्त्री पुरुषक देहक अङ्गा। उ. तत्सम

कुर्मी-सं., श्रमिक जाति विशेष। मै.

कुर्रा-सं., कुरूर, मुह सँ धारा रुपेँ पानि फेँकैक क्रिया। मै.

कुर्थ-सं., चेचक जकाँ चकताक रुपेँ देह मे बहराएल रोग। मै.

कुर्थी-सं., दलिहन विशेष। पथरी रोगक औषध।

कुरकुट-सं., पुरान टुकड़ी टुकड़ी खड़ पातक ढेर। मै.

कुरकुटाह-विशे., कुरकुट सँ भरल। मै.

कुरकुर-अव्यय, विशे., कड़ा रहितौ पापड़ जकाँ सरलता सँ चिबबैक काल ध्वनि युक्त भोज्य पदार्थ। मै.

कुरबार-सं., छठि वा अन्य शुभ अवसर पर पका-ओल माटिक हाथी पर राखल चैल। कुरवार। मै.

कुरंग-विशे., १. अधलाह लच्छन। (मै.) २. हरिण (सं.)। मै.

कुरर-सं., देखू—"कुरूर"। मै.

कुरसा-सं., माछ विशेष। मै.

कुरसी-सं., काठक बनल बैसैक अधोपवेशनक आसन। मै.

कुरान-सं., इसलाम धर्मक मूल ग्रन्थ। उ. तत्सम

कुरुप-विशे., अधलाह रुपवाला। सं. तत्सम

कुल्लम-विशे., सबटाक जोर, समस्त, सम्पूर्ण टोटल। मै.

कुल-सं., वंश, गोत्र। सं. तत्सम

कुल कुलाएब-क्रि., भूखक द्वारेँ पेट मे शून्यताक अनुभव होएब। मै.

कुलच्छन-विशे., अधलाह लच्छन वाला। स्त्री० कुलच्छनि। सं., अधलाह लच्छन। मै.

कुलटा-विशे., दुश्चरित्र। मै.

कुल देवता-सं., परम्परा सँ कुल मे पूजनीय शक्ति। मै.

कुल पुरुष-विशे., विद्या आ वैभव सँ कुलक प्रधान व्यक्ति। मै.

कुल बुताएब-सं., अधिक सञ्चार बढ़ब। मै.

कुलवृक्ष-सं., कुलक प्रत्येक खूटक नामावली। सं. तत्सम

कुली-विशे., अनिश्चित शारीरिक बोनि पर जीबै-वाला। मै.

कुलीन-विशे., कुल मर्य्यादा रखैवाला। ऊँच कुलक लोक। सं. तत्सम

कुश-सं., देवता पितरक उपासनाक उपयोगी खड़। सं. तत्सम

कुशल कलेप-सं., थाड़ो बराबरि अनिष्ट, रञ्चमात्रो कष्ट। मै.

कुशल-विशे., १. चतुर, प्रवीण। सं., २. कल्याण, नीक स्थिति। सं. तत्सम

कुशलछेम/**कुशल मंगल**-सं., सब दिना नीक स्थिति, सुख, कल्याण। सं. तद्भव

कुशियार-सं., मधुर रसक प्रधान फसिल। बकला छड़क रुप मे मधुरक गाछ जकरा पेड़ि कय गुड़ आ चीनी बनैत अछि। मै.

कुशोथरि-सं., कोनो कामना सँ देवता लग धरना। मै.

कुष्ठ-सं., १. कूड़, औषध विशेष। २. शून्यताक संग दीर्घ कालक देह गलबैवाला गम्भीर घाओ तथा अनेक प्रकारक चर्म रोग। सं. तत्सम

कुस्तम कुस्ता-सं., खेलैक रुपेँ वा झगड़ाक क्रमे पर-स्पर उठा पटक। मै.

कुस्ती-सं., प्रतियोगिता सँ अखाड़ा पर दू मल्लक गुत्थम गुत्थी। उ. तत्सम

कुश्याक-सं., लोक केँ दूरि करैत खेल दोष गड़नाइ। मै.

कुलधुनि-सं., नेन्नाभुटकाक अनेर परस्पर लटापटी करैक खेल। मै.

कुसमय-सं., अनुपयुक्त समय। सं. तत्सम

कुसंयम-सं., स्वास्थ्यक प्रतिकूल आहार विहार। सं. तत्सम

कुसंयोग-सं., अनिष्टकारी समयक संयोग। अघटित घटनाक संभवक भवितव्यता। सं. तत्सम

कुसुम-सं., १. सामान्य फूल। २. केसरवाला लाल फूल जकर खेतीकय रंगक साधन उपजाओल जाइत अछि। मै.

कुसुमी-सं., रंग विशेष। मै.

कुसौन्ह-विशे., दूध दुहलाउत्तर बिन तबाओल डाबा। मै.

कुसौन-विशे., चेचकक बिन टीका (पाच) पड़ल बच्चा। मै.

कुहकब-क्रि., कोइली आदि पक्षीक मधुर ध्वनि। मै.

कुहकासम-सं., घोर झगड़ाक बीच जोर जोर सँ परस्पर मारैक चेष्टा। मै.

कुहठ-सं., अनुचित जहनि (जिद्)। सं. तत्सम

कुहरनि-सं., उत्कट व्यथाक शब्द। मै.

कुहरब-क्रि., रोग शोकक व्यथा एवं व्याकुलता सँ दयनीय अव्यक्त ध्वनि करब। मै.

कुहराएब-क्रि., पीड़ाक द्वारें अन्तर्ध्वनि सँ व्यथित कराएब। घोर कष्ट देब। मै.

कुहराम मचब-क्रि. सामूहिक रूपें अर्थात् सब कें एक संग कुहरैक स्थिति होएब। मै.

कुहाइ होएब-क्रि., गम्भीर पिटाइ होएब। मै.

कुहाक-विशे., कूहनिहार, कूहिकय मारनिहार। मै.

कुहाकूही-सं., एक दोसरा कें लात-मुक्का-थापड़ें मारिकय झगड़ा अथवा खेल। मै.

कुहामय-सं., परस्पर युद्ध स्तरक मारि। मै.

कुहुक-सं., पक्षीक कलरव। मै.

कुहुकब-क्रि., कोइली जकाँ पक्षीक मधुर बाजब। मै.

कुहेस-सं., धौन्ह, धुन्ध। मै.

कुहोवलि-सं., परस्पर कसि कसि कय मारिक प्रक्रिया। मै.

कू

कूऽऽऽऽ-अव्यय, कोइलीक अस्फुट शब्द। कूक। मै.

कूआँ-सं., बड़का इनार। हि. तत्सम

कूक-सं., कोइलीक मधुर शब्द। मै.

कूकब-क्रि., कोइलीक शब्द करब। मै.

कूच लागब-क्रि., चलैक काल घोड़ाक टांग मे टांग भीड़ब। मै.

कूड़-सं., अनुपयोगी गदौसक ढेरी कय खेत मे लगाओल आगि। मै.

कूड़ा-विशे., १. बहारि सोहारि जमा कयल गदौस। २. बखरा। ३. सोमाइत पठबैक रंगल ठौरल ठाढ़ कानवाला बैल। मै.

कूड़ि-सं., उपछि कय खेत पटबैक साधन। मै.

कूड़ी-सं., भाग, अंश, बखरा। मै.

कूड़-सं., बूटी विशेष। मै.

कूदब-क्रि., देह कें उछलाकय टपब। तड़पब। मै.

कूप-सं., कुइआँ, छोटका इनार। मै.

कूहब-क्रि., अनधुन मारब। मै.

कूहनि-सं., कसि कय मारिक व्यथा। मै.

कूहू-अव्यय, कोइलीक अव्यक्त शब्द। मै.

कृ

कृत-विशे., कयल वस्तु। सं. तत्सम

कृति-सं., रचना। सं. तत्सम

कृत्तिका-सं., नक्षत्र विशेष। सं. तत्सम

कृत्रिम-विशे., बनौआ। स्वाभाविक नहि। सं. तत्सम

कृपण-विशे., उचितो खर्च करै मे कातर। दीन। सं. तत्सम

कृपा-सं., दया, ककरो पर मृदु भावना। सं. तत्सम

कृपाण-सं., तरुआरि। सं. तत्सम

कृमि-सं., उदर पोषित कीड़ा विशेष। मै.

कृषक-विशे., खेतिहर। स्त्री० कृषिका। सं. तत्सम

कृषि-सं., खेती। सं. तत्सम

के

के-प्रश्नवाचक सर्वनाम,(?) कर्ता कारकक प्रश्न। मै.

कें-अव्यय, कर्म कारकक चिन्ह। मै.

केउर-सं., बाँहि परक गहना विशेष। केयूर। सं. तद्भव

कोंक लागब-क्रि., दीर्घ ज्वर आदि रोग सँ मुक्त भेला पर सतत् अधिक खाइक इच्छा होयब। अधिक खाएब। मै.

कोंकियाएब-क्रि., "कें-कें" जकाँ अव्यक्त शब्द करब। डर आ अप्रसन्नता सँ कलैक उच्च ध्वनि करब। मै.

केंकें करब-क्रि., नाकसँ मुहक संग विकट शब्द करब। मै.

केचुआ-सं., १. साँपक छोड़ल चाम। २. स्त्री देहक अलंकृत कञ्चुक (ब्लाउज)। मै.

केटी-विशे., प्राचीन राजा महाराजक अन्तःपुर मे उपभोग ले दक्षिता स्त्री। मै.

केंत-सं., ऊपरी मारि मारैक छौकी। मै.

केतक-सं., क्योला फूल। सं. तत्सम

केतु-सं., १. नवम ग्रह। २. बहुत दिन पर उगै-वाला लम्बाकार ज्योति। ३. ध्वजा। सं. तत्सम

केथड़ी-सं., गदेला। मै.

केदन-अनिश्चयवाचक सर्वनाम, अनभुआर, अनि-श्चित व्यक्ति। मै.

केन करब-क्रि., अन्नक बदला वस्तु कीनब। मै.

केनाकय-अव्यय, कोन रुपेँ। मै.

केबाड़-सं., द्वार, बहार सँ घर केँ सम्बन्ध रखैवाला काठक पट्टाक सुरक्षित साधन। मै.

केबाला-सं., भूमि बेचैक लिखित राजकीय निब-न्धित प्रतिज्ञापत्र। उ. तद्भव

केबली माटि-विशे., स्निग्ध माटि, हड्डुँ नै। मै.

केर-अव्यय, सम्बन्ध कारकक चिह्न। मै.

केरा-सं., प्रसिद्ध वैष्णव फल। मै.

केराओ-सं., गोल हरियर दानाक दलिहन। मै.

केलि-सं., वासनात्मक क्रीड़ा रमण। मै.

केवल-अव्यय, एकमात्र, सीमित (उ०) सिर्फ। मै.

केश-सं., माथक सघन रोम राशि। सं. तत्सम

केशिका-सं., केश सन पातर शरीरक शिरा जे बनैत टूटैत रहैत छैक। सं. तत्सम

केसर-सं., घोड़ा आ सिंह आदि जीवक गर्दनि परक झबरल केश। स. तत्सम

केसरि-सं., काश्मीरक फूल विशेष। मै.

केसरिया-विशे., केसरिक रंगवाला। मै.

केसौर-सं., उत्कट मधुर छोट कन्द। मै.

केहन-अव्यय, ककरसन ? कोन प्रकारक ? मै.

केहनदन-विशे., अत्यन्त अधलाह। मै.

केहरि-सं., सिंह, केसरी। सं. तद्भव

केहुनी-सं., बाँहिक बिचला जोड़क पाछू। मै.

केहों केहों-अव्यय, अन्मौटी नेन्नाक कनैक ध्वनि। मै.

कै

कैँ-सं., वमन, औक। मै.

कै-प्रश्नवाचक सार्वनामिक अव्यय, कोन ? प्रयोग–"कैठाम छै ? कै मे तकियौ ?" मै.

कैक-विशे., अनेक, बहुत। प्रयोग–"ऐ दुर्घटना मे कैक सँ लोक समाप्त भ' गेल।" मै.

कैकटा-अव्यय, अनेक, बहुत रास। मै.

कैंच-सं., कैंचीक आकार बनाओल वस्तु। गुणाक चिह्न स्वरुप बान्हल बाँस आदि नाम आ पातर वस्तु। मै.

कैंची-सं., स्वस्तिक आकारक धार बनल लोहाक कपड़ा, कागज कतरैक साधन। मै.

कैञ्चा-सं., प्रचलित विनिमय मुद्रा। सिक्का। मै.

कैआ-विशे., कृपण, गूढ़ हृदयक घातक लोक। मै.

कैता-सं., पाथर तोड़ैक लोहक भारी कोदारिसन पाड़ैवाला अस्त्र। मै.

कैथा-सं., गुदड़ी चेथरी समेत अनेक वस्तुक पोटरी। कन्था। मै.

कैथी-सं., लिपि विशेष। मै.

कैथी रंग-विशे., लाल मटरंगक वस्तु। मै.

कैफा-सं., थोड़बैक ज्ञान सँ अपन बड़प्पनक दावी, दूरे सँ देखाओल जाइत दर्प। मै.

कैँर-विशे., एक दिश अधिक झुकल। मै.

कैरब-सं., राति मे फुलाइवाला जलाशयक फूल विशेष। मै.

कैल-विशे., कपिल रंग, पीली रंग मिलल सरपोख उज्जर रंग। मै.

कैला-विशे., (अनादर मे) कैल रंगवाला। मै.

कैलास-सं., हिमालयक उच्चतर शिखर। महादेवक प्रसिद्ध धाम। मै.

को

को-सं., कटहरक बीजवाला गुद्दा। मै.

कोआ-सं., १. ताड़क फलक गुद्दा। २. मधु भरल मधुमाछीक छत्ताक खण्ड। मै.

कोइ-अनिश्चयवाचक सर्वनाम, को। प्रयोग–"तकैत रहू, एतय कोइ आबए ने।" हि. तत्सम

कोइआ-सं., बाँसक छोट चोंगाक बनल तेलसन वस्तु नपैक नप्पा। मै.

कोइर-सं., खेतिहर जाति विशेष। मै.

कोइला-सं., मिझाएल अङोराक कारी रूपक खण्ड। पाथर आ काठक दग्ध रुप। खनिज विशेष। मै.

कोइली-सं., १. मधुर शब्दवाला पक्षी। २. आमक आँठीक भीतरक गुद्दा। मै.

कोकची लागब-क्रि., गुच्छा सभँ सघन फड़ल रहब। मै.

कोकटी रंग-विशे., केसरिया रंग, मोमिया रंग। मै.

कोकनब-क्रि., माटि पानिक सम्पर्क सँ काठक सार-हीन होएब। मै.

कोकनल-विशे., सारहीन, निर्बल। मै.

कोकनाह्-विशे., सारहीन जकाँ बनल। अव्वल। मै.

कोकराहा-सं., बसातक जोर सँ उड़ल लुत्ती। मै.

कोकशास्त्र-सं., मैथुन प्रक्रियाक कामशास्त्र। मै.

कोंकाँ-अव्यय, बेङक ध्वनि। मै.

कोका-सं., सन्ध्या मे फिकसँवाला जलाशयक सम्पूर्ण लाल फूल। मल कोका। मै.

कोकाय-विशे., बेसी बढ़ल अण्डकोश। मै.

कोंकियाएब-क्रि., कोनो जन्तुक कोंकों एहन शब्द करब। मै.

कोकिल-सं., कोइली पक्षी। सं. तत्सम

कोकीन-सं., रावावाला मादक द्रव। मै.

कोखि-सं., पेट, स्त्री वर्गक हेतु गर्भाशय। मै.

कोखिया गोहारि-सं., ओझागुनी आ साधु सन्तक आशीर्वाद सँ सन्तानक आश्वासन। मै.

कोच-सं., फैलगर सुखदायी पलङ्ग। मै.

कोंचब-क्रि., बिन स्थानो (आँट नै रहुनो) ठूसैक चेष्टा करब। मै.

कोंचल-विशे., अवकाश सँ बेसी कसिकय भरल। मै.

कोंचा-सं., पहिरल साड़ीक कोंचियाएल बान्हल अंश। मै.

कोंचाकोंची-सं., अवकाश नै रहुनो बल सँ कोंचैक प्रयास। मै.

कोंचाडेढी-सं., स्त्रीक साड़ीक संग लहुँगावाला कपड़ा। मै.

कोंचियाएब-क्रि., पैघ वस्त्र कें आङ्ुर द्वारा छोट छोट तह दय समेटब। मै.

कोंचियाओल-विशे., आङ्ुर सँ तह लगाकय राखल साड़ी धोती। मै.

कोचिला-सं., विषवाला वनस्पतिक बीज विशेष। मै.

कोट-सं., १. पहिरैक मोटगर अंगा विशेष। २. न्यायालय। अं. तद्भव

कोटर-सं., खढ़ा, गुफा, घोधरि। सं. तत्सम

कोटा-सं., राजकीय भण्डार सँ वितरण प्रणाली। मै.

कोटि-संख्या एवं सं., १. एक सँ लाखक मान। २. पक्ष। ३. स्तर। सं. तत्सम

कोठरी-सं., छोटसन बनाओल काँच माटिक बासन। मै.

कोठली-सं., घरक भीतर बनाओल स्वतन्त्र अस्तित्वक खण्ड। मै.

कोठा-सं., पक्का छतवाला पजेबाक घर। प्रासाद। मै.

कोठामय-विशे., कोठा भरल निवास। मै.

कोठासोफा-सं., कोठा भरल सुन्दर आलय। मै.

कोठि-सं., बिरनी पचहियाक माटिक पैघ खोंता। मै.

कोठी-सं., १. धनाढ्यक कोठामय आलय। २. हाथक बनल पैघ काँच माटिक अन्न रखैक बासन। मै.

कोठुला-सं., कोठीसन हल्लुक छोट कोठी। मै.

कोड़काड़-सं., यत्र तत्र कोड़ैक सन्दर्भ। मै.

कोड़नि-सं., कोड़ैक निरन्तरता। मै.

कोड़ब-क्रि., माटि खूनब। जमल माटि, ईंटा आ पाथर कें उखाड़ि कय ढील करब। मै.

कोड़वा-सं., माटि कोड़ैक स्थान। मै.

कोड़रा-सं., डोरी जकाँ कपड़ा आ चाम कें बाँटि कय मारैक हेतु बनल वस्तु। मै.

कोंढ़ही-सं., गाछ मे मुड़ी चलैक आ फूल बहराइक सिरखार अर्थात् प्राकृप। मै.

कोड़ा-सं., चाबुक, घोड़ा आ बड़द कें मारैक लेल चामक छड़क डंटा मे बान्हल गुच्छा। मै.

कोड़ाइ-सं., लगातार कोड़ैक काज आ ओकर बोनि। मै.

कोड़ो-सं., फूसक घरक ठाठ (छप्परक ठट्ठुर मे) देल बाँसक खण्डक समूह। मै.

कोंढ़-सं., फेंफड़ा। मै.

कोंढ़ कलरब-क्रि., (लाक्षणिक) तत्वेवाला वस्तु लय लेब। मै.

कोंढ़गर-विशे., सबल हृदयवाला। मै.

कोढ़फट्टू-विशे., साधारणो बात मे कनेको मनक प्रतिकूल भेने अधैर्य सँ तुरन्त कनैक उपक्रम कयनिहार। मै.

कौड़ फाटब-क्रि., अधैर्य होएब । स्वतः लगले कर्नैक चेष्टा भ' जाएब । मै.

कौड़हा-सं., १. फँफड़ा । २. मधु भरल मधुमाछीक छत्ता । ३. छाती । ४. गहना सबमे गर्थक हेतु डोरा सन्हियबैक छेदवाला कड़ी । मै.

कौड़ा-सं., तपते भात मे धिपले दूध दय कें भोजन । मै.

कौढ़ि-सं., १. कुष्ठ रोग पीड़ित । २. (लाक्षणिक) कोनो काज नै करैक बहाना करैवाला । अहदी । मै.

कौढ़िया-विशे., १. कौढ़ि रोगक द्वारें असमर्थ । २. (लाक्षणिक) काज श्रम सँ देह चोरबैवाला । मै.

कौढ़िवाह-विशे., (लाक्षणिक) कोढ़ि कुष्ठी जकाँ अहदीपन रखैवाला । मै.

कौढ़िला-सं., पानि मे बढ़ैवाला छोट झाड़ । मै.

कौढ़ी-सं., फूलक कली । मै.

कोण-सं., विभिन्न दिशाक मिलानवाला चिह्न । समबाहु भुजाक संयोग स्थान । सं. तद्भव

कोणाटी-सं., काँट गड़ला सँ विकृत शक्तिहीन छोट मांस पिण्ड । मै.

कोतवाल-विशे., गाम घरक निर्द्धारित आरखी । मै.

कोतर-सं., भूस्वामीक पँच निर्दिष्ट भूखण्ड । मै.

कोतरा/कोतरी-सं., कबै माछक बच्चा । मै.

कोतहूकण्ठ-विशे., छोट मोट कण्ठवाला, जकर कण्ठ छाड़ सँ सटल रहै अछि । मै.

कोताही-सं., कृपणता, अभाव प्रदर्शन आ संकुचित व्यवहार । मै.

कोथ-विशे., विष एवं अमताईक द्वारें सुन्न भेला सँ असमर्थ अंग । मै.

कोथी-सं., शर, सोहथ आ बर्छी आदि, अस्त्रक तेज नोक अथात् अगिला भाग । मै.

कोदवा-सं., कोद्रव बीतलाक सब सँ छोट भेद जाहि मे कफ तापक संग पन्होरी जकाँ सघन फोंसरीक बिस्फोट होइत अछि । मै.

कोदरबाह-विशे., कोदारि पाड़ैवाला । खेती मे हरक संग कोदारिक काज कयनिहार । मै.

कोदरबाहि-सं., कोदारि पाड़ैक काज । मै.

कोदरिकट्टा-विशे., कोदारि सँ काटल । कोदारि सँ काटल चेकी जकाँ बनल मेंष । मै.

कोदारि-सं., लोहक मोट चदराक बनल चाकर भूमि कोड़ैवाला अस्त्र । मै.

कोदो-सं., धानक संग उपजैवाला कठोर मेहीं अन्न । मै.

कोन-प्रश्नवाचक सर्वनाम, तथा सार्वनामिक विशे., के ? अनेक मे क्यो । मै.

कोनऽ-अव्यय, दिशाक प्रश्न "कोम्हर" । मै.

कोन-सं., समबाहु द्विभुजक बीचवाला बिन्दु । मै.

कोनमाइर-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) अवसर ककरो काज कोनो । मै.

कोनछो-सं., एक खेतक दोसर खेत मे पैसल कोन । मै.

कोनचर-सं., चारू घरक परस्पर कोनक मिलान । मै.

कोनटवेध-सं., एक घरक कोन सँ आगू बढ़ल दोसर घरक कोन । मै.

कोनटा-सं., दु विभिन्न दिशाक घरक ओट मे शून्य स्थान । मै.

कोनटी-विशे., कोनवाला स्थान । मै.

कोनदन-अव्यय, अनिश्चित वस्तुक निर्देश । मै.

कोनहट-सं., कोन दिश दबल स्थान । मै.

कोनही-सं., कोनक साँकर स्थान । मै.

कोना-अव्यय, कोन प्रकारें । मै.

कोनाकोनी-अव्यय, एक कोन सँ दोसर कोन धरि रेखा कयँ सीमाक अवस्थिति । मै.

कोनावन-विशे., भिन्न प्रकारक । मै.

कोनार्ब-विशे., कोणाश्रय, कोन दिश दबल । मै.

कोनासय-विशे., कोनक दिश दबल स्थान । मै.

कोनाह-विशे., एक कोन दिश बढ़ल । चारू कोनक मिलानरहित । मै.

कोनियाँ-सं., बाँसक बनल कोनवाला सूप । अन्नक परिष्कार करैक साधन । मै.

कोनिया-सं., १. चौचारा घरक दूनू भुजा दिशक छोट त्रिकोणाकार चार । २. कोन बनबैवाला तिकोनिया करनी । मै.

कोनी-सं., १. नह आदिक कोन मे बढ़ल नव अंश । २. कोनक सूक्ष्म बिन्दु सँ आगू बढ़ल भाग । मै.

कोनी-अव्यय, दिशाक प्रश्न, कोम्हर । मै.

कोनी बेनी-सं., दीपक बनाओल छोट कोनियाँ लागल बीधनिक आकारक बस्तु। जाहि कोनियाँ मे भाइ बहिनिक विवाहक काल बेदी पर लावा भरै अछि आ बहिनि आगि मे आहुति करैछ। मै.

कोनेकानी-विशे., कोन आ किनारवाला स्थान। मै.

कोनेसानी-विशे., कोनक अन्हुराएल दोगक स्थान समेत। मै.

कोनेल-विशे., कोन दिस दबल रहला सँ बिन देखार। मै.

कोनेला-विशे., कोन मे रहैवाला वा होइवाला। मै

कोनो-अव्यय, अनिश्चयात्मक। मै.

कोप-सं., क्रोध, तामस। सं. तत्सम

कोपड़-सं., नव अंकुर, घाओ परक नव चमड़ा, बाँसक नव आँकुर (गाछ), गाछक नव मूड़ी। मै.

कोपड़ा-सं., पित्तड़िक बनल गोलाकार पैंच मुह-वाला बर्तन। मै.

कोपड़ाएब-क्रि., नव कोपड़ छोड़ब। मै.

कोपीन-सं., केवल डाँरमे लपेटल बिन ढेकावाला कपड़ा। कौपीन। सं. तद्भव

कोबर-सं., बर बधूक मनोरञ्जक गीत। बर बधूक परस्पर आकर्षण बढ़बैक प्रक्रिया। कौतुक। मै.

कोबरा-सं., बर बधूक केलिगृह। मै.

कोबरि-विशे., कोबरा मे रहैवाली कनियाँ। मै.

कोबिद-विशे., पूर्णज्ञानी। मै.

कोबी-सं., प्रसिद्ध व्यञ्जन। मै.

कोम्हर-अव्यय, कोन दिस। मै.

कोमल-विशे., लरगुज, मृदु, नरम। सं. तत्सम सं., गीतक स्वर विशेष जे अनुदात्त स्वरित भ' क' भैरवी, भैरव, आशावरी आदि रागिणी मे अधिक अबैछ। मै.

कोर-सं., कोनो वस्तुक अन्तक स्थान। प्रान्त भाग। मै.

कोरगर-विशे., १. मजबूत आँचर वा नीक किनार-वाला कपड़ा। २. भरि कोरा होइवाला बच्चा। मै.

कोर चिह्नु-विशे., विशेष व्यक्तिक कोरा कें पसिन्न करैवाला आ कोरे मे रहैवाला बच्चा। मै.

कोरदार-विशे., पैंच आ सवकत पाढ़िवाला वस्त्र। मै.

कोरपछु-विशे., सब सँ पाछु अर्थात् अन्तिम सन्तान। मै.

कोरबाहु-विशे., सतत कोरा मे रखैमे नियुक्त। मै.

कोरबाहि-सं., अधिक काल बच्चा कें कोरा मे रखैक काज। मै.

कोरसुहबा-विशे., कोरा मे रहब बेसी पसिन्न करै-वाला बच्चा। मै.

कोरा-सं., गोदी (उ०) अक लगाकय रखैक मुद्रा। मै.

कोरा-विशे., १. बिना धोअल नव सूती कपड़ा। २. बिन रान्हल अथवा नियत कयल कोनो रूपक अन्न। मै.

कोरियानी-सं., कोरि जातिक बस्ती। मै.

कोरी-सं., बीस संख्याक एक मान। मै.

कोरैला-विशे., तत्काल कोरा मे रहैवाला नेन्ना। स्त्री० कोरैली। मै.

कोल्हु-सं., सरिसो आदि पेड़िकय तेल चुबबैक आ कुसियार पेड़िकय रस बहार करैक कल। मै.

कोल्हुआड़-सं., कुसियार पेड़ैक कल गाड़ल स्थान। मै.

कोल्हुआ पेड़ाम-सं., सतरंजक एहन चालि जाहि सँ बादशाह मौत नहि भ' क' सह बचबैक लेल कोल्हुक बड़द जकाँ घूमैत रहैत अछि। मै.

कोल्हुआ बड़द-विशे., १. कोल्हु चलबैक हेतु निश्चित वृत्त पर भरि दिन चलैवाला जोतल बड़द। २. (लाक्षणिक) एके विषय कें वा काज कें घूरि फिरि कयनिहार। मै.

कोल-सं., संकीर्ण स्थान, प्राचीन आदिवासी जाति। मै.

कोलखी-सं., साँकर बाटवाला स्थान। मै.

कोला-सं., पैंच सीमावाला विस्तृत खेत। मै.

कोलिपछु-विशे., रोग विशेष सँ आक्रान्त अपोह आम। फाटि गेला सँ देखार कोइलीवाला आम। मै.

कोली-सं., छोट व्यासक खेत। मै.

कोश-सं., १. खजाना, भण्डार। २. बाटक दूरीक माप। ३. शरीर मे विभिन्न स्थान पर विभिन्न क्रियाक हेतु विभिन्न ग्रन्थि। प्रयोग-"अन्नमय कोश, प्राणमय कोश आ मनोमय कोश आदि।" सं. तत्सम

कोशा-सं., १. केराक घौरक अगिला भाग मे फूलक ग्रन्थि। २. आमक बीजक कठोर आवरण। मै.

कोशिका-सं., १. शरीरक स्थिति कें सन्तुलित रखै-वाला छोट छोट ग्रन्थि समूह। २.कोशी नदी। सं. तत्सम

कोशी-सं., हिमालय सँ बहरायल उत्तर बिहारक प्रसिद्ध नदी। मै.

कोसब-क्रि., निन्दापूर्वक आक्रोश करब। मै.

कोसल-सं., १. गुप्त रुपेँ धन जमा करैक प्रवृत्ति। मै.

कोसलबासल-विशे., गुप्त रुपेँ जमा कयल धन। मै.

कोसलिया-विशे., परिवार सँ नुकाकय जमा कयल निजी अधिकारक धन। मै.

कोसा-सं., मण्डप बन्है मे चारू तरख पैसबैक लेल चारि छेदवाला काठ। मै.

कोसाइल-सं., अभावक द्वारेँ कम खर्च सँ निर्वाहक प्रवृत्ति। मै.

कोसिया-सं., आबाक पाकल विशेष रुपक ढकना जे शुभ काजक उपयोगी रहैछ। मै.

कोहबर-सं., वर कनियाँक प्रथम मिलनक एकान्त स्थान। मै.

कोहली-सं., बहुत छोट कोही। मै.

कोहा-सं., पैघ माटिक पाकवाला बासन। मै.

कोही-सं., पाकवाला छोट माटिक बासन। मै.

कौ

कौअरि-सं., अन्न मे मिलल अखाद्य दाना। मै.

कौआ-सं., पक्षी विशेष। मै.

कौआठाढ़ि-विशे., कोनो ठाढ़ि मात्र मे फड़ब। मै.

कौघड़ी-सं., कोनो क्षण। मै.

कौड़िया करब-क्रि., माल जालक बसात छोड़ब। मै.

कौड़ियाकातर-विशे., कष्ट सहि कय धन जमा कयनिहार कृपण। मै.

कौड़ी-सं., समुद्रक क्षुद्र जल जीवक कड़ा चमड़ा। मै.

कौड़ीटीप-सं., कौड़ी सँ गुच्चा पिलबैवाला खेल विशेष। मै.

कौर्ना-सं., पैघ मुहवाला अधरा सन दही पौरैक माटिक गहीर बासन। मै.

कौँर-सं., खाइक हेतु हाथ सँ उठाओल ग्रास। मै.

कौलहा-सं., पैघ चुल्हा, चुल्हा। मै.

कौशल-सं., चतुराइ, कारीगरी, निपुणता, कला-कारी। मै.

कौहरिकिच्चा-सं., अनेक सम्बन्धक बहुत लोकक शब्द करैक संग उछल कूद आ जन संचारक स्थिति। मै.

ख

खकखाह-विशे., अधिक जरल, जरिकय खाक सन कारी छाउर बनल। मै.

खखनहर-सं., बहुत पैघ तसला सन भात रन्है़वाला बर्तन, जाहि मे मोनो भरि चाउर रान्हल जा सकैछ अछि। मै.

खखरी-सं., गुद्दारहित अर्थात् अन्नक फोंक दाना। मै.

खखसब-क्रि., अकारण कण्ठ साफ करैसन अव्यक्त शब्द करब। मै.

खखाएब-क्रि., विपरीत वातावरणक द्वारें अन्न मे गुद्दा नै भरब। मै.

खखार-सं., गर्रा परिष्कृत करैले शब्द। मै.

खखारब-क्रि., गर्रा कें परिष्कृत करैले कण्ठ मे जोर दय शब्द करब। मै.

खखास-सं., जोर सँ कण्ठक अव्यक्त शब्द। मै.

खखासब-क्रि., लोक कें सचेत करैले जोर सँ कण्ठक अस्पष्ट ध्वनि करब। मै.

खखोड़-सं., दाँत, नह आ अस्त्र द्वारा उपरैं उपरक छिल्ला। मै.

खखोड़नी-सं., खखोड़ैक अस्त्र। मै.

खखोड़ब-क्रि., बिना भीतर धँसौने दाँत, नह आ अस्त्र सँ उपरैं उपर छीलब। मै.

खग्गी-सं., आवश्यकता, अभाव। मै.

खग-सं., पक्षी। प्रयोग–"खग जानय खगही केर भाषा।" सं. तत्सम

खगता-सं., अभाव, अभावक द्वारें क्षति। मै.

खगब-क्रि., अभाव होएब। मै.

खगरा-विशे., बिना फूल फड़ल ताड़क गाछ। मै.

खगाट-सं., आवश्यक रहलो पर अभावक द्वारें समय पर काजक क्षति। मै.

खँघारब-क्रि., जल सँ कोनो वस्तु के शुद्ध करब। मै.

खच्चर-सं., घोड़ा जातिक पशु विशेष।
विशे., कामवासना वृत्तिवाला। मै.

खच्चा-विशे., थाल पानिवाला ले ऊँच, ऊभड़खाभड़ गाड़ीक बाट। मै.

खचखच-अव्यय, बिना परिश्रम आ कष्टक। मै.

खचखच उठब-क्रि., बिना श्रमक सरलता सँ कटैक शब्द होएब। मै.

खचखच काटब-क्रि., सरलता सँ काटब। मै.

खचखचाएब-क्रि., सरलता सँ अत्यन्त वेगेँ काटब। मै.

खचराहा-विशे., (गारि) अनुचित स्त्री प्रसंगक अभिलाषी, स्त्री० खचराही। मै.

खचाखच-सं., १. लगातार कटैक क्रम। २. (विशे.) ठूसि कय भरल। मै.

खजवा-विशे., १ खाजाक आकारक गान्धी टोपी। २. खाजा सन नाम कड़ा कोमल मधुर कटहर। मै.

खजवी-सं., खाजाक आकारक छोट मधुर। मै.

खंजुरी-सं., हाथ सँ बजबैवाला चाम छारल मौनी जकाँ बाजा। मै.

खजूर-सं., फल विशेष, खजूँर। सं. तद्भव

खंजा-सं., गमछाक चारू खूट बान्हि बनल झोरा। मै.

खञ्ज-विशे., एक पैर सँ बनाह। मै.

खञ्जखूहर-विशे., असभ्य असंस्कृत अनपढ़ लोकक समूह। मै.

खञ्जन-सं., विदेशी पक्षी विशेष। सं. तत्सम

खञ्जा-सं., मालक नेङराइक रोग। मै.

खट्टा-सं., अम्मत रस विशेष। विशे., अम्ल रस-वाला। मै.

खट्टी-विशे., गाछ लागल फलक व्यापारी। मै.

खटक-सं., 'खट्' एहि प्रकारक शब्द। मै.

खटकब-क्रि., अप्रियताक आभास एवं अरुचिक अनुभव होएब। मै.

खटकर्मी-विशे., शास्त्रीय नियमक व्यवहार मे कट्टर रहि आडम्बर प्रिय। सं. तद्भव

खटका-सं., सन्देह भरल आपत्तिक आभास। मै.

खटकार-सं., भिन्ने प्रकारक रूप आश्चर्याक धारण कय महत्वक प्रदर्शन। मै.

खटकाह-विशे., बिन कारणो बात मे सन्देह कयनिहार। स्त्री० खटकाहि। मै.

खटखट-अव्यय, १. लगले लागल। २. एहि प्रकारक शब्द। मै.

खटखट करब-क्रि., अनेर एहि प्रकारक शब्द सँ अशान्त करब। मै.

खटखटाएब-क्रि., १. अपन उपस्थितिक सूचनाले अनदेखक लोक केँ एहि शब्द सँ सजग करब। २. तमसाएल रूपेँ उत्तर देब वा तमसा उठब। मै.

खटखटाह-विशे., तामसेँ भरल प्रकृतिवाला। मै.

खट छप्पर-सं., खाटक उपर देल तानल वस्त्र। मै.

खट द'-अव्यय, तुरन्त, अविलम्ब। मै.

खटनाइ-सं., १. श्रम करैक क्रिया। २. दिनोँ दिन घटैक क्रम। मै.

खटनी-सं., परिश्रम, शारीरिक वा मानसिक शक्तिक व्यय। मै.

खटपट-सं., मनेँमन विरोध, मतान्तर। मै.

खटपटाएब-क्रि., मतान्तर करब, मतभेद राखब। मै.

खटब-क्रि., १. परिश्रम करब। २. घटैत जाएब। मै.

खटबताह-विशे., सब बात मे खटखटा उठैक प्रकृति वाला। मै.

खटबानर-विशे., १. दाँत कीचैत खटखटा कय दौड़ैवाला बानर। २. (लाक्षणिक) विक्षिप्त जकाँ खटखटा कय दौड़ैवाला मनुष्य। मै.

खटबारब-क्रि., उत्कट पीड़ा सँ खाट धय लेब। मै.

खटवास लेब-क्रि., शोक आ पीड़ा सँ भूर भमान होइत खाट पर पड़ल रहब। मै.

खटबैसा-विशे., बोनि दय कम बौनिहार। मै.

खट मधुर-विशे., अम्मतक संग मधुर स्वादवाला। मै.

खटमल-सं., उड़ीस, खाटक स्वेदज दंशक जीव। हि. तत्सम

खटमिट्ठी-सं., खट्टा पदार्थ मे मधुर वस्तु दय बनाओल अँचार। मै.

खटर खटर-अव्यय, एक लय सँ एहि प्रकारक ध्वनि, काल चलैक शब्द। मै.

खटरस-सं., छवो रसक मिलान सँ बनल अँचार। मै.

खटरास-सं., अपन बड़प्पन देखबै लेल विभिन्न आचरण आ अत्युक्ति। मै.

खटरासी-विशे., आत्म प्रशंसी जे संसारे केँ मूर्ख मानय। मै.

खटरी-विशे., एको पाइक खर्चक अवसर अइने खट-खटा उठनिहार। क्रोधी कृपण। मै.

खट संवाद-सं., व्यर्थ विवाद सँ उपजल झगड़ा। मै.

खट संवादी-विशे., खट सम्वाद करैक प्रकृतिवाला। मै.

खँटहँट बुआन-विशे., सामान्य नाम आ चाकर बेल। मै.

खटहा-विशे., खट्टा स्वादक आम आदि फल। मै.

खटाइ-सं., आमिल। हि. तत्सम

खटाइल-विशे., खट्टागल स्वादवाला। मै.

खटाएब-क्रि., श्रमक मूल्य बोनि दय काज कराएब। मै.

खटाओन-सं., १. श्रमक दाम। २.खट्टाक स्वाद। मै.

खटाक खटाक-अव्यय, १. एहि प्रकारक शब्द। २. लगले लागल। मै.

खटाखटि-अव्यय, लगले लागल काजक गति। मै.

खटाल-सं., बीचक फांक अर्थात् शून्य। घरक दू खम्भा वा दू पाया अथवा अलमारीक दू तख्तीक बीचक स्थान। मै.

खटास-सं., बिलाड़क आकार प्रकारक बनैया गछ-चढ़हा चतुर जीव। मै.

खटित होएब-क्रि., कम होइत जाएब। खर्च होएब। मै.

खटिया-सं., बाँसक जौड़ सँ बनल छोटका खाट। मै.

खटियाएब-क्रि., दिनोंदिन घटल जाएब। मै.

खटियातोड़-विशे., (लाक्षणिक) उदण्ड यौवन। मै.

खटुली-सं., बाँसक टोना पर रस्सी सँ खाटक चारू पौआ कें बान्हि लटकाओल खाटक तात्कालिक सवारी। मै.

खटोली-सं., छोट आकारक महफा सवारी। मै.

खँड़-सं., खण्ड। सं. तद्भव

खड्ग-सं., खाँड़, तरूआरि। सं. तत्सम

खड़कब-क्रि., चुपचाप हटि जाएब। मै.

खड़काएब-क्रि., चुपचाप हटा लेब। बेचि लेब। मै.

खड़खड़-अव्यय, १. सुखाएल वस्तु पर कोनो जीवक संचारक शब्द। कड़ा वस्तुक संयोग सँ कठोरता सँ कष्टक अनुभव। मै.

खड़खड़ाएब-क्रि., १. उचित स्थिति मे व्यतिक्रम होएब। २. सुखाएल वस्तु सँ व्यक्तिक द्वारा हाथ मे रगड़ि शब्द बहार करब। ३. सुखाएल खड़ पात पर आ यन्त्र रथ आदिक संचारक शब्द होएब। मै.

खड़खड़ी-सं., सामान्य स्थिति मे विशेष संचार। मै.

खड़ग-सं., देखू—"खड्ग।" सं. तद्भव

खड़गर-विशे., विशेष उपर उठल। नम्मा। मै.

खड़कब-क्रि., जोर सँ बिगड़ि उठब। क्रोधित होएब। मै.

खड़डाह-विशे., सत्य पर अटल रहैक कारणेँ अन्टो-टल नहि सहनिहार। मै.

खड़छाह-विशे., कठोर रहैक कारणेँ खयबा मे स्वादहीन। मै.

खड़कन-सं., खड़हि कय जमा कयल कूड़ा। मै.

खड़हना-सं., खड़ड़ैक साधन। वस्तु। मै.

खड़ड़ब-क्रि., खड़ड़ैक साधन सँ गदौस हटाएब। मै.

खड़हा-सं., मोट सनकत डाँटक बाढनि, जाहि सँ गदौस समेटल जाइछ। मै.

खड़ौआ-विशे., १. खड़हि कें जमा कयल गदौस। २. खड़ड़ैक साधन। ३. हाथक बाँटल पातर जौड़। मै.

खड़बड़ाएब-सं., सामान्य स्थिति मे अस्वस्थताक अनुभव होएब। मै.

खँड़मण्डल-सं., प्रकृतिक असमान स्थिति। कतौ वर्षा आ कतौ रौदी सँ अकाल। मै.

खँड़हर-सं., भग्नावशेष, उहल प्राचीन स्थान। मै.

खड़ा-विशे., उपर उठल, ठाढ़, सोझ, नम्मा। ऊँच। मै.

खड़ाइ-सं., विशेष नमती, ऊँचाइ। मै.

खड़ाड़-विशे., खड़हि कय जमा कयल गदौस। मै.

खड़िका-सं., दाँतक गह शुद्ध करैबाला पातर काठी। मै.

खड़िया-सं., लिखैक कलम। खड़ी सँ बनाओल लिखैक साधन। मै.

खड़ी-सं., रंग मे उज्जर। लिखबाक उपयोगी ठोस वस्तु। मै.

खड़ी धरब-क्रि., (लाक्षणिक) शुभ अशुभक भावी उचारैक प्रक्रिया करब। मै.

खड़ी धराएब-क्रि., छोट नेन्ना कें अक्षर लिखैक आरम्भ कराएब । मै.

खड़ी चलाएब-क्रि., विशेष प्रक्रिया सँ शगुन बहार करब । मै.

खड़आर-सं., देखू—"खड़ाड़" । मै.

खड़-सं., तृण, छोट सँ पैघ फूस, घास राड़ी आ डाभी । मै.

खड़कट्टा-विशे., खड़ कटैवाला जन वा चोर । मै.

खड़खौका-विशे., घास खाइवाला जीव, पशु । मै.

खड़घर-विशे., अधिक घासवाला स्थान । मै.

खड़पोसा-विशे., खड़ मात्रक वृद्धि करैवाला खेतीक अयोग्य वर्षा । मै.

खड़ही-सं., नमहर छड़वाला मोट डाँटक विशेष प्रकारक सक्कत खड़ । मै.

खड़होरि-सं., डाभी आ राड़ी खड़ उपजैक लेल सुरक्षित खेत । मै.

खण्ड-सं., टुकड़ा । विभाग । अंश । सं. तत्सम

खण्डन-सं., तर्क सँ प्रतिवाद कय दोसराक बात कें कटैक व्यापार । मै.

खण्डा-सं., पक्ष, प्रकरण ज्यौतिषक पारिभाषिक शब्द । सं तद्भव

खण्डित-विशे., क्षीण, टुकड़ी कयल, अशुद्ध, काटल । सं. तत्सम

खत्ता-सं., छोट व्यासक गहींर स्थान । मै.

खत्ता खाएब-क्रि., (लाक्षणिक) क्रिया आ मन मे ठोकरक अनुभव करब । मै.

खत्ती-सं., गहींरगर छोट खेत । मै.

खत्री-सं., लड़ाका जाति विशेष । क्षत्रिय । मै.

खन-सं., १. छेदैक वा कटैक प्रक्रिया सँ काठ आदि मे छेद वा विभिन्न चेन्ह । मै.

खन-विशे., आड़ी आदि सीबैक योग्य कपड़ा । मै.

खनकल-सं., काठ कें छेदैक प्रक्रिया सँ चेन्ह पाड़ैक अस्त्र विशेष । मै.

खनकी-सं., हर हरीस आ लागन मे लागि करबैले बनल छेद । मै.

खनगड़ा-विशे., काठ एवं कोठा कें खनि कय चित्र गढ़निहार कारीगर । मै.

खनना-सं., १. मुसलमान समाजक लिगच्छेदन । सुन्नत । २. खनैवाला अस्त्र । मै.

खनब-क्रि., छेद करब । चिह्न लगाएब । मै.

खनबै-सं., कहार, जाति विशेष । मै.

खतम-विशे., समाप्त । उ. तत्सम

खतियाएब-क्रि., वर्गीकरण करब, विभिन्न वस्तु सब मे एक एक रूपक वस्तु कें एकठाँ करब । मै.

खतियान-सं., खेत पथारक नियमित सरकारी प्रमाण पत्र । मै.

खतुआ-विशे., खतल (छीलल) खतल रुपवाला । मै.

खद्दर-विशे., हाथक काटल सूतवाला कपड़ा । मै.

खद्धर-विशे., अधिक खाइवाला लोक । मै.

खद्धा-सं., अत्यन्त छोट व्यासक गहींर स्थान । मै.

खद्धी-सं., भूमि पर वा शरीर मे भीतर धँसल छोट छोट स्थान । मै.

खदकन-सं., गाढ़ द्रव मे ताप लगला सँ भाफक विस्फोट । बुन बुना बनि भाप फूटब । मै.

खदकब-क्रि., गाढ़ द्रव मे ताप लगला सँ शब्दक संग बुनबुना मे भाफक उपर उठब । मै.

खदका-सं., अनेक औषध मिलाकय ताप लगा कय सिद्ध कयल औषध । मै.

खदकी-सं., कोनो एक वस्तु कें बिना बासन मे देनहि आगि पर ताप लगाओब । मै.

खदखद-विशे., गस्सल, घन भ'क' । मै.

खदखदाएब-क्रि., १. खदखद शब्द करब । २. सघन भ'क' भरल रहब । मै.

खदबद-सं., सघन वस्तुक एकै ठाँ सगबग होइक स्थिति । मै.

खदबदाएब-क्रि., १. सघन भ'क' अधिक जीवक एकत्र सगबगाएब । २. पाकक शब्द होएब । ३. उधियाएब । मै.

खदबर-विशे., सिचित खयनिहारक समूह । मै.

खदर खदर-अव्यय, अव्यवस्थित बहुसंख्यक लोक । मै.

खदर बदर-अव्यय, समूह मे स्थित असभ्य असंस्कृत नेन्नाक झुण्ड । मै.

खदुका-विशे., नियमित रीन, पैंच आ उधार लेनिहार । मै.

खधक्कर-विशे., अधिक खयनिहार । मै.

खधहा-विशे., माटि कोड़ि उठौला उत्तर बनल गहींर भूमि । मै.

खन्ता-सं., निश्चित नापक क्षेत्रक बनल खधहा । मै.

खन्धक-सं., विस्तृत क्षेत्रफलक स्वाभाविक गहींर खेत वा स्थान । पानि बसैंवाला स्थान । मै.

खन-सं., क्षण, सूक्ष्मतम समय । मै.

खनक-सं., माटिक पाकल बासन, गहना आ चूड़ीक शब्द । मै.

खनकब-क्रि., बासन, चूड़ी आदिक शब्दसहित फूटब । मै.

खनकाह-विशे., फूटैंवाला बासन आ चूड़ी । मै.

खनखन-अव्यय, फूटल रहैक स्थिति मे । मै.

खनखन करब-क्रि., १. मनोऽनुकूल वस्तुक हेतु नेन्नाक असन्तुष्ट रहब । २. व्यग्रता सँ सतत् आन्हुर रहब । मै.

खनखनाएब-क्रि., सदिखन सुस्त रहब । मै.

खनखनाह-विशे., कोनो कोनो रोग सँ पीड़ित रहनिहार । स्त्री० खनखनाहि । मै.

खनगर-विशे., बेसी छुट्टा समयवाला । स्त्री० खनगरि । मै.

खनती-सं., पैंच डंटा मे लागल नीचाँ दिश चाकर तेज धारवाला माटि कोड़ैक लोहक अस्त्र । मै.

खनन-सं., माटि कटैक क्रिया । सं. तत्सम

खनब-क्रि., खूनब, कोड़ब, दरी काटब । मै.

खनरब-क्रि., पानिक वेग सँ दहिकय माटिक नीचाँ दिश ससरब । मै.

खपखप्-अव्यय, शीघ्रता सँ जड़ि कटैक शब्द । प्रयोग—''चूड़ी झनझन सारंगी सुर, खपखप् हाँसू ताल दैत अछि । सुखक डारि पर नाचि नाचि मन किछु छन गुनगुन गाबि लैत अछि ।'' मै.

खप्पड़-सं., नर मुण्डक उपरक अंश । मै.

खप्पा-सं., कोनो द्रववाला बासनक मुनना रूपक उपरक अंग । मै.

खपगर-विशे., मेल खाइक योग्य । मै.

खपटा-सं., फूटल माटिक बासनक पैंच टुकड़ा । मै.

खपटा फोड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) श्राद्धक विधि मात्र निबाहब । मै.

खपटी-विशे., अधिक सुखाकय खपटासन पातर आ कड़ा बनल । मै.

खपड़सुक्खू-विशे., तउब आ खापड़ि मे अधिक ताप सँ सुखायल खाइक अयोग्य वस्तु । मै.

खपड़ा-सं., साँच पर माटिक बनाओल खपटा जकाँ पातर आवाक पकाओल घर छारैं जोग वस्तु । मै.

खपड़ैल-विशे., खपड़ा सँ छारल घर । मै.

खपब-क्रि., १. स्वतः धीरें धीरें खपब । २. कोनो वस्तु मे परिछब । मै.

खपाएब-क्रि., १. अन्तर्भूत करब । २. कोड़ैक छीलि कय मिलाएब । ३. धीरें धीरें नष्ट करब । मै.

खपिअर-सं., नदीक तेज प्रवाह सँ बनल जलक भीतर गहींर खद्धा । मै.

खपिआ-सं., कलम गोसियानी आदिक छोटसन मुनना । मै.

खफ होएब-क्रि., गुम्मे गुम तामस करब । मै.

खबका-विशे., खाइ पर ध्यान रखैंवाला । मै.

खबखब-अव्यय, तामस (भीतरक) । मै.

खबखब करब-क्रि., भीतरैं भीतर तामसें जरैत रहब । मै.

खबखबाएब-क्रि., भीतरैं भीतर प्रतिकारहीन तामस करब । मै.

खबखबा कय लागब-क्रि., किछु नैं क' सकैक स्थिति मे भीतरैं भीतर सिकित तामस होएब । मै.

खबखबी-सं., गुप्त क्रोध, प्रच्छन्न तामस । मै.

खबास-विशे., भृत्य, सेवक । स्त्री० खबासिन । उ. तत्सम

खबैया-विशे., अधिक खाइवाला । मै.

खबोत्तर-सं., अधिक खाइक प्रतियोगिता मे प्राप्त पुरस्कार । मै.

खम्भा-सं., चारक (घरक) भार तनैंवाला सारिल मोट काठक खुट्टा । मै.

खम्हारु-सं., अधिक तर धरि जमैंवाला अधिक नाम लरुआ तरकारीक कन्द । मै.

खमहार-सं., दाओन करैक स्थान, खरिहान । मै.

खर-विशे., १. अधिक सुखाएल । अधिक ताप लागल नीरस । २. मुहैं पर ठाँहि पठाँहि सत्य कहैवाला । मै.

खरकट्टब-क्रि., कड़ा भ' क' सट्टब । पकड़ि लेब । मै.

खरकट्टल-विशे., अलग करैं मे असमर्थ सर्वें सट्टल । अत्यन्त लोभी दरिद्र । मै.

खरकौटी-सं., ताना मे सूत कें सोझ रखैवाला कपड़ा बीनैक यन्त्रक अंग । मै.

खरखर-सं., देहक चामक कठोरता । मै.

खरखराह्-विशे., १. कड़ापन भरल । २. मल पातर करैवाला, रेचक । मै.

खरखरिया-सं., आठ कहार सँ उठबैक योग्य काठक नाम आ पैघ सन्दुकचा नहाँइत सवारी । मै.

खरखरौआ-विशे., समूहक मन मे उद्वेग आ बन्ध-लता जगबैवाला समाचार । मै.

खरखाह्-विशे., स्थानक प्रधान व्यक्तिक विशेष कृपा पात्र । उ. तद्भव

खरखाही-सं., प्रधान सँग प्रमुखता । मै.

खरह्-विशे., उचित सँ बेसी ऊँच । मै.

खरच-सं., एवं विशे., व्यय तथा ओकर द्रव्य । मै. उ. तद्भव

खरचणढाली-सं., अभावक द्वारेँ खरच चलबैक विकट परिस्थिति । दिक्कत सँ निर्वाह । मै.

खरचुआ-विशे., खरच करैक लेल सुरक्षित वस्तु । मै.

खरचोटा-विशे., प्रतिदिनक खरच करैक वस्तु । मै.

खरंजा-सं., पजेबा मात्र बैसाओल बान्ह (सड़क) । मै.

खरतर-विशे., खड़ पातक बनाओल देह मे गड़ैवाला टूटल फाटल पटिया आदि । मै.

खरतरही-विशे., झड़ल झूड़ल अखड़ा पटिया आदि । मै.

खरना-सं., दुर्गा उपास आ छठिक पहिल अर्थ सँ पहिलुक दिनक राति मे होम' वाला एकभुक्त । मै.

खरप्पा-सं., काठक पट्टी मे फीता लागल चट्टीवाला खरौंआ । मै.

खरब-संख्या, सौ अरबक एक मानक संख्या । मै.

खरबर-सं., छोट मेम्ना, छोट जीव आ जल मे माछक सन्चार । मै.

खरबराएब-क्रि., १. अंगक संचार करब । २. अस्व-स्थताक अनुभव होएब । मै.

खरबराह्-विशे., १. चंचल संचारशील । २. अस्व-स्थता भरल । प्रयोग—"आइ हमर मन किछु खर-बराह् अछि ।" मै.

खरभुजा-सं., लती मे फड़ैवाला पैघ सुस्वादु फल । मै.

खरभुसिया-विशे., तत्वहीन, महत्त्वहीन । मै.

खरमास-विशे., सुखाएल वातावरणवाला समय फागुन, चैत आ बैशाख । मै.

खररब-क्रि., छीलब, घँसब । जेना कद्दूकस पर कुम्हड़ खररल जाइछ । मै.

खररा-सं., हाथ पैर मे होइवाला एक प्रकारक कुष्ठ वा चर्म रोग विशेष । मै.

खररौआ-विशे., १. खररि कय बनाओल वस्तु । २. हबर हबर कौआ टांग सन जेना तेना लिखल अक्षर । मै.

खरल-सं., औषध पीसैवाला नाओक आकारक पाथरक छोट बासन । मै.

खरसूप-विशे., अखड़ा सूप । प्रयोग—"आइ पिबैले सुकराती डेडबैले खरसूप । मै.

खराइन-विशे., गीत मूतक दूषित गन्ध । मै.

खराएब-क्रि., पूर्ण रूपेँ सुखाएब । मै.

खराओं/खराम-सं., काष्ठ पादुका । मै.

खराद-सं., यन्त्र द्वारा छीलि कय धातु, काठ आ पाथर कें मनोनुकूल चित्रित करैक प्रक्रिया । मै.

खरादब-क्रि., यन्त्र द्वारा छीलि कय कड़ा वस्तु कें मनोनुकूल चित्रित करब । मै.

खरात-सं., असहाय वा संकट मे पड़ल लोक कें अन्न वस्त्र आ द्रव्यक मुक्त सहायता । खैरात । उ. तद्भव

खराती-विशे., सहायता सँ भेटल निर्वाहक साधन । मै.

खराह्-विशे., अनुचित नहि सहैवाला स्पष्टवादी । मै.

खड़रि-सं., तेलहन वस्तुक सिट्ठी । मै.

खरिहान-सं., शीस सँ अन्न झाड़ैक स्थान । दाओन करैक परिष्कृत स्थान । मै.

खरिहानी-सं., अनकर खरिहान मे अनका दाओन कयला पर भाड़ा रूपेँ देय अन्न । मै.

खरिहारि कय पूछब-क्रि., नीक जकाँ विषयक स्पष्ट उत्तर माङब । विषय कें सन्देहहीन करब । मै.

खरुआर-सं., खररि बनाकय तथा बहारि कय जमा कयल कूड़ा आ गदौस । मै.

खरछब-सं., सबकत जकाँ लागब । मै.

खरछाह्-विशे., खाइ मे स्वादहीन एवं कठोरता भरल । मै.

खरहनि-सं., १. सुखाएल समयक अन्न। २. रोपल धान उखाड़ि कय रोपैक बीआ। मै.

खरहान-सं., (तिरस्कार मे) नगण्य, बदमास आ अशिक्षित नेन्ना सभक वेर। मै.

खरेढ़-सं., एक दिस सँ नाश। नाम निशान मेटा कय संहार। मै.

खरोसा-सं., कुशल क्षेमक वार्ता, अन्वेषण। मै.

खल्ला-सं., मुइल मालक उतारल चमड़ा। मै.

खल्ली-सं., १. खँर, तेलहनक सिट्ठी। २. खड़ी। ३. चमड़ाक उपरी सतह। मै.

खल्लर-सं., भस्मक रोग। खाइत मात्र फेर भूखक वेग। मै.

खल्वाट-विशे., केश उड़ल चानिवाला, चनैल। सं. तत्सम

खल-विशे., दुष्ट। सं. तत्सम

खल-सं., भरिवीत खड़ाइवाला गोल गहींर औषध आदि कूटैवाला वासन। मै.

खल-सं., विभाग, मद, वर्ग। प्रयोग—"विकासक खलक राशि दैनिक खर्चक खल मे उठाबि कयने विकास रुकि जाइ छै।" मै.

खलखल हँसब-क्रि., मुक्त आ निश्छल हास। मै.

खलखल बहब-क्रि., स्वच्छता भरल बेरोक टोक प्रवाह होएब। मै.

खलखलाएब-क्रि., १. आन्तरिक उद्गार सँ हँसब। २. भोथ अस्त्र सँ कोनो वस्तु कें अधिक काले काटब। मै.

खलखलीआ-विशे., कठिनता सँ कटैवाला। मै.

खलना-सं., माल खलैक छूरी। मै.

खलपट-विशे., गुद्दाहीन, मांसरहित देह। भूख सँ सुन्न पेट। मै.

खलब-क्रि., मुइल मालक चमड़ा छोड़ाएब। मै.

खलबल-अव्यय, अधिक आँच सँ दूध आ पानिक उधियाइक क्रम मे उपर उठब। मै.

खलबली-सं., आपतिक चिन्ता सँ चञ्चलता। मै.

खलरी-सं., बिन सुखाएल चमड़ा। तुरन्त उतारल चाम। मै.

खस्सी-विशे., वधिया कयल छागर। मै.

खस-सं., कातरक (खढ़ विशेषक) भारक सुगन्धित सीर। मै.

खसकब-क्रि., चुपचाप नहुँ नहुँ हटि जाएब। मै.

खसखस-सं., खस सँ बनाओल सुगन्धि (इत्र)। मै.

खसखसाह-विशे., बिना धर्म विपर्यक जोग। मै.

खँहनियाएब-क्रि., पानिक वेग सँ तथा धाराक विशेष वेग सँ माटि आ मांस गलि कय झरब। मै.

खँहरब-क्रि., स्वतः झरि झरि कय खढ़ा बनब। मै.

खहरब-क्रि., ऊँच भूमिक अव्वल रहला सँ भार नहि सहैक द्वारें माटिक नीचाँ ससरब। हृदयक टूक टूक होएब। मै.

खँहस्टल-विशे., अभाव सँ लोभी हृदयवाला। घर्क-टता सँ भरल दरिद्र। मै.

खँहारब-क्रि., माजल द्रव्य कें शुद्ध जल सँ नीक जकाँ पवित्र करब। मै.

खा

खाइ-सं., किला तथा घरक सुरक्षा लै बनल जलाशयक चारू दिश घार जकाँ गहींर जल भरल खढ़ा। मै.

खाइ खाइ करब-क्रि., सदिखन स्वार्थक पाछू तथा खाइक पाछू व्यग्र रहब। मै.

खाउ-विशे., १. उचित सँ बेशी व्यवसायक लाभ लैक प्रवृत्तिवाला। २. सतत् खयबाक स्वभाव-वाला। मै.

खाएब-क्रि. भोजन करब। मै.

खाक-सं., भस्म, जरल वस्तुक अवशेष। मै.

खाका-सं., रेखाचित्र। हि. तत्सम

खाँखर-सं., बहि कय आएल। ढहि कय खसल पोखरिकें उत्थर करैवाला माटि। मै.

खाँखरि-विशे., जीर्णोद्धार बिना उत्थर बनल पोखरि। मै.

खाँखी-सं., रंग विशेष। मै.

खाँखी बसाती-सं., प्राप्तिक सगँ बिलइनी। मै.

खाँच-सं., सुपुट बैसबैक छेद आ काटा। मै.

खाँच काटब-क्रि., नापक तथा वस्तुक गोलाइ आ नम्माइक अनुसार सुपुट बैसबैक हेतु छेद करब। मै.

खाँच खोंच-सं., स्थान स्थान पर बाट मे थोड़ थोड़ घास आ कत्तौ कत्तौ पानि। मै.

खाँचा-सं., धालक द्वारें गाड़ीक लीख परक धँसान आ खढा। मै.

खाजा-सं., मैदाक बनल अनेक तहवाला नमहर आ मोट मिथिलाक प्रशस्त प्राचीन मधुर। मै.

खांजभांज-सं., वस्तुसब कें व्यवस्थित कय ब्योंत धरबैक व्यापार। एम्हर सँ ओम्हर कय ढंग धर-बैक चेष्टा। मै.

खाँट-विशे., आकार प्रकारवाला। मै.

खाट-सं., व्यवस्थित ढंगक चारि पौआवाला सूतंक कोमल साधन। मै.

खाँटी-विशे., विशुद्ध, बिना मिभकरौटवाला। मै.

खाँड़-सं., लोहक नाम चाकर भारी घातक अस्त्र। मै.

खाँड़ा-सं., आधा टुकड़ा। मै.

खाँड़ि-सं., अनेक मालक एक संग नार पोआर खाइक हेतु बनल बातीक बीनल नमहर नादि। मै.

खाड़ी-सं., तीन दिश भूमि एक दिश समुद्र सँ लागल समुद्रक विशाल अंश। मै.

खाढ़ी-सं., पीढ़ी, पुरूष, पुस्त (जेनरेशन)। प्रयोग—"भारतक अगिला खाढ़ीक लोक पछिला खाढ़ी सँ अधिक शिक्षित आ उद्यमी बनि रहल छै।" मै.

खाणी-सं., घासपात कटैक हेतु चक्कावाला कल मे लागल चन्द्राकार तेज अस्त्र। मै.

खात खीचब-क्रि., १. दोनाइ सीखैक काल दहाइ पर खात बन्न करैक हेतु डाँरि पाड़ब। २. खत्ता कटैक चेन्ह् देब। मै.

खात-सं., एकाइ दोनाइ सीखैक दश दश अंकक दहाइ धरिक अभ्यास। मै.

खाता-सं., १. भिन्न भिन्न खलक लेखा जोखाक बही। २. खेतक चकलाक सरकारी संख्या। मै.

खाता भोखा-विशे., खाऽऽ पीबि कय भोग कय-निहार। मै.

खाँति-सं., आकार प्रकार, श्रेणी, ढब। मै.

खाती-सं., खत्ता, खाधि। मै.

खाद्य-विशे., खाइक योग्य। अन्न। सं. तत्सम

खाद-सं., धरतीक उर्वराशक्ति केर बढ़बैवाला पदार्थ (प्राकृतिक वा कृत्रिम)। मै.

खादी-सं., देखू—"खद्दर"। हि. तत्सम

खाधि-सं., छोट परिधिक गहींर भूमि। मै.

खाधि खसब-क्रि., (लाक्षणिक) जानि बूझि कय व्यव-हार आ विचार सँ नीचाँ उतरब। मै.

खाबूर-विशे., अधिक खाइवाला। मै.

खानखा-अव्यय, तत्परता सँ। खामोखाह।
उ. तद्भव

खानगी-सं., एकान्ती। मै.

खाना-सं., १. भोजन, खैंक। २. स्थान। प्रयोग—"डाकखाना, पाखीखाना।" हि. तत्सम

खानि-सं., कोनो वस्तुक भूमिगत प्राकृतिक भण्डार। मै.

खाली-सं., १. अनेक पाया तथा खाम्हीक बीचक फाँक। २. केराक घौर। मै.

खाप-सं., किसानक नामें सरकारक देल भूमिक पूर्ण अधिकार। मै.

खापड़-सं., कोहाक बीचोबीच कयल फाँक जकर उपयोग पिण्डदान श्राद्ध मे होइत अछि। मै.

खापड़ि चटकब-क्रि., सदा अत्यन्त खमते रहब। मै.

खापड़ि-सं., कोहाक एक अंश फोड़ि कय मुड़ बना कय बनाओल भूजा भूजी करैक बासन। मै.

खापी-विशे., सरकार सँ मानल लगान तरें अधिकृत भूमि। मै.

खाम्ह-सं., मोट सक्कत आ नमहर बीच घरक खुट्टा जाहि पर सम्पूर्ण घरक भार रहैछ। मै.

खाम्ही-सं., चारक अँचरीक वा ओसाराक कातक सक्कत खुट्टा, जाहि पर चारक एके दिशक भार रहैत अछि। मै.

खाम-विशे., खाद (आन धातु) मिलाओल सोन, चानी। मै.

खामी-सं., अशुद्धता, कमी, त्रुटि। हि. तत्सम

खाय-अव्यय, खा कय। मै.

खार-विशे., नोनछराइन स्वादवाला, क्षार।
सं. तद्भव

खार काढब-क्रि., घर आदि नीपैक क्रम मे सहर-जमीन सँ उपरी टाट वा भीत कें निश्चित रेखा पर नीपब। मै.

खार खाएब-क्रि., (लाक्षणिक) ककरो पर भीतरे भीतर ईर्ष्या, क्रोध आ विरोध सँ जरैत रहब। मै.

खारी-सं., बाँसक कमचीक बीनल गोल नाम अस्थायी रुपें वस्तु रखैक बासन। मै.

खाव-सं., देखू—"खरहन" । मै.

खाल-सं., पशुक अभक्ष्य सुखाएल चाम । मै.

खाली-अव्यय, केवल, टा, सिवित । विशे.,-शून्य, रिक्त । उ. तत्सम

खास खास-अव्यय, मात्र दू गोटयक बीच गुप्त रूपें । उ. तत्सम

खाँसरि-विशे., बिन बाहल बहुत दिन धरि लगैवाली महींस । मै.

खाँसी-सं., कास रोग, दम्मा, खोंखी । मै.

खाहुर-विशे., (स्थान भेदें शब्द भेद) देखू—"खाधुर" । मै.

खि

खिआएब-क्रि., १. अधिक घर्षण सँ पातर होएब । चिह्न बनि जाएब । (ग्राम्य प्रयोग मे)—२. खोआएब । मै.

खिआन-सं., १. अधिक घर्षणक फलस्वरूप क्षीणता । २. खोअउबाक क्रम । मै.

खिखिआएब-क्रि., खी खी कय के हसैत रहब । मै.

खिखीर-सं., छोट नाहरिक मोट बनैया जन्तु । मै.

खिचब-क्रि., १. माटि मे पानि आ कुरकुट दय लात सँ मिलाएब । २. मैल भारैक पदार्थ दय स्वच्छ करैक हेतु कपड़ा मे चोट देब । मै.

खिच्चरि-सं., दालि चाउर मिलाकय रान्हल भोजन । मै.

खिचचा-विशे., नीक जकाँ नहि ओआएल, अजोह । मै.

खिचड़ी-सं., अनेक पदार्थक एकै मे मिलान । मै.

खिचरब-क्रि., नीको वस्तु कें माटि पानि मे मिलाएब । मै.

खिचराह-विशे., थाल पानिक सम्पर्क सँ मलिन । मै.

खिचान-सं., आकर्षण । बल सँ अपना दिश अनैक क्रिया । मै.

खिचार-विशे., थाल पानि भरल अधलाह स्थान । मै.

खिचारब-क्रि., १. पानि हेरा कय स्थान कें दूषित करब । २. थाल पानि पर चिचियाएब । मै.

खिड़की-सं., इजोत आ बसात अबैक हेतु घर मे देल झिलमिली, छोट केवाड़, झरोखा । मै.

खिदखिद करब-क्रि., दुर्बलता सँ भरल रहब । मै.

खिदखिदाह-विशे., दुर्बलता सँ देहक प्रगतिहीनता । स्त्री० खिदखिदाहि । मै.

खिधान्स-सं., निन्दा, वचन सँ आनक कुचेष्टा । मै.

खिन्न-विशे., तनक दुर्बल आ मनक दुखी । सं. तत्सम

खिन-विशे., घटल, क्षीण । सं. तद्भव

खिनखिनाएब-क्रि., खिन आ किछु दुख सँ दुखी रहब । मै.

खिनताह-विशे., क्षीणता सँ भरल । मै.

खिरहरि-विशे., चटाइ, खढ़, बाँस आ ताड़क पात सँ बनाओल बिछाओन । मै.

खिरकिट्टी-विशे., अत्यन्त दुब्बर । मै.

खिरना-विशे., सदिखन घूमैवाला । मै.

खिरब-क्रि., स्वेच्छा सँ घूमैत रहब । मै.

खिरसा-सं., छैना, फाटल दूधक कठुआएल अंश । मै.

खिराएब-क्रि., सब ठाम घुमाएब । मै.

खिरोधनी-सं., क्षीरोदनी । वट सावित्री पूजनक काल मे (बधू वरक) दूध मिलल पानि सँ पैर धोअउबाक हेतु बनल माटिक बासन । मै.

खिल्लति-सं., पदवी, उपाधि । मै.

खिल्लनि-सं., १. गूड़ (चाओ) क बीच कठुआएल काँट जकाँ विकार । २. सद्यः बिआएल मालक थनक दूधक विकार । मै.

खिल्ली-सं., चून, खैर, सुपारी दय मोड़ल पान । मै.

खिल्ली उड़ाएब-सं., (लाक्षणिक) निन्दा सँ उपहासक प्रचार करब । मै.

खिलखिलाएब-क्रि., खुलि कय हँसब । मै.

खिलचब-क्रि., १. कोनो वस्तु कें झोंकदय घुमाएब । २. नीक स्थिति (आर्थिक) सँ अधलाह स्थिति होएब । मै.

खिलनोइ-विशे., १. परती कोड़ि कय कयल उपजाउ भूमि । २. पहिल दुद्धा दाँत टूटल माल जाल । मै.

खिलवट्टी-सं., पान सुपारी रखैक धातुक बासन । पनबट्टी । मै.

खिलान-सं., १. छेद मे पैसबैक हेतु दोसर लकड़ी मे बनाओल छेदक अनुसार गोल । २. सौन्दर्यक हेतु कोठाक मुड़ेरा मे कयल लिखनि आ स्थायी चित्रमूर्ति । मै.

खिस्सा-सं., लोक कथा, खेहा। मै.
खिस्सक्कड़-विशे., अधिक खिस्सा जननिहार, कह-निहार। मै.
खिसकब-क्रि., धीरें-धीरें ससरि (चलि) जाएब। मै.
खिसकाएब-क्रि., धीरें-धीरें हटा देब, ससराएब। मै.
खिसकाह-विशे., चुपचाप गुम भ' गेनिहार। मै.
खिसियाएब-क्रि., बिगड़ब, तमसाएब। मै.
खिसोटब-क्रि., प्रकट करब, बहार करब, विकसित करब। (विशेष रूपें दाँतक हेतुक प्रयोग)—"ई दाँत खिसोटै छथि।" मै.

खी

खींचब-क्रि., बल सँ अपना दिस अनेक प्रयास करब। मै.
खींचाएब-क्रि., १. दोसराक द्वारा जोर सँ अपना दिस अनेक चेष्टा करब। २. स्वयं स्वतः खींचल भ' जाएब। मै.
खींचातानी-सं., अपना अपना दिस खींचैक चेष्टा। मै.
खीजाएब-क्रि., दाना सँ भूसा, वस्त्र सँ मैल चोट द्वारा दील करब। मै.
खीझ-सं., तामसक द्वारें ककरो पर अरुचि। मै.
खीझब-क्रि., तामसें अरुचि प्रकट करब। मै.
खीर-सं., दूध मे चाउर कें रान्हि बनल पदार्थ। मै.
खीरा-सं., खोहसि, लत्तीक स्वादिष्ट फल। मै.
खीरी-सं., गाछ विशेष। लकड़ी। मै.
खील-सं., गहना आदि मे जोड़ पर देल कील। मै.
खीलनि-सं., वियएलाक तुरन्त उपरान्त पहिने सँ स्तन मे जमा विकृत पदार्थ। मै.
खीलनि गारब-क्रि., स्तनक जमा विकार निचोड़ब। मै.
खीसा करब-क्रि., निन्दा करब, हँसी उड़ाएब। मै.

खु

खुक्ख-विशे., एकदम धनहीन। मै.
खुखरी-सं., नेपाली अस्त्र, भूजाली। मै.
खुखरी-सं., आरनिक सब सँ छोट टुकड़ी। मै.
खुचखुच-अव्यय, लगले लागल बारम्बार। मै.
खुचखुची-सं., बारम्बार लगले मलक वेग। मै.
खुचरी खिचरी-सं., छोट छोट अनेक राशि। मै.
खुचुरखुचुर-विशे., लगले लागल लागल होमवाला छोट छोट काज। मै.
खुजखुजाह-विशे., खुजै खुजै पर होइवाला। मै.
खुजनाइ-क्रि., खुजैक क्रिया। मै.
खुजलाह-विशे., खुजल जकाँ लगैत। मै.
खुजली-सं., नोचनी रोग। मै.
खुट्टा-सं., टाट अड़बैक, माल बन्हैक हेतु गाड़ल सक्कत बाँस आ काठ। कहबी—खुट्टा बलें परड़ चुकरै छै। मै.
खुट्टी-सं., छोट सन गाड़ल सक्कत डंटा, काटल गाछ आ फसिलक सक्कत जड़ियाठ। मै.
खुटखुट करब-क्रि., अनिष्टक शंका सँ मन उद्विग्न होएब। मै.
खुटखुटी-सं., अशुभ सन्देहक भावना। मै.
खुटका-सं., मनक आशंका, मरणाशौचक सम्भावना। मै.
खुटकाह-विशे., अधिक सन्देहवाला, अशौचियाह। मै.
खुटब-क्रि., रेखा वा डोरी सँ नापक चिह्न देब। चित्रक रेखा खींचब। मै.
खुटरी-सं., भीत मे जाम कयल छोट छोट खुट्टी। मै.
खुटिया मिर्जई-सं., धरैं धरि पुरुषक प्राचीन आङी। मै.
खुटियाएब-क्रि., नमहर वस्तु कें (घास पात कें) काटि खुट्टी जकाँ बनाएब वा काटल केशक खुट्टी जकाँ बढ़ब। मै.
खुटुर खुटुर करब-क्रि., किछु ठोकैक वा छीलैक निरन्तर काज करैत रहब। मै.
खुटेसब-क्रि., चरैवाला जीव कें चरैक हेतु कोनो खुट्टा लगा कय बान्हब। मै.
खुद्दी-सं., चाउरक छोट छोट टूटल खण्ड। मै.
खुदरा-सं., १. पैघ मुद्राक छोट अनेक मुद्रा। २. छोट छोट वस्तुक समूह। मै.
खुदरिया-विशे., रुपैया सँ छोट छोट विनिमय मुद्रा। मै.
खुदियाएब-क्रि., खुद्दी जकाँ दाँतक ऊगब, दूध फटैक प्रथम रूप। मै.
खुदियाह-विशे., १. खुद्दी सँ भरल चाउर। २. भीतर मे खुद्दी जकाँ असिद्ध भात। मै.
खुदुर बुदुर-अव्यय, असंख्य रूप मे। मै.

खुनकाह/खुनसाह-विशे., १. बातें बातें रुष्ट होइवाला। २. विशेष फुटैबाला बासन। मै.

खुनखा-सं., खुनैक अस्त्र। (खुरपी, खनती, कोदारी)। मै.

खुनखुन कय ताकब-क्रि. कोनेसानी नीक जकाँ खोजब। मै.

खुनाओन-सं., १. खुनैक पारिश्रमिक। २. लगातार खुनबैक (कोड़बैक) काज। मै.

खुनियाँ-विशे., १. हत्या करैवाला। २. खुनैक काज करैवाला। मै.

खुनुस उठब-क्रि., हठात् उत्ताप आएब, कोहि उठब आ जोश होएब। मै.

खुफिया-विशे., सौफिया, जासूस, गुप्तचर। उ. तत्सम

खुफियागिरी-सं., जासूसी। उ. तत्सम

खुबुर खुबुर करब-क्रि., एकै स्थान मे रहैत अधिक संचार करब। उतनुआ नेन्नाक स्वतः हाथ पैर फेंकब। मै.

खुर-सं., १. माल जालक पैर। २. केश कटैक अस्तुरा। सं. तद्भव

खुरखुर करब-क्रि., १. अनदेख वस्तुक संचार करब। २. किछु किछु काज करैत रहब। मै.

खुरखुराएब-क्रि., खुरखुर शब्द होएब। मै.

खुरचन-सं., सितुआ नामक जल जीवक उपरका आवरणवाला (खोलवाला) हाड़ जाहि सँ देहात मे नम्मनक काज होइत अछि। मै.

खुरचब-क्रि., उपरै उपर हल्लुक हाथेँ खँखोरब। मै.

खुरछारी/खुरछाही काटब-क्रि., अत्यन्त व्यग्रता सँ अन्य भय सोझाँ मे वस्तु रहितौ नै देखि ढूँढ़ै मे व्यस्त होएब। अनेर एम्हर ओम्हर हलचल रहब। मै.

खुरजोड़-सं., खुट्टा मे बन्हैले महींस आदि जीवक परैक जोड़ (डोरी)। मै.

खुरदक-सं., ढोल पिपहीक एक संग बाजन। मै.

खुरदकिया-विशे., खुरदक बजबैवाला दल। मै.

खुरपी-सं., घास पात छीलैक कमाइक चाकर आ बेंटवाला गृहस्तीक अस्त्र। मै.

खुरतुच्ची-विशे., सतत् उपद्रव करैवाला। मै.

खुरली-सं., १. कुशक मूल। २. देवालक पुष्ट कड़ि, तड़री। मै.

खुरहा-सं., वंशक्रम, कुल विस्तार। मै.

खुराएब-क्रि., बरदक खुर सँ धङाएब। मै.

खुराठ-सं., खुरक चोट। मै.

खुराड़-सं., खुरक चिह्न। पैघ खुर (पैर)। मै.

खुरापात-सं., उपद्रव, उत्पात। उ. तत्सम

खुरापाती-सं., खुरापात करैवाला। मै.

खुरिया-सं., खुरक घाओ। मै.

खुरियाह-विशे., कोनो खुर पैघ रहैवाला माल। (दोष) मै.

खुरी आगि उठब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बात सँ पैर सँ शिखाक लहरि उठब। मै.

खुरीखुरी करब-क्रि., खुर सँ माटि उकटब। पैर सँ खाड़ब। मै.

खुरुरपट्टी-सं., जंगल भाड़क पातर पैरक बाट, माल जालक खुर सँ बनल बाट। मै.

खुरेठब-क्रि., खुर वा पैर सँ खाड़ब। मै.

खुल्लम खुल्ला-अव्यय, प्रकाश मे आनि कय, प्रकट रूप मे नीक जकाँ। मै.

खुल्ला-विशे., प्रकट कयल, प्रकाश मे आनल, खोलल। मै.

खुलता-विशे., भण्डार सँ खर्चक हेतु आनल, खोलि कय राखल, जमा सँ बहार कयल। मै.

खुलब-क्रि., सुन्दर लागब, खूजब, प्रकट होएब। मै.

खुशी-सं., प्रसन्नता, आनन्द। उ. तत्सम

खुल्लम ख्याल-अव्यय, जानि बूझि कय, जिद्द लगाकय। मै.

खुसखुस टूटब-क्रि., मुसकैं अर्थात् बिना जोर लगौने टूटि जाएब। मै.

खुसुरफुसुर करब-क्रि., चुप्पे चुप्पे गप करब। रहस्यमय ढंगेँ बात करब। मै.

खुहखुह जाएब-क्रि., बिना आयासें अर्थात् छूबैत मात्र छिन्न भिन्न भ' जाएब। मै.

खू

खूजब-क्रि., बन्धन छूटब, बन्धनमुक्त होएब। मै.

खूजा-सं., धान रोपैक काल बीयाक आँटी खोलि रोपैक सुविधा लेल अवन पाछू छीटल बिचड़ाक मुट्ठी। मै.

खूट-सं., वंशक वैयक्तिक फाँगी (शाखा) अर्थात् ह खाढी सँ उपरक वंशक वंशज। मै.

खूँट-सं., कपड़ा वा अन्य पसरैवाला वस्तुक कोन-वाला अंश (आँचर)। मै.

खूँटी-सं., कपड़ा लटकऔंक काज मे अबैवाला देवाल मे लगाओल लोह वा काठक पातर छोट छड़। मै.

खूटे-अव्यय, अन्न केँ बाँटि कय बदला मे वस्तु विक्रय। प्रयोग—"चाउरक चारि खूटे अखन छोटको माछ बिकाइत अछि।" मै.

खून-सं., १. हत्या। २. शोणित। उ. तत्सम

खून खूनामय-सं., १. अधिकता सँ भरल हत्या। २. सगरे शोणिते शोणित। मै.

खून चढ़ब-क्रि., हत्याक मद चढ़ब। मै.

खूनब-क्रि., कोड़ि कय भूमिक भीतर सँ कोनो वस्तु बहार करब। माटि कोड़ब। मै.

खूनी-विशे., खून करैवाला, खून सँ भरल। मै.

खूब-विशे., बढ़ियाँ, नीक, उत्तम, विशेष आ अधिक। मै.

खूबी-सं., विशेषता, सौन्दर्य। मै.

खूभी-सं., कोनो वस्तुक खोंच लगैवाला अंश। मै.

खूस-विशे., (स्वीकारात्मक) बेश, नीक, अधिक। मै.

खूर-सं., माल जाल आ मनुष्यक पैर। मै.

खूरी-सं., खूरवाला अंग। मै.

खूरी बहराएब-क्रि., मालक बियाइक काल योनि सँ पहिने बच्चाक खूरीक प्रकट होएब। मै.

खृ

खृष्टीय वर्ष-विशे., अंग्रेजी ईसवी सन्‌वाला वर्ष। सं. तत्सम

खे

खेआल-सं., (उ.) स्मरण। (मै.) नाटकीय अभि-नय, बताओन। प्रयोग—"ई अहूँ बड़ खेआल करै छी।" मै.

खेआल करब-क्रि., १. मोन पाड़ब। २. विनोदक चेष्टा करब। मै.

खेआल पाड़ब-क्रि., स्मरण करब, मोन पाड़ब। प्रयोग—"हँ अहाँ जे कहलौं से खेआल पड़ल।" मै.

खेआली-विशे., विनोदक हेतु विचित्र अभिनय आ व्यवहार कयनिहार। मै.

खेंखा-विशे., नाक आ मुह सँ अनेरो सतत् खेँ खेँ ऐहन शब्द करैत रहनिहार। मै.

खेखनि-सं., कोनो विषय आ वस्तुक हेतु दीनता सँ प्रार्थना। (हि.) गिरगिराएब। मै.

खेखनियाँ-विशे., खेखनि कयनिहार। सं.,- नीचता सँ कोनो वस्तुक आग्रहपूर्वक प्रार्थना। मै.

खेंखा-विशे., बिन अर्थ बुझनौ सब बात पर खेँ खेँ हँसैवाला। मै.

खेंखियाएब-क्रि., १. खेँ खेँ कय हँसैत रहब। २. कोनो वस्तु देखैत मात्र सल्ल भय प्राप्त करैक चेष्टा करब। मै.

खेंखें करब-क्रि., बिन कारणौ सब वस्तुक अभाव देखा दीनताक प्रदर्शन करब। धर्कटपनी राखब। मै.

खेटा-सं., होहकारा दय के शिकार उठाएब। मै.

खेड़हा-सं., आत्मीय लोकक वा आनौक आदि सँ दोष रामक विस्तृत कथा। मै.

खेड़ही-सं., १. साम जातिक भदइ अन्न विशेष। २. कोमल दलिहन विशेष। (मूड़) मै.

खेड़ा-विशे., खेलाइक प्रकृतिवाला। खेलायब अधिक पसिन्न कयनिहार। क्रीड़ा विशेषज्ञ। मै.

खेड़ि-सं., खेल, क्रीड़ा आ विनोद। मै.

खेड़िया-विशे., सदिखन खेल मे मगन रहनिहार। मै.

खेढ़ा-सं., विषयक वार्ता, रहस्यक बात। मै.

खेत-सं., उपजाउ भूमि। मै.

खेत उतार-सं., एक फसिलक अन्तिम कटनी। फसिल कटैक समापन। मै.

खेत कोना-सं., खेत मे फसिल लगबैक बाँकी कोन। मै.

खेत पथार-सं., अचल सम्पत्ति, खेतक संग पसरल गाछ वृक्ष आदिक बेप। मै.

खेतबहि-सं., निरन्तर खेतक ओत कोड़क काज। मै.

खेतियाहा-विशे., खेतीक मर्म जनैवाला। मै.

खेतिहर-विशे., खेती मात्र जीविकावाला। कृषक। स्त्री० खेतिहारिन। मै.

खेतिहारी-सं., कृषि कार्यक त्रुटि, परिज्ञान । मै.

खेती-सं., खेत सँ उत्पादन प्रक्रिया, कृषि । मै.

खेद-सं., दुःख । सं. तत्सम

खेदा-सं., हाथीक शिकार । मै.

खेना-अव्यय, भूत वा भविष्य मे खाइक समय । खपना । प्रयोग—"चौआ कें औषध खेना कते काल भेल छनि ।" मै.

खेप-सं., समय आ काजक सीमित मान । प्रयोग—"एक खेप धानक बोझ खरिहान मे धय आबह् तखन दोसर खेप लय जयबह् ।" अर्थात् बेर । मै.

खेपनि-सं., समय कटैक क्रम । प्रयोग—"की कहू एहि महगी मे कोनो धरानी खेपनि करै छी ।" मै.

खेपब-क्रि., कोनो रूपें काल काटब । मै.

खेपी-सं., बेर काजक अनुकूल समयक मान विशेष । एक खेप, दु खेप आदि । मै.

खेपाखेपी-सं., बेरा बेरी । एक बेर दु बेर कय । मै.

खेवट-सं., १. जमीन्दारी संख्या । २. नाओ खेवि पार उतारैक बोनि । मै.

खेवनि-सं., १. नाओ खेवैक कला । २. नाओ खेवैक बोनि । ३. नाओ खेवैक काज । मै.

खेवनिहार-विशे., नाओ चलौनिहार । मै.

खेवब-क्रि., नाओ हाँकब, चलाएब । मै.

खेवा-सं., नाओ खेवैक, नाओ खेवि पार उतारैक पारिश्रमिक । मै.

खेवाइ-सं., देखू—"खेवा" । मै.

खेवियाा-सं., खेवैक नियत काज । मै.

खेम-सं., कल्याण, क्षेम । सं. तद्भव

खेरब-क्रि., चुराएब । खिराएब । नोतब । मै.

खेरहा-सं., गमकहुन मोट धान । प्रयोग—"खेरहा धान के चुरवे रे चुरवे भूजी महींसके दूध ।" मै.

खेल-सं., क्रीड़ा, मनोरंजन । मै.

खेलधूप-सं., खेलाइक अनेक प्रक्रिया । मै.

खेलना-विशे., खेलाइक प्रवृत्तिवाला, खेलइक पदार्थ । मै.

खेलब-क्रि., स्वतः खेल मे निमग्न रहब । मै.

खेला-सं., प्रदर्शन भेद, प्रकार, रूप । मै.

खेलाएब-क्रि., संग मिलि क्रीड़ा करब । मै.

खेलाड़ी-विशे., अनेक खेल (प्रदर्शन) करैवाला, जनैवाला । मै.

खेलौड़-सं., खेलाइक विधि, केहनो बात मे खेलाइक बोध । मै.

खेलौड़िया-विशे., विनोदप्रिय, कठिनो काजमे खेलाइक रूप देनिहार । मै.

खेलौना-सं., खेलाइक साधन । मै.

खेसरा-सं., १. माछ विशेष । २. खेतक संख्या । मै.

खेसारी-सं., तीन कोनवाला दलिहन विशेष । मै.

खेह-सं., तागक बाँटनि (गुन) कें बैसबैक प्रयास । मै.

खेहब-विशे., क्रिया, बाँटल तागक गुनक पानिक संग सोंटि क' बैसाएब । मै.

खेहल-विशे., बारम्बार अनुभव कयल । प्रयोग—"ई बाट तँ हमरा खेहल (परिचित) अछि ।" मै.

खेहार-सं., पाछू सँ दौड़ि कय पकड़ैक चेष्टा । मै.

खेहार करब-क्रि., पाछू पाछू दौड़ैत पकड़ैक चेष्टा करब । मै.

खेहारब-क्रि., वेग सँ पाछू पाछू दौड़ब । मै.

खै

खै-विशे., गहींरगर खेत । मै.

खैंक-विशे., भोजन, खाइक लेल राम्हल वस्तु । मै.

खैंक-सं., मेहीं काठी जे कतौ अकस्मात् गड़ि जा सकए । मै.

खैंक पियक-सं., खजवाक पियबाक व्यवस्था । मै.

खैंका-विशे., (लाक्षणिक) दुर्बल शरीरवाला । मेहीं काठीसन बनल । मै.

खैंखैं करब-क्रि., अभाव सँ सतत् खगते रहब । अभावेँ व्यग्र होएब । मै.

खैंचन-सं., आकर्षण, अपना दिश अनैक प्रयास । मै.

खैंचब-क्रि., भीकब, आकृष्ट करब । मै.

खैंचातानी-सं., एके वस्तु कें अपना अपना दिश कें खैंचब । मै.

खैंछा-सं., डोलची, फैल मुहवाला बाँस वा बेंतक बनल बासन (यात्राक उपयोगी) । मै.

खैंछा-सं., बाँसक कामिक बीनल गोलाकार आ नाम सन मलाहक माछ रखैक बासन । मै.

खैंठी-सं., पाथोक उपर सुखाएल विकृत अंश । मै.

खैंन-सं., खाइक रूपरेखा, खयबाक सन्दर्भ। मै.

खैन खसब-क्रि., कार्यालयक दाइत्व मे चोराओल धनक देन होएब। मै.

खैन वा पानि पीकय लागब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बात पर एकाग्र भ' क' पड़ब। मै.

खैन पियन-सं., नव सौजनक विशेष भोजन क्रम। मै.

खैनी-सं., तमाकू। मै.

खैर-सं., पानक प्रधान मसाला। मै.

खैर-सं., तेलहन वस्तुक सिट्ठी। मै.

खैरी पड़ब-क्रि., प्राकृत प्रभाव सँ कोनो वस्तु पर मोट कारी दाग पड़ब। मै.

खैंलहा-विशे., कोनो शर्त पर लय के खाएल वस्तु। मै.

खैहन-विशे., खाइक हेतु सुरक्षित अन्न। मै.

खो

खो-सं., एक खेप दाओन करैक हेतु मेंहक परिधि मे छीटल सीससहित अन्नक डाँट। मै.

खोआ-सं., अत्यन्त गाढ़ कयल दूध। मै.

खोआएब-क्रि., भोजन कराएब। मै.

खोइआ-सं., कोमल गुद्दाक कठोर आधार। कड़ा आवरण। एहि आकारक प्रकारक आनो वस्तु। प्रयोग-"नारिकेरक खोइआ, आमक कोइलीक खोइआ। एहि प्रकारक आनो वस्तु।" मै.

खोइखोइकय छूटब-क्रि., हठात् अत्यन्त क्रोध सँ दूर करैक हेतु अपमानजनक बात करब। मै.

खोइचा-सं., फल आदि वस्तुक उपरका प्राकृतिक आवरण, कठोर चर्म। मै.

खोइछ-सं., सधवा स्त्रीक शुभ सूचक विधि। आँचरक अंश मे चाउर वा धान दय आगू मे डाँर मे खोंसि लटकबैक व्यवहार। मै.

खोइछा सं., कोनो वस्तुक रखैक हेतु स्त्रीक साड़ीक छोरक आँचर केर झोरी जकाँ आगू दिश डाँर मे खोंसल जाइक बनाओल पात्र। मै.

खोंख-विशे., उकासीक बिना वेग भेनौं अनेर खों खों करैक अभ्यासवाला। मै.

खोखड़न-विशे., कोनो बासन मे लागल खुरचन वा कोनो कड़ा वस्तु सँ छोड़ाओल वस्तु। मै.

खोखड़ना-सं., खोखड़ैक साधन। खुरचन आदि। मै.

खोखड़नी-सं., खोखड़ैक लेल बनल साधन। गहुम आदि फसिलक जंगल खोखड़ैक अस्त्र। मै.

खोखड़ब-क्रि., कोनो सटल वस्तु कें कोनो धारदार कड़ा वस्तु सँ छोड़ाएब। मै.

खोखड़ाएब-क्रि., अनका द्वारा खोखड़ैक क्रिया करा-एब। मै.

खोंखब-क्रि., उकासी करब। मै.

खोखला-विशे., भीतर सँ फोंक। हि. तत्सम

खोखस-सं., १. छातीक भीतर श्वासक धमन कय-निहार बटुआ जकाँ प्राकृतिक शरीर यन्त्र। २. कटला उत्तर अंग मे बहराएल रक्तहीन मांस। मै.

खोखसा-सं., वनस्पति विशेष। मै.

खोखसाह-विशे., भीतर सँ सुन्न दुर्बल आ उपर सँ देखै मे मोट डाँट। मै.

खोंखियाएब-क्रि., खों खों शब्द करब। बिगड़ि उठब। मै.

खोंखिला-विशे., तत्वहीन। भीतर सुन्न। मै.

खोंखी-सं., उकासीवाला रोग। मै.

खोङ-विशे., अवसर पर नहि बाजि सकैवाला केवल मुह तकैवाला। मै.

खोड़ा-सं., चाकर मे गोल खड़ाइ मे नाम बेंतक वा बाँसक बीनल बासन। मै.

खोढ़ी-सं., मलाहक माछ रखैवाला कम खड़ाइवाला गोल चाकर बँसैला बासन। मै.

खोंच-सं., उपर बहराएल गड़िकय चमड़ा कें क्षत करैवाला अंश। मै.

खोंचब-क्रि., खोंच जकाँ आँगुर सँ मारि कय प्रेरित करब। मै.

खोंचरि-सं., कपड़ाक चारू खूँट बान्हि कय बना-ओल बासन। मै.

खोंचा-सं., आगूक नोकवाला अंश। मै.

खोंचा मारब-क्रि., कोनो नोकवाला वस्तु सँ हल्लुकें सँ मारब। मै.

खोंचार-सं., खोंचवाला वस्तु सँ जोर सँ चोट। मै.

खोंचारब-क्रि., (लाक्षणिक) प्रेरित वा सजग करैक हेतु बातें वा वस्तुएँ उकसाएब। मै.

खोंचाह-विशे., बड़ल खोंचक अंशवाला। मै.

खोँचियाएब-क्रि., १. लपकि झपकि कय कोनो वस्तु हथियाएब। २. मैथुनक व्यर्थ चेष्टा देखाएब। मै.

खोँचो-सं., लपकि झपकि कय लैक चेष्टा। तराजू मे हाथक सफाई। मै.

खोंची मारब-क्रि., बनियाँ सभक तौलैक काल हाथक इशारा सँ घट्टी ओखब। टालि मारब। मै.

खोंछि-सं., देखू—"खोंइछ"। मै.

खोज-सं., अनुसन्धान, अन्वेषण। ताकब। प्रयोग-"कने हुनको खोज पुछारी रखथैन।" मै.

खोजब-क्रि., ताकब, ढूँढब, अन्वेषण करब। मै.

खोजी-विशे., अन्वेषण मे तत्पर। खोजनिहार। मै.

खोंट-विशे., १. निम्न कोटिक वस्तु। २. नह आदि तेज वस्तुक द्वारा उखाड़ैक क्रिया। ३. भञ्जन। मै.

खोटका-सं., १. अनिष्टक भय। २. अशौच। मै.

खोँटब-क्रि., १. नह आदि सँ भगन करब। २. सम्पूर्ण वस्तु सँ कनेक कपचि लेब। मै.

खोँटा-विशे., १. तत्वहीन। २. छोट। ३. भगन कएल। मै.

खोंटाएब-क्रि., १. असावधान मे अपन तथा आनक नह आदि सँ भगन भ' जाएब। २. कटाएब। मै.

खोंटि खाँटिकय-अव्यय, (लाक्षणिक) बचा खुचा कय अर्थात् बड़ संकुचित व्यय कय। मै.

खोंटियाएब-क्रि., हल्लुक हाथेँ अभ्यास (लुलुक) वशेँ खोंटैक चेष्टा करब। जेना बच्चा दूध पीबैक काल दोसर स्तन कें खोंटैक चेष्टा करैत रहै अछि। मै.

खोंठी-सं., घाओ छुटला पर उपरक सुखाएल चमड़ा। मै.

खोंठी पड़ब-क्रि., छुटैक क्रम मे घाओ सुखाएब। मै.

खोंड़-विशे., १. पूर्ण रूप मे एक अंशक कमी। २. अंगभंग, अर्थात् आँखि नाक, मुह मे हीनता सँ विकृत। मै.

खोड़ संग-विशे., उत्तरदायित्वक संग अनावश्यक संग लागल लोक। मै.

खोड़ा-सं., १. बाटक छोट छीन पानिवाला स्थान। २. निचरल खेत। मै.

खोड़ा-सं., १. देखू—"खोंत"। २. सतरंज पचीसी आदि खेलक निखारल घर। मै.

खोड़िया-सं., नेपाली अस्त्र खुखरी। मै.

खोण करब-क्रि., अंग भंग करब। छाँटब। मै.

खोंता-सं., चिरै चनमुनीक वास, घर (सं.) नीड़। मै.

खोद-सं., कोड़ब, जड़ि जमाएब। मै.

खोदब-क्रि., जड़ि जगा कय उखाड़ब। मै.

खोद बेध-सं., जड़ि जगा कय स्पष्ट करैक प्रयास। मै.

खोदाइ-सं., खोदैक काजक क्रम। मै.

खोध-सं., गहीँर सँ कोड़ैक चेष्टा। मै.

खोधन-सं., गहीँर कय कोड़ैक व्यापार। मै.

खोधब-क्रि., १. समथरि पर गहीँर चेन्ह् करब। मै.

खोधर-सं., गहीँरसन छेद। मै.

खोधराह-विशे., यत्र तत्र गहीँर छेदक चिह्नवाला। मै.

खोधल-विशे., भग्न कयल। मै.

खोधली-सं., छोट छीन वस्तु रखैक लेल देवालक भीतर गहीँर सन चक्का। मै.

खोधहा/खोधा-सं., चमड़ा पर सूइक द्वारा रंग सन्हिया कय स्त्रीगणक अंग सब मे कयल विभिन्न चेन्ह्। मै.

खोधाएब-क्रि., खोधा पड़ाएब। गम्भीर रूपेँ छेद कराएब। मै.

खोधाइ-सं., गहीँर धरि माटि काटि कोड़ैक चेष्टा। मै.

खोधाड़/खोधाण-क्रि., गहीँरधरिक छेद गहीँर छेदक चिह्न। मै.

खोधान-सं., सतत खोधैक क्रम। मै.

खोधामा-सं., पाथर वा काठ कें खोधि खोधि इच्छानुसार बनाओल चित्रकारी। मै.

खोधियाएब-क्रि., १. कनेक खोधि कय किछु बहार क' लैक चेष्टा। २. चोरि करैक सन्दर्भ मे यत्र तत्र चिह्न कटैले कोड़ब। ३. जमा राशि सँ थोड़ थोड़ खर्च करब। मै.

खोधी-विशे., खोधैक बात कें जगबैक लुतुकवाला। मै.

खोधुआ-विशे., खोधि कय आनल, रचल वा खोधामा कयल। मै.

खोन-विशे., उपरका काटल ठोरवाला अथवा काटल नाकवाला। खोंड़, भग्न। मै.

खोनमा-सं., अनादर विशेषण खोन। मै.

खोनही-सं., (अ.) गँलरी, कोन दिशक संकीर्ण स्थान । मै.

खोना-अनादर विशे., ठोरकट्टा, नककट्टा । मै.

खोनाठ-सं., अधजरू जारनि आ चेरा । प्रयोग—"नहि कमाएब तँ खोनाठ खाएब ।" मै.

खोनाठी-सं., अधजरू चेराक मारि । मै.

खोनू-विशे., शिष्ट सम्बोधन "खोन" । मै.

खोप-सं., परबाक रहैक कृत्रिम स्थान । मै.

खोपड़ि-सं., अस्थायी उठबै बैसबैक योग्य टाटक बनल मोड़ल आ घरक आकारक छाही, सामान्य छोटका फूसक घर । मै.

खोपड़ी-सं., १. बाध बोनक खोह जकाँ भूमि सँ लागल अस्थायी घर । २. माथक उपरक भाग । मै.

खोपा-सं., समेटि कय कलात्मक रूपेँ एकठाँ बान्हल केश विन्यास । मै.

खोपिया-सं., कलमक मुहक मुनना । मै.

खोपी-सं., कोनो वस्तुक मुह मुनैक हेतु तदनुसार बनाओल मुनना । मै.

खोभ-सं., गलल वा दहाएल धानक गाछक स्थान पर पुन: रोब । मै.

खोभब-क्रि., नष्ट धानक गाछक स्थान मे पुन: रोपि स्थानक पूर्ति करब । मै.

खोभलहा-विशे., खोभल धानक गाछ आ खेत । मै.

खोभाटनि-सं., वस्तुक बारम्बार तगेदा । मै.

खोभाटब-क्रि., बारम्बार तगेदा करब । मै.

खोभाड़-सं., गमैया सूगरक कृत्रिम संकीर्ण घर । मै.

खोभाड़ी-विशे., खोभाड़ सन संकीर्ण । मै.

खोभिया/खोभी-सं., चर चाँचर मे स्वयं उपजैवाला सूक्ष्म दानाक कोमल खाद्य, फलाहारक उपयोगी । मै.

खोभुआ-विशे., गोभि कय रोपल भिन्न धान । मै.

खोम-सं., व्यवहार विशेष सँ अनिष्ट शंका । मै.

खोमचा-सं., घलि फिरि बेचैक लेल वस्तु रखैक फैल आ उत्थर काठक बासन । मै.

खोमटार-सं., बात बात मे अमंगल शंकाक प्रकृति । मै.

खोमारी-सं., परिश्रम आ निन्नक अभावेँ भकुआइक चेष्टा । मै.

खोमाह-विशे., अमंगलक विषय आ अमंगलक शंका रखनिहार । स्त्री० खोमाहि । मै.

खोर-विशे., विशेष लुतुरूवाला । प्रयोग—"गँजखोर भतखोर, मदखोर आदि । मै.

खोरचाल-सं., विषयक उत्थान, बातक प्रकाशन । प्रयोग—"गप्पक प्रसंग मे कथा बातीक खोर चाल सेहो कय लेब । मै.

खोरना-सं., कोनो वस्तु कें चालैक आ उपर नीचाँ कोड़ि कोड़ि व्यवस्थित करैक साधन । मै.

खोरनाठी-सं., चिता मे शव के उनटा पुनटा कय जरबैक हेतु अर्थात् मुर्दा खोरै लेल बाँसक टोंटा । बिजाधर । मै.

खोरनिहार-विशे., दबल वस्तु कें प्रकाशमे अनैवाला आ कोनो वस्तु कें नीचाँ उपर कयनिहार । मै.

खोरनी-विशे., १. बिसरल बात कें जगौनिहारि । २. विशेष लतिवाली स्त्री । मै.

खोरब-क्रि., १. ढील आ ठोस कें कोड़ब । २. उपेक्षित विषय के प्रत्यक्ष मे आनब । ३. बात कें बारम्बार उठाएब, जगाएब । मै.

खोरा-सं., महीरंगर जलपूर्ण स्थान । मै.

खोराक-सं., खयबाक निश्चित मात्रा । मै.

खोरि-सं., चारू दिश ऊँच रहैक कारणेँ पानि बसैवाला गीलार खेत । मै.

खोरिहया/खोल्ही-सं., वस्तु रखैक हेतु भीत आ देबाल मे खोधि बनल स्थान । मै.

खोल-सं., कोनो वस्तु सुरक्षित रखैक आवरण । मै.

खोल करब-क्रि., किछु पैसबैक हेतु काठ आदि वस्तु मे छेद बनाएब । मै.

खोलना-सं., खोलैक साधन । मै.

खोलब-क्रि., १. मुक्त करब । २. बन्धन छोड़ाएब । ३. प्रकाश मे आनब । ४. अकुञ्चित करब । ५. अनावृत करब । मै.

खोल बनाएब-क्रि., खाँच काढ़ब । मै.

खोलबाएब-क्रि., आनक द्वारा खोलैक चेष्टा कराएब । मै.

खोलवैया-विशे., खोलैवाला । मै.

खोलसा-सं., मुखौटा, मुह बेदरंग करैक खोल । देह कें अनचिन्हार करैक विशेष आवरण । मै.

खोलाएब-क्रि., देखू—"खोलबाएब"। मै.

खोलाखोली-सं., बारम्बार खोलैक आ बन्हैक क्रम। मै.

खोली-सं., नापक अनुसार ठोस बनाओल आवरण। मै.

खोँसना-सं., खोँसैक वस्तु। भीतरधरि पैसा कए सुरक्षित करैक स्थान। मै.

खोँसब-क्रि., भीतर धरि पहुँचा कय अस्थायी सुरक्षित करब। मै.

खोँसर-विशे., अनका पर अवलम्बित रहनिहार। मन केँ चंचल रखनिहार बूढ़। मै.

खोह-सं., गुफा, सोन्हि, सुरंग। मै.

खोहब-क्रि., कोड़ि कय भीतर शुद्ध करब आ पैसब। मै.

खोहर-सं., खोह जकाँ शून्य छेद। मै.

खोहि खोहि कय छूटब-क्रि., देखितैं बिगड़ि उठब। मै.

खौ

खौ-अव्यय, आश्चर्य व्यञ्जक स्वतः बहराएल शब्द (?)। मै.

खौआ-विशे., केवल खयबाक स्वार्थवाला। मै.

खौआबऔआ-विशे., खाइक अवधि धरि बड़ाई करैवाला। मै.

खौक-विशे., अधिक सँ अधिक लाभ एवम् भोजन चाहैवाला। मै.

खौका-विशे., विशेष खाइक प्रकृतिवाला। मै.

खौकार-विशे., भरि इच्छा सब किछु खाइवाला माल। मै.

खौँछी-सं., नूआक टुकड़ाक दू खूँट बान्हि क' बनाओल झोरी। मै.

खौझनि-सं., मानसिक तनाओ। मै.

खौँझब-क्रि., मनैं मन उत्तेजित होएब। मै.

खौँझाएब-क्रि., लोक पर मनक उत्तेजना झाड़ब। मै.

खौँझाह-विशे., खौँझाइक प्रकृतिवाला। मै.

खौँझी-सं., खौँझाइक प्रवृत्ति। मै.

खौँढ़की-सं., बिना ढेकाक पुरुषक अधोवस्त्र। मै.

खौत-सं., ज्वाला, ताप। मै.

खौवाढनि-विशे., खाइऐक पाछू सम्पत्ति समाप्त कय लेनिहार। मै.

खौर-सं., क्षौर, मरणाशौचक नह केश कटैक दिन। मै.

खौरछाह-विशे., खयबा मे कुस्वादु। मै.

खौल-सं., आँच सँ द्रवणशील वस्तुक उथल पुथल। मै.

खौलन-सं., द्रवणशील वस्तुक आँच सँ उधियाइक क्रम। मै.

खौलब-क्रि., १. (लाक्षणिक) क्रोधेँ उधियाएब। २. ताप सँ द्रव वस्तुक उथल पुथल करब। मै.

खौलाएब-क्रि., आँच पर द्रव वस्तु केँ उधियाएब। मै.

खौहरि-सं., नगण्य उपद्रवी नेन्नाक समूह। मै.

ग

ग्रन्थ-सं., शास्त्रीय कल्पनामय लेखक पोथी। सं. तत्सम

ग्रह-सं., परोक्ष रूपेँ सब केँ सब पकड़ि रखैवाला ज्योति। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि राहु (प्लटो), केतु (नेपच्यून) एहि नवो ज्योतिक समूह। सं. तत्सम

ग्रहण-सं., पकड़, सूर्य पर चन्द्रक छाया तथा चन्द्र पर पृथ्वीक छाया पड़ैक प्रकृति। सं. तत्सम

ग्राम्य-सं., गाम मे भेनिहार। देहाती। सं. तत्सम

ग्राम-सं., १. बसती, विशेष नामक बसतीक परिधि। २. आधुनिक तौलक सूक्ष्मतर बाट। अं./सं. तत्सम

ग्रामीण-विशे., गामक लोक। सं. तत्सम

ग्रास-सं., १. ग्रहणक समय सूर्य वा चन्द्रमाक अन्धकार मे लय। (ग्रसि जाएब) २. कऽऽर। ३. मालक चरी। सं. तत्सम

ग्राह-सं., जल जीवनकार, गोहि, मकर। सं. तत्सम

ग्राहक-विशे., १ लेनिहार। २. पेट मे मल केँ पकड़ि रखनिहार भोज्य पदार्थ। ३. कीननिहार। सं. तत्सम

ग-सं., क वर्गक तृतीय वर्ण, गकार। मै.

ग-सं., संगीतक सातो स्वर मे तेसर स्वर, गान्धार। मै.

गऽऽ-अव्यय, मुसहरनीक वाक्यालंकार। प्रयोग—"हम काहाँ गेलियै गऽऽ।" मै.

गए-अव्यय, अपना सँ छोट स्त्री वर्गक हेतु सम्बोधन। भय, विस्मय आ दुःखक बेरक स्त्री वर्गक उक्तिकसम्बोधन। प्रयोग–"गए दाइ? आ गए दाइ! गए माँ! गए माँ!!।" मै.

गओं-सं., व्यक्तिगत स्वार्थ आ तकर सिद्धिक यत्न। मै.

गओंगीर-विशे., अपना स्वार्थें टा सार्थक लक्ष्यवाला। मै.

ग कहैत गर्दा हाथ-लोकोक्ति, बिन बात बुझनें किछु कय बैसब तथा व्यक्ति कें दूर करै के अधीर रहब। मै.

गगन-सं., आकास। प्रयोग–"देल छापनील गगन, खेत सघन हरित बरन।" सं. तत्सम/मै.

गगरी-सं., धातु (द्रव्य) क बनल पैल सन छोट जल रखैक पात्र। छोटका माटिक पैल। मै.

गङ्गा-सं., देव नदी, पवित्र एवं प्रसिद्ध भारतीय नदी। मै.

गङ्गाजली-सं., गङ्गाजल रखैक विशिष्ट पात्र। मै.

गङ्गापुत्र-विशे., गङ्गा कातक पण्डा। मै.

गङ्परिया-विशे., गङ्गाक कातें कातें बसनिहार। मै.

गङौट-सं., गङ्गाक माटि। मै.

गच्च होएब-क्रि., अत्यन्त तृप्त होएब। मै.

गच्चा खाएब-क्रि., अदूरदर्शिता सँ धोखा खाएब। असावधानी सँ लक्ष्य चूकब। मै.

गच्छ-सं., एकें वंश मे विभिन्न गोटयक अनेक फुल। मै.

गछनर-विशे., १. अंकुरक उपरान्त गाछक रूप मे आएल गाछ। नमहर अंकुर। २. गाछक घनत्व भरल खेत। मै.

गाछ चढ़हा-विशे., गाछ चढ़ै मे निपुण। मै.

गछपक्कू-विशे., गाछक पाकल फल। मै.

गछब-क्रि., स्वीकार करब, मानब। मै.

गछाएब-क्रि., १. अंकुरक गाछ सन भऽ जाएब वा गाछ सन लागब। २. स्वीकार कराएब। मै.

गछार-सं., कसिकय बन्धन। मै.

गछारब-क्रि., १. (लाक्षणिक) कोनो विषय मे बाध्य (विवश) करब। २. कसि कय बन्धन देब। मै.

गछाह्-विशे., १. गाछ सँ भरल स्थान। २. नमहर रूपक गाछ। मै.

गछिहन-विशे., अत्यधिक गाछें भरल प्रान्त। मै.

गछियौन्ह/गछौन्ही-विशे., गाछ गाछीक अधिकता सँ झाँपल आ अन्धकारमय प्रदेश। मै.

गज्झा-विशे., (गाछ वृक्षक हेतु प्रयोग) अत्यन्त कोमल आ अजोह। मै.

गज-सं., १. कपड़ा नपैक मानदण्ड वा फीता। हाथी। सं. तत्सम

गँजखोर-विशे., गाँजा पीबैक लुतुकवाला। मै.

गजगज करब-क्रि., घन भ' क' देखार वा प्रकाशमान रहब। मै.

गजगजाएब-क्रि., घन रूपें परिपूर्ण बनाएब आ शोभायुक्त राखब। मै.

गजगजाह्-विशे., अत्यन्त घूनल रहैक कारणें हीन। मै.

गजगोह्-विशे., स्थूलताक कारणें गोहि जकाँ शिथिल आ पड़ल रहैवाला। मै.

गजड़ा-सं., धानक नार आ खढ़क गूहिकय बीनल पटिया जकाँ बिछाओन आ ओढ़ना। मै.

गजपट-विशे., अव्यवस्थित रूपें अवस्थित। मै.

गजपटाएब-क्रि., परस्पर ओझरा जाएब। मै.

गजपटाह्-विशे., विभिन्न जातिक वस्तु परस्पर मिलल। मै

गज पीपरि-सं., बनैया औषध। मै.

गजब-क्रि., १. नम्मा काँट वा ओहेन वस्तु कें कोमल फल विशेष मे भोंकि भोंकि ढील बनाएब। २. मर्न मन आनन्द आ गौरव सँ ऐंठब। मै.
अव्यय—अनहोनी। उ. तत्सम

गजबज-विशे., अपच विकार सँ पेट मे शब्दक संग अधिक घर्षित वायु। मै.

गँजबाह्-विशे., गाँज सँ माछ मारै मे चतुर। मै.

गँजबाहि-सं., १. गाँज सँ माछ मारैक प्रक्रिया। २. गाँजा पीबैक लगातार क्रम। मै.

गजमुक्ता-सं., हाथीक मस्तकक मुक्तामणि। मै.

गजर गजर ताकब आ सुनब-क्रि., सूतल बुद्धि जकाँ बिना किछु बौद्धिक संचारक सिथिल तर्कें वा सुनैत रहब। मै.

गजर बजर-विशे., परस्पर मिलल विभिन्न वस्तु। मै.

गजरा-सं., फूल पत्ती सँ गूहि कय बनाओल माला। मै.

गजहा-विशे., गोभी (नव यौवन प्राप्त) होइक कारणें अत्यन्त अजोह गाछ। मै.

गजाह-सं., निरन्तर गर्जैक कार्यक्रम। मै.

गजाड़-सं., खड़पातवाला खेत मे कदोआ करैक लेल खड़ पात कें सड़वाले जोत पर सँ चौकी सँ पाटब। मै.

गजाड़ब-क्रि., पनियाएल खेत मे खेतक खड़ पात कें जोति सड़ै लेल खेतें मे गाड़ब। मै.

गजाह-विशे., अत्यन्त अजोह आ कोमल होइक कारणें अनुपयोगी। मै.

गजिया-सं., कम चाकर नाम बेशी भोरी, छोटका बोरिया। मै.

गजुरा-सं., लम्बाकार अंकुरक प्रथम रुप। मै.

गंजेण-विशे., भारी भरकम होइक कारणें अचल। (लाक्षणिक) देह नै चलबैवाला आलसी। मै.

गंजेर-विशे., गाँजा पीबि कय मकुआएल रहैवाला। मै.

गजेरब-क्रि., अनेक भारी वस्तु कें एकै ठाम जमा करब। मै.

गजोहा-विशे., थोड़बै दिनक अजोह गाछ। मै.

गजौठ-विशे., आलसी एवं देहक भारी होइक कारणें अचल पड़ल रहैवाला। मै.

गञ्ज-विशे., असंख्यता सँ भरल विविध प्रकार। प्रयोग—"हाट पर आम रंजक गंज भेटै छै।" मै.

गञ्जन-सं., क्रोध भरल दुर्वाक्य। मै.

गञ्जी-सं., पहिरैक छोट अंगा। मै.

गट्ट' घीरब-क्रि., १. बिना स्वाद नेनहि कण्ठ सँ नीचाँ उतारि लेब। २. (लाक्षणिक) मान अपमानक विचार नै करब। मै.

गट्टा-सं., हाथ सँ उपर पट्ठीवाला अंग। मै.

गट्टी-सं., एक विचार आ व्यवहारक दल। मै.

गट्ठर-सं., कनि कय बनाओल सक्कत पोटरी। मै.

गट्ठुल-विशे., अत्यन्त कसल। मै.

गट्ठा-सं., पोथी पतरा सभक कसि कय बान्हल बान्ह। मै.

गटगट गीड़ब-क्रि., घर्कैट जकाँ खाएब, (लाक्षणिक) आनि ग्लानि आ मान अपमान छोड़ि स्वार्थ साधब। मै.

गटाक द'-अव्यय, अविलम्ब कण्ठक नीचाँ कय। मै.

गठनि-सं., देहक सक्कतपन। समितिक आयोजन। मै.

गठब-क्रि., सक्कत कय व्यवस्थित करब। व्यवस्थित रुप देब। मै.

गठरी-सं., छोट मोटरी। मै.

गड्डी-सं., कागजक बान्हल तह। मै.

गड़कब-क्रि., एक रेखा पर घुरमैत चक्र जकाँ चलब। मै.

गड़काएब-क्रि., एक रेखा पर घुरमैत चक्र जकाँ गतिशील करब। मै.

गड़काह-विशे., अविच्छिन्न गतिशील करैवाला स्थान। मै.

गड़खै-सं., गड़कि कय खसैवाला व्याधि। मै.

गड़गड़-अव्यय, १. एक अव्यक्त शब्द। २. अविच्छिन्न धारा रुपक। मै.

गड़गड़ाएब-क्रि., अविच्छिन्न धारा सँ पतन होएब। मै.

गड़गड़ाहटि-सं., लगातार गड़गड़ ध्वनि। मै.

गड़ब-क्रि., शरीर मे धँसाएब। भूमि मे अचल भय रहब। मै.

गड़बड़ -विशे., बेढंग, अव्यवस्थित रुपें स्थित। मै.

गड़बड़ाएब-क्रि., अव्यवस्थित होएब। बेढंग होएब। अशुद्ध होएब। मै.

गड़बड़ाह-विशे., १. अस्वस्थ। २. अव्यवस्थित। ३. अशुद्ध। मै.

गड़बड़ी-सं., बाधा, अव्यवस्था, भाडठ, सन्देह। मै.

गड़र-सं., न्यों (नींव) जड़ि छानब, काजक प्रारम्भ करब। मै.

गड़रब-क्रि., गलि गलि खसब। ढील होएब। मै.

गड़ाक द'-अव्यय, लगले, सद्यः विलम्बरहित। मै.

गड़ार-सं., स्थूल शरीरक नामसन कीड़ा। मै.

गड़ाँस-सं., अर्ध चन्द्राकार धारवाला अस्त्र। मै.

गँड़ि खुल्ला-विशे., अर्धनग्न रहैवाला, निर्धन। मै.

गँड़ियोबहो-विशे., १. धान आदि पसिलक खेत मे धानक अग्र डँरेर धरि उठल पानि। २. (लाक्षणिक) कोनो स्वार्थ सिद्धिक हेतु निर्धन सँ पसरि कय बैसनिहार। मै.

गँड़ियाएब-क्रि., गड़ि कय बैसब। मै.

गँड़ियाह-विशे., अस्वीकारक हेतु गाँड़ि घुमाकय चलि देनिहार। स्त्री० गँड़ियाहि। मै.

गड़-सं., किला, दुर्ग, सुरक्षाले उच्च स्थानक आलय। मै

गड़गर-विशे., मोट रस (द्रव) वाला। मै.

गड़नि-सं., अंग रचनाक बिन्यास। रचैक कलाकारी। मै.

गड़निहार-विशे., गढ़ैवाला, रूप दैवाला। मै.

गढ़ब-क्रि., रचब, स्थूल वस्तु कें काटि छाँटि आकार देब, रूप बिन्यास करब। मै.

गढ़ा-सं., खाधि। (हि.) गड्ढा। मै.

गढ़ाइ-सं., गढ़ैक बोनि, गढ़ैक कला। मै.

गढ़ाएब-क्रि., १. निर्माण कराएब। २. रस (द्रव) मोट होएब। प्रयोग–"माछक झोर गढ़ाएल बड़ स्वादिष्ट होइ छै।" मै.

गढ़ी-सं., गढ़ जकाँ छोट छीन धनाढ्यक आवास। मै.

गढ़ुआ-विशे., गढ़िकय बनाओल। मै.

गढ़ुआर-विशे., गर्भवती। मै.

गढ़ौआ-विशे., गढ़ि गढ़िकय बनाओल। मै.

गण्डगोल करब-क्रि., सब किछु एकैं ठाँ मिला कय राखब। मै.

गण्डयोग-सं., अश्विनी मघा आदि नक्षत्रक कोनो कोनो विशेष अंश मे बच्चाक जन्म गण्डयोग कहबैछ।

अश्वनी मघ मूलादौ त्रिवेद नव नाड़िकाः।
रेवती सार्प शक्रान्ते गण्डयोग इति स्मृतः॥

अर्थात् अश्विनी, मघा आ मूल नक्षत्रक आदि भागक तीन, चारि आ नौ दण्ड एवम् रेवती, आश्लेषा आ ज्येष्ठा नक्षत्रक नौ, चारि आ तीन दण्ड गण्डयोग कहल गेल अछि। एहि मे जन्म दोषावह थिकैक। सं. तत्सम

गण्डा-सं., चारि संख्याक एक मान। मै.

गण्डा-विशे., १. अधलाह, दूषित। प्रयोग–"(बच्चा कें गीत सुनबैक एक अंश) तोर अण्डा गण्डा भेलौ बौआ कें सुता।" २. अत्यन्त सस्त जकरा क्यो कीननिहार नहि। एहि बेर आम ततेक फड़लै जे हाट बाजार मे गण्डा भेल रहै छै। मै.

गण-सं., समूह, एक मतवाला दल। सं. तत्सम

गणक-विशे., १. ज्यौतिष शास्त्र जननिहार। २. हिसाबी। सं. तत्सम

गणतन्त्र-सं., सार्वजनिक मतवाला संविधानक राष्ट्र। जनतन्त्र, लोकतन्त्र। सं. तत्सम

गणना-सं., गनती, मान्यता, आदर। सं. तत्सम

गणिका-विशे., नचै गबैवाली वेश्या। सं. तत्सम

गणि खच्चर-विशे., समलैङ्गिक मैथुनक इच्छुक पुरुष। मै.

गणित-सं., हिसाबक शास्त्र। सं. तत्सम

गणि मराओन-विशे., (गारि) पुरुषक संग मैथुन करैवाला पुरुष आ तकर लाभ। मै.

गणि मुड़ाह-विशे., (लाक्षणिक) एक दिस मोट आ एक दिस पातर बोझ। गाणि मूड़ी एकट्ठा कयल। मै.

गणेश-सं., पौराणिक देवता। मै.

गत्तर-सं., शरीर। प्रयोग–"गत्तर गत्तर तोड़ि देब।" मै.

गत्ता-सं., पोथीक रक्षा हेतु कठोर पट्टी। प्रयोग–"भुसकौल विद्यार्थीक गत्ता मोट।" मै.

गत्ती-सं., कठोर पदार्थक बान्हल खिल्ली। मै.

गत्र-सं., शरीर, गात्र। प्रयोग–"गत्र झाड़ि देब।" सं. तद्भव

गतगर-विशे., सक्कत, बलगर। मै.

गलाखोर-सं., बेर पर धोखा। उपकारक बिश्वास मे अपकार। मै.

गलाल-सं., सहयोगक, सहायक, द्वारा, स्रोत। प्रयोग–"अनेक गलालें आइ काल्हि नौकरी संभव रहै छै।" मै.

गताब-सं., सक्कत करब। सोझकय तानब। मै.

गतानब-क्रि., कड़ा कय कें तानब। मै.

गतापात-सं., जाइ अबैक व्यवहार। मै.

गति-सं., चालि, गमन, पाप सँ उद्धार। मै.

गति गरास करब-क्रि., विविध चेष्टा कय समय लेपब। मै.

गतियाएब-क्रि., कसिकय बान्हब, गूहब। मै.

गँथाएब-क्रि., ककरो सँ माला आदि गुहाएब। मै.

गद्ध-विशे., अघाएल। मै.

गद्दरि-सं., धर्द धानक प्रभेद। म.

गद्दा-सं., तूर भरल मोट बिछाओन। मै.

गद्दारासी-स., मुक्का मारि खेल करैक शब्दक एक अंश। प्रयोग–"गदा रे गुद्दे गुद्दे मार गदा पुद्दे पुद्दे गद्दारासी बनके बासी बोल गदा कें ? मै.

गद्दी-सं., १. तूर भरल छोट बिछाओन। २. राज सिंहासन। मै.

गद-विशे., मोट। प्रयोग—"मोटाकय गद भेल छथि।" मै

गदकीचनि-विशे., अनेक वस्तुक संग पानि मिलने ओकर संचार सँ असर्थ बनल। थाल पानि सँ दूषित। मै.

गदगद-विशे., भीतरें भीतर आनन्द सँ भरल। सं. तत्सम

गदगर-विशे., मोट कयल। मै.

गदगरल-विशे., अघाएल। मै.

गद पर गद-सं., नीक वस्तुक भोजनक निरन्तर क्रम। अघान पर अघान। मै.

गदमिसान-सं., भिन्न भिन्न अनेक प्रकार एक संग जोर सँ शब्दक गति। मै.

गँदलाह-विशे., माटि मिलल पानि आ तेल। मै

गदह पचीसी-सं., पचीस वर्षक उमेर धरि बिना सोचने विचारने करैक जुआनी। मै.

गदह पुरैन -सं., पुनर्नवा, पुनानव। (लाल रंगक) मै.

गदहा-सं., घोड़ा जातिक मन्द पशु विशेष। मै.

गदहिया-विशे., १. गदहा पर लादि कय वस्तुक फेरी कयनिहार। २. घुमक्कड़ अर्थात् घर आश्रम संग नेने घूमैत रहैवाला जनजाति। मै.

गदा-सं., गोल डन्टावाला भारी द्रव्यक प्राचीन अस्त्र विशेष। सं. तत्सम

गदा रे गुई गुई-अव्यय, खेल विशेष। देखू—"गद्दारासी" मै.

गदाल-विशे., अत्यन्त घनहुन बस्ती। मै.

गदाल करब-क्रि., जोर सँ सोर करब। मै.

गदियाएब-क्रि., बाँसक बाती सँ असार गुद्दा बहार करब, छोड़ाएब। मै.

गदुल शाँखि-विशे., अधिक मोटाएल रहैक कारणेँ उठै बैसै मे असमर्थ। मै.

गदूल-विशे., अत्यन्त स्थूल शरीरवाला। मै.

गदेला-सं., पुरान कपड़ा तहँ तहँ बिछाकय घनगर सीयल बिछाओन। मै.

गदौस-सं., झारि बहारि कय जमा कयल कूड़ा करकट। मै.

गन्दगी-सं., करकच, असर्थ वस्तुक समूह। मै.

गन्दा-विशे., घिनाओन। मै.

गन्ध-सं., महक। सं. तत्सम

गन्धक-सं., विस्फोटक रसायन द्रव्य। सं. तत्सम

गन्ह-सं., दूषित गन्ध। मै.

गन्हकब-क्रि., दुर्गन्ध करब। मै.

गन्हकाएब-क्रि., दुर्गन्ध पसारब। मै.

गन्हकी-सं., गन्ध भरल भारी विशेष। मै.

गन्हकौआ-विशे., दुर्गन्ध पसारैवाला। मै.

गन्हाएब-क्रि., १. दुर्गन्ध भरि जाएब। २. (लाक्षणिक) उपेक्षित रहब। मै.

गन-सं., (निन्दा मे) महादेवक जेर। मै.

गनगन-सं., अस्पष्ट सम्मिलित ध्वनि। मै.

गनगनाएब-क्रि., १. अस्पष्ट सम्मिलित ध्वनि होएब। २. तरेँ तर बात पसरि जाएब। मै.

गनगनी-सं., मधुमाछी सभक ध्वनि। मै.

गनगोआरि-सं., असंख्य सूक्ष्मटांगवाला सरीसृप। इन्द्रगोप। मै.

गनती-सं., गनैक क्रम, गणना। मै.

गन पसारनि-सं., जड़ी विशेष। मै.

गनब-क्रि., क्रमिक संख्याक अवधारणा करब। मै.

गनाएब-क्रि., १. क्रमशः गनैक अभ्यास कराएब। २. कोनो विशेष कारणेँ निश्चित राशि लेब। मै.

गनिआरि-सं., बूटी विशेष। (औषध) मै.

गनौआ-विशे., १. गनवैवाला। २. गनि कय भेटल। मै.

गनौर-विशे., अभेला सँ घृणित आ असर्थ भेल वस्तु। मै.

गप्प-सं., परस्पर संभाषण, वार्तालाप। मै.

गप्पी-विशे., अधिक गप्प करैवाला, फूसियो बात गढ़ि गढ़ि कहैवाला। मै.

गप्फा-सं., दू आङुरक बीचवाला दोग। मै.

गप्फी-सं., हाथक औंठा आ तर्जनी मोड़िकय बनाओल फाँकवाला शून्य मान। मै.

गपक्कड़-विशे., अधिक गप्प गढ़ैवाला। मै.

गपचब-क्रि., चुपचाप वस्तु नुका लेब। मै.

गपोड़ शंख-विशे., सम्बन्धहीन गप गढ़ि अपने बात पर अपनैं हसनिहार बूड़ि। देखू—"ठहक्का"। मै.

गफलती-सं., प्रमाद, असावधानी। मै.

गब्बर गब्बर-अव्यय, सुनलो बात पर बिना विलोड़नक बुद्धिवालाक केवल मुहु तकैत रहैक भाव। मै.

गबभा-विशे., बीजक गर्भ सँ बहराएल मात्र अंकुर । मै.

गब-सं., धानक खेत मे गाड़ल एक एक बीज । मै.

गबछब-क्रि., गर्भ राखब, गर्भ देखार होएब । मै.

गबदी मारब-क्रि., नैं सुनैक ढंग कय सबटा सुनैत सूतल लोक जकाँ रहब । मै.

गब लेब-क्रि., प्रथम प्रथम धानक बीआ गाड़ब । मै.

गबहा-सं., धानक गाछ मे गर्भ जकाँ बहराएल सीसक सिरधार । मै.

गबाई-सं., गबैक क्रिया, गबैक उपक्रम । मै.

गबाछ-सं., दू वस्तुक पारदर्शी दरारि । गवाक्ष । सं. तद्भव

गवाह-विशे., प्रत्यक्षदर्शी, साक्षी, साक्ष्य । उ. तत्सम

गवाही-सं., प्रत्यक्ष घटनाक उद्घाटन, प्रकाशन । मै.

गबैया-विशे., संगीत कला विशेषज्ञ । मै.

गभ-सं., बच्चादानी, गर्भ । सं. तद्भव

गभा-विशे., बालक गर्भ मे स्थित कोनो फसिलक फूल वा सीस । मै.

गभा संक्रान्ति-सं., सूर्य्यक तुल राशि मे संक्रमण, जाहि दिन मिथिला मे धानक गभालय सीरा आगू राखि लक्ष्मीक आवाहन कयल जाइत अछि । मै.

गभिनाएब-क्रि., १. कोनो जीवक गर्भ धारण कयने रहब । २. (लाक्षणिक) कोनो बात कें स्पष्ट नैं कय व्यर्थ भारी बनौने रहब । मै.

गभिनाह-विशे., कोनो बात कें स्पष्ट नैं कय भारी बनौने रहनिहार । मै.

गम्भीर/गम्हीर-विशे., स्थिरता सँ विचारशील । धीर बुद्धि । सं. तत्सम

गम्हुरा-सं., पौध मे आएल धानक सीस । मै.

गम्हरी-सं., गाछक पौधें मे पकैवाला भदैया धान । मै.

गम-सं., धारणा, बोध, ज्ञान । प्रयोग—"हुनिका खेती करैक कोनो गम नैं छनि ।" मै.

गमइ-विशे., गाम घर मे होम'वाला विषय, रूप वातावरण आ भावना । मै.

गमक-सं., सुखद गन्ध, सुगन्धि । मै.

गमकब-क्रि., सुवास होएब, सुगन्धि छोड़ब । मै.

गमकाएब-क्रि., चारू दिस सुवासित करब । मै.

गम खाएब-क्रि., शान्त होएब । मन्द पड़ब । मै.

गमगम करब-क्रि., १. सगरे सौरभ भरब । २. ताप होएब । मै.

गमगमाएब-क्रि., १. सगरे सुगन्धि पसारब । २. देह सँ ज्वरक पूर्व रूप मे ताप फेंकब । मै.

गमगमी-सं., १. देहक ताप । २. सुगन्धि । मै.

गमछा-सं., देह पोछैक वस्त्र । मै.

गमन-सं., जाइक क्रिया, गतिक वेग । मै.

गमनिहार-विशे., परीक्षा केनिहार । जँचनिहार । मै.

गमब-क्रि., थाहब, परीक्षा करब, हल्लुक बूझब । मै.

गमरपन-सं., ग्राम्य स्वभाव । छक्का पंजा नैं बूझब । मै.

गमला-सं., फूल पत्ती लगबैक माटिक विशेष बासन । मै.

गमाएब-क्रि., नष्ट करब, खरच करब, समाप्त करब । मै.

गमागम-सं., तीव्र सुगन्धि । मै.

गय !-अव्यय,अनादरक सम्बोधन । मै.

गया-सं., पितरक तीर्थ विशेष । मै.

गयारी-विशे., गया तीर्थ कयनिहारक सामाजिक प्रतिष्ठाले कर्त्तव्य । मै.

गर्ज-सं., १. स्वार्थ (उ.) । २. मेघक शब्द । सं. तत्सम

गर्जन-सं., विकट, अत्यन्त गम्भीर आ जोरदार शब्द । सं. तत्सम

गर्जब-क्रि., १. जोर सँ शब्द करब । २. शोर पाड़ब । मै.

गर्जागर्जी-सं., क्रोध सँ परस्पर उच्च स्वरें कथोपकथन । मै

गर्त-सं., अगम खाधि । मै.

गर्द-विशे., सभक जानकारी मे पहुँचल प्रवाद । मै.

गर्दगमोल-सं., चारू भर गर्दाक खूब भ' क' उड़ैक द्वारें दूषित वातावरण । मै.

गर्दा-सं., धूरा, धूलि । सं तत्सम/मै.

गर्भ-सं., बच्चादानी मे पालल जाइत बच्चा । मै.

गर्म-सं., एवं विशे., ताप आ ताप भरल । मै.

गर्दी देब-क्रि., (लाक्षणिक) स्वार्थसिद्धि पर्यन्त खुशामद करैत धरना देब । मै.

गर्व-सं., गौरव, अहंकार। सं. तत्सम
गऽर-सं., उचित ढंगक स्थिति। प्रयोग—"बौआ कें कत्तौ नीक नौकरीक गऽर धऽ लेनि।" मै.
गऽऽर-सं., खेतक सजीव घास। मै.
गर-सं., १. कण्ठ, श्वास नली आ स्वर नली। प्रयोग—"चिकरैत चिकरैत हमर गर बाभि गेल।" २. संज्ञा सँ विशेषण बनबैक लेल अधिकता बोधक मैथिली प्रत्यय। प्रयोग—"नोनगर, तेलगर, बोझगर, बलगर आदि। मै.
गरकूट कय मारब-क्रि., निर्दय भेल खूब मारब। मै.
गरगट-विशे., कठिन, बलाय। प्रयोग—"जँ क्यो टकटक तकैत रहय तँ खाएब गरगट बुझि पड़ै छै।" मै.
गरगोटिया-सं., कण्ठ पर हाथ धऽ कऽ भगाएब। मै.
गरचुन्नी-सं., छोटका माछ विशेष। मै.
गरज-सं., स्वार्थ। उ. तत्सम
गरजांतब-क्रि., स्वर कें दाबि कय बाजब। मै.
गरजू-विशे., स्वार्थी। मै.
गरजें बाबू जन लिअऽ-(लोकोक्ति) अपन स्वार्थ ले ककरो कोनो काज करैक प्रवृत्ति। मै.
गरड़-सं., पेनी छानब, कोनो निर्माणक प्रारम्भ। मै.
गरदनि-सं., कण्ठक पाछू दिशक भाग। मै.
गरदनियाँ देब-विशे., गर्दनि पर हाथ धऽ कऽ बँला-एब। मै.
गरदामी-सं., शृङ्गार रूपें देल मालक गर्दनि मे डोरी। मै.
गरबन्हन-सं., सँपकट्टा कें मन्त्र सँ भारैक काल अभिमन्त्रित माटि सँ सुरक्षा हेतु चारू दिश घेरा बनाएब। मै.
गरभ आन्हर-विशे., १. गर्भ सँ आन्हर बच्चा। २. गर्भ सँ पितृहीन भेल बच्चा। मै.
गऽऽर मरब-क्रि., रौदक डारें घास सुखाएब अर्थात् जोतल खेतक हरिहर जंगलक मरब। मै.
गऽऽरमरू-विशे., सुखाएल घासवाला खेत। मै.
गरमाएब-क्रि., १. गरम करब। २. गरम होएब। ३. (लाक्षणिक) तमसाएब। मै.
गरमागरम-विशे., गरमाएल स्थितिवाला। मै.
गरमी-सं., ताप, औल, उसम। मै.
गरमौआ-विशे., गरम कयल। मै.
गरम-सं., घरक ऊँचाइ आ तकर उतार (ढार) क सन्तुलन। मै.
गरमगर-विशे., अधिक खड़ाइक घर। मै.
गरसामूर देब-क्रि., अपन स्वार्थ सिद्धि ले दृष्टि गड़ौने गर्दनि नमड़ौने धरना देब। मै.
गरसी-सं., गर्दनि पर्यन्तक स्थिति। मै.
गरहत्था-सं., गर्दनि पर हाथ राखि हठबैक चेष्टा। मै.
गरहाज-विशे., ग्रहण करैक योग्य। ग्राह्य। सं. तद्भव
गराँ-सं., कण्ठक सँसरी। प्रयोग—"गराँ पड़ल ढोल बजबैक पड़य। मै.
गराएब-क्रि., चुबाएब, निचोड़ि कय जल आदि खसाएब। मै.
गरा कुड़हरि बान्हब-क्रि., (लाक्षणिक) विवश भय अधीनता मानि दयनीय बनब। मै.
गरा गरौबलि-सं., परस्पर निषिद्ध मारि पर मारि देब। मै.
गरांधेब बनब-क्रि., (लाक्षणिक) जे ने छोड़ैत बनय एहन जिम्मेदारी होएब। मै.
गराव दऽ-अव्यय, तुरन्त, फट्ट दऽ, सद्यः। मै.
गरामित-विशे., एक गाम, जाति आ व्यवहारक लोक। मै.
गरारा-सं., कुमारि कन्याक पहिरना विशेष। मै.
गराँ लागब-क्रि., कण्ठ सँ अन्न पानि अड़ि अड़ि कय पेट मे जाएब। मै.
गरास-सं., १. ग्रास, कऽऽर (सं. तद्भव)। २. विचित्र प्रकारक चेष्टा। मै.
गरिमा-सं., महत्ता, प्रतिष्ठा, उच्चता। सं. तत्सम
गरियाएब-क्रि., अश्लील बातें सम्बोधित करब। मै.
गरिष्ठ-विशे., विलम्ब सँ पचँवाला अन्न। सं. तत्सम
गरी-सं., नारिकेरक सुखाएल गुद्दा। मै.
गरुहन-सं., पानियो मे नै गलैवाला अन्न, गरिष्ठ। मै.
गरू-सं., संकट, आपत्ति। मै.
गरुड़-सं., विष्णुक वाहन, पैघ पक्षी विशेष। मै.
गरेरि/गरोरिया-विशे., भेड़िहर, भेड़ा पोसि ऊनक व्यवसायी। मै

गरै-सं., माछ विशेष । मै.

गरोंसब-क्रि., गर्दनि सँ सगोने रहब । मै.

गल्प-सं., अपना सम्बन्धक छोट छोट कथाक कल्पना करब । सं. तत्सम

गल्ला-सं., १. बनियाक रुपैया रखैक बासन। २. कण्ठक स्वर यन्त्र । मै.

गल्ली-सं., टोल परोसक घरक संकीर्ण बाट । मै.

गलकट्टी-सं., यथार्थ दोष कें झाँपैक हेतु तर्क दय दय बात कटैक चेष्टा । मै.

गलकट-विशे., दुष्ट बुद्धिक द्वारें हानि पहुँचौनिहार। गर्दनि कटनिहार । मै.

गलकट्टी-सं., युक्ति सँ बात कें कटैक प्रयास । मै.

गलगल-अव्यय, कण्ठक सरस रहला सँ विशेष अव्यक्त ध्वनि । नहुँ नहुँ बहुत लोकक अव्यक्त ध्वनि । मै.

गलगलाएब-क्रि., १. कण्ठ मे जल राखि ध्वनि करब । २. मैना वा पक्षीक अव्यक्त ध्वनि करब । मै.

गलगरि-विशे., (लाक्षणिक) बातक बलें अपन दोष कें नें देखार होम' देनिहारि । मै.

गलगुल-सं., लोकक बजैक ध्वनि । मै.

गलजौड़-विशे., माल जाल कें गर्दा मे बन्हैवाला डोरी । मै.

गलज्जर-सं., निर्मूल बातक प्रचार । बिना जड़िक प्रवाद । मै.

गलता-सं., काठ कें गोल करैवाला रन्ना । मै.

गलती-सं., अशुद्धि, दोष, चूट्टी, अपराध । मै.

गलथलाएब-क्रि., पानि मे धानक केवल फुनगी उगल रहब । मै.

गलथोथी-सं., (लाक्षणिक) विषयक कल्पना कय बात गढ़ब । अपन कल्पना सँ सिद्ध करब । मै.

गलनमा-विशे., शीघ्र गलैवाला पदार्थ । मै.

गलना-विशे., स्वतः गलि जाइवाला । मै.

गलफर-सं., गालक भीतरक अंग । मै.

गलफुल्ली-सं., गाल सँ कनपट्टी आ कण्ठधरि फूलि जाइवाला रोग । मै.

गलफुल्लू-विशे., (लाक्षणिक) आँच पर आधा सिद्ध चाउर । मै.

गलब-क्रि., १. क्रमिक बिलीन होएब । २. द्रवित होएब । तत्वहीन भ' क' झरब । क्षीण होएब । मै.

गलबाहि-सं., मालक पाउज । मै.

गलबांही-सं., परस्पर गर्दनि पर बाँहि रखैक मुद्रा । मै.

गलबैया-विशे., गलवैवाला । मै.

गलमोचनी-सं., पाँजर तरक छोटका गेरुआ । मै.

गलमोछ-सं., गाल धरि बढ़ाकय बनाओल मोछ । मै.

गलाएब-क्रि., ठोस वस्तु कें द्रव बनाएब, सड़ाएब। मै.

गलियाएब-क्रि., गाल तर ल' क' चिबाएब । मै.

गलियारी-सं., गली जकाँ बनल संकीर्ण बाट । मै.

गलीज-विशे., माटि पानि आ मल गदोस सँ बनल घिनाओन । मै.

गलैचा-सं., विशिष्ट रूपक कोमल बिछाओन । उ. तद्भव

गलोठब-क्रि., गाल तर भरि क' राखि खाएब । मै.

गलोठी-विशे., गाल तर राखि कय खाइक जोग । मै.

गलोथब-क्रि., गर्दा सँ माथधरि कपड़ा लपेटब। मै.

गलोथी-सं., गर्दा सँ माथधरि लपेटल कपड़ा । मै.

गलौआ/गलौना-विशे., कोनो वस्तु कें गलवैवाला । मै.

गवाइ-सं., गबैक व्यापार । मै.

गसब-क्रि., आपस मे सघन भ' क' कठोर बनब । मै.

गसल-विशे., परस्पर अत्यन्त सघन । मै.

गह्ह-सं., दोग, सूक्ष्मतम अवकाश । मै.

गहगट-अव्यय, सुन्दर वस्तुक अधिकता। परिपूर्ण। मै.

गहगर-विशे., अधिक गह सँ भरल । मै.

गहड़ि-सं., नूरि सीखैक उत्कण्ठा । मै.

गहबाएब-क्रि., गौरव सँ अनठाएब । अभेला सँ ध्यान नें देब । मै.

गहन-सं., १. ग्रहण अर्थात् सूर्य चन्द्रमा कें राहुक ग्रास करब । २. सघन घनघोर जंगल । सं. तद्भव

गहनतोड़-विशे., गहना तोड़िकय बनल गहना । मै.

गहनमरु-विशे., गहन लगला सँ दुष्प्रभाववाला । मै.

गहना-सं., देह सजबैक अलंकार, भूषण । मै.

गहना गुरिया-सं., अलंकार आदि देहक प्रसाधन । मै.

गहब-क्रि., १. भक्ति सँ सेवा करब। २. कसिकय भूर मुनब आ भरब। मैं.

गहबर-सं., लोक देवताक सामान्य पवित्र स्थल। मैं.

गहमागहमी-सं., व्यस्तता भरल कौतूहल आ उत्कण्ठा। मैं.

गँहराएब-क्रि., क्रमशः गम्भीरता प्राप्त करैत जाएब। मैं.

गहलहा-विशे., कसिकय पकड़लवाला आ मुनलवाला। मैं.

गहाइ-सं., गहैक मूल्य। मैं.

गहाएब-क्रि., कसिकय धराएब आ मुनाएब। मैं.

गँहकी-विशे., कीननिहार। ग्राहक। मैं.

गहिरका-विशे., गहींरवाला। मैं.

गहींर-विशे., गम्भीर, अथाह, अधिक नीचाँ। मैं.

गहुआ-सं., दू आङ्‌रक बीचक स्थान वा एहने कोनो पकड़ैक साधन। मैं.

गहुमन-सं., काल सर्प, भयंकर साँप। मैं.

गहुमा रंग-विशे., लाली मिलल गोराइ। मैं.

गहूम-सं., पैती अन्न विशेष। मैं.

गऽ है !-अव्यय, काकु ध्वनि सँ उपेक्षा उपहास आदि व्यञ्जक सम्बोधन। मैं.

गा

गाँ-सं., गाम। प्रयोग—"ओ तँ गाँ गेला। मैं.

गाँओ-सं., गाम। मैं.

गाइ-सं., गाय, गोजाति। मैं.

गाइनि-विशे., गर्भवाली स्त्री। मैं.

गाउज-सं., मुह सँ बेसम्हार फेन भरल बहराएल थूक। मैं.

गाँउज-सं., पकैबाक समय मे बिना सीसक हरियर डाँटक फसिलक गाछ। मैं.

गाउन-सं., वकील सब कें पहिरैक कारी झूल। अ. तत्सम

गाएब-क्रि., गान करब। गीतक ध्वनि देब। मैं.

गागर-सं., १. घैल। २. द्रव्यक पेय जलपात्र विशेष। ३. विशिष्ट माछ। मैं.

गाछ-सं., वृक्ष। मैं.

गाछी-सं., गाछक समूह। मैं.

गाँज-सं., माछ मारैक साधन। बाँसक पातर कामिक टेंड़सन खपोली एक दिश कामि समेटि कय मुह बान्हल आ एक दिश छिल नाल मुहवाला अरख। मैं.

गाँजब-क्रि. कँटाह वस्तु सँ कोनो फल आदि मे छेद कय कय कोमल (ढील) बनाएब। मैं.

गाजर-सं., मूर जातिक कन्द विशेष। मैं.

गाजर बीजर-विशे., परस्पर मिलल अनेक भिन्न प्रकारक वस्तु। मैं.

गाँजा-सं., जट्टावाला भाङ जकर धूम्रपान कयल जाइत अछि। मैं.

गाँजुर-सं., बीज सँ सूत जकाँ बहराएल अंकुर। मैं.

गाँझी-सं., बनैया झारीवाला वनस्पति। मैं.

गाटर-सं., लोहक बड़का बड़का धरनि। मैं.

गाँठ-सं., कसिकय देल गेंठ (बन्हन)। मैं.

गाड़-सं., गाड़ैक प्रमाण दरीक मान। मैं.

गाड़-सं., माटिक बनैवाला कोठी आ मोड़ा सबहिक बैसैवाक बनल पेनी। मैं.

गाड़नि-सं., गाड़ैक क्रम एवं मान। मैं.

गाड़ा-सं., ईंटा आदि जोड़ैक हेतु पानि मे घुलाओल माटि वा सुर्खी आदि। गिलेवा। मैं.

गाड़ीवान-विशे., बैलगाड़ी हँकैबाला। मैं.

गाढ़-विशे., १. भावनात्मक गम्हीर, कोनो विषय कें मन मे गुप्त रखैवाला। २. मोट कयल झोर। मैं.

गाथ-सं., १. कोठी आदि कें भूमि सँ ऊँच कय राखैक लेल देल पेनीक नापक अनुसार ऊँच कय बनाओल वस्तु। मैं.

गाणि-सं., मलवाही स्रोत अर्थात् मल त्यागैक एक कर्मेन्द्रिय। मैं.

गाण्डू-विशे., मलमार्ग मे मैथुन करबैवाला। मैं.

गात्र-सं., शरीर। सं. तत्सम

गात-सं., देह। सं. तद्भव

गाँती-सं., माथ समेत शरीर कें झाँपैक लेल जाड़ सँ बचबाले गरदनि मे बान्हल वस्त्र। मैं.

गाँथगूथ-सं., कोनो वस्तु गँथैक निरन्तर क्रम। मैं.

गाँथनि-सं., गँथैक काज, गँथैक कला। मैं.

गाँथब-क्रि., फूल वा दानाक बीचक छेद मे वा छेद कय ताग पैसा कय गूहब। मैं.

गाथा-सं., कीर्तिमय सरस कथा। मैं.

गाद-सं., जल आ आनो द्रव पदार्थ मे नीचाँ जमल मैल। पोखरि इनार दृष्टान्त। मैं.

गादि-सं., १. द्रव पदार्थक नीचाँ जमल मैल। २. बाँसक भीतरक असार गुदा। मै.

गाध-सं., थाह, गम्भीरताक अवधि, तलक स्पर्श। सं. तत्सम

गान्धार-सं., संगीतक मूल सातो स्वर मे तेसर स्वर (ग)। सं. तत्सम

गान-सं., गीतक लय बद्ध स्वर। सं. तत्सम

गाना-सं., गीत। स्थायी अन्तरा आ सम एहि तीनूक मिश्रण। मध्यम स्वर पर चलैवाला स्थायी कहबैछ, आरोह अवरोहक क्रमें घूमैत स्थायी पर अबैवाला अन्तरा थीक आ नियत तालक शून्य मात्रा पर अन्तरा कें स्थायी सँ मिलवैवाला सम कहबैछ। एहि सभक क्रम स्वर प्रकाशन गाना थीक। हि. तत्सम

गाब-सं., बासि दुध वा मथल दुध सँ जमल नेनु अर्थात् माखन। मै.

गाबील-सं., तेलियाह वा चिक्कन माटि। मैं.

गाभ राखब-क्रि., गर्भ धारण करब। मै.

गाभिन-विशे., (पशु जातिक हेतु) गर्भवती। मै.

गाम-सं., निश्चित परिधिक बसती। सं. तद्भव

गाय-सं., गौ जाति। मै.

गायक-विशे., गवैया। सं. तत्सम

गायत्री-सं., देवी, शक्ति, मन्त्र सँ जागलि ब्राह्मी शक्ति। सं. तत्सम

गायब-विशे., विलीन, अलोपित। उ. तत्सम

गार्त-विशे., अधोगत, दुरवस्था मे पड़ल। मै.

गारत-सं., राजकीय प्रहरीक संरक्षण। 'गारद। उ. तद्भव

गारब-क्रि., निचोड़ब, जल चुआएब। मै.

गारा-सं., आम आ बेल आदि फलक गुद्दा कें मथिकय बनल पातर रस। मै.

गारा गरौअलि-सं., एक दोसरा पर असभ्य अपमानजनक शब्दक प्रयोग। मै.

गारागारी-सं., परस्पर अश्लील बातें वाग्युद्ध। मै.

गारि-सं., अश्लील सम्बन्धक, अपमानजनक आ असभ्यतापूर्ण ग्राम्य शब्दक प्रयोग। मैं.

गाल-सं., ओठक दूनू कातक पसरल कोमल अंग। कपोल। आवेश सँ चुम्बन स्थान। मै.

गाल करब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक बात बनाकय मुख्य बात कें नहि पकड़' देब। मै.

गाल मे लागय देब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बात कें कतौ फेंकि प्रधान बात कें प्रमाणित नै होमय देब। मै.

गाल फुलाएब-क्रि., (लाक्षणिक) रुष्टता प्रकट करब। मै.

गाल बजाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अधिक बाजिकय अपन महत्व जनाएब आ अपन वैयक्तिक त्रुटि कें झाँपब। मै.

गाल लगाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अपना सँ मुहाँमुही हँसी ठट्ठा आ कठबाद कय छोटो कें बढ़ाबादय धाख मेटाएब। मै.

गाँसी-सं., हर सँ उखड़ल फार कें गासक संग डोरी वा तारक कसल बन्हन। मै.

गाहकि-विशे., कीननिहार। मैं.

गाहब-क्रि., गम्भीरता सँ विचारक थाह लेब। मैं.

गाही-सं., पाँच संख्याक एक मान। मै.

गाहे बेगाहे-अव्यय, कदाचित्, कखनो आ समय कुसमय। मैं.

गि

गिजगिज-विशे., अनेक असर्ध वस्तुक एकट्ठा सँ आर्दता भरल चिनाओन। मै.

गिजगिजाइन-विशे., अत्यन्त चिनाओन। मै.

गिजटाह-विशे., चिनाओन बनल। मै.

गिजबिज होएब-क्रि., अनेक वस्तुक एकठाँ मिलल रहला सँ फरिछाउब मे कठिन होएब। मैं.

गिट्टी-सं., ईंटा पाथरक छोट छोट टुकड़ी। मै.

गिट्टी फोड़ब-क्रि., १. पाथरक टुकड़ी करब। २. (लाक्षणिक) कठोर शरीर श्रम करब। मै.

गिड़दह-सं., छोट समकत गीरह। मै.

गिटपिट करब-क्रि., वासना मूलक चेष्टा करब। मै.

गिटार-सं., संगीतक बाजाक प्रभेद। सितार। मै.

गितगंजन-सं., (लाक्षणिक) प्रत्यक्षतः मधुर वचन आ सम्वेदन मे कटुता। कर्त्तव्यक बीच मे उपस्थित संघर्ष। मै.

गितगाइन-विशे., गीत गाबै मे अगुआ महिला। मै.

गितहारि-विशे., अधिक गीत जनैवाली आ गबैवाली स्त्री। मै.

गिद्दी-विशे., अत्यन्त सस्त विक्रयक वस्तु । मै.

गिद्ध-सं., शवक मांस भक्षी बड़का पक्षी । मै.

गिट्ठा गुड़कान-सं., सिद्ध चौरक केहनो भारी वस्तु चौराकय उठौने गिद्ध जकाँ गुड़कि पड़ाइक प्रक्रिया । मै.

गिदगिदाइन-विशे., आड़ताक द्वारें घृणास्पद । मै.

गिदरनोच-विशे., (लाक्षणिक) अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त यत्ऽ तत्ऽ क्षीण कयल । मै.

गिदरभौकी-सं., (लाक्षणिक) गीदड़ जकाँ वाम दहिन भौकी काटि धोखा दय पलायन । मै.

गिदरमारा-विशे., गीदड़ो मारिकय खाइवाला घुमक्कड़ जातिक लोक । मै.

गिदराह-सं., गीदड़ जकाँ देखँ मे कुरूप । मै.

गिरगिरी भरब-क्रि., गवैया सभक तानक अभ्यासक क्रम मे कण्ठक स्वर मे थरथरी आनब । मै.

गिरब-क्रि., खसब । हि. तत्सम

गिरमहार-सं., ग्रैवेयक, गराक बहुमूल्य हार (अं.) नेकलेस । मै.

गिरमिट-सं., काठ आ लोह मे छेद करँ लेल पेंच-वाला अस्त्र । मै.

गिरहत-विशे., गृहस्थ, कृषिकर । सं. तद्भव

गिरि-सं., पहाड़ । सं. तत्सम

गिरिजन-सं., पहाड़ी जाति, आदिवासी । सं. तत्सम

गिलट-सं., हल्लुक धातु विशेष । मै.

गिलगर-विशे., पानि मे अधिक घुलाओल । मै.

गिलटी-सं., शरीरक ग्रन्थि (कोशिका) क फूलब । मै.

गिलटौआ-विशे., गिलटक बनाओल बर्त्तन । मै.

गिलाओल-विशे., अधिक पातर घुलाओल सानल । मै.

गिलास-सं., ग्लास, नमगर पेंदा मुहवाला छोट जलपात्र । अं. तद्भव

गिलेबा-सं., देवाल जोड़ैक मसाला । मै.

गिलौँह-विशे., गीलसन लगैवाला । मै.

गी

गीजब-क्रि., हाथ सँ अधिक व्यर्थ मथब । मै.

गीजागिजी-सं., अनेर अधिक ओलि पालि करब । व्यर्थ बारम्बार छूअब । मै.

गीत-सं., गान । सं. तत्सम

गीदड़-सं., शृगाल, वनैया जीव । मै.

गीध-सं., देखू—"गिद्ध" । मै.

गीरब-क्रि., कण्ठ सँ नीचाँ उतारब । मै.

गीरह-सं., १. आङ्‌ुर आ बाँसक पोर । २. कपड़ा आ डोरी सभक ग्रन्थि । मै.

गील-विशे., ढील कय कँ पानि मे घोरल । मै.

गीलाखीला-सं., निन्दापूर्वक ककरो कथा । मै.

गु

गुई गुई उठब-क्रि., मुक्का मारैक ध्वनि होएब । मै.

गुई गुई करब-क्रि., गुड़ुआएब । बौकक अस्पष्ट ध्वनि । मै.

गुँकार-सं., "गु" एहन शब्द । मै.

गुग्गुल-सं., सुगन्धवाला धूपक पदार्थ । मै.

गुड़ुआएब-क्रि., गूँ गूँ एहि प्रकारक ध्वनि करब । प्रयोग—"बाँस काटए ठाँइ ठाँइ नदी गुड़ुआय । मै.

गुच्छा-सं., घन भ' क' लटकल आ फड़ सँ भरल नाल (डंटी) । मै.

गुज्जी-सं., कानक भितरका मैली । मै.

गुजगुज करब-क्रि., अत्यन्त नरम बुझा पड़ब । मै.

गुजगुजाह-विशे., नरमीक कारणेँ दबला पर दबि आ फेर फलकि जाइवाला । मै.

गुजर-सं., निर्वाह । गुजारा । उ. तद्भव/मै.

गुजरब-क्रि., १. निर्वाह करब । २. बाट धेने जाएब । ३. भ्रमण करब आ टहलब । ४. आम मे मोजरक सिरखार होएब । प्रयोग-"माघ गुजरै फागुन मोजरै ।" मै.

गुञ्ज-सं., घन, पातर आ मधुर शब्द । मै.

गुञ्जा-सं., करजनी । वनैया लत्तीक लाल सूक्ष्म फड़ । सं. तत्सम

गुञ्जार-सं., भ्रमर आ मधुमाछी आदिक शब्द । मै.

गुट-सं., दल । मै.

गुटका-सं., छोट आकार प्रकारक पोथी । सं. तत्सम

गुटबन्दी-सं., दलबन्दी, लोक कें अपन दल मे अनैक चेष्टा । मै.

गुठरी-सं., १. सानल वस्तुक मुट्ठी सँ बनाओल ढेप जकाँ गुल्ला । २. फलक भीतरक सक्कत आँठी । मै.

गुड्डी-सं., पतंग, सूत लागल आकाश मे उड़ा उड़ा कय खेलैवाला बनाओल पत्र । मै.

गुड्डी उड़ब-क्रि., एकै छन मे बिका कय वस्तुक समाप्त भ' जाएब । (लाक्षणिक) उपरैं उपर उड़ि जाएब । मै.

गुड़-सं., कुसियारक बिना धोअल रस औंटि कय जमाओल ठोस लाल चेकी । मै.

गुड़कब-क्रि., गोलाकार वस्तुक गति जकाँ गतिशील होएब । मै.

गुड़काएब-क्रि., बल सँ गोल वस्तुक गति जकाँ गति मे वेग देब । मै.

गुड़कान भरब-क्रि., गुड़कैक वस्तु जकाँ बनि गति मे वेगशील होएब । मै.

गुड़की-सं., गुड़कल जकाँ चलैवाला चिड़ै । मै.

गुड़कुनियाँ काटब-क्रि., देखू—"गुड़कान भरब" । मै.

गुड़ खीर-सं., गुड़ द' क' रान्हल खीर । मै.

गुड़गुड़ा-सं., बड़का नलीवाला धूम्रपानक यन्त्र । मै.

गुड़गुड़ाएब-क्रि., गुड़ गुड़ शब्द करब । मै.

गुड़गुड़ी भरब-क्रि., नेन्नाक मुह सँ थूक समेत गुड़-गुड़ शब्द करब । मै.

गुड़चल्ला-सं., चालनि सँ बेशी छेदवाला सूप जकाँ गुँड़ा चालैक बाँसक बासन । मै.

गुड़रब-क्रि., क्रोध सँ जोर दय आँखि कें तेज करब । मै.

गुड़ारब-क्रि., क्रोध प्रकट करैक हेतु बल सँ आँखि कें विस्तार कय डिम्बा बहार करब । मै.

गुड़िया-सं., खेलाइक एवं गहना संग दैक वस्तु । मै.

गुड़ियाएब-क्रि., लपेटल जकाँ मोड़ब । गह बैसाएब । मै.

गुण्डा-विशे., दुष्ट आ दुष्ट बुद्धिवाला । मै.

गुण्डी-विशे., गर्दा जकाँ बनल । मै.

गुण्डी गुण्डी करब-क्रि., चूड़ि कय गर्दा जकाँ छोट सँ छोट टुकड़ी बनाएब । मै.

गुण्य-विशे., गुणा लगबै योग्य अंक । जाहि मे गुणा कयल जाय । सं. तत्सम

गुण-सं., विशेषता । सं. तत्सम

गुणक-विशे., १. गुणकारी, स्वास्थ्य आ सम्पत्तिक लाभदायक । २. गुणा करैवाला अंक । सं. तत्सम/मै.

गुणद-विशे., लाभदायक । सं. तत्सम

गुणनफल-सं., गुणा कयला उत्तर निष्कर्षक अंक । सं. तत्सम

गुणमन्त-विशे., गुणवाला । मै.

गुणा-सं., गणितक प्रक्रिया । सं. तद्भव

गुणी-विशे., विशेष गुणवाला, विद्वान् । सं. तत्सम

गुत्थम गुत्था-सं., झगड़ा विशेष । एक दोसरा कें कसिकय पकड़ि पछाड़ैक प्रयासवाला झगड़ा । मै.

गुत्थी-सं., ओझरौठ, परस्पर ओझराकय घन रहैक स्थिति । मै.

गुत्थी लागब-क्रि., आपस मे घन भय के ओझराएब । मै.

गुथनी लागब-क्रि., एकैठाँ घन भ' क' रहब । मै.

गुँथलाहा-विशे., एक सूत्र मे अनेक बान्हल वा कसल रहैवाला । मै.

गुथाएब-क्रि., एकै डोरी मे वा ताग मे बन्हाएब वा गसाएब । मै.

गुद्दा-सं., मांस, मोटका कोमल अंश । मै.

गुद्दी-सं., फल आदि छोट वस्तुक अन्तरक सरस कोमल पदार्थ । मै.

गुद्दी चाड़ब-क्रि., मांसल आ कोमल पीठ आदि पर हल्लुक सँ मुक्का मारि देहक जाँतब । मै.

गुद-सं., मल मार्ग । सं. तत्सम

गुदगर-विशे., १. गुद्दा सँ भरल । २. (लाक्षणिक) धनी, सुखी आ सम्पन्न एवं बलगर । मै.

गुदगुद करब-क्रि., गहूँ गहूँ बात करब । मै.

गुदगुदाएब-क्रि., कोनो विशेष अंग मे संचार दय पुलक (सिहरनि) जगाएब । मै.

गुदगुदी-सं., विशेष अंगक स्पर्श सँ रोमाञ्च । आनन्दक अनुभव सँ भुलकन । मै.

गुदड़ी-सं., अतिशय फाटल चीटल वस्त्र । मै.

गुदेला-सं., गुदड़ी तहिया कय सीबि कय बनाओल ओढ़ना । मै.

गुन-सं., १. नाओ खींचैक डोरी । २. भत्ता दैक क्रम मे ऐंड़न । ३. उत्कर्ष, विशेषता । ४. उपकार । सं. तद्भव

गुनखराह-विशे., बिन बैसल भत्तावाला डोरी । मै.

गुनगर-विशे., उत्कृष्ट गुण सँ भरल । मै.

गुनगरि-विशे., १. शीलवती स्त्री । २. अधिक दूध दैवाली गै आ महिस । मै.

गुन गाएब-क्रि., यश देव, कृतज्ञ होएब। उपकार मानब। मै.

गुनगुनाएब-क्रि., मन्द ध्वनि सँ गाएब। मै.

गुनखिचकू-विशे., तान्त्रिक क्रिया मे पथ भ्रष्ट भेला सँ उत्पन्न बतहपन। मै.

गुनब-क्रि., विचारब, गणना द्वारा निष्कर्ष बहार करब। मै.

गुनबाह-विशे., नाओक डोरी खींचनिहार। मै.

गुन सम्मील-सं., पहिलुका कयल उपकार आ नीकक मन मे जमल विचार। कृतज्ञता, उपकारक सेआल (स्मरण)। मै.

गुनियाँ-सं., मान बहार करैक हेतु रेखा गणितक पट्टी। मै.

गुनें-अव्यय, अंक अनुसार गुणा कयला पर। मै.

गुनी-विशे., ऐंठि ऐंठि कय पाक लगाओल डोरी। मै.

गुनौआ-विशे., गुन द' क' बाँटल, ऐंठि ऐंठि कय पाक देल भत्तावाला डोरी। मै.

गुप्ती-सं., छड़ीक लम्बाइक अनुसार कयल छेद मे छिपा कय राखल अस्त्र। मै.

गुप्प-विशे., बसातक गतिहीन वातावरण। मै.

गुम्म-विशे., १. गम्भीरता, चुप। २. अलोपित। ३. बसातहीन वायुमंडल। मै.

गुम्मज-सं., शोभाक लेल देल गेल मन्दिर आ कोठाक उपर गोल अथवा लम्बाकार शीर्ष, गुम्मद। उ. तद्भव

गुम्मड़-सं., बसातहीन वातावरणक उपरान्त उठल धूरा उड़बैत बिहारि जकाँ बसातक वेग। मै.

गुमकी-सं., बसात रुकने उत्पन्न गर्मी। मै.

गुमगुम-सं., बसातक स्तब्धता सँ वातावरणक उष्णता। मै.

गुमगुमा-सं., गरमी, ताप। मै.

गुमगुमी-सं., बसातक स्तब्धता सँ लागल ताप। मै.

गुमड़ाहटि-सं., अधिक धूआँ उठला सँ अन्हार। मै.

गुमनाम-विशे., गुप्तनाम वाला पत्र। मै.

गुमरौट-विशे., अधिक धूआँक संग धधरा। मै.

गुमसुम-सं., चुप्पीक वातावरण। मै.

गुम्हड़ब-क्रि., आँखि मुहक भावेँ क्रोध प्रकट करब। मै.

गुम्मार-सं., गरमी, ताप। मै.

गुर-सं., रहस्य, भेद। मै.

गुरविरली-सं., रहस्य रखैक विधि। मै.

गुरछा-सं., एक मे अनेक गुच्छा। मै.

गुरमुठि-विशे., एकै दिश वस्तुक मुहकय बनाओल बोझ। मै.

गुरही-सं., रहस्यक विषय। मै.

गुरीच-सं., अमृता, लत्तीवाला वनौषधि। मै.

गुरु-विशे., उपदेशक, श्रेष्ठ शिक्षा दीक्षा देनिहार। सं. तत्सम

गुरुआइ-सं., गुरु होइक कार्य, गुरुक कार्य। मै.

गुरुता-सं., भारीपन, गौरव। स. तत्सम

गुल्लक-सं., बन्न मुहवाला रुपैया पाइ जमा करैक पकाओल माटिक छोटकी कोही। मै.

गुल्लरि-सं., औषधवाला वनस्पति विशेष। मै.

गुल्ला-सं., १. कोनो वस्तुक अत्यन्त छोट बनाओल गोल आकृति। २. मुह मे द' क' चिबबैक योग्य छीलल कुशियारक खण्ड। मै.

गुल्ली-सं., माटि आ पाथरक छोट सँ छोट बनाओल ठोस गोल वस्तु, गुलेती पर दय निशाना साधल जा सकैत अछि। मै.

गुल्ली डंटा-सं., एक प्रकारक खेल।' गोल आ नाम पातर आ छोट काठ आ बाँसक गुल्ली केँ डन्टा द्वारा एक चोटए उड़बैत छै, उपरेँ दोसर डन्टा सँ मारि दूर फेकैत अछि। मै.

गुल्ली मुल्ली-सं., सब दिश सँ मोड़िकय बोझ बन्हैक प्रक्रिया। मै.

गुल-सं., पथर कोयला आ काठक गुण्डी केँ गोबर माटि मे कड़ा सानि इन्धनक हेतु बनाओल गोल गोल मुठरा। मै.

गुलगुल-विशे., भीतर घुलल वा ढील रहैक कारणेँ दबला सँ दबैवाला फल। मै.

गुलगुलाएब-क्रि., बल सँ गुलगुल (घुलल) बनाएब। मै.

गुलगुलाहटि-सं., दबल दबल चर्चा, (लाक्षणिक) भीतरेँ भीतर गुप्त उल्लेख। मै.

गुलछर्रा उड़ाएब-क्रि., बिना मोह मात्सर्यक इच्छानुसार धन केँ खर्च कय नाश करैक चेष्टा राखब। मै.

गुलजामुन-सं., १. गोल आ नाम सन छोट फल। २. एहि आकारक छेनाक मधुर विशेष। मै.

गुलजार-विशे., भरल पुरल रहैक कारणें आनन्दित वातावरण परिपूर्ण । चहल पहल । मै.

गुलबावरी-सं., गेना फूलक प्रभेद । उ. तत्सम

गुलका-सं., सरस नारिकेरक भीतर अंकुरक बीज स्वरूप उत्पन्न कोमल आ गोल पदार्थ । मै.

गुलफी-सं., बरफक संग जमाओल खोआक गुल्ली । मै.

गुलमब्टा-सं., गोल मोल भाँटा । मै.

गुलाब-सं., फूल विशेष । मै.

गुलाब जल-सं., गुलाबक फूल सँ सुवासित जल । मै.

गुलाबी-सं., गुलाब सन लाल रंग । मै.

गुलमेख-सं., टोपीवाला लोहक काँटी । मै.

गुलाल-सं., लाल गर्दी, अबीरक प्रभेद । मै.

गुलेंच-सं., फूलक वनस्पति विशेष । मै.

गुलेली-सं., गुल्ली अथवा शर फेंकैवाला बाँसक फट्ठीक धनुष । मै.

गुलेबा उड़बा उड़ब-क्रि., निर्मूल विषयक प्रचार होएब । मै.

गुलेल-सं., दू अँगुआवाला डंटी मे बान्हल रबरक फीता पर गुल्ली राखि तानि कय फेंकैवाला साधन । मै.

गुलौड़ा-सं., गुल्ला जकाँ मुह मे गाल तर राखल वस्तु । मै.

गुबगुब खाएब-क्रि., चोराकय हबर हबर खाएब । मै.

गुँहगाड़नि-विशे., (लाक्षणिक) अनर्थ रखनिहारि, चिनाओनो वस्तु कें दबाकय रखनिहारि स्त्री । मै.

गुहचोरा-विशे., (लाक्षणिक) क्षुद्र चोर । अगिद्ध चोर । चुपचाप क्षुद्रो वस्तुक चोरि केनिहार । मै.

गुहटार-विशे., यत्र तत्र गुहें भरल । मै.

गुहा-सं., खोह । झाँपल तोपल गली । मै.

गुहाइन-विशे., मानव मलक सन्धसन गन्ध । मै.

गुहाएब-क्रि., गेंठ दय दय गसि कय कसाएब । मै.

गुहांगिजी-सं., (लाक्षणिक) परस्पर गारि मारिक संग विकट झगड़ा । मै.

गुहांमय-विशे., यत्र तत्र मानव मल सँ भरल । मै.

गुहें गुहटार-सं., मानव मल सँ व्याप्त स्थान । प्रयोग—"(कहबी) कौआ देवानत गुहें गुहटार ।" मै.

गुहौरी-सं., भेराटी जकाँ सूक्ष्म माटिक कण तथा अन्य अखाद्य दाना । ससीवाला फड़ । मै.

गू

गूआ-सं., सुपारी, गुवाक । सं. तद्भव

गूआबनी-सं., विवाहक हेतु आएल वर कें पहुँचैत मात्र छुट्टा पान सौंस सुपारी आ नगद राशि पनबट्टी मे लय हुनक स्वागत । मै.

गूआमाला-सं., वैदिक युगक प्राकृतिक अलंकार । उपनयन आ विवाह मे बरुआ आ कनियाँ कें काँच माटिक बनल माला जकाँ गहना । मै.

गूँजब-क्रि., ध्वनित होएब । अनेकक एक संग ध्वनि होएब । मै.

गूजा-सं., १. आँखि कान मे माँस कणक प्रादुर्भाव वाला रोग । २. गहनाक जोड़ पर जोड़ैक लेल लागल छेदवाला कड़ी जाहि मे कील सन्हिया कय अड़ाओल जाइछ । मै.

गूँजि उठब-क्रि., उल्लासक ध्वनि होएब । मै.

गूड़-सं., दूर सँ पसारि उपर उठल पाओ । मै.

गूड़ब-क्रि., हाथ सँ तोड़ि तोड़ि सानब । मै.

गूँड़ा-सं., कूटल धानक मेंही गर्दासन भूसाक कण । माल जालक सानीक पदार्थ । मै.

गूड़ा खुद्दी-सं., चाउरक छूटल ममरी आ कण । मै.

गूड़ी-सं., १. लपेटि कय छोट आकार बनल वस्तु । २. चूरि कय गर्दी बनाओल पदार्थ । मै.

गूड़ी चूड़ी-सं., आधा गूड़ल आ आधा चूड़ल पदार्थ । मै.

गूढ़-विशे., गुप्त, छिपल, नुकाएल । सं. तत्सम

गूँथब-क्रि., एक सूत्र मे सघन कय एक दोसरा सँ सटा कय सक्कत बनाएब । मै.

गून-सं., डोरी आ सूत मे पाक देबाक क्रम । मै.

गूना-सं., लोहक खोंल मे लोह कें पँसाकय सक्कत कटै लेल चाक दिस अगमन रेखा रूपक सूक्ष्म खाँच । पेंच । मै.

गूनब-क्रि., विचारब, सोचब, अनुमान करब । मै.

गूमब-क्रि., काटल अन्नक अपनें तापे डंटी सँ कोर छोड़ब । मै.

गूमल-विशे., डंटी सँ सिद्ध होइक कारणें जल्दी झरैवाला अन्नक दाना । मै.

गूरि-सं., पातवाला वस्तु कें एक मुट्ठी कय सल्ली लगाओल ढेरी । प्रयोग—"किसान सब तमाकूक गूरि खेतें मे बनवै अछि ।" मै.

गुरी-सं., पानि में छानल मखानक दाना । मै.

गुँह-सं., मनुष्यक मैला (मल) । मै.

गुहब-क्रि., सूत मे एक पर एक गाँथि कसब । मै.

गृ

गृह-सं., घर । सं. तत्सम

गृहवासू-विशे., घर बना कय रहैवाला । मै.

गृहपति-विशे., घरक स्वामी । सं. तत्सम

गृहस्थ-विशे., कृषक, घरद्वार बसबैवाला । सं. तत्सम

गृहस्थी-सं., कृषि पशुपालन आदि सँ व्यवस्थित रखैक कर्म । मै.

गृहिणी-विशे., घर स्वामिनी, पत्नी । पु० "गृही ।" सं. तत्सम

गे

गे !-अव्यय, नीच सम्बोधन । मै.

गेआति-सं., १. ज्ञाति, बोध, बूझैक शक्ति । पिता-महक उपरैं सँ फूटल वंश । स. तद्भव

गेआन-सं., ज्ञान, बूझै सूझैक शक्ति । प्रयोग—"के तारा हरत गेआन" नयना योगिनि । सं. तद्भव

गेठ जोतब-क्रि., (लाक्षणिक) एकै बात मे जिद् रोपि कय रगड़ैत रहब । मै.

गेजर-सं., आँखिक डिम्भा पर गेंठ । मै.

गेंट-सं., कोनो वस्तु कें एक पर एक राशि बनाओल समूहक ढेरी । मै.

गेंटब-क्रि., एक पर एक तहिया कय राखब । मै.

गेंटियाएब-क्रि., गेंट जकाँ बना बना कय राखब । मै.

गेंठ-सं., बन्हैक सक्कत गीरह् । मै.

गेंठकट-विशे., १. चोरा कय कैंच्याक गेंट कटैवाला, पाकिटमार । २. (लाक्षणिक) अनुचित लाभ लै-वाला वनियाँ । मै.

गेंठ जोड़बा-सं., कोनो विशेष क्रिया मे वरक वस्त्र सँ वधूक वस्त्रक जोड़ल गेंठ । मै.

गेंठ बन्हन-सं., १. विवाहक विधि मे बन्य ग्रन्थिक बन्धन । २. विशेष रूपक व्यक्तिक संग साँठि गाँठि । मै.

गेंठ बान्हब-क्रि., (लाक्षणिक) कोनो बातक वा विषयक अचल धारणा राखब । मै.

गेंठरी-सं., वस्त्रक खण्ड मे अनेक सामग्री राखि बान्हल छोट पोटरी । मै.

गेंठा-सं., गीरहो पर गीरहक बान्ह । मै.

गेंठिआएब-क्रि., माला आ कनी सब मे विशेष प्रकारक गेंठ देब । मै.

गेंठिया बात-सं., गीरह् गीरह् पर पीड़ा दय असमर्थ कय दै वाला वात रोग । मै.

गेंठी-सं., बनैया लत्तीक कन्द विशेष । मै.

गेंठी मधु-सं., औषध विशेष । मै.

गेंड़-सं., कनेको नै हिलैवाला भारी वस्तु । (लाक्षणिक) गेंड़ जकाँ मोट डाँट आ अचल । मै.

गेंड़ब-क्रि., एकठाँ लकड़ी आदि भारी वस्तु कें एक पर एक जमा करब । मै.

गेंडा-सं., कठोर चमड़ावाला तरुआरि सन तेज नाकवाला बनैया जीव । मै.

गेंड़ी-सं., गीरहवाला काठक भारी टुकड़ी । मै.

गेड़ुली-सं., कपड़ाक बनाओल अत्यन्त छोट पहिया जकाँ खोपा बन्हैक साधन । मै.

गेन-सं., लात आ हाथ सँ खेलाइक गोल वस्तु । मै.

गेनहारी-विशे., जाड़क लेल उदमाहल । प्रयोग—"गेनहारी कें के रोकनिहारी ।" मै.

गेनहारी-सं., कोमल स्वादिष्ट साग । मै.

गेना-सं., फूल विशेष । मै.

गेनिहार-विशे., जाड़वाला । मै.

गेम-सं., खेलक खेप एवं जीत । अं. तत्सम

गेरु-सं., रंगवाला लाल अथवा पाथर । मै.

गेरुआ-सं., सिरहौना, तकिया । मै.

गेरुआ-विशे., गेरु रंग मे रंगल । मै.

गेल्ह-विशे., अत्यन्त छोट बच्चा । प्रयोग—"कौआ सँ गेल्ह बुधियार ।" मै.

गेल्हुआ-सं., छोट बच्चा कें देमं वाला औषध विशेष । मै.

गेस-सं., तर्क, अनुमान द्वारा निर्धारण । अं. तत्सम

गेह-सं., घर । सं. तत्सम

गे है !-अव्यय, विरोध, क्रोध, भय, आश्चर्यक सम्बोधन । मै.

गै

गैँ-सं., गो जाति, गाय । मै.

गै !-अव्यय, स्नेह अनादर मे स्त्रीक प्रति संबोधन । मै.

गँ गौँ करब-क्रि., स्पष्ट भऽ कँ बात नहि बोलब। मै.

गँेच-विशे., टेढ़ जकाँ सपेंत। मै.

गँेचब-क्रि., टेढ़ कय खींचैत मुह सँ मुह मिलाकय खाम्ह आदि कें खोल करब। मै.

गँेचाह-विशे., एकदिश बढ़ल आ एकदिश झुकल वा घटल रहैक कारणें टेढ़बराह बिना डुलू दिशक टोकर मिलल। मै.

गैंची-सं., माछ विशेष। मै.

गैंता-सं., खनती जकाँ तेज धारवाला लोहाक भारी अस्त्र जकर बीचक छेद मे बेंट लागल रहैछ आ कोदारि जकाँ चला कय पाथर आ पथराएल माटि तोड़ल जाइत अछि। मै.

गैबार-विशे., गाइक चरवाह। स्त्री० गैवारनी। मै.

गैबारि-सं., गाइक चरबैक काज। मै.

गै ! गौ !-अव्यय, आश्चर्य, विरोध, हर्ष, दुःख आ भय मे स्त्रीक मुह सँ स्वतः बहराइवाला सम्बोधन। मै.

गैया-अव्यय, गाइक प्रति स्नेह सम्बोधन। मै.

गैयाह-विशे., विषय जनितो नहि बोलि सकनिहार, गाय जकाँ उद्वेग आ सम्बोधनहीन। स्त्री० गैयाहि। सज्जनताक प्रतीक। मै.

गैँर-सं., एक दिशा मे भयंकर रूपेँ जमाओ। मै.

गैँल-सं., जनसंचारहीन प्रच्छन्न स्थान। मै.

गैंसिही-सं., चटेरक शिकार ले शिकारीक मायक गैँक सिंह जकाँ बनल रूप। मै.

गो

गो-सं., खाद, भूमि कें उर्वर करैक देशी खाद, परीआ खाद जे भयवारि मे खादि खूनि कय, गडील गोबर जमा कय बनैत अछि। मै.

गोअर टोली-सं., पशुधनक जीवनी लोकक टोल। मै.

गोआर-सं., पशुपालक जाति विशेष। मै.

गोइ-सं., सड़ैक हेतु जमा कयल गोबर। मै.

गोइठा-सं., गोबरक बनल नाम नाम पातर बेरा जकाँ इन्धन, जारनि। मै.

गोस-सं., उषाकाल, प्रभात। मै.

गोखुर/गोखुला बबामी-सं., औषध विशेष। अश्मरी (मूत्राशय मे भेल पथरी) रोगक महौषध। गोखुर कें बुकनी बनाकय बकरीक दूध आ मधुक संग सेवन कयने पथरी गलि खसि पड़ैत छै। मै.

गो गौ करब-क्रि., १. गाय महिस दुहैक कालधारक ध्वनि होएब। २. मुह सँ स्पष्ट उत्तर दै मे तारतम करब। मै.

गोङ-विशे., स्पष्ट शब्दें बजै मे अक्षम। मै.

गोङियाएब-क्रि., १. नाकक भरेँ अस्पष्ट आ रुकिकय बाजब। २. बजैले अर्थात् उत्तर देले स्पष्ट शब्द आ वाक्य नहि बहार कय सकब। मै.

गोङियाह-विशे., स्पष्ट नहि कहनिहार। नहुँ नहुँ किछु बाजि दैवाला। मै.

गोचर-विशे., १. आँखिक समक्ष। २. माल जाल चरैवाला। मै.

गोँछब-क्रि., दू बोझ कें एक ठाम बान्हब। मै.

गोँछी-सं., दुइटा एकठाँ बान्हल बोझ। मै.

गोँजब-क्रि., कोमल स्थान मे बेर बेर कड़ा वस्तुक अगिला भाग सँ दबाएब। मै.

गोँजागोँजी-सं., निरन्तर कोनो वस्तुक भीतर सोझ वस्तुक अगिला भाग सन्हियबैक चेष्टा। मै.

गोजर-सं., सूत सन नाम आ पातर बीछ जातिक कीट विशेष। मै.

गोझनौट-सं., माउगिक पहिरल नूआक निचला पैर लगक आँचर, कोंचावाला भाग। मै.

गोट-सं., तेलहन विशेष। पीरा सरिसो। मै.

गोट-अव्यय, एकाइ बोधक। प्रयोग—"राजा दशरथ कें चारि गोट पुत्र छलथिन।" मै.

गोटगर-विशे., पैघ, डेरार। प्रयोग—"बैशाख मे आन बेश गोटगर भय जाइत छैक। मै.

गोट गोट-अव्यय, एक एकटा कय। मै.

गोटना-सं., गाछक काटल पातर डारिक खण्ड, बाँसक छोट टुकड़ा। मै.

गोटपगरा-विशे., कतौ कतौ एक आधटा रहैवाला। मै.

गोटरस-सं., स्त्रीगणक खेल विशेष। मै.

गोटा-विशे., १. एक मात्र। प्रयोग—"हम मासें मासें गोटा एकसंझा करै छी।" २. बिना भंग कयल। प्रयोग—"पूजा ले गोटा सुपारी नेने आएब। अर्थात् सौस।" ३. औटतें औटैत अत्यन्त गाढ़ दूध। ४. कपड़ाक कोर मे सुन्दरताक हेतु लगवैवाला चमक भरल फीता। मै.

गोटा किनारी-विशे., गोटा लागल कोरवाला नूआ। मै.

गोटा गोटी-अव्यय, एक एक टा कय । प्रयोग—"तेहन अधलाह नाच छलै जे गोटा गोटी लोक उठि कय चल गेलैक । मै.

गोटी-सं., १. औषधक बनल बड़िया । २. सतरंज आ पचीसी आदि खेलक विभिन्न रंगक पेंदीवाला गोंटी । ३. शीतला प्रकोपक घाओवाला चेन्ह । मै.

गोटे/गोटए-अव्यय, संख्याक पूर्णता बोधक । प्रयोग—"आइ चारि गोटए हमरा ओतए कथा करैक लेल आएल छला । मै.

गोटेक-अव्यय, एक मात्र । मै.

गोटे गोटे-विशे., एक आध टा मात्र । मै.

गोठ-सं., एकठाँ अधिक लोकक स्थिति । गोष्ठ । सं. तद्भव

गोठ-विशे., दुनू टाङ के कैंच कय आराम सँ बैसैक मुद्रा । ई: गोठ लगा कय बैसल छथि । मै.

गोठ बान्हब-क्रि., गोल आ सक्कत भ' क' जागब (धाओ) । मै.

गोठल-विशे., एकठाँ घन क' क' राखल । एकै ठाम घन भेल बैसल । मै.

गोठ लगाएब-क्रि., १. ठेहुन बान्हि कय बैसब । २. एकत्र भ' क' सब के बैसल रहब । मै.

गोठाल-सं., बैसारक स्थान आ पंचायति घर । मै.

गोठियाएब-क्रि., एकै ठाम सभक एकत्र होएब । मै.

गोठुला-सं., गोइठा रखैक सुरक्षित स्थान । मै.

गोड़-सं., पैर, चरण । मै.

गोड़-अव्यय, गोट (एकाइ बोधक) । मै.

गोड़कट-विशे., गोड़ पसारैमे ओछ भेनिहार ओछाओन आ खाट । मै.

गोड़धारी-सं., पैर दिशुक स्थान । मै.

गोड़न-सं., पकैक हेतु गरम मे देक विधि । मै.

गोड़ पड़ब-क्रि., क्षमाक हेतु पैर पर खसब । मै.

गोड़पेंच-सं., आवाजाहीक बदला आवाजाहीक व्यवहार । प्रयोग—"गोड़ पैंच आउन भत पैंच भोज ।" लोकोक्ति । मै.

गोड़ब-क्रि., पकैक हेतु फल आदि कें गरमी देबाक प्रक्रिया करब । मै.

गोड़बाहि-सं., निरन्तर एम्हर ओम्हर जा आबि कय पैरक अधिक काज वा श्रम । मै.

गोड़रा-सं., छोट माछ विशेष । मै.

गोड़लग्गी-सं., समाद द्वारा प्रणाम । मै.

गोड़लगाइ-सं., प्रणाम कयला पर प्राप्त राशि । मै.

गोड़ लागब-क्रि., प्रणाम करब । मै.

गोड़हन-सं., सूतल व्यक्तिक पैर लगक स्थान । मै.

गोड़हनो-सं., गोबर सानि काठीक भरें चेरा जकाँ बनाओल जारनि । मै.

गोड़ा-सं., १. भारी वस्तु कें धरती सँ ऊँच कय रखैक हेतु नीचाँ मे देल ठोस वस्तु । २. लोटा बाटी आदि वर्तनक बाहर दिश पेन मे उगाओल गोल रेखाकार अंश । मै.

गोड़ाइ-सं., छोट नेन्ना कें भौतिक आपत्ति सँ रक्षा लेल देल गेल लोहक काड़ा । मै.

गोड़ाइत-विशे., सामन्ती युगक लगान देबाले रैयति कें पकड़ि लबैक हेतु नियुक्त लोक । बराहिल । मै.

गोड़ाठ-सं., गोड़क चोट । मै.

गोड़ार-सं., पैरक सम्पूर्ण चिह्न छाप । मै.

गोड़ारी-सं., प्रतिदिन माल जालक चलला सँ बनल बाधि । मै.

गोड़ियाएब-क्रि., डेरीक भीतर मुह सन्हिया कय माल जालक अन्न खाएब । खोक तर मुह पैसा कय दाना खाएब । मै.

गोड़ी-सं., १. कोनो वर्तनक पेन मे उगाओल कृत्रिम आधार । २. काटल जीवक गोड़ दिशुक मांस । मै.

गोड़ैती-सं., गोड़ाइतक काज । मै.

गोढ़हा-सं., नाम नाम मोट पाथल गोबरक जारनि । मै.

गोंढ़नी-विशे., गोंढि (मलाह) जातिक स्त्री । मै.

गोंढ़लती-सं., गाँज ओंका आदि बनबैक हेतु डोरीक स्थान मे गोंढ़िक काज मे अबैवाला सक्कत लत्ती । मै.

गोढ़ारी-सं., गोबर मिलल पालवाला स्थान आ बाट । मै.

गोंढ़ि-सं., माछ आ जलक कामक व्यवसायवाला मछुआ जाति । मै.

गोंढ़ियारी-सं., गोंढ़िक टोल, बस्ती । मै.

गोत्र-सं., एक विशेष कुल समूह । सं. तत्सम

गोत-सं., देखू—"गोत्र" । प्रयोग—कौन गोत कोन माइर । सं. तद्भव

गोंत-सं., माल जालक मूत । मै.

गोतनी-विशे., भैंसुर देओरक पत्नी । मै.

भय गेल ।

गोंतब-क्रि., १. माल जालक मूतब। २. गर्दैनि पकड़ि नीचाँ दिश वा पानि मे दबाएब। मै.

गोंताखोर-विशे., गोंता लगबै मे निपुण। मै.

गोंता-सं., पानि मे डूबि हेलैक कला। मै.

गोंताइन-विशे., गोंतक रंग आ गन्धवाला। मै.

गोंता मारब/गोंता लगाएब-क्रि., पानि मे डूबि हेलैत कतौ सँ कतौ जाएब, तल स्पर्श करब। मै.

गोंताह-विशे., १. गोंत सँ भरल। २. गोंत सन रंग-वाला। मै.

गोंतिया-विशे., एक गोत्र मे भेनिहार। देयाद। मै.

गोंती गारब-क्रि., तुरन्त बियाएल मालक थन सँ जमल विकार बहार करब। मै.

गोदना-सं., स्थीयणक देह कें खोधि कयल कृत्रिम चिह्न। खोधा। मै.

गोदब-सं., खोधा पाड़ब। मै.

गोदावरी-सं., भारतक प्रसिद्ध आ पवित्र नदी। मै.

गोधन-सं., १. पशुवृत्ति। २. अल्पकालिक उर्वर। मै.

गोधियाँ-विशे., खेल खूपक कालक एक दलवाला। मै.

गोन-सं., बोधल नस्सा। गोन्द। हि. तद्भव

गोनरि-सं., पटिया जकाँ खड़क बीनल ओढ़ना, बिछाओन। मै.

गोप-सं., गोआर, गोधनवाला जाति। सं. तत्सम

गोपलखला-सं., (लाक्षणिक) सत्यानाशक व्याधि। मै.

गोपलाएब-क्रि., छिपा कय दाबि राखब। सदाक हेतु अन्तर्भूत कऽ देब। मै.

गोफ-सं., बाँहि पर पहिरैक गहना विशेष। मै.

गोब्राह्मणी मचब-क्रि., आदङ्क एवं भय भरल कोला-हल। (लाक्षणिक) कलहक प्रचण्ड रूप होएब। मै.

गोब-सं., ठेंडा वा गोल नाम वस्तुक हुराठ (अग्र-भाग) सँ कथु मे भीतर धँसबैक चेष्टा। मै.

गोबब-क्रि., नाम गोल वस्तु कें भीतर धँसाएब। मै.

गोबर्धन-सं., एहि नामक पौराणिक पहाड़। मै.

गोबर-सं., माल जालक मल। मै.

गोबर छत्ता-सं., (सं. शिलीन्ध्र) धरती फोड़ि छत्ता जकाँ उठल उज्जर अंकुरक सूक्ष्म गाछ। मै.

गोबराइन-विशे., गोबर लेपल आ लागल। मै.

गोबराएब-क्रि., कोनो जोकर नहि राखब। तथा होएब। मै.

गोबरार-विशे., गोबर भरल स्थान। मै.

गोबराह-विशे., १. गोबर छींटल। २. गोबर जकाँ लगैवाला। मै.

गोबरौड़-सं., नीपैक हेतु गोबर माटि रखैक बासन। मै.

गोभ-सं., १. सूक्ष्म अंकुर। २. गहना विशेष। मै.

गोभी-सं., स्पष्ट धरती सँ उपर उठल आँकुर। मै.

गोर-विशे., १. गोर वर्णक लोक। सं.- २. गोर देहक रंग। मै.

गोरका-विशे., गोर देहक रंगवाला। स्त्री० गोरकी। मै.

गोरब-क्रि., दाबि, झाँपि आ नुका कय राखब। मै.

गोर रतरत-विशे., अधिक अर्थात चमकैत गोर रंग-वाला। मै.

गोरलाहा-विशे., दाबि झाँपि कय राखल वस्तु। मै.

गोरहौ-विशे., बिना खादौ उर्वर खेत। अधिक उपजवाला खेत। मै.

गोरा-सं., गौरांग, अंगरेज, विदेशी जाति। मै.

गोराइ-सं., गोर रंगक भाव आ स्थिति। मै.

गोराएब-क्रि., १. अनका द्वारा नुकाएब। २. स्वतः कमहि गोर होएब। मै.

गोरि-सं., विधर्मी लोकक शव गाड़ैक स्थान। मै.

गोरिल्ला-सं., लुकि छिपि कय आक्रमण करैक विधि। मै.

गोरुआ-विशे., नुका कय राखल। मै.

गोरू-विशे., बिन बाहल बियाएल तरुणी गाय। मै.

गोल-सं., १. खेल खेलाइक क्रम मे निश्चित सीमा देने खेलक निकास। २. एकमतवाला सभक दल-बन्दी। मै.

गोल-विशे., सब दिश सँ एके रंग वृत्ताकार। यथा-ब्रह्माण्ड गोल, खगोल, भूगोल। मै.

गोल करब-क्रि., १. गोलाकार बनाएब। २. छिपाके पार करब। मै.

गोलका-विशे., गोल रूपवाला। मै.

गोलकी-विशे., १. खेलक खेल मे गोलक रक्षा कय-निहार खेलाड़ी। २. गोल आकारक स्त्री। मै.

गोलगर-विशे., १. गोल आकारवाला। २. गोला सँ भरल खेत। स्त्री० गोल-रि। मै.

गोलगप्पा-सं., कोनो वस्तु छिपा रखैक चेष्टा । मै.

गोल गल्ला-विशे., गोलाएम गल्लावाला आड़ी । मै.

गोलट-सं., कन्यागत आ वराइत दुहु धरक कन्या वरक बदला बदली रूपें विवाह । मै.

गोलपेंच-सं., प्रपञ्चक जाल । घुरची पेनीक बात । मै.

गोलबाहि-सं., लगातार गोला फेंकैक क्रम । मै.

गोलम्मर-सं., कोठाक गोलाकार कोठली । मै.

गोल मटोल-विशे., गोलक संग मोट आकारवाला । मै.

गोलमाल-सं., उनटफेर, मिझरौट, छिपबैक व्यवसाय । मै.

गोलमोल-विशे., गोलाइक संग सुन्दरता भरल । मै.

गोलरी-सं., अन्नक दाना झाड़ली उत्तर बिन दाना झड़ल अन्नक सीस । (गहूमक हेतु बेसी प्रयोग) । मै.

गोलहत्थी-सं., बिना दालि मिलाओल खिच्चड़ि । मै.

गोलही-सं., माछ विशेष । मै.

गोला-विशे., १. मटियाइन लाल रंगक पशु । २. अन्न आदि वस्तुक भण्डारवाला दोकान । मै.

गोला-सं., १. यान्त्रिक अस्त्र सँ छूटल मारक वस्तु । २. पैघ पैघ माटि आ पाथरक कड़ा टुकड़ा । मै.

गोलाइ-सं., सब दिश सँ वृत्ताकार रूप । मै.

गोलाएब-क्रि., गोलाकार बनब । मै.

गोलाकार-सं., गोल रूपक । मै.

गोला गोली-सं., विभिन्न मतानुयायीक दलबन्दीक चेष्टा । मै.

गोलाबादरि-सं., विरोधक बातचीत । झगड़ाक उपक्रमक वार्ता । मै.

गोलियाएब-क्रि., १. अभियोग सिद्ध कए दण्डभागी बनाएब । २. छीटल वस्तु कें एकठाँ जमा करब । ३. धान मे गम्हरा होइ सँ पहिने डाँटक गोल बनब । मै.

गोली-सं., १. औषधक बड़िया । २. गुलेल आ बन्दूक सँ बहराएल घातक वस्तु । ३. गोलकी । मै.

गोली ताम-सं., भिड़ियाओल तामक गोली । मै.

गोलैस-विशे., आधुनिक नेता, अपन महत्त्व जमा कय राजनीतिक आ सामाजिक दलबन्दी करनिहार । मै.

गोलैसी-सं., दलबन्दी । दोसरा पर आक्षेपक संग अपन मतानुयायीक संग्रह । मै.

गोशाला-सं., गाय सभक रहैक स्थान । मै.

गोष्ठी-सं., कोनो विषयक प्रसंग शिष्ट लोकक बैसार । सं. तत्सम

गोसवारा-विशे., सम्मिलित, साझी । उ. तद्भव

गोसाईं-विशे., गोस्वामी । जितेन्द्रिय । गृह देवता । मै.

गोसाँइ घीर-सं., गृह देवताक आर्गा तथा स्थान । मै.

गोसाउनि-सं., देवी भगवती । मै.

गोहराएब-क्रि., प्रार्थना करब । मै.

गोहारि-सं., न्याय, हितकामना, लोकक कष्ट निवारण । मै.

गोहाल-सं., माल मवेशीक घर । मै.

गोहि-सं., हिंसक जल जीव । नकार । मै.

गौ

गौ-सं., (संस्कृत) गाय । सं. तत्सम

गौं-सं., लक्ष्य, स्वार्थ । मै.

गौआँ-विशे., गामक लोक । मै.

गौआरब-सं., एक गामक बसैक व्यवहार । मै.

गौंगीर-विशे., बात बात मे अपने लक्ष्य रखनिहार । मै.

गौंछब-क्रि., कपड़ाक चारू खूँट बान्हि झोरी बनाएब । मै.

गौंजाएब-क्रि., घन भ' क' जानि बढ़ब । मै.

गौंजी-विशे., बिन पाकल डाँट सँ कम सीस । मै.

गौंड़-विशे., वासनक कण्ठ धरि भरल । मै.

गौड़-सं., ब्राह्मणक प्रभेद । मै.

गौर-सं., १. गौरीक प्रतीक । २. तरुणी मैं' । मै.

गौरनेआ-सं., गौरी पूजा सामग्री । मै.

गौरपूजब-क्रि., नववधूक गौरी पूजा करब । मै.

गौरब-सं., गरिमा, अहंकार, मद । सं. तत्सम

गौरबाह-विशे., घमण्डी, गौरव भरल । स्त्री० गौरबाहि । मै.

गौरिया मालभोग-विशे., उत्तम स्वादक केरा । मै.

गोरी-सं., आदि प्रकृति, शिव पत्नी। मै.

गोँसार-विशे., गोंत गोबर सँ उर्वर खेत। मै.

गोहा-सं., काँटी कें पकड़ि खींचैवाला चुट्टा। जुत्ता ठीक करैक बनबैक उपयोगी अस्त्र। मै.

घ

घ-सं., कण्ठ स्थानीय कवर्गक चारिम अक्षर। मै.

घओना-सं., रेखा रेघाकब कानब। मै.

घँकोरब-क्रि., माटि उखाटि कय पानि कें दूषित करब। मै.

घघ-सं., फुग्ध, धौन्ह। सतत वर्षा आ मेघ लागल रहब। प्रयोग—"मघा लगाबय घघ।" मै.

घघरा-सं., स्त्रीक डाँर धरिक वस्त्र। डाँरक घेराक अनुसार सीयल कपड़ा। नर्त्तकीक वस्त्र। मै.

घघरी-सं., छोट कन्याक लेल घघरे सन घघरी। मै.

घघाएब-क्रि., विकट रूपें हुँसब। मै.

घघाचाल-सं., अंगक विस्तृत आ फलकल आवरण। मै.

घच्चा खाएब-क्रि., अवसर पर हुसि जाएब। मै.

घचनेड़-विशे., अवसर पर अनेर विलम्ब करैत घर मे नुकाएल रहनिहार। मै.

घचपचाएब-क्रि., काजक बेर मन मे आगाँ पाछाँ करब। मै.

घट्टा-सं., (हि.) घाटा, डोह लागब। मूली धनक नाश। मै.

घट्टी-सं., १. कमी, त्रुटि। २. अपराध, गलती। ३. आवश्यकता आ विलम्बक विशेष विशेष स्थान। मै.

घट्टी मानब-क्रि., गलती वा अपराध सकारब। मै.

घट्टी लागब-क्रि., बेचै मे मूलो धन (लागत) नहि उपर होएब। मै.

घट्ठा पिट्ठा-विशे., मोट डाँट सक्कत देहवाला बन-गर। मै.

घट्ठापिट्ठा पड़ब-क्रि., अभ्यास पड़ल रहब। नीक जकाँ सब दिनक अनुभव भेल रहब। मै.

घट-सं., १. घैल। २. (लाक्षणिक) शरीर। सं. तत्सम

घटक-विशे., बराइत कन्यागतक विचार सन्तुलित कय वैवाहिक कथा पटौनिहार। मै.

घटकैती-सं., घटकक काज, बर आ कन्या पक्ष कें आश्वस्त करैक प्रयास। मै.

घटघट-अव्यय, शब्दपूर्वक बिनु स्वाद आ विचारनें पीयब। मै.

घटनघर-विशे., (लाक्षणिक) अपन स्वार्थँ टा सँ प्रयोजन रखैवाला। मै.

घटना-सं., १. अनहोनी स्थिति। २. वियोग। ३. योजना। सं. तत्सम

घटब-क्रि., १. कम भऽ जाएब। २. अनहोनी बात होएब। मै.

घटवार-विशे., घाटक अधिकारी। मै.

घटवारि-सं., घाटक मासैल, करक आहरण। मै.

घटस्थापन-सं., कोनो शुभ अवसर पर मन्त्र विधि सँ घैल स्थापित करैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

घटही-विशे., घाट धरि पहुँचऔनिवाला, घाट पार करैवाला, घाट सँ सम्बन्ध जोड़ैवाला, घाटे पर रहैवाला। मै.

घटा-सं., मेघक सघन रूप। सं. तत्सम

घटाओ-सं., अंक सँ अंक घटबैक गणितक प्रक्रिया। मै.

घटाटोप-सं., १. घन भ' क' बरखोआ मेघक पसार। २. आडम्बर। सं. तत्सम

घटिया-विशे., १. तौल आ नाप मे थोड़ आ कम। २. तुलनाक विचारें दब। मै.

घटियाएब-क्रि., कमें कमें स्वतः थोड़ बहुत होएब। मै.

घटुआहार-सं., विभिन्न प्रकारक वस्तुक एकैठाँ मिलान। मै.

घटौरि-सं., जलाशय मे कपड़ा पखैक हेतु तथा अन्य काज लेल बनाओल कृत्रिम स्थान। मै.

घटौलब-क्रि., १. (लाक्षणिक) स्वार्थक प्रसंग मे निर्लज्जता सँ अनैतिको काज कय लेब। २. स्वादक बिनु विचारें घोंटि लेब। मै.

घठिहुन-सं., घाठि (बेसन) बनबैवाला अन्न। मै.

घड़कब-क्रि., भारी वस्तुक अपनें अव्यवस्थित रूपें पुरबैत चलब। मै.

घड़काएब-क्रि., औंघराबैक सोझे गति देब। मै.

घड़काह-विशे., १. स्वतः गतिशील होइवाला वस्तु। २. स्वतः घूर्णनिकय ससरैवाला ढालू स्थान। मै.

घड़मोमड़ा-सं., पाइ ढेड़ कऽ दैवाला मालक रोग। मै.

घड़र घाड़ब-क्रि., भूतल मे मुह आ नाक सँ घड़घड़ शब्द करब। मै.

घड़रा-सं., बाँसक दू टोनाक बीच दूनू छोर पर घैल बान्हि कय नदी पार करैक कृत्रिम नाओ। मै.

घड़सुर-सं., गरदनिक जड़ि। मै.

घड़ियाल-सं., बड़का घण्टा। मै.

घड़ी-सं., १. समयक मान बुझबैवाला स्वचालित यन्त्र। २. पावनि विशेष। मै.

घड़ी पहर-अव्यय, (लाक्षणिक) अत्यन्त सूक्ष्म समयक अवधि। मै.

घड़ीसाज-विशे., घड़ीक मरम्मति कयनिहार। मै.

घण्टा-सं., १. शब्दक प्रसार करैवाला धातुक वाद्य। २. आधुनिक समयक मान ६० मिनट। सं. तत्सम

घण्टी-सं., १. पूजा काल बजबैक छोट वाद्य। २. पढ़बैक हेतु विद्यालयक समयक विभक्त मान। ३. माल जालक गर्दा मे देल टुनटुनी। मै.

घताह-विशे., जानि बूझि कय बताह सन बनल। स्त्री० घताहि। मै.

घन्न घन्न/घन्नर घन्नर-अव्यय, पातर अनेक गम्भीर आ मेंही ध्वनि। मै.

घन-सं., १. मेघ। २. दूनू हाथें उठबैवाला बड़का लोहा पीटैवाला हथौड़ा। सं. तत्सम

घन-विशे., आपस मे एक जातिवाला गस्सल। मै.

घनगर-विशे., परस्पर अधिक गहल। मै.

घनगीरह-विशे., १. लग लग पोरवाला। २. (लाक्षणिक) बात बात मे शंका उत्पन्न करा कय स्वार्थ साधैवाला तथा रहस्यमय व्यक्ति। मै.

घन घन-अव्यय, शब्द विशेष। प्रयोग-''घनघन घनन घुघुरु कत बाजय।'' मै.

घनघनाएब-क्रि., मधुमाछी आदिक गम्भीर मेंही ध्वनि करब। मै.

घनघोर-विशे., अत्यन्त गम्भीर रूपें भयंकर। मै.

घनहुल-विशे., सघन भेल। मै.

घपचब-क्रि., पाछू दिश खींचब। उचित मान मे अकस्मात् कटौती करब। मै.

घपचाएब-क्रि., सोझां मे स्थित वस्तु कें आँखि बचा-कय पाछू दिश खींचि लेब। मै.

घपोल-विशे., उपर मे सकिर मुहवाला। मै.

घपोली-विशे., सोकर पेंरल आ मुहवाला बासन। मै.

घबघब-अव्यय, बिना परिश्रमें दाँत तर छहोछित वस्तुक भोजन। मै.

घबराएब-क्रि., बुलहाल होएब। मानसिक रूपें आकुलता सँ बुद्धिक कुण्ठित होएब। मै.

घबहा-विशे., सदैव कोनो रूपक घाओ सँ भरल रहैवाला। स्त्री० घबही। मै.

घबाह-विशे., क्षतयुक्त, घाइल, घाओवाला। मै.

घबे घबे-अव्यय, मुट्ठीक मुट्ठी झट झट कर बान्हि कय। मै.

घम्हौरी-सं., १. घाम सँ उत्पन्न मेंही फोंसरी। २. बनैया लत्तीक फड़ विशेष। ३. मेंही दानावाला गहना विशेष। मै.

घमण्ड-सं., कोनो गौरव सँ अपन महत्वक प्रका-शन। मै.

घमब-क्रि., द्रवीभूत होएब। पघिलब। मै.

घमर्थनि-सं., अनेक मतवाला लोकक एकै बात पर बारम्बार तर्क वितर्क। मै.

घमसौर-सं., १. अनेक लोकक एकै विषय पर विभिन्न मतक उपस्थिति सँ उत्पन्न कोलाहल। २. बहुत लोकक एकठाँ बिना निष्कर्षक वाद विवाद। मै.

घमाइन-विशे., घाम अर्का आ घाम सँ भरल। मै.

घमाएब-क्रि., १. घाम सँ भरि जाएब। २. दबित करब। मै.

घमाघट्ट-विशे., कोनो क्षण मे अपन भयंकरता सँ विस्फोट कय सकैक स्थिति मे स्तब्ध रहैवाला। मै.

घमासान-विशे., परस्पर गुत्थम गुत्था सँ अथवा तीव्र वेग सँ भयंकर रूप धारण कयल। मै.

घर्रघर्र-अव्यय, एहि रूपक यान्त्रिक ध्वनि। मै.

घर्षण-सं., घँसनाइ, कोनो वस्तु के कोनो वस्तुक रगड़। मै.

घर-सं., आत्माक निवास, जीवात्माक मन्दिर। मै.

घरको-सं., घरौंदा (हि.) घर बनबैक धीया पूताक खेल विशेष। मै.

घर घर-अव्यय, १. ध्वनि विशेष। २. हरएक घर मे। मै.

घरघराएब-क्रि., घरघर शब्द करब। (कण्ठ वा यन्त्रक) मै.

घरघराहटि-सं., स्वचालित यन्त्रक ध्वनि आ कफ सँ अवरुद्ध कण्ठक ध्वनि। मै.

घरघरी-सं., प्राण वियोग (मरण) होएबा सँ पूर्व मरणासन्न अवस्थाक लोकक एक मात्र अस्फुट कण्ठ-ध्वनि। मै.

घरघुसना-विशे., कत्तौ नव जाइक काल फेर फेर अपने घर (वथान) दिस घुरि अबैवाला माल। मै.

घरघुसना-विशे., अनुचित ध्येय सँ वा संकोच सँ वा डर सँ घर मे घुसैवाला अथवा घर मे नुका रहनिहार। स्त्री० घरघुसनी। मै.

घरघौंस-विशे., काजक डरेँ सदिखन घरे मे नुकाएल रहनिहार। मै.

घरघौंसरा-विशे., अपन अहदीपन सँ काजक डरेँ घर मे नुकाकय सतत लोकक दृष्टि सँ बँचैक प्रयास रखनिहार। स्त्री० घरघौंसरि। मै.

घरछरा-विशे., घर छारै मे उपयोगी तथा घर छारै मे करिन्ना। मै.

घरछरी-सं., घर छारल जाइक क्रम। मै.

घरजना-विशे., प्रत्येक घरक एक एक। मै.

घरजमैया-विशे., ससुरैक घर मे रहनिहार जमाय। सासुरे मे बसनिहार। मै.

घरजरी-सं., घर जरैक द्वारेँ उत्पन्न स्थिति। घर जरला सँ प्राप्त सहायता। घर जरैक कारणेँ उठल समस्या। मै.

घरडाँड़-सं., मूलो धनक क्षति। अनेर कोनो कारणेँ लागल दण्ड। मै.

घरद्वार-सं., घर एवं घरक आलय। सं. तद्भव

घरदेखी-सं., विवाह सम्बन्धक हेतु कन्यागत आ वरागतक परस्पर घरक अवलोकन आ भोजन भात। मै.

घरन्दार-विशे., प्रतिष्ठित घरक लोक। उन्नत कुलक व्यक्ति। मै.

घरनी-विशे., घरक अधिकारिणी अर्थात् पत्नी। मै.

घरपैसा-विशे., चोरा कय सोझे घरे मे पैसि रहनिहार चोर, व्यभिचारी आ कुत्ता। मै.

घरपैसी-सं., १. अनुचित ध्येय आ बल सँ घर मे पैसवाक क्रम। २. गृह प्रवेश। मै.

घरबान्ह-सं., डोरी सँ टाट आ घर आदि बन्हैक हेतु विशिष्ट प्रकारक बन्धन। मै.

घरबाड़ी-सं., घर आ घर सँ लागल बाड़ी झाड़ी। मै.

घरबारी-विशे., घरक स्वामी। मै.

घरबाला-विशे., पति, स्वामी। मै.

घरबै-विशे., घरक क्यो व्यक्ति। मै.

घरबैया-विशे., घरक क्यो समाङ तथा स्वामी। मै.

घरभरी-सं., विवाह करैक यात्राक समय आ कन्या लय अबैक समय मे मैँ आ सासुक खोँछि वरक द्वारा धान सँ भरैक विधि। मै.

घरभूजी भाङने-लोकोक्ति (कहबी) धनक अभाव आ आङ्वालक विशेषता। मै.

घरमुहाँ-विशे., घर माथेँ बाट धयनिहार। मै.

घरहट-सं., घर बन्हैक उद्योग। मै.

घरहटिया-विशे., घर बन्हैक काज मे निपुण। मै.

घरहन्न-सं., घरक अधिकांश लोकक नाश। मै.

घरहर-विशे., घर मे पीबैक पानि रखैक काजक बैल। मै.

घरही-विशे., प्रत्येक घर सम्बन्धी। मै.

घराघरी-अव्यय, घरेँ घरेँ। मै.

घराड़ी-सं., बान्हल आ उपटल घर स्थान। बसैक भूमि। मै.

घरामी-विशे., घर बन्हैक कला मे चतुर। मै.

घरि-सं., गाछ सँ बहराएल केराक सम्पूर्ण गुच्छ। मै.

घरियाएब-क्रि., रोगक द्वारेँ घर धय लेब। मै.

घरियार-सं., हिंसक विशाल जल जीव मकर, गोहि। मै.

घरुआ-विशे., घरक उत्पादित वस्तु। मै.

घरेर-सं., निलाह घरे जकाँ कत्तौ रहैक नियम। मै.

घरैत-विशे., घरक प्रधान व्यक्ति। स्त्री० घरैतनी। मै.

घरैँन-विशे., परिवार, वंश आ कुटुम्ब लोक। मै.

घरैया-विशे., घर मे सम्पादित। अपन घरक बनल। मै.

घरौआ-विशे., घरैक उपयोगी, घरक लोक। मै.

घसर घसर-अव्यय, दाँत तर दैत मात्र खहोछित भ' जाइवाला खाद्य। मै.

घसकट्टा-विशे., घास कटैक वृत्तिवाला। (लाक्षणिक) मूर्ख, गमार। मै.

घसकटनी-विशे., घास कटैवाली। मै.

घसकट्टी-सं., १. घास कटैक काम । २. विवाहोपरांत चतुर्थी दिन वरक द्वारा घास कटैक विनोद विधि । मै.

घसकब-क्रि., लोकक आँखि बचा कय चलि देब । मै.

घसगढ़नी-विशे., नीक नीक घासक विन्यास करैवाली । पु० घसगढ़ा । मै.

घसघस करब-क्रि., कोनो कामक हेतु प्रस्तुतो भेला पर आगाँ पाछाँ करब । मै.

घँसब-क्रि., कोमल वा कठोर वस्तु कें कठोर वस्तु पर द्रव वा गर्दाक हेतु रगड़ब । मै.

घसबार-विशे., घास कटैवाला । स्त्री० घसबारिन । मै.

घसवाह-विशे., घास कें एकट्ठा करैवाला । स्त्री० घसवाहिनी । मै.

घसमोड़ब-क्रि., ठेंहुन सँ गरदनि सटाकय सूतब । मै.

घसाठ-सं., सतत घर्षण पड़ला सँ बनल चिह्न । मै.

घसेट-सं., कोनो कठोर आ सुखाएल वस्तुक रगड़ सँ अंग में बनल चिह्न वा घाओ । मै.

घसेटब-क्रि., नीको वस्तु कपड़ा आदि कें माटि वा अधलाह स्थान मे रगड़ला सँ दूरि करब । मै.

घहरब-क्रि., विपत्ति अर्थक आभास होएब । मै.

घहराएब-क्रि., संकट उपस्थित करब । मै.

घा

घा-सं., घाओ, प्रवाहित घाओ । मै.

घाँइ-विशे., बात सँ बात पकड़ै मे चतुर । मै.

घाइल-विशे., आहत, शस्त्र द्वारा वा चोट द्वारा क्षत । मै.

घाओ-सं., सामान्य घाओ । मै.

घाघ/घाघड़ा-विशे., कोनो रहस्य कें गुप्त रखै मे निपुण । मै.

घाघस-सं., मेघ आ धौन्ह सँ अवरुद्ध दिनक प्रकाश । मै.

घाट-सं., नदी आ पोखरि सब मे नहाइक आ पानि लैक पवित्र स्थान । मै.

घाँटब-क्रि., १. घटित सूत कें सक्कत सँ सून बैसबैक हेतु माँजब । पेय वस्तु मे कटुक सब द्रव कें एक बासन सँ दोसर बासन मे ढारि ढारि मिलाएब । ३. तीमन तरकारीक बारम्बार आलोड़न । मै.

घाटि-सं., घाटा, कमी, थोड़ होइक आपत्ति । मै.

घाँटी-सं., पूजाक क्षुद्र वाद्य, माल जालक गरदनिक घण्टी । प्रयोग–"धन के बाजय घाँटी ।" मै.

घाँटो-सं., माटिक महादेव सन बनाकय सधवा स्त्री पुत्र सौभाग्यक कामना सँ भाड़ धुतूर सँ मेष संक्रान्तिक अवसर पर पूजा करैछ से माटिक बनल मूर्ति । मै.

घाठि-सं., दलिहन पदार्थक बेलन । मै.

घाड़-सं., गरदनिक कड़ाइ । मै.

घाड़ी लगाएब-क्रि., बात अकानै लेल गरदनि नमड़ाकय सावधान रहब । मै.

घात-सं., १. चोट । २. नुकाकय शत्रुता सँ प्रतीक्षा । मै.

घात लगाएब-क्रि., नुकाकय दुष्टता सँ प्रतीक्षा करब । मै.

घाती-विशे., मारैवाला, नाश करैवाला, हानि पहुँचबैवाला । मै.

घानि-सं., अधिकता, समूह, सघन रूपक स्थिति, ढेरी । मै.

घानी-सं., एक बेर मे कूटै, पीसै आ पेरै जोग द्रव्यक निश्चित मान । मै.

घाम-सं., उष्मक द्वारेँ रोम कूप सँ बहराएल देहक पानि । मै.

घालब-क्रि., हानि पहुँचाएब, आहत करब आ नाश करब । मै.

घालि-विशे., आहत, काटलगेल । मै.

घास-सं., हरियर दूभि आदि मालक चारा । मै.

घाहि काटब-क्रि., दुर्दशा सँ जीवन बिताएब । मै.

घि

घिआरी-सं., बिरनी जातिक कीड़ा द्वारा बनाओल माटिक गोल अथवा नाम छोट खोंता । मै.

घिउ-सं., (स्थान भेदेँ शब्द भेद) दूधक तेलसन चिक्कन सार भाग । मै.

घिऊरा-सं., लत्ती मे फड़ैवाला गोल नमाओन व्यञ्जनक फड़ (सं.) कोशातकी । मै.

घिकुमारि-सं., मोट गुद्दा भरल पातवाला औषध । मै.

घिँघियाएब-सं., कण्ठ सँ आर्त्त अस्पष्ट ध्वनि करब । मै.

घिचपिचाएब-क्रि., संकल्प विकल्प मे पड़ल रहब। मै.

घिचपिचौ-सं., कोनो विषय कें संकल्प विकल्प सँ अपना अपनी खींचैक चेष्टा। मै.

घिँचौअलि-सं., अपना अपना दिश खींचैक क्रम। मै.

घिन-सं., घृणा, दूषित वस्तुक द्वारें मनक संकुचित स्थिति। मै.

घिनघिन-विशे., घृणित, कुत्सित, असह्य। मै.

घिन लागब-क्रि., घृणा होएब। मै.

घिनही-सं., स्रवित कुष्ठ। मै.

घिनाएब-क्रि., घृणा सँ भरल रहब, घृणित बनाएब। घृणावाला काज करब। मै.

घिनाएल-विशे., घृणित अवस्था मे पड़ल। मै.

घिनाह-विशे., घृणाक योग्य, घृणास्पद। स्त्री० घिनाहि। मै.

घिनौआ-विशे., घृणा उपस्थित करैवाला। मै.

घिनौन-विशे., घृणाक वस्तु सब सँ भरल, घृणित। मै.

घिबहा-विशे., (लाक्षणिक) उत्तम तत्त्वक आ उच्च कोटिक व्यक्ति वा वस्तु। प्रयोग–घिवहा सजमनि। घिवहा जाति। घिबही पूड़ी। मै.

घिबही-विशे., घी मे बनल आ छनल भोज्य पदार्थ पकवान आदि। घी वाती (घीक दीप) घिबही सोहारी। घिबही पूड़ी आदि। मै.

घिबाइन-विशे., घी लागल। घीक स्वाद भरल। मै.

घिबाह-विशे., घी लागल वस्तु। मै.

घिर्ना-सं., घृणा। सं. तद्भव

घिरघिर करब-क्रि., बारम्बार दुखित पड़ब। मै.

घिरताघिन करब-क्रि., व्यवहार आ बात सँ वातावरण आ समाज कें अत्यन्त घृणित करब। मै.

घिरनी-सं., बराबरि नचैवाला। अपन रेखा पर वा शून्य मे एकै परिधि मे घुरमैत रहैवाला कल, चक्र आ पहिया आदि। मै.

घिरनी जकाँ नाचब-क्रि., (लाक्षणिक) एकै स्थान मे अनेक काजक सम्पादनक व्यग्रता सँ दौड़ैत रहब। मै.

घिरब-क्रि., व्याप्त भ' क' पसरब। प्रयोग–"मेघ केर घिरि आएल छैक।" मै.

घिसाएब-क्रि., घर्षण सँ क्षीण होएब। मै.

घिसियाएब-क्रि., भारी वस्तु कें वा ककरो भूमि पर अव्यवस्थित कयने खींचब। मै.

घिसियौड़ काढब-क्रि., असमर्थता सँ दुर्दशा सँ जीवन बिताएब। मै.

घिसौठ-विशे., घिसियौला सँ धरती मे बनल चिह्न। मै.

घी

घी-सं., दूधक सार। घृत। मै.

घीँचब-क्रि., भारी वस्तु कें जोर सँ आकर्षित करब। मै.

घींकब-क्रि., आलोड़ित करब, मथब। मै.

घींकोरब-क्रि., जलाशयक जल कें अधिक आलोड़न सँ कादो जगा कय दूषित करब। मै.

घी बाती-सं., दीपक हेतु घी मे बोरल बत्ती। मै.

घीँसब-क्रि., कठोर वस्तु कें कड़ा वस्तु पर रगड़ब। मै.

घु

घुइस्सा-विशे., बात कें दबने राखि अवसर पर प्रतिक्रिया करैवाला दुष्ट प्रकृति। मै.

घुग्घू-सं., बच्चाक मन बहटारैक खेल उतान पड़ि दुनू टाँग मोड़ि पैर पर पाड़ैक मुद्रा। मै.

घुघना-सं., रुष्ट बनल मुहक मुद्रा। गाल ठोर आ दाढ़ीक भारी आकृति। मै.

घुघना लटकब-क्रि., तामसक खेल मुह फुलल मन होएब। मै.

घुघनाह-विशे., सतत् मुह लटकौने रहनिहार। तमसाएल मन रहनिहार। मै.

घुघनी-सं., गोटा (सीम) बदाम (चना) क रान्हल भोज्य पदार्थ। मै.

घुघुआघू-अव्यय, उतान भ' क' टाङ मोड़ि पैर पर बच्चा कें राखि बहटारैक प्रक्रिया। मै.

घुघुरू-सं., नूपुरक दाना जकाँ पैघ पैघ दानावाला मधुर ध्वनि कयनिहार डाँरक अलंकार हेतु। मै.

घुच्चा घिसाएब-क्रि., १. खाधि मे नियत स्थान सँ फेंकि गुल्ली पहुँचाएब। २. (लाक्षणिक) अपन लक्ष्य सिद्ध करब। मै.

घुच्ची खूनब-क्रि., घुच्चा खेलैक खाधि बनाएब। मै.

घुच्छा-सं., एक डंटी मे फड़ल अनेक गुच्छ। मै.
घुचि रहब-क्रि., काजक अवसर पर अनेर छिपि जाएब। मै.
घुट्ठासोहार-सं., परस्पर अत्यन्त मिलान। मै.
घुट्ठी-सं., एड़ी आ फिल्ली सँ ऊपर टाङक पतरका अंग। मै.
घुटकब-क्रि., १. परबा (कपोत) क आवेश भय बाजब। २. रुकि रुकि कय मुह सँ अस्पष्ट जकाँ शब्द बहार करब। मै.
घुटकी-सं., १. परबाक जकाँ नेन्नाक मधुर शब्द। २. बल सँ नेन्ना कें औषध पिअबैक चेष्टा। मै.
घुटघुट-अव्यय, शीघ्रता सँ घोंट पर घोंट दय। मै.
घुटन-सं., श्वास अवरुद्ध होइक स्थिति। मै.
घुटब-क्रि., १. अकथनीय व्यथा सँ आकुल रहब। २. दम नै लऽ सकब। मै.
घुटमुटार-विशे., गोलाइ भरल छोट आकार प्रकारक। मै.
घुटुकसन-अव्यय, नेन्ना कें अरुचिकर वस्तु पियबैक हेतु परतारैक शब्द। मै.
घुठना-सं., घुट्ठी आ पैरक जोड़वाला अंग। मै.
घुड़कन-सं., एकाएक कृत्रिम क्रोध। मै.
घुड़कब-क्रि., एकाएक कृत्रिम क्रोध सँ बाजि उठब। मै.
घुड़की-सं., कृत्रिम क्रोधक दुर्वाक्य। मै.
घुड़जरना-सं., घूड़ मे जरबै लेल जारनि। मै.
घुड़पेन-सं., घूड़ खोरैक हेतु पातर डन्टा। मै.
घुड़मुड़िया देब-क्रि., घुट्ठी आ मूड़ी भरें गुड़कब। मै.
घुड़ाठ-सं., पैघ घूड़क योजना। मै.
घुड़ारी/घुड़ाली-सं., घूड़ करैक प्रबन्ध। मै.
घुनखोङ्-विशे., घून लगला सँ फोंकिला, निःसार। मै.
घुनघुनाएब-क्रि., नाकक भरें अस्पष्ट एवं मन्द स्वर सँ बाजब। मै.
घुनलग्गू-विशे., घुनक कीड़ा लागल बाँस काठ। मै.
घुनसार-विशे., सफकत मुदा घूनक छेदवाला लकड़ी। मै.
घुनसी-सं., मेही बुन्नी, झीसी। मै.
घुना-सं., साधु भिखमङ्गा सभक स्वरचित सारंगी सन वाद्य यन्त्र। मै.
घुनाह-विशे., घून सँ भरल। घुनवाला। मै.
घुनुर घुनुर-अव्यय, मन्द स्वरें लगातार होइक मेंही अस्पष्ट ध्वनि। मै.
घुनेस-सं., विवाहक प्रकरण मे कलापूर्ण ढंगें गढ़ल सघन फुदना आ मोती सँ अलंकृत वरक पाग या पगड़ी अथवा मौर। मै.
घुप्प अन्हार-विशे., दृष्टि शक्ति कें लुप्त करैवाला अन्हार। मै.
घुमक्कड़-विशे., १. अस्थायी निवास करैत घूमि घूमि कय जीवनयापन करैवाला जाति विशेष। २. सतत् घूमैत रहैक प्रकृतिवाला। मै.
घुमघुमौआ-विशे., १. निश्चित स्थान सँ निश्चित स्थान धरि घूमैत रहैवाला। २. घुमा घुमा कय बनैवाला मधुर विशेष, जिलेबी। मै.
घुमड़ब-क्रि., वायुमण्डलक स्तब्धताक संग मेघक रहि रहि शब्द करैत बढ़ब। मै.
घुमता-विशे., लक्ष्य पर जाइक लेल घुमाओन बाट। मै.
घुमती-विशे., घुरि अबैक (लौटैक) समय। प्रयोग—"घुमती काल कनें हुनक कुशल बुझने आएब।" मै.
घुमन्त-विशे., घूमैत रहैक अभ्यासवाला लोक। मै.
घुमनपन-विशे., हरदम घूमि फिरि रहैक प्रकृति वाला। मै.
घुमनी-सं., १. आँधी, निम्नक प्रबल आक्रमण। २. मन घूमैक वा माँथा घूमैक रोग। मै.
घुमाएब-क्रि., गोल व्यास वा परिधि पर चलाएब। मै.
घुमाओन-विशे., अधिक दूर सँ चलि कय पहुँचैक टेढ़ बाट। मै.
घुमाघुमी-सं., विदा भऽ कऽ घुमि घुमि अबैक लति। मै.
घुमान-विशे., समीप मे लक्ष्य स्थानक रहितौ विशेष कारणें दूर देने घूमिकय जाइवाला बाट। मै.
घुमौआ-विशे., घूमिकय अबैवाला। घुमाकय लाओल। घुमा देवाला। घूमैवाला आ घुमौनिहार। मै.
घुरघुर-अव्यय, शरीर मे वायुविकार सँ चमड़ा मे अकृत्रिम संचारक अनुभव। मै.
घुरघुरा-सं., कीड़ा विशेष। मै.

घुरघुराएब-क्रि., अदृश्य रूपें देह मे स्वाभाविक संचार वा स्पन्दन होएब। मै.

घुरची-सं., डोरी वा सूत आदि मे गुनक अधिक पाक पड़ला सँ स्वतः ओझराैट अथवा गीरह् पड़ब। मै.

घुरचीपेंनी -सं., (लाक्षणिक) कोनो सुव्यवस्थितो स्थिति मे दुष्ट बुद्धि सँ रहस्यपूर्ण ढंगें समस्या बना-कय ओझरौट उपस्थित करैक प्रवृत्ति। मै.

घुरछा-सं., देखू—"घुच्छा"। मै.

घुरछी लागब-क्रि., १. एक डंटी मे अनेक घुच्छा लटकि पड़ब। २. एकै काज मे अनेक रहस्यमय समस्या उपस्थित होएब। मै.

घुरता-सं., दाम सँ अधिक घुमबैक योग्य पाइ। मै.

घुरता भार-विशे., भार पठौनिहारक ओतय ओही भरिया द्वारा मिथिलाक व्यवहारक अनुसार आवेशक एक भार घुमाकय पठाओल भार। मै.

घुरती-सं., घूमिकय अबैक बेर। मै.

घुरना-विशे., घुरि घुरि अबैवाला। घुरैत फिरैत रहैवाला। मै.

घुरनी-विशे., एकै धुरी पर घुरैत रहैक प्रकृतिवाली। घिरनी। मै.

घुरमन चौरी-सं., चारू दिश दौड़ि दौड़ि घुरमैत रहैक प्रकृति वा विवशता। मै.

घुरमा-सं., माँथाक घुमैक सन अनुभवक रोग। मै.

घुरमाएब-क्रि., विलम्ब धरि एक धुरी पर घुमाएब। मै.

घुरमी-सं., एक कील पर धीया पूताक घूमैत रहैक खेल सँ माँथा घुमबाक अस्थायी अनुभव। प्रयोग—"एक मुट्ठी चाउर दे घुरमी लगा दे।" मै.

घुरिआएब-क्रि., अनेक झंझटक द्वारें निकटवर्ती आव-श्यक मे सतत् बाझल रहब। मै.

घुरिऔठ-सं., बारम्बार एकै ठामक काज मे बाझैक स्थिति। मै.

घुलाएब-क्रि., १. ठोस पदार्थ कें रासायनिक क्रिया सँ द्रव रूप मे परिणत करब। २. द्रव पदार्थ मे मिलाएब। ३. ताप वा आन क्रिया सँ फल कें गुल गुल बनाएब, कोमल करब, अन्तर्द्रवित बनाएब। मै.

घुसकब-क्रि., बिन उठनें अपन स्थान सँ कनेक देह के चलाएब। ससरब। हटि जाएब। मै.

घुसकोचट्ठी-सं., अत्यन्त समीपक स्थान। (लाक्षणिक) थोड़े आयास सँ जा सकैक स्थान। मै.

घुसकुनियाँ काढ़ब-क्रि., बैसले बैसल वा पड़ले पड़ल आगू ससरि कय चलब। मै.

घुसखोर-विशे., काज करै सँ पहिने अनुचित राशि लेनिहार। बिना द्रव्य लेने काज नहि कर्यनिहार। मै.

घुसघुस खाएब-क्रि., लोकक दृष्टि बचाकय बार-म्बार खाइत रहब। मै.

घुस दँ-अव्यय, बिन पुछनें अकनें कयल क्रिया। मै.

घुसब-क्रि., चोरि सँ वा बल सँ भीतर प्रवेश करब। पैसब। मै.

घुसहा-विशे., घूस लै मे आगू। मै.

घुसाएब-क्रि., पैसाएब। प्रवेश कराएब। अँटाएब। मै.

घू

घूक-सं., उल्लू, मुह दुस्सी चिड़ै। मै.

घूठ-सं., घुट्ठीक उपर दिसुक भाग। मै.

घूड़-सं., आगि तपैक हेतु जरबैक वस्तु सब सँ बना-ओल गोल। मै.

घूड़ लागल रहब-क्रि., (लाक्षणिक) एकठाँ गोठिया कय बैसल रहब। मै.

घून-सं., काठ छेदैवाला कीड़ा, कीड़ाक द्वारें बनल काठक गर्दा। प्रयोग—"सातुक संग घूनो पीसल जाइछ।" मै.

घूमब-क्रि., घूरि कय पुनः आएब। टहलब। मै.

घूरब-क्रि., १. शरीर कें सम्मुख करब। २. व्यर्थ एम्हर ओम्हर चलैत रहब। मै.

घूरबहुर-सं., किछु दूर जा कय घुरिघुरि अबैक चेष्टा। मै.

घूराफिरी-सं., घुरा घुरा कय दय अबैक लय अबैक प्रकृति। मै.

घूराघूरी-सं., घुरि घुरि अबैक क्रम। मै.

घूरी-सं., लगातार घूरैत रहैक प्रवृत्ति। मै.

घूलब-क्रि., पाकक द्वारें फलक ढील आ कोमल होएब। अन्तर्द्रवित बनब। मै.

घूस-सं., उत्कोच। काज कय दै सँ पूर्व कर्मचारी वा अधिकारी द्वारा लयल गेल राशि। मै.

घूँसा-सं., बान्हल मुट्ठी सँ मर्मस्थान मे जोर सँ भोंकैकसन कठोर मारि। मै.

घृ

घृणा-सं., कुत्सित वस्तु सँ मनक संकोच । सं. तत्सम
घृणित-विशे., अत्यन्त दूषित । सं. तत्सम
घृत-सं., दूधक तत्त्व । घी । सं. तत्सम

घे

घेघ-सं., कण्ठ मे घैंध डिमका बनि जाइवाला रोग विशेष । गग । मै.
घेघहा-विशे., (अनादर मे) घेघवाला । मै.
घेघहू-विशे., (आदर मे) घेघवाला । मै.
घेघाह-विशे., (मनुष्य सँ बाहर मे) स्वभावतः बनल गोल चिह्न युक्त । डिमका भरल । मै.
घेंच-सं., नमहर गरदनि । मै.
घेंचुल-विशे., (उपहास मे) नमहर गरदनिवाला । सं., पानि मे होमऽवाला स्वादिष्ट कन्द । मै.
घेंट-सं., गरदनिक पछिला भाग, घाड़ । मै.
घेंटकट-विशे., कण्ठ कटनिहार । (लाक्षणिक) अज्ञानी सँ मूल्य सँ बेशी दाम लऽ लेनिहार । मै.
घेंट ममोड़ब-क्रि., गरदनि पकड़ि निर्दयता सँ ममोड़ि मारैक प्रक्रिया । मै.
घेघन-विशे., आकारक मुट्ठ रहैत देहक सवकत आ पुष्ट छोट गरदनिवाला । मै.
घेघार-सं., कैक ढंगें एके वस्तुक हेतु प्रेरणायुक्त प्रार्थना । मै.
घेघारब-क्रि., अनेक उपायें प्रार्थनापूर्वक प्रेरित करब । मै.
घेबर-सं., मधुर विशेष । मै.
घेर-सं., सुरक्षाक हेतु वा अधिकार रखैक हेतु चारू दिश सँ देवाल टाट आ तार सब सँ बन्न । मै.
घेरब-क्रि., स्थान केँ चारू दिश सँ बन्न कय सुरक्षित करब । मै.
घेरा-सं., १. आलयक वा अधिकृत क्षेत्रक चारू भर बन्न करैक साधन । २. लत्ती मे फड़ैवाला गोल आ नाम व्यञ्जनवाला फल । मै.
घेराइ-सं., घेरैक कार्यक्रम । मै.
घेराओ-सं., मनुष्य वा स्थान केँ बहुत लोक अर्थात् दलक द्वारा घेरैक उपक्रम । मै.
घेराठ-सं., चारू दिशक बन्दी । मै.
घेरान-सं., कड़ा कय घेरैक प्रक्रिया । मै.
घेराबा-सं., चारू दिश सँ बन्न करैक विशेष प्रकार । मै.
घेरि करब-क्रि., बल सँ घेरि घेरि कय अपन अधीन रखैक चेष्टा करब । मै.
घेरी-सं., स्थान केँ घेरैक हेतु कोनो वस्तु सँ रेखा कय बनाओल चिह्न । मै.

घै

घैं काटब-क्रि., अत्यन्त कष्ट काटब । मै.
घैंचन-सं., जोर सँ अपना दिश खींचैक प्रयास । मै.
घैंचब-क्रि., जोर सँ अपना दिश खींचैक वेग करब । मै.
घैंचाह-विशे., अपना दिश खींचैक योग्य नमहर आ पातर वस्तु । मै.
घैंचान-सं., कड़ा कय केँ खींचैक उपाय । मै.
घैंचाघैंची-सं., दू दलक अपना अपना दिश खींचैक प्रयास । मै.
घैर-सं., केराक गुच्छा (हत्था) लागल सम्पूर्ण (अभग्न) रूप । मै.
घैरब-सं., बेढ़, माछ जाल सँ बचबैक साधन । मै.
घैरब-क्रि., १. निश्चित क्षेत्र केँ चारू दिश सँ आवेष्टित करब । २. पड़ाइवाला केँ आगू सँ बाट छेकि रोकब । ३. ककरो निश्चित प्रयोजन ले रोकि राखब । मै.
घैल-सं., जल रखैले पकाओल माटिक पैघ बासन । मै.
घैलची-सं., घैल केँ सुरक्षित रखैक कृत्रिम उच्च स्थान । मै.
घैलाढार करब-क्रि., (लाक्षणिक) स्त्रीक त्याग करब । मै.
घैहरि काटब-क्रि., शारीरिक दुर्दशा मे जीवित रहब । मै.
घैहीर मे रहब-क्रि., अधिक काल धरि मरणासन्न स्थिति मे रहनो प्राण नहि छूटब । मै.

घो

घोंक-सं., आलोड़न । द्रव वस्तु केँ नीचा ऊपर चलबैक प्रक्रिया । मै.
घोंकघोका-सं., पानि वा पानि सन वस्तु केँ अधिक चलाकय दूषित करैक चेष्टा । मै.
घोंकचब-क्रि., वस्त्र आदि पसरैवाला वस्तुक कुंचित होएब । सिकुड़ब । मै.
घोंकचाह-विशे., शीघ्र सिकुड़ि कय मोड़ लाइवाला । मै.

घोँकची लागब-क्रि., स्थान स्थान पर कुञ्चित भ' गेला सँ ओझराएब। मै.

घोकड़ियाएब-क्रि., मुह आ ठेहुन मिलौने रहब। मै.

घोकड़िया मारब-क्रि., ठेहुन सँ मुह सटौने सिकुड़ि कय बैसब। मै.

घोकड़ी लगाएब-क्रि., मुह केँ ठेहुन सँ सटा कय सूतब। मै.

घोँकन-सं., जल आ जलसन द्रवक नीचाँ सँ उपर धरि हिलोड़ैक रूप। मै.

घोँकब-क्रि., जल के निरन्तर हिलोड़ि कय दूषित एवं असंयत करब। मै.

घोँखब-क्रि., ऊँचे स्वरेँ एकै बात केँ बारम्बार रटब। मै.

घोघ-सं., १. गालक भीतरी भाग एवं निचला भाग। २. बधूक मुहक आवरण। ३. फसिलक सीस केँ पत्ताक घेरावा। मै.

घोघ काढ़ब-क्रि., माथ सँ आँचर ससारि कय मुह झाँपब। मै.

घोघ तानब-क्रि., संकोच सँ खींचि कय घोघ केँ नमहर कय लेब। मै.

घोघट-सं., विवाह वेदी पर वा विवाहक प्रकरण मे विशेष वस्त्र सँ बधूक मुह आ माथक आवरण करैक विधि। मै.

घोघटाक पटोर-सं., नववधू केँ घोघट दैक हेतु कोमल रेशमी वस्त्र। मै.

घोघ फूलब-क्रि., १. गालक सीकेँ नीचाँक अंग फूलि जाएब (रोग विशेष)। २. (लाक्षणिक) रुष्टता सँ मुह लटकब। मै.

घोघ फुलाएब-क्रि., अप्रकट तामसेँ मुहक फुलल सन मुद्रा राखब। मै.

घोघर-सं., नेन्ना सभक अज्ञात विभीषिकाक वस्तु। प्रयोग—"कहल कन्हैया मैया एक बेरि घोघर आनि देखाउ।" मै.

घोघसब-क्रि., देहक वा अंगक फुलल सन लागब। मै.

घोघसाह-विशे., १. कनेक वातावरणक कुप्रभाव सँ लगले फुलल सन होमवाला। २. फुल फुलाह अंग-वाला। मै.

घोँ घोँ करब-क्रि., अनेक लोकक नकियाएल सन विभिन्न शब्द करब। मै.

घोँघा-सं., डोका सनक छोट जल जीव। मै.

घोँघाउजि-सं., एकहि बेर बहुत लोकक बिना निष्कर्षक विवाद करब। मै.

घोघा तन्तर-अव्यय, अकस्मात् हल्लुक चोट लगला पर मन बहटारैक फुसियाही मन्त्र शब्द। प्रयोग—"अन्तर मन्तर घोघातन्तर।" मै.

घोँघारी-सं., घोँघा सन अत्यन्त छोट जल जीव। मै.

घोँघियाएब-क्रि., अचेतावस्था मे घोँ घोँ कय अस्पष्ट शब्द करब। मै.

घोघी-सं., पानि सँ अर्थात् भीजै सँ बचै लेल माथ सँ नीचाँ धरिक आवरण। मै.

घोँच-सं., ठेहुनक पाछू दिशक अंग। मै.

घोँचड़-विशे., समय पर घर मे घुसि रहैवाला। मै.

घोँचू-विशे., अनबूझ, बुड़िबक। मै.

घोँट-सं., एक बेर मे द्रवणशील पदार्थक कण्ठ सँ नीचाँ उतारैक प्रमाण। मै.

घोट-सं., एक बासन (लोटा आदि) सँ बेरि बेरि दोसर बासन मे कय कय द्रव पदार्थक विलोड़न। मै.

घोँटब-क्रि., १. पूर्वोक्त प्रकारेँ आलोड़न विलोड़न करब। २. पान करैत जलक ग्रास लेब। मै.

घोटाइ-सं., १. सिलौट लोढ़ी सँ सरस वस्तुक (भाङ आदि) अत्यन्त पिसानक कर्म। २. लत मर्दनि सँ खूब पिटानक कर्म। मै.

घोँटान-सं., १. बारम्बार पीबैक चेष्टा। २. अधिक कालधरि पीबैक व्यापार। मै.

घोँटी देब-क्रि., नेन्ना सब केँ बल सँ औषध पियाएब। मै.

घोँटूमल-विशे., अधिक रगड़ कयला पर साध्य होइ-वाला मूर्ख। मै.

घोड़-विशे., निम्दनीय घोड़ा। मै.

घोड़ करैत-सं., घोड़ा जकाँ अधिक दौड़ैवाला भयं-कर साँप विशेष। मै.

घोड़कलस-विशे., १. सलहेसक थान मे बैसाओल माटिक घोड़ा। २. घोड़ा जकाँ उठल गरदनिवाला। मै.

घोड़गवहा-सं., हरिण जातिक बनैया जीव। नील गाय। मै.

घोड़छान-सं., घोड़ा कें छनैक सन बन्धन । मै.

घोड़चुजिया-विशे., घोड़ाक लिंगसन लिंगवाला । मै.

घोड़दौड़-सं., १. घोड़ा दौड़बैक प्रतियोगिता । २. घोड़ा जकाँ दौड़ैक कम । मै.

घोड़न-सं., गाछ पर रहैवाला गौर वर्णक खिलिवाह चुट्टी जाति । मै.

घोड़नि-सं., खाट आदि कें घोड़ैक विधि । मै.

घोड़निहार-विशे., खाट घोड़ैक काज कयनिहार । मै.

घोड़परास-सं., देखू—"घोड़ गदहा" । मै.

घोड़ब-क्रि., खाट आदि कें जौड़ वा अन्य वस्तु सँ बीनि बीचक शून्य भरब । मै.

घोड़मुहाँ-सं., १. (निन्दा मे) घोड़ा सन मुहवाला । स्त्री०घोड़मुहीं । किन्नर जाति । २. दिवाल सँ चार कें बन्है लेल बनाओल काठक खुट्टी विशेष । मै.

घोड़सवार-विशे., घोड़ा पर चढ़ैवाला । मै.

घोड़सवारी-सं., घोड़ा पर चढ़ैक अभ्यास । मै.

घोड़सार-सं., घोड़ाक रहैक घर । अस्तबल । मै.

घोड़हिया-विशे., घोड़ा पर लादि कय व्यापार करै-वाला व्यापारी । मै.

घोड़ा-सं., सवारी करैवाला तेज पशु । मै.

घोड़ान-सं., खाट आदि घोड़ैक प्रकार, विधि । मै.

घोड़ुआ-विशे., घोड़ल जाइवाला खाट आदि । मै.

घोदामोदा-विशे., एकठाँ घनीभूत भेल । मै.

घोदी-सं., अनेक गुच्छक घुर्छा । झोंझ । मै.

घोर-सं., १. छैना आ दहीक पानि । २. (विशे.) माटि मिलल पानी । ३. व्याकुल । मै.

घोरजाउर-सं., दहीक संग रान्हल भात । मै.

घोरब-क्रि., पानि मे कोनो वस्तु कें मिलाएब । कोनो वस्तु कें (रस चीनी आदि) पानि मे घुला-देब । एकाकार करब । मै.

घोरमट्ठा-विशे., (लाक्षणिक) अत्यन्त विकृत । मै.

घोरान-सं., कोनो वस्तु कें पानि मे घुलबैक कम । मै.

घोरि-सं., अम्मट आदि पानि मे घुलबैक नियत कयल बासन । मै.

घोरी-सं., छाल्ही मथि कय नेनु बहार कयला पर बाँचल पानि । मै.

घोरुआ-विशे., पानि वा दूध मे घोरल भाङ, सरबत आ प्रसाद आदि । मै.

घोल-सं., १. बहुत लोक सँ कयल एक संग हल्ला । २. पदार्थक द्रवीकरण । ३. प्रकट प्रवाद । मै.

घोल मचक्का-सं., एकठाँ अधिक लोकक उच्च स्वरें बाजब । मै.

घोष-सं., १. बंगालीक उपाधि विशेष । २. गम्भीर शब्द । सं. तत्सम

घोषन्त क्रिया-विशे., रटला सँ प्राप्य होइत अछि क्रिया । प्रयोग-"कहबी" घोषन्त क्रिया लपटन्त बौर नहि किछु तँ घोड़बो घोड़ । मै.

घोषाएब-क्रि., अभ्यास कराएब । रटाएब । मै.

घोँसब-क्रि., बार बार एके बात दोहराएब । मै.

घोँसघोँसा-सं., सदिखन एके बातक चरचा । मै.

घोँसरब-क्रि., (उपहास मे) विसरब आ बिलाएब । मै.

घोँसला-सं., खोंता, पक्षीक डेरा । हि. तत्सम

घोँसारब-क्रि., (दर्पक उक्ति) बिसरादेब । बिला देब । मै.

घोँसिन गोआर-सं., गोआरक प्रभेद । मै.

घोँसियाएब-क्रि., साँकरो स्थान मे कोनहुना पैसब आ पैसाएब एवम् प्रवेश करब । मै.

घौ

घौका-सं., कोमल साग विशेष । मै.

घौँचाल-सं., अनेक लोकक विभिन्न रूपक जोर सँ बातचीत करैक कारणें उठल शब्द । मै.

घौरकी-सं., विवाहक अवसर पर स्त्रीगणक द्वारा गीत गाबि गाबि सुपारी बराइत सँ मर्डक प्रथा । मै.

घौदा-सं., अनेक गुच्छाक एक नाल मे स्थिति । मै.

घौर-सं., देखू—"घउरि" । मै.

घौले घौले बाजब-क्रि., अनेर एक दिशहु जोर सँ बजैत रहब । मै.



च वर्ण

च-सं., तालु स्थानीय च वर्गक प्रथम वर्ण। मै.

चक्कर-सं., एक वृत्त पर सतत् परिक्रमण। मै.

चक्का-सं., १. घरक भीत वा दिवाल वा टाट मे आगू बढ़ाकय बनाओल वस्तु रखैक चक्राकार स्थान। २. वृत्त पर घूमैवाला पहिया वा आन वस्तु, घड़ीक सूइ यन्त्र आदि। मै.

चक्की-सं., १. पीसैक वृत्ताकार यन्त्र। २. लपेटल कोनो वस्तुक वृत्ताकार वा काटल फल आदिक गोल चापट रूप। मै.

चक्कू-सं., कटैक आ भेदैक छोट अस्त्र। मै.

चक्र-सं., १. धारवाला वृत्ताकार पातर चापट तेज अस्त्र। २. गाड़ी चलैक चक्का आदि। स. तत्सम

चक्रचालि-सं., गुप्त रूपें हानिकारक चेष्टा। षड्यन्त्र। मै.

चक्रव्यूह-सं., युद्ध स्थलक सेनासज्जा (मोर्चाबन्दी) क विशेष रूप। सं. तत्सम

चकइ-सं., रोटी बेलैक (पसारैक) काठक वृत्ताकार पट्टी। मै.

चकचक-विशे., दीप्यमान, चमकैत। मै.

चकचकाएब-क्रि., चमकाएब, स्वच्छ करब, दीप्तिमान बनाएब। मै.

चकचकी-सं., चमक, स्वच्छता, प्रतिभासित तेज। मै.

चकचौं-अव्यय, निरन्तर होइत कर्णकटु अव्यक्त ध्वनि। मै.

चकचोन्ही-सं., वहारक तेजक प्रभावें दृष्टि शक्तिक ह्रास। मै.

चकता-सं., गोलाकार शरीर चमड़ा पर चाकर फूलल रूप। मै.

चकती-सं., १. देखू—"चकइ"। २. चापट गोल वस्तु। मै.

चकबा-सं., चक्रवाक पक्षी विशेष। स्त्री० चकबी। मै.

चकबारब-क्रि., कोनो वस्तु कें वृत्ताकार गोल रूपें जमाकय ढेरी करब। मै.

चकबिदोर लागब-क्रि., विस्मय सँ ज्ञानशून्य भय के आँखिक अपलक होएब। मै.

चकभाउर-सं., वृत्ताकार रेखा पर बारम्बार घूमैत रहब। मै.

चकमक-विशे., प्रकाश सँ सब किछु विशेष प्रकाशित। मै.

चकमकी-सं., प्रकाश सँ उत्पन्न प्रकाश। मै.

चकमा देब-क्रि., भ्रम जगा कय ठकि लेब। मै.

चकरगर-विशे., विशेष चाकर (चौरा)। मै.

चकराई-सं., चाकर रहैक मान। मै.

चकराएब-क्रि., घूमैक जकाँ आभास होएब। चक्कर आएब। मै.

चकरा खुरपी-सं., खुरपी जकाँ चाकर जूता बनबैवालाक चाम छीलैक आ कटैक लोहक चाकर अस्त्र विशेष। मै.

चकरी चकरी-अव्यय, दूह भागक चकराईक अनुसार। मै.

चकरी-सं., १. चलबै उठबैवाला छोट जाँत। २. ठेहुनक उपरक वृत्ताकार छिटकैवाला हड्डी। मै.

चकरीघुम होएब-क्रि., भय, विस्मय आ शोकक आकस्मिक अधिक प्रभाव सँ ज्ञान कुण्ठित होएब। मै.

चकला-सं., सोहारी बेलैक पट्टी। २. एकाधिकारक बड़का भूखण्ड। मै.

चकाचक-विशे., (लाक्षणिक) १. झिलमिर। २. प्रकाशमय। मै.

चकाचौन्ह-विशे., अत्यधिक तेज सँ दृष्टि नहि टिकबैक योग्य बनल। मै.

चकार-सं., 'च' अक्षर। मै.

चकित-विशे., विस्मय आ आनन्द सँ असंयत चेतनावाला व्यक्ति। मै.

चकियाएब-क्रि., वृत्ताकार बनाकय जमा करब, छल्ली लगा कय राखब। मै.

चकुआएब-क्रि., आश्चर्य आ डर सँ चौंकल जकाँ कय उठब। मै.

चकुठा-सं., बाँहि परक चौकोर गहना विशेष। मै.

चकुठी-सं., तासक पत्तीक चौकोर रंग विशेष। मै.

चकेठबा-विशे., (निन्दा आ अनादर मे) मोट डाँट आ चाकर चौरस। मोस्टन्डा। मै.

चकेबा-सं., १. देखू–"चकबा।" २. सामा मे बनाओल पक्षीक नाम। प्रयोग–"सामा चकेबा खेल कए है।" मै.

चकै-सं., देखू—"चकइ"। मै.
चकौड़-सं., विषाक्त छोट वनस्पति। झाड़। मै.
चकोना-विशे., शंका सँ चौकैत चारु दिस देख-निहार। मै.
चकोर-सं., चन्द्रमाक प्रिय पक्षी विशेष। मै.
चखचुख-सं., परस्पर उत्तेजनापूर्ण बातचीत। मै.
चखना-सं., ताड़ी दारु पीबाक काल जीहक स्वाद बढ़बै लेल चहटगर भोज्य पदार्थ। मै.
चखब-क्रि., स्वाद लेब। मै.
चखाएब-क्रि., स्वाद लगाएब। मै.
चंग-विशे., एक काल मे अनेक बातक उपस्थिति सँ व्यग्र। प्रयोग—"सभक प्रश्नक उत्तर दै मे हम चंग भ' गेलौ।" मै.
चंगा-विशे., रोगमुक्त, स्वस्थ। मै.
चंगी-सं., अनेक वस्तुक आ बातक व्यग्रता। मै.
चङ-विशे., अनेक कारणेँ अस्थिर व्याकुल। मै.
चङला-विशे., सब काज मे दक्ष, कोनो काज कें शीघ्र करैक कलावाला। मै.
चङ्‌रा-सं., पक्षीक पैरक पञ्जा। मै.
चङ्‌राएब-क्रि., १. चाङ्‌र सँ खोधब। डोरी मे गुन बैसाएब। २. भाँड़ बहराइत महिषिक योनि मे हाथ दय बैसाएब, रोकब। मै.
चङ्‌ला-सं., पक्षीक पैरक पाछू मुहक चाङ्‌र। मै.
चङेरा-सं., खूब फैल, कम उठल कानवाला वृत्ताकार बीनल बाँसक बासन। छोट रूपक-चङेरी। मै.
च! च!-अव्यय, स्नेह आ दया सँ जीहक द्वारा कयल ध्वनि विशेष। मै.
चचरी-सं., बाँसक दू बल्ला पर बान्हल फट्ठीवाला भारी वस्तु उठबैक विशेष साधन तथा मृतक लय जाइक विमान। मै.
चँछब-क्रि., (लाक्षणिक) दबलो बात वा विषय कें दुष्टता सँ प्रकाश मे आनब। मै.
चँछार-सं., कठोर वा तेज वस्तुक रगड़ सँ देह आ कोमल वस्तु मे छिलाइक चेन्ह। मै.
चँछोर-सं., तेज वस्तुक घर्षण सँ वा झटका सँ चमड़ा पर बनल धारो। मै.
चञ्चल-विशे., अस्थिर देह आ बुद्धिवाला। सं. तत्सम
चञ्चु-सं., १. पक्षीक लोल। २. लेखिनीक नोक। सं. तत्सम
चट्ट ओदरब-क्रि., भीजल स्थान पर चलला सँ पैर लागल बेलागि माटिक पपड़ी उखड़ब। मै.
चट्ट दँ-अव्यय, अतिशीघ्र, अलक्षित रूपेँ। मै.
चट्टान-सं., समधरि पाथर खण्ड, पथराही समतल भूमि। मै.
चट्टापट्टा-अव्यय, नेन्ना कें मन बहटारैक प्रक्रिया। बच्चाक हाथ पसारि ओहि पर चाट मारैत चेतन लोक बजैत अछि। "चट्टा पट्टा बाउ कें तीन बेटा" आ तीन आङ्‌र परक ओकर प्रत्येकक कार्य कहैत अछि आ अन्त मे गुदगुदी लगबै अछि। मै.
चट्टा पड़ब-क्रि., इनार पोखरि सुखाएब। मै.
चट्टी-सं., १. एड़ी दिस खूजल रहैवाला पनही तथा फीता लागल काठक खरपा आ फीतावाला रबरक पादत्राण। २. बोराक बनल नमहर नाम चाकर बिछाओन। ३. बाट बटोहीक हेतु बनल विश्राम स्थल। मै.
चट-सं., १. सुखाएल भूमि पर पानि पड़ने उपर उठल पपड़ा। २. बाँस आदिक उपरका छाल। मै.
चटओदार-विशे., आवा मे पड़ल अधिक तापेँ कतहु पपड़ा जकाँ उड़लहा माटिक बासन। मै.
चटक्की-सं., अत्यन्त वेगक शीघ्रता। मै.
चटक-सं., पक्षीक विष्ठा। मै.
चटकन-सं., हाथक पंजाक चौरस रूपेँ मारि। मै.
चटकब-क्रि., कोनो बासन मे ताप लगला सँ सिहरि-कय फूटि जाएब। मै.
चट करब-क्रि., लगातार शीघ्रता सँ खा जाएब। मै.
चटकल-सं., छोट मोट मशीनी कारखाना। मै.
चटका-सं., आपद। प्रयोग—"बहुआ जकाँ करब तेँ देब हम एक चटका।" मै.
चटका पड़ब-क्रि., १. खेतक सरसता समाप्त होएब। २. बारम्बार स्वाद लगने चुटुक लागि जाएब। मै.
चटकार-सं., अत्यन्त चहटगर आ रुचिगर तथा नीक निकुत खाइक तृष्णा। मै.
चटकारब-क्रि., स्वादि स्वादि कय आनन्द लैत खाएब। मै.
चटकाह-विशे., कनेकें ताप लगला सँ फूटि जाइ-वाला। मै.

चटकी-सं., आकस्मिक घटना । मै.

चटकुनी/चटवैनी-सं., अत्यन्त छोट छोट चटाइ । मै.

चटचट-अव्यय, १. लगले लागल । प्रयोग—"एतबा कहितहिं ओ चटचट गारि देमऽ लगलै । २. थापड़ मारैक ध्वनि । मै.

चटचटाएब-क्रि., १. चटचट शब्द उठैत मारब । २. इनार पोखरिक सुखाएल सन कम होएब । ३. बाँस काठक आ पलस्तरक बरला सँ गीरह् आ पलस्तरक फटैक शब्द होएब । मै.

चट द'-अव्यय, तुरन्त । मै.

चटनियाँ-विशे., १. चाटि पोछि कय खाइवाला । २. धो पोछि कय लय जाइवाला बाढ़ि । मै.

चटनी-सं., १. विशेष चहटगर वस्तु अर्थात् तीख चोख आ कड़ू वस्तुक संग मिलाकय पीसल चटकारवाला लेह्य पदार्थ । २. काठक बनल छोट डन्टीवाला छमसिया नेन्नाक चटैक वस्तु । मै.

चटपट-अव्यय, तुरन्त, अवांछित रूपें । मै.

चटपटाएब-क्रि., १. खेतक कदोआ मे पानिक अभाव होएब । २. आन्तरिक वेग सँ अकुलाएब । ३. पियासक द्वारें मुह चलाएब । मै.

चटपटी-सं., भूजा मे अनेक नोनगर मसाला सँ बनल चटकारवाला भोज्य पदार्थ । मै.

चटबाह-विशे., साँपक विष झारैक काल चाटी चलबैवाला । मै.

चटर चटर-अव्यय, चट्टीवालाक पैरक शब्द । मै.

चटर पटर-अव्यय, खाइ पीबैक इच्छा प्रकट करैक मुहक चेष्टा । मै.

चटसार-सं., १. छोट छोट नेन्नाक पढ़ैक स्थान । २. सामूहिक लोकक एकट्ठा होइक स्थान । मै.

चटाइ-सं., ताड़क पत्ती, खजूरक पात आ बाँसक कमचीक बनल नाम चाकर बिछाओन । मै.

चटाएब-क्रि., चाइ गील वस्तु कें आङुर सँ जीह पर दय खोआएब । मै.

चटाकसन-अव्यय, वेग सँ तुरन्त । मै.

चटाचटि-अव्यय, लगातार, तेजी सँ । प्रयोग-"के कर फेरत शिर पर प्रेमक, चाट चटाचटि करक खाइ छी ।" मै.

चटाचटि उठब-क्रि., चाट मारैक, बाँस फटैक, ताप सँ बासन फूटैक शब्द होएब । मै.

चटान-सं., चटबैक क्रिया । मै.

चटिया-विशे., छोटका वर्गक विद्यार्थी । मै.

चटुआ-सं., १. काठक चेरा सन पातर छोट छोट पीढ़ी । २. बँसैक छोट छोट चटाइ । मै.

चटौआ-विशे., नेन्ना कें चटा कय खोअबैक वस्तु । मै.

चठेल-सं., बनैया लत्ती मे फड़ैवाला व्यञ्जनवाला छोट फल विशेष । मै.

चठोल-विशे., देखै मे एवं स्वादलै मे प्रिय लगैवाला, आकर्षक । मै.

चढ़िआएब-क्रि., बारम्बार प्रेरणा करब । मै.

चढ़ै/चिढ़ै-सं., पक्षी, चिड़िया । मै.

चढ़न्त-विशे., चढ़ैक, बढ़ैक, आक्रमणक निश्चित समयक्रम । मै.

चढ़नदार-विशे., बैलगाड़ीक सुरक्षाक हेतु पाछू दिश रहनिहार । मै.

चढ़ब-क्रि., कोनो आधार पर उपर दिशक गमन करब । आरोहण करब । मै.

चढ़ाइ-सं., १. ऊँच दिशक गति । २. आक्रमण । मै.

चढ़ाउतार-सं., १. आरोह अवरोह । २. ज्वर आदि रोगक लगले लागल वेगक वृद्धि एवम् घटब । मै.

चढ़ाएब-क्रि., ऊँच पर देब, उपर कें धरब । मै.

चढ़ी-सं., उपर मुहें गतिक्रम । मै.

चढ़ुआ-विशे., ऊँच चढ़ैक अभ्यासवाला । मै.

चढ़ौआ-विशे., देवता पर चढ़ाओल वा चढ़बैक वस्तु । मै.

चण्ड-विशे., कठोर हृदयवाला, क्रूर, निर्दय । मै.

चण्ड-विशे., क्रोधक वेग सँ निःश्वास भरल । सं. तत्सम

चण्डलवा-विशे., (तिरस्कार मे) असम्भव क्रूर काज करैवाला । समाजक हानिकारक । मै.

चण्डाल-विशे., वधिक जाति, डोम, अत्यन्त निर्दय स्वभाववाला । स्त्री० चण्डालिन । मै.

चण्डी-विशे., १. भगवती दुर्गा । २. मानिनी नायिका । ३. दुर्गा सप्तशती । सं. तत्सम

चण्डुल-विशे., खल्वाट, माथिक उड़ल केशवाला व्यक्ति । मै.

चण्डोल-सं., चारू दिश सँ अवकाश एवं प्रकाश भरल रमन आ बहुत लोकक आनन्ददायक स्थान। मै.

चतकार-सं., (स्त्री वर्गक प्रयोग मे) दर्प भरल आत्मप्रशंसावाला मच। मै.

चतकरी-विशे., घमण्ड सँ अपन बड़ाइ करैवाली माउगि। मै.

चतरब-क्रि., एक लागल अर्थात् मध्य बिन्दु सँ सम्बन्ध रखैत पसरब। मै.

चतराएब-क्रि., चारू दिश पसारब, फैलाएब। मै.

चतरी-विशे., चतरैक प्रकृतिवाला वनस्पति आ छोट गाछ एवं बूटी आदि। चतरी मेन्हारी आदि। मै.

चतुर्थी-सं., १. पक्षक चारिम तिथि। २. विवाहक चारिमा दिन कन्याक शुद्धीकरणक वैदिक कर्मक विशेष विधि। सं. तत्सम

चतुर्दशी-सं., १. पक्षक चौदहम तिथि। २. चौदह संख्यावाली स्त्री। सं. तत्सम

चतुर-विशे., कुशल बुद्धिवाला, चलाक, दक्ष। सं. तत्सम

चतुरइ|चतुरपन-सं., प्रवीणता, चतुरता चलाकी। मै.

चतुरा-विशे., विदग्नि स्त्री, चलाकि, दक्ष स्त्री। सं. तत्सम

चतुराइ-सं., देखू—"चतुरइ"। मै.

चतोचरन लागब-क्रि., कोनो काजक व्यग्रता सँ तत्परता होएब। मै.

चतोचरन करब-क्रि., कोनो काज मे अत्यन्त उत्कण्ठित रहब। मै.

चद्दरि-सं., ओढ़ैक आ ओछबैक वस्त्र विशेष। उ. तद्भव

चदरा-सं., लोहक कड़ा मोट पसरल पत्र। मै.

चन्दन-सं., १. देह मे लेपैक सुगन्धित काठ। श्री खण्ड चानन। २. देवता विशेषक सेवा चिह्न रूपे देह मे कपाड़ मे कयल द्रवक रेखा चिह्न। सं. तत्सम

चन्द्र-सं., चन्ना, चन्द्रमा। सं. तत्सम

चन्द्रकला-सं., १. उज्जर फूल विशेष। २. चन्द्रमाक ज्योति। मै.

चन्द्रबिन्दु-सं., अनुनासिक उच्चारण द्योतक वर्णक उपर चन्द्राकार पर देल बिन्दु। सं. तत्सम

चन्द्रमा-सं., चन्ना। सं. तत्सम

चन्द्रहार-सं., चन्द्रमाक आकारवाला हार (नैकलेस)। मै.

चन्दा-सं., चन्द्रमा। हि. तत्सम

चन्द्रिका-सं., १. इजोरिया, प्रकाश। २. कपाड़क गहना विशेष। सं. तत्सम

चन्ना-सं., चन्द्रमा। सं. तद्भव

चन्हरदेबा-विशे., दलाल। चन्हराकय ठकैवाला। मै.

चन्हराएब-क्रि., १. हठात् आँखि नै सूझब। २. (लाक्षणिक) बुद्धि कें आन्हर अर्थात् झाँपि देब। मै.

चन्हरा लागब-क्रि., आँखिक ज्योति क्षीण होएब। मै.

चनकब-क्रि., अधिक सुखयला सँ फड़क दानाक अपनै आप छिटकि कय उड़ब। मै.

चनकलोनी-सं., बदाम (चना) क गाछ सँ बहार कयल नोन। मै.

चनकाहु-विशे., बसात रौद लगला सँ छिम्मरि सँ अपनै आप छिटकैवाला दाना तथा फाटि जाइवाला बाँस काठ आ कनेकें ताप लगने फुटैवाला सीसा आ माटिक बासन। मै.

चनकी-सं., पटुआक प्रभेद। चन्नी पाट। मै.

चनगब-क्रि., ताप, बसात आ क्षीपल पर पानि पड़ने छिन्न भिन्न होएब। मै.

चनचनाएब-क्रि., १. भुजा भुजैक काल आगि मे देल अन्नक शब्द होएब। प्रयोग–"तीसी चनचनाबा भड़ भड़।" २. मेही कण्ठध्वनि सँ कोलाहल करब। मै.

चननसूर-सं., माछक भेद। मै.

चनबा-सं., मूर्तैक वैसैक स्थानक उपर देल तानल वस्त्र। चन्दोवा। मै.

चनबार-सं., घरक हूनू दिशक चकराईवाला बहारक भाग। मै.

चनबारी-सं., घरक चनबार दिशुक स्थान। मै.

चनरकूप-सं., वैद्यनाथधामक प्रसिद्ध इनार (लाक्षणिक) गहीर इनार। मै.

चनरौटा-सं., चानन पीसैक पाथरक पट्टी। मै.

चनहा लागब-क्रि., अधिक दुर्बलता सँ आँखि खोलै मे असमर्थ होएब। अर्ध मूर्छित रहब। मै.

चनाइक छाँछी-विशे., मधु श्रावणी आ चौठचन्द्र पावनि मे नाच ले दही पौरल नव नव छोट छाँछी। मै.

चनियाएब-क्रि., १. अत्यन्त सुखा जाइक कारणें झरिकय खसब। २. अत्यन्त तप्पत भ' जाएब। ३. माथक केश उड़ि जाएब। प्रयोग—"रावन सेनारीक डाँट सँ सब दाना चनिया गेल। तते भारी बोझ रहै जे माथ चनिया गेल। हमर केश पाकि कय झरला सँ माथ चनिया रहल अछि।" मै.

चनैल-विशे., उड़ल माथक केशवाला। मै.

चनोटा-सं., देखू—"चनरोटा"। मै.

चनोसल/चनरोसल-विशे., इजोरिया सँ प्रकाशित राति। मै.

चप्पल-सं., केवल तरवाक रक्षा हेतु उपर खूजल चाम आ रबरक पनही। अं. तत्सम

चप्पा-सं., भारी वस्तुक दाब, दबि जाइक क्रिया। मै.

चप्पा पड़ब-क्रि., भारी वस्तुक तर मे दबा जाएब। मै.

चप्पी-सं., धान पानिक कादोक द्वारें पैरक चपैवाला स्थान। मै.

चप-सं., बैलगाड़ी आदि मे आगू दिसक बेसी भार। मै.

चंप-विशे., आलू आदि सँ बनल विशेष भोज्य। मै.

चपकन-सं., देहक प्राचीन अंगा। मै.

चपचप-विशे., १. तेल वा पानि सँ सम्पूर्ण भरल। २. लोभ सँ भरल। मै.

चपचपाएब-क्रि., अत्यन्त लुब्ध होएब। मै.

चपटाहा-विशे., चापट (अत्यन्त पातर भ' क' पस-रल) भेल। मै.

चपटी-विशे., पानसन पातर भेल पसरल आ सुखा-एल। मै.

चपड़ा-सं., लाहट, सील करैक बनाओल लाहक छड़। देशज

चपरास-सं., कार्यालयक मुख्य अधिकारीक आदेश-पालक चिह्नवाला पट्टी। मै.

चपरासी-विशे., आदेशपाल अर्दली। मै.

चपल-विशे., चञ्चल। सं. तत्सम

चपाक द'-अव्यय, अनजानें गहीँर मे तुरन्त खसि-कय। मै.

चपाटनन्दन-विशे., अत्यन्त मूर्ख। मै.

चपाती-सं., हाथक पाथल रोटी। मै.

चपेट-सं., १. शाइनिक भौतिक प्रयोग। २. थापड़। मै.

चपैं-सं., दूध दुहैक बड़का डाबा। मै.

चपोचप-अव्यय, पदार्थ कें पानि वा आन द्रव मे पूरा पूरी डुबा कय। मै.

चबुतरा-सं., चौकुट बनाओल बैसैक ऊँच विशेष स्थान। मै.

चभर चभर-अव्यय, वेग सँ नेन्नाक दूध पीबैक आ आन जीवक द्रव पदार्थ खाइक कालक विशेष ध्वनि। मै.

चभार-सं., ध्वनिक संग द्रव पदार्थक भोजन। मै.

चम्पइ-सं., ललिछौन पीयर रंग। मै.

चम्पा-सं., उत्कट सौरभवाला फूल। मै.

चम्मच-सं., चाकर मुहवाला चनन काठी सन द्रव्यक पात्र। उ. तत्सम

चमन-सं., सजाओल फुलवाड़ी। उ. तद्भव

चमक-सं., १. ज्योति, प्रकाश। २. तेज, फुर्ती। मै.

चमकब-क्रि., तेज प्रकाश करब। मै.

चमकाएब-क्रि., १. फुर्तीक हेतु प्रेरणाक उपाय करब। तेजी बढ़ाएब। २. तीव्र ज्योति बढ़ाएब। मै.

चमगादर-सं., घरद्वार मे रहैवाला छोट बादुर। मै.

चमगुदरी-विशे., तेल आ मैल जमल रहला सँ चाम सन बनल पुरान वस्त्र। मै.

चमचम करब-क्रि., स्वच्छ आ परिष्कृत रहैक कारणें अत्यन्त चमकैत रहब। प्रकाशित होएब। मै.

चमचमाइन-सं., स्वाद विशेष। कचका उत्तर वस्तु मे तीक्ष्णताक अनुभव। मै.

चमचमाएब-क्रि., सबरे स्वच्छ आ परिष्कृत कयला सँ चमका देब आ स्थानक चमकब। मै.

चमचिकनी-विशे., गोरि नारि, देहक चमड़ा के उज्ज्वल कय सुन्दर रखैवाली। मै.

चमचोर-विशे., पर नारी संगम मे दुश्चतुर। मै.

चमड़गोड़ी-विशे., मालक चाम कें पानि मे गोड़ैक हेतु पोखरि। मै.

चमड़ा-सं., देहक छाल, त्वचः। एकरै चमड़ी सेहो कहल जाइछ। मै.

चमरख-सं., चरखाक टाकु कें सकरत सँ बैसबैक लेल देल चाम। मै.

चमरखल्ला-विशे., चमार सँ खलै जोग । मृतुक माल । मै.

चमरखानी-सं., माल कें खलैक स्थान । मै.

चमर छौंच-सं., (लाक्षणिक) परस्परक प्रतीक्षा मे समयक नाश । मै.

चमरटोली-सं., चमारक बस्ती । मै.

चमरनक-विशे., अभ्यासवशें चामक दुर्गन्ध कें सहन करैवाला नाक । मै.

चमरवा/चमरा-विशे., (निरादर मे) चमारक सम्बोधन । मै.

चमरी-सं., १. देहक चमड़ाक ऊपरका तह । २. चमरी गैं । चामर नाङरिवाली । मै.

चमरौ-विशे., बिना ओधल चामक बनाओल जूता वा कोनो वस्तु । मै.

चमार-सं., हरिजन जाति विशेष । मै.

चमेली-सं., मालती फूल तथा ओकर तेल । मै.

चमैन-सं., चमार जातिक स्त्री । मै.

चमोकनि-सं., १. दंश करैवाला सूक्ष्म कीट । २. जड़ी । मै.

चमौटी-सं., १. चामक बनल बन्हैवाला पट्टी । २. अस्तुरा पिजबैक चामक टुकड़ा । ३. (लाक्षणिक) मैलक द्वारें चामसन बनल वस्त्र मै.

चर्खी-सं., चरखा चलवैवाला पहिया जकाँ चक्का । मै.

चर्खी औंटब-क्रि., (लाक्षणिक) चरखाक चलै काल उठल शब्द जकाँ बारम्बार एकै शब्द जोर जोर सँ बाजब । मै.

चबेंरी-सं., अनेक प्रकारक मसाला मिलल अनेक भूजाक मिश्रणवाला खाद्य । मै.

चर्चा/चरचा-सं., ककरो विषय मे परोक्षक उल्लेख । मै.

चर्म रोग-सं., चमड़ा पर होमं वाला रोग । कुष्ठ । मै.

चर्या-सं., चालि चलन । मै.

चरंचौं-अव्यय, बैलगाड़ी चलै कालक शब्द । मै.

चर्र द'-अव्यय, आयासरहित फाटब । मै.

चर्र मर्र-अव्यय, पुरान वस्तु पर चढ़ला सँ भारक द्वारें उठल शब्द । मै.

चर-विशे., १. चोर कें लोकक घरक स्थिति आ वस्तुक ठेकान देखवैवाला । २. गुप्तचर । मै.

चऽर-सं., चमरी गाइक नाङरि सँ बनल डूँकैक वस्तु , चामर । मै.

चऽऽर-सं., गहींरगर धान उपजैवाला दूरधरि पसरल बड़का भूखण्ड । मै.

चरक-सं., १. माल जातक रंग विशेष । २. कुष्ठ रोगक विशेष भेद । ३. आयुर्वेद ग्रन्थकर्ता । सं. तत्सम

चरकट्टा-विशे., हाथीक चारा कटनिहार आ चारा कटैक अस्त्र । मै.

चरकब-क्रि., कनेक कनेक फाटब आरम्भ होएब । मै.

चरका लागब-क्रि., अधिक दूर धरि फाटैक लच्छन होएब । मै.

चरको परियानि-सं., अधिक दिनधरि वर्षा होइक द्वारें उबेर होइक टोना करैक रूप मे देवाल मे नीचाँ उपर मूड़ी दय गोबर सँ बनाओल स्त्री पुरुषक चित्र । मै.

चरखा(ह) कट्टी-सं., उपनयनक विधि मे आठ सधवाक एकठाँ चरखा कटैक विधि । मै.

चरखा-सं., सूत कटैक कल । मै.

चरखा काटब-क्रि., १. वस्त्रक हेतु गृह उद्योग । २. (लाक्षणिक) चरखा काटि जीवननिर्वाह करब । मै.

चरखाना-विशे., चौखूट रेखाचिह्नवाला कपड़ा । मै.

चरचराएब-क्रि., १. टूटैक कमक शब्द होएब । २. अधिक सुखयला सँ चमड़ाक फटैक क्रम होएब । ३. (कुत्ता मे) अनेरें अधिक काल बड़बड़ाइत क्रोध झारब । मै.

चर चाँचर-सं., बाध बोन । दूरधरि पसरल खेतवाला भूखण्ड । मै.

चरचीत लेब-क्रि., गुप्त रूपें रहस्यक बात बूझैक चेष्टा करब । मै.

चरन-सं., चरण, पैर । सं. तद्भव

चरनमा-विशे., अधिक चरैवाला पशु । मै.

चरनियाँ चढ़ब-क्रि., अनिष्ट भावी सँ मति फिरब । मै.

चरफर-विशे., झट द' सीटल काज करै मे दक्षता रखैवाला । मै.

चरफरी-सं., तेजी, कार्यदक्षता । मै.

चरब-क्रि., मुहक द्वारा नोंचिकय मालक पास लाएब। मै.

चरबाह-विशे., मालजाल चरबैवाला। मै.

चरबाहि-सं., माल चरबैक काज। मै.

चरम-विशे., अन्तिम। सं. तत्सम

चरराएब-क्रि., फटैक रूप में आएब। मै.

चरल-विशे., चरि कय आएल माल। आ चरल खेत। मै.

चरलहा-विशे., चरिगेलहा खेत। मै.

चरस-सं., धूम्रपानक निशा लगबैक पदार्थ। मै.

चरहन-सं., चाऊर में उपजैवाला धान। मै.

चरहा-सं., चाऊर में उपजैवाला मोट धान। मै.

चरही-सं., मोटका जौड़। मै.

चराइ-सं., १. चरैक अपराधक आर्थिक दण्ड। २. चरैक उपद्रववाला स्थान। ३. चरबैक पारिश्रमिक। मै.

चराउ-विशे., चरबैक योग्य, चरबैक बोनि। मै.

चराउर-सं., चरैक कमक खोज। मै.

चराएब-क्रि., चरबैक काज करब। (लाक्षणिक) मालजाल आ नेन्नाक क्रियाकलाप पर दृष्टि राखब। मै.

चराओन-सं., चरबैक नियत दरमाहा। मै.

चराक द'-अव्यय, अकस्मात् अधिक दूरधरि फटैक शब्द। मै.

चराचर-सं., स्थावर जंगम संसार। सं. तत्सम

चरांटी-विशे., माल जाल सँ चरल वस्तु। मै.

चराठ-विशे., अनायास चरि जाइक योग्य खेत। मै.

चरांत-सं., चरैक हेतु निश्चित स्थान। पशुक चरैक भूमि। मै.

चरित्र-सं., भूत कालक आचरण। सं. तत्सम

चरित-सं., पछिला जीवनक चालिचलन। सं. तत्सम

चरी-सं., १. चरैक सामग्री। २. पेट में भरल चरैक वस्तु। मै.

चरुआ-विशे., १. चरैवाला। २. चाउरवाला। मै.

चरुभर-विशे., सीस, मुड्डा भरल दानावाला। मै.

चरौत-विशे., चरलाहा घास पात। मै.

चल्ला-सं., भिन्न भिन्न प्रकारक अन्न वा आनो वस्तु सब कें मिलल रहला पर अलग अलग कय परिछबैक लेल बड़का चालनि। मै.

चल-विशे., चलै फिरैवाला। सं. तत्सम

चलचलाओ-विशे., तुरन्त चलैले प्रस्तुत। शीघ्र चलैक उपक्रम में रहनिहार। मै.

चलता-विशे., १. सदिखन सबक काज अबैक वस्तु, प्रचलित। २. चलैत रहैत। मै.

चलता फिरता-विशे., सतत् चलैत फिरैत रहैवाला। मै.

चलती-सं., १. प्रभाव। २. प्रचार। ३. प्रस्थान करैक बेर। प्रयोग–"सबठाँ अखन किरानियैक चलती छैक। हरही सुरही सबक घर में आइ कालिह चाह आ रेडियोक चलती छैक। चलती में हम आब की कऽ सकै छी।" मै.

चलन सैर-विशे., समाज में प्रचलित होइक योग्य। अपेक्षणीय, उपयोगी। मै.

चलन्ती-सं., १. चल जाइक अवसर। सूप्त भ' जाइक समय। प्रयोग–"जखन लोक कें संसार सँ चलन्ती आबि जाइ छै तखन मोह बढ़ि जाइ छै।" २. लोकक बीच मुख्यता। मै.

चलना-सं., कोनो वस्तु चालैक बासन। मै.

चलनि-सं., समाजक बीच प्रचलित व्यवहार। मै.

चलनी-सं., चिकना आदि कें बड़ काठी सँ परिच्छ करैक लेल मेंही छेद भरल पेनवाला छोट बासन। चालनि। मै.

चलनौट-सं., पीसल सुखाएल वस्तु कें चालला उत्तर चालनि में छनि कय जमा विकृत पदार्थ। अन्नक मोट अंश। मै.

चलप्रबल-विशे., जाइक हेतु अगुताएल। विशेष रूपें हलचल। चञ्चल। मै.

चलब-क्रि., गमन करब। डेग उठाएब। जाएब। मै.

चलाउ-विशे., चलबैक योग्य। (लाक्षणिक) निमहुता करैं जोकर। मै.

चलाएब-क्रि., गतिशील करब। क्रिया में प्रेरित करब। मै.

चलाक-विशे., चतुर। उड़िगर। बुद्धिमान्। मै.

चलाचलती-सं., विशिष्टता। मुख्यता। प्रधानता। मै.

चलाचली-सं., बेराबेरी अनेक लोकक चलैक क्रम। मै.

चलाठ-सं., अधिक लोकक चलैक द्वारें बनल चिह्न । मै.

चलान-विशे., १. चलायमान, गतिशील । २. प्रामाणिक पत्र । ३. पठाओल । मै.

चलानी-विशे., आन ठाम सँ चलैत चलैत आएल विशेष वस्तु । मै.

चलिआएब-क्रि., १. पेट मे चाली (कृमि) सँ भरि जाएब । २. चल्ला चलाएब । ३. जोतल वा तामल खेतक दबल खड़ पात कें कोड़ि कोड़ि बहार करब । मै.

चलिसमा-सं., मुसमानक मोहर्रम पर्वक चालिसम दिन पर होमवाला पर्व । चेहल्लुम । मै.

चसक-सं., व्यसन, अधलाह चालिक अभ्यास । लोभ । मै.

चसकब-क्रि., अधलाह दिस आकर्षित होएब । दुर्बुद्धि बढ़ब । व्यसनक लोभ करब । मै.

चसकाएब-क्रि., अधलाह बात दिस प्रेरित करब । अनिष्ट विषय दिस हिसक लगाएब । मै.

चसका पड़ब-क्रि., अधलाह बातक तृष्णा बढ़ब । दुर्व्यसिक व्यसन होएब । मै.

चसकी चढ़ाएब-क्रि., अनिष्ट करैक शिक्षा देब । अनुचित बात सिखाएब । मै.

चँसब-क्रि., (लाक्षणिक) दुःख, विरोधक दबल बात कें बारम्बार कोंचि कोंचि कय जगबैक दुष्टता करब । मै.

चस्मा-सं., अधिक सूझैक लेल सीसा लागल कृत्रिम आँखि । उ. तत्सम

चसम-सं., आँखि, दृष्टि । पा. तत्सम

चह-सं., सबकत उपयोगी काठवाला वनस्पति विशेष । मै.

चहक-सं., १. पशु पक्षीक आनन्दोल्लासक शब्द । भ्रमण । २. काठक नम्मा नामी फटैक चिह्न । मै.

चहकब-क्रि., १. काठक बीच नम्मा नम्मी फाटब । भीतक सिहरब । २. पक्षीक आनन्द सँ विचरण आ कलरव करब । मै.

चहकि-सं., व्यसन, चुलुक, अमल । जाहि वस्तुक बिना मन चैन नहि रहैक ताहि वस्तुक तृष्णा । भाङ गाँजा, हफीम आ ताड़ी आदिक चहकि । मै.

चहचहाएब-क्रि., पक्षीक आनन्दें शब्द करब । मै.

चहचही-सं., लावण्य, कान्ति, देह मुहक आकर्षक छटा । आभा । मै.

चहटगर-विशे., रुचि बढ़बैवाला । मै.

चहटब-क्रि., चुम्बन आदि क्रिया सँ दुलार आ स्नेह व्यक्त करब । मै.

चहटि-सं., निश्चित समयक विशेष वस्तुक तृष्णाक अभ्यास । लति । मै.

चहरा-सं., पोसा पशु पक्षीक आहार । मै.

चहरि-सं., कुड़हरिक चीरल चेरा । मै.

चहा-सं., खेतक कीट खाइवाला पक्षी । मै.

चहार-विशे., सिद्ध चोर । मै.

चहुँदिस-सं., चारू दिश । मै.

चहैत चहैत-अव्यय, महींस कें लोर करैक शब्द । मै.

चा

चाई-विशे., अचक्कें कोनो अनहोनी घटना कय देनिहार बच्चा । मै.

चाईंक-सं., चेतावक, पूर्वानुभव सँ सतर्कता । चेतल रहैवाला गुण । मै.

चाउर-सं., धानक दानाक भीतरक गुद्दा । अन्न । मै.

चाउँस-सं., उड़ीदक बेसन । मै.

चाओ-सं., लालसा, ललक, लोलुपता । मै.

चाक-सं., १. कुम्हारक बर्तन गढ़ैक चक्र । २. तख्ता । मै.

चाकब-क्रि., चक्र जकाँ बना कय कोनो वस्तु जमा करब । मै.

चाकर-विशे., १. (हिन्दी) चौरा कयल । पसरल । २. नौकर । मै.

चाँकि-सं., सावधानता, चेतल रहैक गुण । मै.

चाकरी-सं., नौकरी । आनक सेवा कार्य । मै.

चाकू-सं., छोट घातक अस्त्र । मै.

चाखब-क्रि., स्वाद जँचैक हेतु कनेक खाएब । मै.

चाङला-विशे., चतुर कार्यकुशल । मै.

चाङुर-सं., पक्षीक पैर । क्रियाशील आङुरक समूह । मै.

चाँच-सं., १. पानि बहैक पातर बाहा (नाली) देबे माछ कें चलाकय आगू मे लागल सरैला मे फँसबैक प्रयास । २. कोनो भारी वस्तु कें दू गोटए सँ उठा कय लय जाइक चचरी । मै.

चाँचर-सं., अत्यन्त विस्तृत उजाड़ भूखण्ड। बाध। मै.

चाँचरि-सं., पशुपालक आ पशु वृत्तिवालाक ग्राम्य गीत। मै.

चाँछ-सं., कठोर आ तेज वस्तु सँ अकस्मात् रगड़ पड़बा सँ सद्यः बनल घाओ। मै.

चाँछनि-सं., (लाक्षणिक) झंझट दुखदायी वा पुरान बात कें जानि जानि कय जगबैक चेष्टा। मै.

चाँछब-क्रि., १. छीलब। २. (लाक्षणिक) बिसरल विषय कें जगाकय जानिकय नव बनाएब। मै.

चाट-सं., १. पंजा पसारि हाथक मारि, थापड़। २. कोनो वस्तुक दुर्व्यसन, लुतुक। ३. नोन तेल मसाला मिलाओल भूजा। मै.

चाटनि-सं., चटैक चेष्टा। मै.

चाटब-क्रि., कोनो वस्तु जीह सँ पोंछि पोंछि खाएब आ स्वाद लेब। मै.

चाट हंसब-क्रि., १. अनिवार्य रूपें तृष्णा जमब। २. चाटी चलबैक शिक्षा मे सफल होएब। ३. थापड़क सम्पूर्ण चिह्न पड़ि जाएब। मै.

चाँटा-सं., थापड़क मारि। हि. तत्सम

चाटी-सं., १. स्नेह सँ जीह द्वारा विशेष अङ्गक स्पर्श। प्रयोग–"चुम्मा चाटी।" २. साँप काटल अंग पर बराबरि चाट मारि कय विष झारैक प्रक्रिया। मै.

चाटी उठब-क्रि., १. ककरो थापड़ मारै लेल हाथ उठब। २. धरती पर पंजा रोपिकय मन्त्र बलें साँपक विष धरि स्वतः पंजा ससरब। मै.

चाटी चलब-क्रि., साँपक विष पर चटबाहक लगातार चाट चलब। मै.

चाड़नि-सं., चैतन, व्यग्रता। तत्परता। मै.

चाड़ि-सं., काज साधैक सतर्कता। एकाग्रता। मै.

चाँड़-विशे., कुशल चोर। भयंकर चोर। मै.

चाण्डाल-सं., वधिक जाति। क्रूर जाति। मै.

चाणिक्य-सं., बुद्धिक दावी सँ अयोग्यती पर अन्ट-सन्ट विश्लेषण करैक चेष्टा। मै.

चातरि-सं., चतरैक, चारू दिश पसरैक प्रकृति। मै.

चाव-सं., साधारणो विषयक व्यर्थ महत्त्व। मै.

चावब-क्रि., सामान्यो वस्तु कें महत्त्व दय ऊँच करब। मै.

चान्हर-विशे., पानि बहैक द्वारें उपटल जजातिवाला खेत। मै.

चान-सं., चन्द्रमा। सं. तद्भव

चानक-सं., पूर्वानुभवक स्मरण कय सतर्कता। मै.

चानडाला-सं., बिवाहक अवसर पर वर कें देखबै लेल चन्द्रमा सन उज्वर डाला। मै.

चानन-सं., चन्दन। सं. तद्भव

चानमारी-सं., दूर मे बनाओल चन्द्रमा सन गोल पट्टी पर प्रक्षेपास्त्रक निशाना मारैक अभ्यास। मै.

चाना-सं., मसाला मिलल स्वादिष्ट भूजा। मै.

चानि-सं., माथक समथरि उपरक अंग। मै.

चानी-सं., रजत। मृदु उज्वर पवित्र मूल्यवान् धातु विशेष। चान्दी। मै.

चाप-सं., १. धनुष (सं.)। २. गणितक धनुषाकार रेखा। ३. पैरक चिह्न। ४. पाँक सँ धँसैवाला स्थान। मै.

चाँप-सं., कोनो वस्तु कें दाबि दैक हेतु उपर सँ राखल भारी वस्तु। मै.

चापकसी-सं., गहना विशेष। मै.

चापट/चापड़-विशे., मोटाइ सँ हीन अर्थात् पातर लाम चाकर वस्तु। मै.

चाँपनि-सं., दाबि दैक प्रक्रिया। मै.

चाँपब-क्रि., कोनो वस्तु कें भारी वस्तु सँ दाबि देब। मै.

चापाकल-सं., डण्टा दाबि धरती सँ जल बहार करैक यन्त्र विशेष। मै.

चापा पड़ब-क्रि., चलती गाड़ीक नीचाँ दबि कय आहत (घाइल) होएब। मै.

चापी-विशे., अधिक दिन धरि पानि बसैवाला गहींर-गर पैंप भूखण्ड। मै.

चाब-सं., उत्कट लोलुपता। तृष्णा। मै.

चाबस-अव्यय, सम्वर्धना, प्रोत्साहनक शब्द। मै.

चाबसी-सं., प्रोत्साहन, उत्साह सम्वर्धना। मै.

चाबुक-सं., घोड़ा तथा बड़द आदि हूँकैले डण्टा मे लागल नमहर सक्कत चामक झालरि। कोड़ा। मै.

चाभ-सं., १. बाँसक प्रभेद। बाती बनबै मे बेसी उपयोगी बाँस। २. चभर चभर कय खाइ पीबैक शब्द एवं दवबैक चेष्टा। मै.

चाभब-क्रि., हठात् आक्रमण कय दबैत हत्या करैक प्रयास करब आ हत्या करब। मै.

चाभी-सं., तालाक कुञ्जी। हि. तत्सम

चाम-सं., छीलल मूड़ल पशुक चमड़ा वा सुखाएल चमड़ा। मै.

चामर-सं., देवताक आराधना मे काज अबैवाला चमरी गाइक नाङरि। चामौर। मै.

चाय-सं., गरम पानि मे सिद्ध कय पेय पदार्थ बनबैक पत्ती। हि. तत्सम

चार्त-सं., उचित आर्थिक स्थिति सँ बेशी आडम्बर आ भड़कवाली। मै.

चार-सं., फूसक घरक छप्पर। मै.

चारज-सं., १. (अं०) चार्ज। २. अभ्यास लागल व्यसनक निश्चित समय पर तृष्णाक उत्पत्ति। मै.

चारा-सं., १. उपाय, प्रतीकार। उ. तत्सम। २. हाथी एवं पशु सभक भोजन सामग्री। आहार। मै.

चारि-संख्या, एक अंकक चारिम संख्या। मै.

चारि चारि-सं., चारि मात्र कौड़ी सँ खेलल जाइवाला मौगियाही खेल। मै.

चारिम-पूरक सर्वनाम। चारि संख्यावाला व्यक्ति। मै.

चारी-विशे., एम्हुर ओम्हुर झगड़ा लगबै मे प्रवीण। मै.

चारु-विशे., १. सुन्दर। सं. तत्सम प्रयोग–"कुच युग चारु चकैवा (विद्यापति)।" २. मुख्य खाद्य। देखू—"चाउर"। मै.

चारू-अव्यय/संज्ञा, चारि गोटएक निश्चय रूपक निर्देश। मै.

चाल्हुम-सं., छिपाएल बातक उत्थान करैक प्रवृत्ति। मै.

चाल्हुमी-विशे., छिपाओल बातक व्यर्थ उत्थान करैवाला। मै.

चाल-सं., १. देव मूर्तिक पाछू देल अर्ध गोलाकार पैघ काठक पाटी। २. पानिक उपरका सतह पर छोटका माछक सञ्चार सँ बनल गोल व्यास। ३. सोर करैक चेष्टा। मै.

चालक-विशे., १. चलबैवाला। २. पेटक कठोर मल कें ढील करैवाला भोज्य। सं. तत्सम

चालता-सं., फल विशेष। मै.

चाल देब-क्रि., पानिक उपरी सतह पर माछक छरपब। मै.

चालन-सं., १. गति बढ़बैक क्रम। २. प्रेरित करैक चेष्टा। मै.

चालनि-सं., देखू—"चलनी"। मै.

चाल पाड़ब-क्रि., १. जोर सँ सोर करब। २. पानि मे बनल गोल व्यास। ३. खेलाइक क्रम मे धुरा पर पैर सँ गोल चाकक चिह्न बनाएब। मै.

चालब-क्रि., १. कनेक भारी वस्तु कें टसकाएब। २. (लाक्षणिक) उकसाएब। ३. धरती (खेत) कोड़ि कय माटि हल्लुक करब। मै.

चाला-सं., रब्बीक भुस्सा कबै लेल बोरा सहीक बनल बड़का बोरा। मै.

चालि-सं., व्यवहार, चर्य्या, प्रकृति, गति। मै.

चालि चलब-सं., व्यवहार करब। मै.

चालिढालि-सं., आचार विचार आ छविकटा। मै.

चाली-सं., १. साँपक आकारक भदवारि मासक सरीसृप (नाम कीट)। २. पेटक लम्बाकार कीट (जोंकी)। मै.

चालीस-संख्या, सुन्न एकाइ चारि दहाइक अंक। मै.

चालू-विशे., १. सामान्य लोकक व्यवहारक वस्तु। २. प्रचलित, दक्ष। मै.

चास-सं., १. खेतीवाला खेत। २. पहिल नामानामी जोत। ३. (लाक्षणिक) मिझाएल बात कें फेर जिआएब। मै.

चासनि-सं., १. नामा नामी पहिल जोतक क्रम। २. दुष्टता सँ शान्त बात कें जगाकय अशान्त करैक चेष्टा। मै.

चासनी-सं., १. अँचारक हेतु बनल मसाला। २. चीनीक बनाओल सिरका। मै.

चांसब-क्रि., दबाओल अनुचित बात कें फेर फेर उखाड़ब। मै.

चाह-सं., १. इच्छा। २. देखू—"चाय"। मै.

चाह करब-क्रि., प्रमाणक हेतु भरना रीन सभक पूर्ति भेला पर बनाओल चीठीक फाड़ब। मै.

चाहब-क्रि., इच्छा करब, अभिलाष करब। मै.

चाहा-सं., लागल फसिलक दाना खाइवाला पक्षी। मै.

चाहे-अव्यय, अथवा, वा, आकि। प्रयोग–"जो जाउ चाहे रहु।" मै.

चि

चिउरा-सं., (स्थान भेदेँ शब्द भेद) चूरा। धानक दाना केँ चापट कयल भोज्य पदार्थ। मै.

चिक्कट-विशे., तेलक द्वारेँ अधिक मैल भरल। मै.

चिक्कन-विशे., स्वच्छ, सुघटित, मृदुल आ सुन्दर। मै.

चिक्कन चुनमुन-विशे., स्वच्छता आ सुन्दरताक द्वारेँ सुदर्शनीय। मै.

चिकनि माटि-सं., कोमल गोर माटि। मै.

चिकनइ-सं., (लाक्षणिक) तेल। मै.

चिकनकार-विशे., नीक निकुत खाइक इच्छा रखैवाला। मै.

चिकनका-विशे., अधिक कोमल स्वच्छ सुन्दर। मै.

चिकना-सं., १. मैंदइ अन्न विशेष। २. चाउर केँ स्वच्छ करैवाला। कोठी भँड़नी मे राखल चाउरक उपरी सतह चाटि चिक्कन बनबैवाला मेहीँ कीड़ी विशेष। मै.

चिकनाएब-क्रि., १. मृदु आ स्वच्छ बनाएब। कोमलता आ स्वच्छता बढ़ाएब। २. अंगक फूल सन होएब। मै.

चिकनाहा-विशे., चिक्कन बनाओलवाला। मै.

चिकनाहटि-सं., १. चिक्कन रहैक विशेषता। २. अंग फुलैक कम। मै.

चिकनै-सं., तेल (लाक्षणिक)। मै.

चिकरब-क्रि., अत्यन्त जोर सँ शब्द करब। मै.

चिकरा-विशे., चिकरैक अभ्यासवाला। मै.

चिकराहा-विशे., चिकरि चिकरि कय बजैवाला। मै.

चिकस-सं., आटा, गहूम आदि अन्नक पीसल रूप। मै.

चिकसाइन-विशे., आटा लागल, चिक सँ चिकुन। मै.

चिकसालड्डू-विशे., चिकसक बनाओल लड्डू, चुर्नी, छाँटिक भुसबा आदि। मै.

चिकारी-सं., १. सांकेतिक बोली। प्रयोग—"अहाँ सँ प्रेम करै छी।" एहि वाक्यक चिकारी एहि रूपक होइछ जे आन नहि बूझि सकै अछि—चिअ चिहाँ चिसेँ चि प्रे चिम चिक चिरै चिछी।" २. (लाक्षणिक) गुप्त रूपेँ बाजि वा इसारा सँ बात करब। मै.

चिखब-क्रि., देखू—"चाखब"। मै.

चिघाँरि पाड़ब-क्रि., जोर जोर सँ कर्णकटु शब्द करब। मै.

चिघाँड़ि देब (पाड़ब)-क्रि., निरर्थक भूमि पर वा कागज आदि पर अनसोहाँत रेखा खींचब। मै.

चिचियाएब-क्रि., जोर जोर सँ शब्द करब। मै.

चिचिहारि काटब-क्रि., आर्त भ' क' सोर करब। मै.

चिचिहारि पाड़ब-क्रि., आर्त भ' क' जोर सँ कानब। मै.

चिचोड़-सं., चोर आ बाधक धन खेतीक विशेष घास। मै.

चिचोड़ब-सं., १. खेत केँ उपरेँ उपर हर फिरा कय चीरब। २. कोनो वस्तुक उपरका अंश केँ चीरि फाड़ि देब। मै.

चिट्ठा-सं., निर्देश, प्रमाण आ विश्वासक पत्र। मै.

चिट्ठी-सं., सन्देश पत्र, पतिया। मै.

चिट-सं., चोरि कय लिखैक प्रश्नोत्तर पत्र। अं. तत्सम

चिटिंगबाजी-सं., चोरि सँ कयल जाइवाला काज। अं. तद्भव

चिड़िया/चिड़ै-सं., पक्षी, चड़ै। मै.

चिड़ैमारा-विशे., चिड़ै मारि खाइवाला व्याधा। मै.

चिड़ौरी-सं., कोनो विषय मे व्यर्थ कुतर्कक विवाद। मै.

चिढ़-सं., मनक कोपित भाव। मै.

चिढ़ब-क्रि., मनक तनाओ बढ़ाएब। मै.

चिढ़ाएब-क्रि., आनक मन मे खौंझी जगाएब। मै.

चित्त-सं., १. मन। सं. तद्भव। विशे. उतान। सं. तत्सम

चित्तीकौड़ी-सं., टोना करै मे काज अबैवाला भँजाला उत्तर सतत् चित्त रहैवाला कौड़ी। मै.

चित्ती लागब-क्रि., द्रव्य (धातु) सँ बनल वस्तुक उपर देल पोत (पॉलिस) झरब। मै.

चित्र-सं., छापी, (फोटो) रूपक छाया। सं. तत्सम

चित्रनष्टा-सं., तारतम्य, संकल्प विकल्प, मनक आगु पाछु करब। सं. तत्सम

चित्रविचित्र-विशे., विविध रंग सँ भरल, अद्भुत। सं. तत्सम

चित्रा-सं., नक्षत्र विशेष, चितरा। सं. तत्सम

चित-विशे., उतान भेल। मै.

चितकबरा/चितकाबर-विशे., अनेक रंग सँ रंगल, रंग बिरङ्ग भरल। मै.

चितकोहरा-सं., (स्थान भेदक शब्द) तरकारि फल विशेष। कुम्हर। मै.

चितङ-विशे., उपर मुहेँ उतान पड़ल। मै.

चितचोर-विशे., प्रेमक द्वारेँ मनक हरण करैवाला, मन खीचैवाला। मै.

चिता-सं., मृतकक दाहक वा गाड़ैक स्थान। मै.

चितिर बितिर-विशे., देखु—"चित्र विचित्र"। सं. तद्भव

चितौरि-सं., औषधक बूटी। मै.

चिथड़ा-विशे., टुकड़ा टुकड़ा भेल वस्त्र। मै.

चिन्तन-सं., गम्भीरता सँ विषय केँ गुनब। मै.

चिन्तब-कि., सोचब विचारब। मै.

चिन्ता-सं., कोनो प्रतिकूल स्थिति मे पीड़ासहित सोच। सं. तत्सम

चिथ्री चिथ्री उड़ब-कि., रत्ती रत्ती बिलग होएब। मै.

चिन्ह-सं., कोनो पदार्थक परिचायक रूप वा अङ्क। सं. तद्भव

चिन्हब-कि., परिचयक स्मृति होएब। मै.

चिन्हमानि-सं., चिन्है बूझैक शक्ति। प्रयोग-"मरणासन्न केँ चिन्हमनि नै रहै छै।" मै.

चिन्हार-विशे., परिचित। मै.

चिन्हारय-सं., परिचय। मै.

चिनकब-कि., रौद बसातक द्वारेँ फलक स्वतः फुटि फुटि उड़ब। मै.

चिनगारी-सं., उड़ै योग्य छोट छोट आगिक कण। मै.

चिनगी-सं., आगिक कण। मै.

चिनबार-सं., गृह देवताक आगू ऊँच कयल पवित्र सुरक्षित पींडी। मै.

चिपकब-कि., अभेद्य रूपेँ सटल रहब। मै.

चिपकाएब-कि., साटब। अभेद्य रूपेँ लगाएब। मै.

चिबाएब-कि., चर्वणा, दाँतक तर मे दबा दबा कय पीसब। मै.

चिम्मर-विशे., ममुआएल (सरस) रहैक कारणेँ चिड़बै मे सक्कत। मै.

चिमाइट-विशे., अत्यन्त सक्कत अन्न आदि। मै.

चिर-अव्यय, देरी, अधिक काल। प्रयोग–"ई परम्परा चिरकाल सँ अबैत छै।" सं. तत्सम

चिरक-सं., कोनो वस्तुक फटैक रूप विदरण। मै.

चिरक्का-सं., दूर धरि फटैक चिह्न। मै.

चिरकब-कि., बहुत दूर धरि फटैक क्रम होएब। मै.

चिरकाह-विशे., स्वतः फटैवाला। मै.

चिरकी-सं., रौदक थोड़बोक अंश। प्रयोग–"मरआ एखो चिरकी लगने सुखा जाइत छै।" मै.

चिरचिराह-विशे., बात बात पर खौंआइत रहैवाला। स्त्री॰ चिरचिराहि। मै.

चिरजीवी-विशे., बहुत दिन धरि जीबैवाला। मै.

चिरलहा-विशे., चीरल रहैवाला। मै.

चिरराइन-विशे., केश आ मांस जरैक दुर्गन्ध। मै.

चिराइ-सं., १. काठ आदि चीरैक श्रम। २. चीरैक बोनि। (विशे.) मै.

चिराइत काल-अव्यय, अधिक कालधरि। मै.

चिराएब-कि., फाँक कराएब। छेद कराएब। मै.

चिराक-सं., दीप। उ. तद्भव

चिरागदानी-सं., दीप रखैक आधार। उ. तद्भव

चिरागबाती-सं., दीप लेसैक प्रक्रिया। मै.

चिरियाइन-विशे., रवड़ आ मांस जरला सँ विशेष दुर्गन्ध। मै.

चिरियारिक चाउर-सं., मनोवैज्ञानिक प्रभाव देबाक टोना करैक टोना। कोनो वस्तुक चोरि भेला पर सन्दिग्ध लोक सब केँ एकठाँ जमा कय चानीक रुपैया केँ अभिमन्त्रित कय ओकर बराबरि अरवा चाउर सब केँ फँकाओल जाइछ तदुपरान्त जे चोरि कयने रहै अछि तकर मुह मे चाउर लठियाएल भऽ जाइत छैक। एहि रूपक प्रचलनक प्रक्रिया। मै.

चिरुआ-विशे., चीरि कय वा चीरैक आकारक बनल। चीरल चिन्हवाला। चीरल जाइक क्रम मे रहैवाला। मै.

चिरैत-सं., तीत औषध विशेष। मै.

चिरौंजी-सं., मटर एहेन टा दानावाला फल विशेष। मै.

चिरौड़ी-सं., अनर्गल व्यर्थ विवाद। मै.

चिल्लड़-सं., बहुत दिन धरि बिना खीचल एके वस्त्र पहिरल रहला सँ उत्पन्न स्वेदज कीटाणु विशेष। पूआ। मै.

चिल्ह-सं., झपट्टा मारैवाला बाज आ चिल्होरि आदि पक्षी । मै.

चिलका-विशे., दुधपीवा बच्चा । मै.

चिलकाह-विशे., दुधपीवा बच्चावाली माता । मै.

चिलचिलाइल-विशे., धधकैत वा धधकैत सन । मै.

चिलम-सं., धूम्रपानक यन्त्रक उपर रहैवाला आगिक बासन । मै.

चिलमची-सं., ऐंठ हाथ मुह धोइक हेतु धातुक बनल सामन्ती आडम्बरक मुसलमानी पात्र । उ. तत्सम

चिलहोरि-सं., मांसभक्षी पक्षी विशेष । मै.

चिलियाएब-क्रि., आकाश मे मेघक संचारक संग क्रमश: विस्तार होएब । मै.

चिहुँकब-क्रि., कलरव करब । मधुर ध्वनिक संग नेनाक चौंकि उठब । मै.

चिहुँकि उठब-क्रि., डर सँ वा रोग विशेष सँ अस्फुट शब्दैं नेन्नाक चौंकि उठब । मै.

चिहुट-सं., बाँसक ओदार । मै.

चिहुटब-क्रि., शिशुक द्वारा माताक अंग (स्तन समेत) कसिकय धरब । मै.

चिहुटि कय धरब-क्रि., १. नेन्नाक स्तन पानक हेतु कसि आ सटि कय पकड़ब । २. हठात् नहि छूटैक रूप मे घात करैक हेतु (ढेंढी आ जोंक आदि जीवक) सट्टल जकाँ पकड़ब । मै.

ची

चीक-सं., बाँसक कामि सँ बीनल दोहारि आदि मे देवाक पर्दा । मै.

चीखब-क्रि., १. देखू—"चाखब" । २. जोर सँ आक्रन्द वा सोर करब । चिचियाएब । मै.

चींच पाड़ब-क्रि., व्यर्थ असम्बद्ध रेखा खींचब । मै.

चीं चीं करब-क्रि., पक्षीक बच्चाक मेही ध्वनि करब । मै.

चीट-सं., सूक्ष्म रूपक पुर्जा । मै.

चीठा-सं., प्रामाणिक लेख । मै.

चीठी-सं., सन्देश (वार्ता) क पत्र । मै.

चीड़-सं., पहाड़ी काठक (सररक गाछ) । मै.

चीढ़-सं., भितराएल तामस । मै.

चीत्कार-सं., जोर सँ विह्वलताक ध्वनि । मै.

चीत-सं., १. मन । (सं. तद्भव) विशे., असमर्थताक चिह्न रूपें उतान । मै.

चीतमीत मारब-क्रि., धैर्य, स्थिरता आ अनुद्वेग राखब । मै.

चीतल-सं., घातक पशु विशेष । चितक । मै.

चीता-विशे., चित्तिर विचित्तिर रंगक छोटका बाघ । मै.

चीन-सं., १. मेही अन्न विशेष । २. एशिया महादेशक सब सँ पैघ जनसंख्यावाला देश । मै.

चीना-सं., अन्न विशेष । मै.

चीना माटि-सं., विभिन्न प्रकारक वर्तन गढ़ै योग्य सनकल आ चिक्कन माटि (खनिज) । मै.

चीनी-सं., सिता, मधुर रसक स्वच्छ आ परिष्कृत रवाकृत कण । मै.

चीपब-क्रि., तर मे द' क' भारी वस्तु सँ दाबब । मै.

चीर-सं., स्त्री वस्त्र । सं. तत्सम

चीर फाड़-सं., फाँक कय कय फाड़ैक क्रम । मै.

चीरा-सं., १. फाँक । २. पचीसी खेलक गोटी नहि काटल जाइवाला घर । खोढा । मै.

चीरीचोंत-विशे., रत्ती रत्ती काटल । मै.

चीरीचाली करब-क्रि., तार तार कय नोचि नोचि कय फाड़ब । मै.

चु

चुआएब-क्रि., कोनो वस्तुक रस टपकाएब, बहार करब । मै.

चुआठ-सं., १. घरक छप्पर मे बनल चूबैक स्थान । २. चूबि कय खसल पानि सँ बनल चेन्ह । मै.

चुइल-विशे., चूबि कय खसल । मै.

चुईं शब्द-सं., नाम मात्रौक ध्वनि । मै.

चुक्क-सं., अमतोआ फलक रस सँ बनल अम्ल क्षार द्रव । (औषध) चुक । मै.

चुक्की-सं., छोट साँकर मुहवाला बासन । (माटिक) मै.

चुक्की माली-विशे., बैसैक विशेष प्रक्रिया । टाङ मोड़ि हूनू पैरक भरें बैसैक प्रकार । मै.

चुकचुक-विशे., अत्यन्त अम्मल । मै.

चुकड़ब-क्रि., बन्धन सँ छूटैक हेतु कछमछाइत महिंषिक परड़ूक बारम्बार बाजब । मै.

चुकड़ा-सं., फैल मुहक माटिक छोट बासन । मै.

चुकड़ी-सं., साँकर मुहवाला माटिक अत्यन्त छोट बासन । मै.

चुकड़ू-विशे., १. बाम्हन वानर। २. पक्की लागल पथीसीक गोटी। मैं.

चुकता-सं., सम्पूर्ण देय वस्तुक आपस अर्थात् देबाक प्रक्रिया। शोध। मैं.

चुकती-सं., १. सम्पूर्ण रूपक देय वस्तुक समर्पण। २. दोष, प्रमाद, असावधानी, गलती। प्रयोग–"हमरा सँ चुकती भय गेल जे समय पर हम नहि आवि सकलौं।" ३. अस्त्रक निशान नहि बैसब। एकाग्रताक अभाव। मैं.

चुकब-क्रि., परिस्थिति आ समयक उपयोग नहि कय सकब। मैं.

चुकहा-विशे., अत्यन्त अम्मतवाला। मैं.

चुकाएब-क्रि., १. प्रतिशोध लेब। २. देय वस्तु के आपस करब। रीन पैंच उधार सधाएब। ३. निष्फल कय देब। मैं.

चुकारी-सं., अन्नक अपच रहला सँ मुह मे आएल पेटक अम्मत रस। मैं.

चुकिया-सं., १. माटिक अत्यन्त छोट भिन्न प्रकारक बासन। २. देवाल आ भीत मे खोंधि बनाओल वस्तु रखबाक छोट स्थान। मैं.

चुगब-क्रि., पक्षीक दाना बीछि खाएब। मैं.

चुगली लाइब-क्रि., एम्हर सँ ओम्हर दोष कहब। मैं.

चुगाएब-क्रि., पक्षी कें दाना खोआएब। मैं.

चुगिलखोर-विशे., चुपचाप दोषराग कहि विरोध जगौनिहार। मैं.

चुगिलपन-सं., चुपचाप एम्हरुका दोष ओम्हर कहैक लुलुक। मैं.

चुगिला-विशे., चुपचाप एक दोसरा कें दोष सुनबै-वाला। मैं.

चुगिलावृन्दावन-सं., सामा पर्व खेलाइक प्रकरण मे स्त्रीगण सभक द्वारा आगि लगाकय जरबैबाल चुगिला आ वृन्दावनक माटिक मूर्ति। मैं.

चुगिलाह-विशे., चुगिली लाइक स्वभाववाला। मैं.

चुगिली-सं., एम्हर सँ ओम्हर दोषराग कें चुपचाप कहैक प्रकृति। मैं.

चुंगी-सं., देशान्तर वा राज्यान्तर टपबैक हेतु विशेष प्रकारक कर (चट्टी)। मैं.

चुच्ची-सं., स्तन, थन, ऊध। मैं.

चुचकसना-सं.,स्तनक आवरण-बन्धन। मैं.

चुचकारब-क्रि., स्नेह प्रदर्शन ध्वनि सँ वश मे करब। मैं.

चुचमलकी-विशे., उठल स्तन कें तानि कय उन्मत्त जकाँ रहनिहारि। मैं.

चुः चुः-अव्यय, स्नेहक अव्यक्त ध्वनि। मैं.

चुट्ठ-विशे., क्षुद्रो धन कें चुट्ठा जकाँ दाँत सँ पकड़ि रखनिहार कृपण। मैं.

चुट्ठा-सं., १. बड़का चुट्ठी जे मुह सँ आघात करैछ। २. दू फालवाला कोनो वस्तु कें पकड़ैक लोहक अस्त्र। मैं.

चुट्ठी-सं., सूक्ष्म आ पैंघ डंक मारैवाला कीट। मैं.

चुट-सं., चुट द' कटैवाला अत्यन्त मेंही दंशक जीव। मैं.

चुटका-सं., १. गुण, विशेष प्रकारक औषध। प्रयोग–"औ ! वैद्यजी अहाँ कोनो चुटका चलाउ जे झट द' हम निकें भ' जाइ।" २. तान्त्रिक मान्त्रिकक विशेष रूपक प्रयोग। मैं.

चुटकी-सं., हाथक औंठा आ तर्जनी मध्यमा आङुरक मिलान कय बनाओल दशांशिक मध्यक मान। प्रयोग–"समय पर गरीब कें एक चुटकी नोनो दुलर्भ रहै छै।" मैं.

चुटकीमोर करब-क्रि., (लाक्षणिक) विवाह करब। चुटकी सँ सिन्दूर दान कयला सँ पुरुषक चुटकी लाल होएब। मैं.

चुटकी बजाएब-क्रि., (लाक्षणिक) तान्त्रिक मन्त्र मुद्रा द्वारा चुटकी बजा बजा कय रोग वा उपाधि (भूत-प्रेत) छोड़बैक विधि करब। मैं.

चुटकी मारब-क्रि., चुपचाप एकै छन मे लुप्त कय देब। जादू जकाँ एकै छन मे अलोपित करब। मैं.

चुटकुला-सं., छोट छोट विनोदमय गप वा कथाक कल्पना। मैं.

चुटचुट करब-क्रि., लगले लागल एम्हर सँ ओम्हर गतिशील रहब। मैं.

चुटचुट काटब-क्रि., दंश करैवाला मेंही जीवाणुक लगातार दंश करब, काटब। मैं.

चुट द'-अव्यय, अलक्षित रूपें दंश करैक रूप। मैं.

चुटपुटाएब-क्रि., बिना तेल घीक कोनो बासन मे पकाएब, भूजब, सिद्ध करब। मैं.

चुटिया-सं., परसल आ नमहर टीक, शिखा । मै.

चुटुक्का-सं., पैंच परिमाणक चुटकी । मै.

चुड़लड्ड-सं., भूजल चूरा कें गुड़ मे सानिकय बनाओल लड्डू । मै.

चुड़िला-सं., केहुनी सँ उपर बाँहि सँ उपर पहिरैवाला काचक मोट चूड़ी । मै.

चुड़िहर-विशे., चूड़ी बेचैवाला व्यवसायी । मै.

चुड़िन-सं., स्त्री जातिक भूत । मै.

चुन्नी-सं., दलिहनक मेंही कणवाला दालिक भूसा समेत पशुक चारा । मै.

चुन्नूमुन्नू-विशे., धीयापूता । मै.

चुनगर-विशे., (लाक्षणिक) चून सँ पोतल घर आड़नवाला धनिक । मै.

चुनचुनाएब-क्रि., एक संग अनेक ठाम देह कें कुड़िअबैक इच्छा होएब । मै.

चुनलाहा-विशे., नीक बीछिकय राखलवाला । मै.

चुनमुन-विशे., १. दुलारक योग्य । २. फरिच्छ । प्रयोग–"चिक्कन चुनमुन ।" मै.

चुनरी-सं., रङि कय बनाओल पाढ़िवाला साड़ी । मै.

चुनाएब-क्रि., बहुत मे बीछल जाएब । निर्वाचित होएब । मै.

चुनाओ-सं., निर्वाचन आ निर्वाचनक विधि । मै.

चुनियाएब-क्रि., १. पुरान वस्त्र वा कागज मे यत्र तत्र अपनें सूत उड़ने छेद जकाँ फटैक कम होएब । २. मेंही कुर्ता धोतीक विशेष स्थल मे मेंही चाँकचुन देब । मै.

चुनैटब-क्रि., चून सँ रंगब पोतब । मै.

चुनैठल-विशे., चून सँ रङि कय चमकाओल । मै.

चुनौटी-सं., छोट सँ छोट चून रखैक बासन । मै.

चुप्पा-विशे., सदा चुप्पे रहनिहार । मै.

चुप्पी-सं., चुप रहैक वातावरण, मौनता । मै.

चुप-विशे., मौन । नहि बाजैक विषय । मै.

चुपका-विशे., चुपेचाप पहुँचाओल आ पहुँचल । मै.

चुपकी लाधब-क्रि., जटिल वा कोनो बात पर मौनता धारण कय लेब । मै.

चुपचुपौआ-विशे., लोकक आँखि वा ज्ञान सँ बचा कय गुप्त रूपें कयल क्रिया । मै.

चुपेचाप-अव्यय, चोरा नुका कय, गुप्त रूपें । मै.

चुबाएब-क्रि., कोनो वस्तुक रस कें गाढ़ि कय वा यान्त्रिक प्रक्रिया सँ बहार करब । मै.

चुबाठ-सं., १. चुबैवाला निश्चित स्थान । २. चूबा सँ बनल चिह्न । मै.

चुभब-क्रि., बिना पाइल कयने वा भेंसने गड़ब । (लाक्षणिक) मर्म कें छूअब । मै.

चुभकब-क्रि., अत्यधिक जलक्रीड़ा करब । पानि मे खेलाएब । मै.

चुम्बक/चुम्मक-सं., धातु कें खीचैंवाला, अपना मे सटबैवाला लोह । सं. तद्भव/तत्सम

चुम्मन-सं., चुम्बन, स्नेह सँ मुह सँ मुहक सम्पर्क । सं. तद्भव

चुम्मा-सं., स्नेहक वा दुलारक कारणें मुह सँ मुहक सम्पर्क । मै.

चुम्माचाटी-सं., स्नेह सँ ओहक सम्पर्क करैत चुम्बन । मै.

चुम्मा चुम्मी-सं., परस्परक चुम्बन । मै.

चुम्मा लेब-क्रि., चुम्बन करब । मै.

चुमाएब-क्रि., विधि आ आवेश पूर्वक स्नेह प्रदर्शन एवं विशिष्टता सँ कल्याण कामना करब । मै.

चुमाओल-क्रि., विधि आ स्नेह भरल कल्याण-कामना । मै.

चुरकब-क्रि., रोकली पर अपनें कोनो स्रोत सँ शरीरक द्रव बहार होएब । मै.

चुरकाएब-क्रि., अनठेकान थोड़ेक थोड़ेक देहक द्रव बहार क' देब । मै.

चुरकी राखब-क्रि., माथक बीच पैंच केश राखब । मै.

चुरमुरा-सं., टटका अनेक प्रकारक भुजाक सम्मिश्रण । मै.

चुराइ-सं., १. चूर्ण बनबैक प्रक्रिया । २. (लाक्षणिक) कसि कय पीटैक चेष्टा । मै.

चुराठ-सं., चूरैक चिह्नवाला स्थान । मै.

चुरिया-सं., चूरा कूटैक मजबाही । मै.

चुरुक छानब-क्रि., बिना बासने जल पीबैक हेतु मुहलग हाथ कें कटोरी जकाँ बना कय ढारल जाइत जल कें घेरि कय पीयब । मै.

चुरुट-सं., धूम्रपानक मादक पदार्थ । मै.

चुक्क-सं., हाथक तरहत्थी आ आङुर मोड़ि बना-ओल द्रव पदार्थ (जल आदि) धरैक आधार। मै.

चुरैठब-क्रि., १. लगातार चूराक भोजन कराएब। २. लातेँ मुक्केँ चुरिकय मारब। मै.

चुरैया-सं., पिटान पड़ैक श्रम। मै.

चुल्हा/चुलहा-सं., पाक (भानस) क हेतु आँच लग-बैक बनाओल घेरावाला साधन। मै.

चुल्हिचन-विशे., वृत्ति विशेष। एकर लक्षण हमर "ठहक्का" व्यंग्यकाव्य मे देखू।

चुल्हा पाछू बैसल बहु सँ
भानस खान जे गप्प करै छथि।
सदिखन मौगी जनिक खेलौना
जग मे चुल्हिचन से कहबै छथि॥

चुलचुलाएब-क्रि., चमड़ाक उपरी सतह पर पसरल रूपेँ रहि रहि कुड़ियबैक इच्छा होएब। मै.

चुलबुलाह-विशे., प्रियलगैवाला चञ्चलता सँ भरल। मै.

चुलबुलिया-विशे., चञ्चलता सँ काज कयनिहार। मै.

चुसकी लेब-क्रि., पेय वस्तु केँ चाय जकाँ स्वादि स्वादि कय कनेक कनेक पीयब। मै.

चुसना-सं., दुधपीबा बच्चा केँ स्तनपानक भ्रम देब। स्तनक भेँटकी जकाँ बनाओल रबरक वस्तु। मै.

चुहचुह करब-क्रि., स्वच्छ, फरिच्छ आ सुन्दरता सँ भरल होएब। मै.

चुहचुहिया-सं., रातुक अन्त मे सब सँ पहिनै बजै-बाला पक्षी। मै.

चुहटब-क्रि., मुह सँ काटि क' रस खींचब। मै.

चुहार-विशे., देखितेँ देखितेँ अलोपित क' दैवाला चोर। मै.

चुहारि-सं., बियाएल महींस केँ ओकरे दूध मे मिला कय पियबैक औषध। मै.

चुहेटब-क्रि., तितली आदि उड़ैवाला कीड़ा द्वारा सूँघ सँ फलक रस चूसब। मै.

चू

चू-सं., विशेष स्थान मे कटबैक हेतु नेन्नाक माथ मे छोड़ल जन्मक केश। मै.

चूअब-क्रि., बुन्नेँ बुन्ने कोनो रसक ससरि खसब। निःसरण होएब। मै.

चू उतरब-क्रि., छोड़ल नेन्नाक जन्मक केश काटब। मै.

चूक-सं., १. अम्मत सिद्ध रस। २. प्रमाद, गलती। मै.

चूकब-क्रि., निशान नहि बैसब, अवसर हूसल आ निष्फल होएब। मै.

चूच-सं., १. पैघ स्तन। २. बच्चाक मुह मे जाइ-वाला स्तनक भेटकी। मै.

चूटा-सं., बाबाजी सभक हाथ मे रहैवाला दू फाल-वाला लोहाक पत्तक अस्त्र। मै.

चूतिया-विशे., अविवेकी, अव्यवस्थित स्वभाववाला। मै.

चूड़ा-सं., माथक अलंकारक। सं. तत्सम

चूड़ामणि-सं., माथक अलंकारक रत्न। सं. तत्सम

चूड़ी-सं., काच वा लाह वा धातुक बनल बीच मे शून्यवाला स्त्री हाथक सौभाग्य सूचक गहना। मै.

चून-सं., लोका, सितुआक हड्डीक आ पाथरक क्षारीय श्वेत भस्म। मै.

चूनन-सं., अंशाक वहुँआक आगु भाग मेही सिकुड़ा कय बनाओल शोभा। मै.

चूप करब-क्रि., कनैक बजैक वा दुःख मे सान्त्वना दय शान्त करब। मै.

चूमब-क्रि., १. हाथ सँ दूरक वस्तु पाएब। २. स्नेह सँ मुह मे मुह भिराएब। मै.

चूर्ण-सं., कोनो वस्तुक मेही गर्दी। मै.

चूर-विशे., १. बिना गर्दी कयल चकुचल मात्र। २. कोनो वस्तु मे मन सँ डूबल। प्रयोग–"जगदीश नव नव नौकरी पबितेँ गौरवेँ चूर रहै छथि।" मै.

चूरन-सं., देखू—"चूर्ण"। सं. तद्भव

चूरब-क्रि., बिना मेही कयनै चकुचब। मै.

चूरा-सं., विशेष विधि सँ धान केँ चुरिकय बना-ओल कोमल खाद्यान्न। मै.

चूरि-सं., देखू—"चूड़ी"। मै.

चूल्हि-सं., देखू—"चुल्हा"। मै.

चूसब-क्रि., रस खींचब। मै.

चूहा-सं., १. रतिचर पक्षी, मूस आ चिलहोरि। मै.

चे

चें-सं., शारीरिक बिकलता आ भय सँ उत्पन्न शिशुक शब्द। मै.

चेक-सं., १. बैंकक धनादेश। २. निरोध। अं. तत्सम
३. काटल माटिक पैघ खण्ड। मै.

चें करब-क्रि., दुर्बल जीवक व्याकुलताक ध्वनि होएब। मै.

चेकला-सं., १. चकला, दूर धरिक भूखण्ड। २. काटल माटिक स्थूल खण्ड। मै.

चेका-सं., काटल माटिक भारी अंश। मै.

चेकी-सं., १. कोदारिक परिमाणक काटल माटि। २. एक सँ संख्याक खिचलिगक एक समूह। मै.

चेकी चढ़ाएब-क्रि., (लाक्षणिक) ईर्ष्या जगाएब, एक पक्ष कें उकसाएब। विरोध करैक प्रेरणा करब। मै.

चेखा कय-अव्यय, मर्म भेदी बात कहि कय। मै.

चेखान-सं., पैघ आ भारी लागि छूटल भूखण्ड। मै.

चेखारब-क्रि., बात खोधि खोधिकय विवरण देब। मै.

चेघार-सं., फटै जोग वस्तु फाटक विस्तार। मै.

चेङ्ना-विशे., छोट छोट बच्चा। प्रयोग–"कार्तिक गणपति दुइ चेङ्ना।" मै.

चेङ्रा-सं., अत्यन्त छोट माछक समूह। मै.

चेङा-सं., अखाद्य माछ विशेष। मै.

चेचरा-सं., छोट माछ विशेष। मै.

चें चें करब-क्रि., १. चिकरब जकाँ अनेक लोकक बाजब। २. पक्षीक छोट बच्चाक ध्वनि करब। मै.

चेटी-विशे., सखी, नाटकीय सहायक पात्र विशेष। सं. तत्सम

चेंड़-सं., आरा सँ फाँक कयल काठ। मै.

चेत-विशे., सावधान, साकांक्ष। मै.

चेत करब-क्रि., चौकस भेल सावधान होएब। प्रयोग–"चेत करू बाबा बिलाइ मारय मटकी।" मै.

चेतन-विशे., ज्ञान बुद्धिवाला लोक। मै.

चेतना-सं., आत्माक अभिन्न शक्ति। देहक संचार बुद्धिक स्फुरण। सं. तत्सम

चेतब-क्रि., पहिलुक अनुभव सँ आगू सतर्क रहब। मै.

चेताएब-क्रि., सावधान करब। सतर्क बनाएब। चुनौती देब। मै.

चेतान-सं., चेतबैक कम। मै.

चेथड़ा-सं., कपड़ा फाड़ल टुकड़ा। मै.

चेथड़ी-विशे., अनेक ठाम फाटल नूआ। मै.

चेथाड़-सं., कोनो वस्तु कें अव्यवस्थित रूपें छिन्न भिन्न करैक कम। मै.

चेथाड़ब-क्रि., बात के तोड़ि तोड़ि स्पष्ट करब। मै.

चेन्ह-सं., परिचयक मूल, कोनो प्रकारक निशान वा अंक। सं. तद्भव

चेन्हा-सं., कोनो वस्तु पर देल विशेष अंक। मै.

चेन-सं., सोन चानीक झिन्झीरवाला गहना। अं. तत्सम

चेप-सं., कोदारिक छओ बराबरि माटिक खण्ड। मै.

चेपा-सं., हाथ सँ फेकै जोग पैघ गोला। मै.

चेफड़ी-सं., फाटल नूआ मे आन कपड़ा जोड़ल टुकड़ा। मै.

चेभाड़-सं., भोजनक द्रव पदार्थ सँ उचित सँ बेसी मुह हाथ मे लेप। मै.

चेभाड़ब-क्रि., अबोध नेन्नाक अज्ञान वश गुँह मूत कें लगरे लेपब। मै.

चें भों करब-क्रि., अनेक नेन्नाक कानब बाजब सँ कोलाहल करब। मै.

चेरा-सं., कुड़हरि सँ फाड़ल जारनि। मै.

चेरि/चेरी-विशे., टहलनी। सं., काठक छोट चेरा (जारनि) टहलनी। मै.

चेरु-सं., मुइल पशुक जाँघक जोड़वाला अंग। मै.

चेलहवा-सं., छोटका माछ विशेष। मै.

चेला-विशे., शिष्य। स्त्री० चेली। मै.

चेष्टगर-विशे., मन सँ शरीर धरि काजक योग्य। मै.

चेष्टा-सं., बुद्धि सँ शरीर धरि गतिशीलता चेतना। सं. तत्सम

चेहरा मोहरा-सं., आकार प्रकार। रूप रंग। हि. तद्भव

चेहरि-सं., कुड़हरिक चीरल नाम चाकर पैघ चेरा। मै.

चेहाएब-क्रि., सूतल अर्थात् निन्न सँ एकाएक चौंकि कय जागब। मै.

चेहेत चेहेत-अव्यय, महिसिक मैथुनक हेतु भैंसा कें बजबैक सोर करैक शब्द। मै.

चै

चैत-सं., चैत्र, चान्द्र मास विशेष। सं. तद्भव

चैतन-सं., चैतन्य । सुधिबुधि । सं. तद्भव
चैतावर-सं., चैत मासक निकटक वातावरण । मै.
चैतावरी-सं., चैत मे गबैक गीतक भास । मै.
चैतार-सं., चैत मासक प्रभाव । मै.
चैती-विशे., चैत मे होइवाला । मै.

चो

चोआ-सं., धूमन सँ चुवाओल द्रव (रस) । मै.
चोकटब-क्रि., मुखाकय सिकुड़ि जाएब । मै.
चोकटलहा-विशे., अत्यन्त चोकटल रूपवाला । मै.
चोकटाह्-विशे., मुखयला पर सिकुड़ि जाइवाला । मै.
चोकटी-विशे., मुखाक' खपटी आ सिकुड़ल । मै.
चोकड़-सं., चालनि सँ चालला पर चिकसक छानल भूसा । मै.
चोकड़ि-विशे., असमय मे मुखा कय सिकुड़ल गुल-गुल आम । मै.
चोख-विशे., १. तेज अस्त्र । २. अमतड़ स्वादवाला खाद्य पदार्थ । मै.
चोखगर-विशे., १. रुचिगर, स्वादिष्ट खाद्य । २. तेजगर अस्त्र । मै.
चोखा-सं., अनेक रस आ मसाला मिलाकय बना-ओल खाना आ चटनी । मै.
चोखाएब-क्रि., शान चढ़ाएब, तेज बनाएब । मै.
चोङरा-सं., १. खण्ड कें जोड़िकय बनाओल खुट्टा । २. लहल चार कें तानैक हेतु नीचाँ देल टोंटा । मै.
चोङा-सं., १. बाँसक फाँकवाला पोर । २. बाबा जी सभक पहिरैक वस्त्र । मै.
चोङाबदल-सं., वेशभूषा आ विचारक हेरफेर । मै.
चोङी-सं., पातर बाँस, पाकल माटि आ द्रव्य बना-ओल फाँकवाला छोट चोङा । मै.
चोंच-सं., पक्षीक लोल, लोल जकाँ बनल वस्तु । मै.
चोंचा-सं., गाछ मे लटका कय घर जकाँ खोंता बनबैवाला पक्षी । बया । मै.
चोट-सं., १. प्रहार । २. उचित बेर । ३. रुचि । प्रयोग—'असावधान मे शत्रु पर चोट करैक चाही । अहाँ बेरा चोट पर पहुँचलौ । आइ बड़ चोटगर भोजन भेटल । मै.
चोट खाएल-विशे., (लाक्षणिक) पूर्वक कटु अनुभव कयल । मै.
चोटगर-विशे., रुचिगर । मै.
चोट मुसुक-विशे., मारिक प्रहार सहन करै मे निपुण तथा अभ्यासवाला । मै.
चोटाएब-क्रि., चोट लगा कय जीबैत छोड़ब । मै.
चोटाएल-विशे., चोट मारि कय कें छोड़ल । मै.
चोटाह्-विशे., चोट लागल वस्तु । मै.
चोटियाएब-क्रि., निरन्तर आघात करब तथा थापड़ें थापड़ पीटब । मै.
चोटी-सं., १. पहाड़क ऊपरवाला शिखर । २. स्त्रीक केशक गूहल जुट्टी । ३. जुट्टीक बनल खोपा । मै.
चोत-सं., एकठाँ कयल स्थूल मल । मै.
चोथब-क्रि., बात कें विस्तार करब आ विषय कें मथब । मै.
चोथू-विशे., बात कें तीरैत व्यर्थ बकैवाला । मै.
चोथौअलि-सं., बात कें व्यर्थ विस्तार करैत विवाद । मै.
चोदब-क्रि., पुरुषक मैथुन क्रिया करब । मै.
चोन्हरा लागब-क्रि., दुर्बलताक द्वारेँ आँखि नै सूझब । मै.
चोन्हा-विशे., आँखि जँतैत बारम्बार पल खसा कय देखैवाला । मै.
चोप-सं., १. ताड़ आ फुलबाँसक पातक डंटी कें थकुचि बहार कयल सोनक सच्छा । २. अनेर बार-म्बार बहराइत बच्छाक लिङ्ग । मै.
चोपदार-विशे., हाथ मे कोररा राखि मेलाक लोक कें व्यवस्थित करैवाला । मै.
चोभब-क्रि., धूलल आमक रस कें कत्तौ छेद कय मुह सँ खींचब तथा एहन क्रिया कत्तौ होएब । मै.
चोभा मारब-क्रि., मुह लगाकय रस खींचैक आनन्द लेब । मै.
चोर-विशे., लोकक आँखि बचाकय चुपचाप कोनो क्रिया कयनिहार । मै.
चोर कांटी-सं., फर कपड़ा मे लागि जाइवाला घास । मै.
चोर कोड़बा-सं., घरक चार मे अलग सँ नीचाँ देल चार तनैवाला कोड़ो । मै.
चोरघट्टी-सं., सरलता सँ चोर सभक अबैक आ नुकाइक स्थान । मै.
चोरचहार-विशे., चोर आ चोरि करैक प्रवृत्ति-वाला । मै.

चोरछल खेलाएब-क्रि., चोरि सँ टाइप सँ छापि छापि माछ मारब । मै.

चोरनी-विशे., चोरि करैवाली । मै.

चोरनुक्का-विशे., चोरानुका कय आन आ पठाओल वस्तु । मै.

चोरचनियाँ-विशे., विवाहक हेतु गेल वरक सासुर मे चतुर्थी धरि बराइतक ओतय सँ नाना प्रकारक पकवानक संग गौरी पूजाक सामग्री तथा चुपचाप वरक खाइक विशेष पदार्थ । ई प्रचलन मैथिल श्रोत्रिय समाज मे अछि । मै.

चोरपोटरी-विशे., वर अथवा कनियाँ के प्रथम यात्रा मे पैतृक सँ गेल नुकाकय खाइक सामग्री विशेष । मै.

चोरबत्ती-सं., टार्च लाइट । मै.

चोरवा-विशे., क्षुद्र चोरि करैक लतिवाला । मै.

चोरहो-सं., चोरि होइक अधिक प्रचलनक समय । मै.

चोरा-विशे., १. चोरि करै मे निपुण, चोरि करैक व्यवसायवाला । २. बिन कारण डाँर धाड़क पीड़ा । मै.

चोराएब-क्रि., लोकक आँखि बचा कय धन लऽ भागब । मै.

चोरानुक्की-सं., धीयापूताक खेल विशेष । मै.

चोरि-सं., चोरवैक चेष्टा । मै.

चोरौआ-विशे., चोरि सँ अर्जित । मै.

चोला-सं., वेश भूषा, रूप रंग, शरीर । मै.

चोलाओ-सं., चूराक बनाओल पोलाओ । मै.

चोलाफेर-सं., रूप रंगक आ देहक परिवर्तन । मै.

चोली-सं., (संस्कृत) चुली । स्त्री देहक सटल आंगी । सं. तद्भव

चौ

चौ (दाँत)-सं., चिबबैवाला दाँतक समूह । मै.

चौअन्नी-सं., मुद्राक चारिम भागक सिक्का । मै.

चौआ-सं., चौ दाँत । मै.

चौआलीस-संख्या, चारि एकाइ चारि दहाइक अंक । मै.

चौए-सं., चौबे, चतुर्वेदी । उपाधि विशेष । मै.

चौक-सं., १. चारू दिशक बाटवाला स्थान । २. शुभ अशुभ कर्म कर्ता कें देबाक द्रव्य । ३. शुभ कर्मक स्थान पर लिखल अरिपन । मै.

चौकठा-सं., बाँहि पर ऊपर दिश पहिरैवाला चौखुट गहना । मै.

चौकठि-सं., केवाड़क लागि रखैवाला सबकटा मोट चारू कात साजल काठ । मै.

चौकठी-सं., चारू खूँट एकरंग चिह्नवाला तास तासक रंग । मै.

चौकड़ी भरब-क्रि., कूदि कूदि टेढ़ गतियें भागब । मै.

चौकड़ी-सं., अनेक लोकक अनेक वार्ता करैक नियमित सम्मेलनक स्थान । मै.

चौकन्ना-विशे., चारू दिश सतर्क होइवाला । मै.

चौकन्हा-विशे., चारि कान्ह पर उठाओल वा तानल रहैवाला, सवारी । वेदी आदि । मै.

चौकन-सं., चौंकि उठैक स्वभाव । मै.

चौकना-विशे., चोकोरी कोठी वर्का मोट डाँट । मै.

चौकनी-(कोठी)-विशे., चारि कोनवाली बनाओल कोठी । मै.

चौक पूरब-क्रि., १. कर्ता आदिक हाथ मे द्रव्य देब । २. अरिपन लिखब । मै.

चौकब-क्रि., अचानक देह सँ मन धरिक स्पन्दन होएब । मै.

चौकस-विशे., सतर्क, जागरूक, तेज, सावधान । मै.

चौका-सं., पवित्र कयल भानस आ भोजनक स्थान । मै.

चौका-विशे., तासक पत्ती चारि अंक । अपन अंकवाला । मै.

चौकाएब-क्रि., स्पन्दन जगाएब । चौकैक अभ्यास लगाएब । मै.

चौकान-सं., अधिक चौकैक प्रकृति । मै.

चौकावर्तन-सं., भानसक स्थान आ बासन पवित्र करैक काज । मै.

चौकिया-सं., चौकीक आकारक स्थान । छोटकी चौकी । मै.

चौकियाएब-क्रि., जोतल खेत कें नाम, मोट, भारी आ कम चाकर काठक पट्टी सँ सैर (समथार) करब । मै.

चौकी-सं., १. काठक पातर पट्टी (तख्ता) सँ बनल नाम चाकर ऊँच सूतैक साधन । २. खेत चौरस करैक पाटी । मै.

चौके-अव्यय, चारि गुने। प्रयोग–"दू चौके आठ।" चौवर। मै.

चौकोन-विशे., एक रंग चारू कोनवाला। मै.

चौकोर-विशे., एके रंगक चारू कोरवाला। मै.

चौखड़ी-सं., नित्य युवक समाजक स्वच्छन्द सम्मेलन स्थान। चौपाड़ि। मै.

चौखण्डी-सं., चारू भाग ओसारावाला घर तथा चारि चारवाला घर एवम् चारू दिश एक रंग घर-वाला आङन आ आलय। मै.

चौखम्भा-विशे., चारि खम्भा पर टिकल घर, मण्डप। मै.

चौखुट-विशे., एके रंग चारू खूँट (कोन) वाला। मै.

चौगिर्द-सं., चारू कात (दिश) क समाजक स्थान। मै.

चौगामा-विशे., चारि गामक अवधिवाला। मै.

चौगेन-विशे., चारू दिशक अवकाशवाला स्थान। मै.

चौगोला-विशे., अनेक दलवाला समाज। मै.

चौघट्टी-विशे., चारू दिश सँ लोकक आवाजाहीवाला स्थान। मै.

चौघड़ी-अव्यय, सदिखन, चारू पहर। मै.

चौघरा-विशे., १. चारिये परिवारक समाजवाला। २. चारू घर सँ घेरल आलय, आङन। मै.

चौचारा-विशे., चारि चारवाला घर। मै.

चौचक-विशे., चारू दिश चौकन्ना होइत रहैवाला। चारूभर साकांक्ष रहनिहार। मै.

चौचक्कू-विशे., सब प्रकारक काज सम्हारै मे व्यग्र। मै.

चौठ-सं., पक्षक चारिम तिथि। मै.

चौठचन्ना-सं., चतुर्थी चन्द्र पूजा (मिथिला पर्व)। मै.

चौठाइ-सं., चारिम भाग। मै.

चौठीचान-सं., भादव शुक्लक चतुर्थी चन्द्र। मै.

चौतहा-विशे., चतुर नारी। मै.

चौतार-विशे., पाछू लागल चारू दिश सँ ककरो खेहार। मै.

चौतारब/चौतार करब-क्रि., चारूभर सँ पाछू लागल खेहारब। मै.

चौतीस-संख्या, चारि एकाइ तीन दहाइक अंक। मै.

चौथ-सं., उत्पादकक राजकीय चारिम भागवाला देय कर। मै.

चौदह-संख्या, चारि एकाइ एक दहाइक अंक। मै.

चौदिश-सं., चारू भरक समूह। मै.

चौधरी-विशे., १. दल वा समाजक प्रमुख। २. सामन्तीक उपाधि। मै.

चौपट-विशे., समाप्त, सत्यानाश, निस्तत्व। मै.

चौपड़ि-सं., जूआ खेलक प्रभेद। मै.

चौपत्ती-विशे., चारि पत्ता भेल आँकुर। मै.

चौपहल-विशे., चारू दिश अनेक चौरस धारीवाला गढ़ल। चारू कात चिक्कन कयल। मै.

चौपहला-विशे., चारूभर अनेक समधरि धारी कयें गढ़लवाला तथा चारूकात चिक्कन चौरसवाला। मै.

चौपाइ-विशे., चारू चरण (पाद) क मिलानवाला छन्द। मै.

चौपाड़ि-सं., १. छोट नेन्ना सभक पढ़ैक नियत स्थान। २. सत्संगक विशेष स्थान। मै.

चौपाला-सं., चौकोन काठक बत्ती सँ बनल सवारी कनियाक विदागरीक शीबिका (डोला)। मै.

चौपेतब-क्रि., कपड़ा आदि कें तहें-तहें चौखुट कयें मोड़ब। मै.

चौपेती-सं., चौपेत कें छिटकै सँ बँचबैले बान्हि रखै-वाला डोरी। मै.

चौपेंट-सं., करघा मे बीनल कपड़ा चौपेतैवाला यन्त्र। मै.

चौफेड़ा-विशे., चारि फेड़वाला (डारिवाला)। चारि मोट शाखा भरल। मै.

चौफेर-सं., व्यर्थ चारू दिश घुमैक प्रक्रिया। मै.

चौबट्टी-सं., चारू दिशक बाटक समूह। मै.

चौबटिया-विशे., चारू दिशक बाटवाला स्थान। मै.

चौबन्हा-सं., चारू दिश सँ बान्हल जाइवाला बन्धन (चारूक माथीक कोड़ी मे देल जाइछ)। मै.

चौवन-संख्या, चारि एकाइ पाँच दहाइक अंक। मै.

चौबारि-विशे., चारू दिश बिना अड़ कयल। सुरक्षा-हीन। चारू दिश सँ उपद्रव प्रभावित। मै.

चौबीस-संख्या, चारि एकाइ दू दहाइवाला अंक। मै.

चौमथ-सं., चारु दिश माथ पुरा कय देवैक योग्य स्थान । मै.

चौमास-विशे., चारि मास धरि बिना फसिलक जोतल राखल खेत । मै.

चौमासल-विशे., बरिसात जोति कोड़ि तैयार खेत । मै.

चौमासा-सं., १. गीतक प्रभेद । २. बरिसातवाला चारु साओन सँ कातिक धरिक मासक समूह । मै.

चौमुख-विशे., चारु भरक मुहवाला दीप आदि । मै.

चौमुहा-विशे., चारु दिशक द्वारवाला घर । मै.

चौमुहानी-सं., चारू दिशक मुह (बाट) वाला स्थान । मै.

चौमुही-विशे., चारु दिश मुहवाला वासन । मै.

चौँर-सं., १. दूर विस्तृत धन खेतीक भूमि । २. चामर । मै.

चौरचन-सं., मिथिलाक पर्व विशेष । चौठचन्द्र । मै.

चौरठ-सं., १. चाउरक पिसान । २. असिद्ध भात । मै.

चौरबी-सं., चाउरक चिकसवाला लड्डू । मै.

चौरभर-विशे., सीसक दाना मे भरल गूदा । मै.

चौरा-सं., १. छोटका बाध । २. छोट तुलसीक चबूतरा । मै.

चौराएब-क्रि., फसिलक दाना मे गूदा भरब । मै.

चौरानबे-संख्या, चारि एकाइ नौ (९) दहाइक अंक । मै.

चौरासि-संख्या, चारि एकाइ आठ दहाइक अंक । मै.

चौरी-सं., विस्तृत धन खेतीवाला भूखण्ड । मै.

चौल-सं., धूर्तता, धूर्ता, हँसी ठट्ठा । मै.

चौलक्खा-विशे., चारि वा अधिक लोकक साक्षी । मै.

चौँसठि-संख्या, चारि एकाइ छओ दहाइक अंक । मै.

चौसरि-सं., चारि लोकक मिलि क' क्रीडा । मै.

चौसार-सं., अधिक लोकक खेलाइक स्थान । मै.

चौहत्तरि-संख्या, चारि एकाइ सात दहाइक अंक । मै.

चौहद्दी-सं., चारु कातक सीमा । उ. तत्सम

छ

छ-सं., तालु स्थानीय चवर्गक दोसर अक्षर । मै.

छः-संख्या, एक अंकक छठम अंक । मै.

छः-अव्यय, महींस परड़ू कें रोमैक आ हँकैक शब्द । मै.

छ अंगुरा-विशे., छ आङुरवाला । मै.

छइ-क्रि., छैक (स्थान व्यक्ति भेदें शब्द भेद) । मै.

छओ-सं., आघात । काटैवाला अस्त्रक प्रहार, चोट । प्रयोग—"एके छओ मे छागरक बलि पड़ैत छै ।" मै.

छओ पाँच बूझब-क्रि., छल प्रपञ्च आ रहस्यक गूढ़ बात जानब । मै.

छक्का-विशे., छ अंकक चिह्नवाला तासक पत्ती । मै.

छक्का छोड़ाएब-क्रि., बारम्बारक उत्प्रेरणा सँ विकल बनाएब । मै.

छक्का पंजा-सं., गूढ़ बातक भेद । मै.

छक्काबीता-सं., मौगियाही खेल विशेष । मै.

छक्के-अव्यय, कोनो अंकक छ गुनें । मै.

छक-सं., द्रव वस्तुक पेय । मै.

छक-सं., नाकक बुट्टा, छोट नाकक गहना । मै.

छकछक-विशे., गरमाएल, तापयुक्त । मै.

छकछकी-सं., कनेक कनेक देहक ताप । मै.

छकट-सं., गाछक डारि पात कटैक कम । मै.

छकटब-क्रि., बड़ल डारि पात कें एक रंगें काटब । मै.

छकड़ब-क्रि., काटल डारि पात कें छोट छोट कय टुकड़ा करब । मै.

छकड़ी-विशे., १. छकनिहार जन । २. छकबैक कलावाला लोक । ३ ६ दाँतवाला माल । मै.

छक द' लागब-क्रि., हृदय मे तथा जीह मे तीव्रताक अनुभव होएब । मै.

छकना-विशे., छाक पुरैक अनुसार पीबैवाला । मै.

छकनी-सं., पकवान छनैक पात्र । झाँझ । चाह आ दूध छनैक मेही भूरवाला कटोरी सन चालनि । मै.

छँकब-क्रि., इच्छानुसार पीयब । मै.

छकब-क्रि., बातें बात मे आ व्यवहार मे ककरो सँ पराजित होएब । मै.

छकरबाजी-सं., ग्राम्य नृत्य (नाच) । मै.

छकरन-सं., काटल डारि पातक ढेर । मै.

छकरा-विशे., हूर लगू बच्छा । मै.

छक सन लागब-क्रि., जीह पर रस केर तेज प्रभाव पड़ब । मन मे बातक तीव्र अनुभव होएब । मै.

छक सँ भक होएब-क्रि., नीक करैत करैत अधलाह भऽ जाएब । मै.

छकाएब-क्रि., धूर्ता मे परास्त करब । बुद्धिक विशेषता मे पछाड़ब । मै.

छकाड़-सं., गाछक छकटल डारि पातक समूह । मै.

छकान छकब-क्रि., बुद्धि आ धूर्तता मे अकाट्य रूपेँ हारि जाएब । मै.

छकौआ-विशे., छकबैक कला मे कुशल । मै.

छकौड़ी-विशे., १. (लाक्षणिक) छऽ कौड़ी मे कीनल जाइवाला । (टोना) २. छकबैक बुद्धि रखैवाला । मै.

छग्यान-सं., अचानक चोट आ असम्भव शोक सँ मस्तिष्कक शून्यता आ बुद्धिक मूढ़ता । मै.

छगरा गोत्र-सं., (लाक्षणिक) छागर पाठी जकाँ अपन पराक भेद नैं रखैक बुद्धि । मै.

छछकार करब/छछकारब-क्रि., अनेर सभरे पानि हेरा कय पिच्छर बनाएब । मै.

छछड़बाएब-क्रि., चिक्कनि माटि घोरि कय घरक माटिवाला अंग केँ पोतबाएब, ओआएब । मै.

छछनाएब-क्रि., १. अतृप्त होएब । २. अनावश्यक थोड़ काज मे अधिक पानि खर्च करब । मै.

छछनाल-विशे., अनेर अधिक पानि हेरपला सँ गील बनला सँ स्थान गील । मै.

छछलब-क्रि., बिना अपन अन्तरक प्रयासेँ ससरब । मै.

छछलाह-विशे., वेग सँ स्वतः ससरि जाइवाला तथा बिना प्रयासेँ नीचाँ दिस अपनै अपनै ससरि जाइ योग्य । मै.

छछार-सं., माटि घोरल पानि सँ घरक पोत । मै.

छछारब-क्रि., माटि घोरल पानि सँ घर केँ पोतब । मै.

छछारी काटब-क्रि., १. भूईं पर बैसले बैसल पोन घुसका'कैत चलब । २. (लाक्षणिक) बिना पानियेँ पोन भूमि पर रगड़ि कय मल पोछि क' शौच करब । मै.

छज्जा-सं., १. ताड़ आ खज्जूरक नाम नाम पात । २. कोठा मे लटकाक पानि रोकैक हेतु देल पातर छप्पर । मै.

छज्जी-सं., अस्थायी रूपक छाया करैले देल ताड़ खजूर पातक छाजन । मै.

छजनी-सं., गाछ आ पहाड़क सब सँ ऊपरका भाग चोटी । मै.

छजब-क्रि., मेल खाएब, कर्तव्यक औचित्य होएब । अनुकूल बनब । मै.

छँट्टा-विशे., १. छाँटल । फरिच्छ बनाओल । २. समाज मे अधलाह दृष्टि सँ बीछल । मै.

छट्ठम-विशे., छऽ संख्यावाला । मै.

छट्टू-विशे., गुप्त ज्ञान भरल । कोनहुना फाँस मे नैं पड़ैवाला । मै.

छटकबाज-विशे., कोनो प्राकरेँ पकड़ मे नैं अबैवाला । बारम्बार हाथ सँ बहार भऽ जाइवाला । मै.

छटगर-विशे., देखार होइ जोग, तरुणताक आभासवाला । मै.

छट छट करब-क्रि., कड़ा रहैक कारणे हाथ सँ नहि पिचयवा जोग । असिद्ध बनल अन्न । २. तेजीक द्वारेँ अधिक गतिशील रहब । मै.

छट द' उठब-क्रि., किछा होइक द्वारेँ हाथ सँ नहि पिचा क' छिटकि जाइवाला । मै.

छँटनी-सं., बीछि कय बहुत मे हटाएब । मै.

छटपट करब-क्रि., शीघ्रताक हेतु व्यग्र रहब । मै.

छटपटाएब-क्रि., व्यग्रता सँ चञ्चल होएब । मै.

छटपटाह/छटपटिया-विशे., कोनो काज केँ सम्पन्न करैले अधैर्य सँ चञ्चल रहनिहार । मै.

छटपटी-सं., काज पूरबैक शीघ्रता भरल चञ्चलता । मै.

छटा-सं., आकृतिक सौन्दर्य, छवि, आभा । सं. तत्सम

छँटाई-सं., १. नीक अधला बीछि कय अलग करैक कम । २. अस्त्र सँ कटैत छँटैक कम । मै.

छँटाओन-सं., १. अन्न स्वच्छ करैक प्रक्रिया । २. छँटबैक कम । ३. कार्यकर्ताक बहिष्कार । मै.

छँटाक-सं., प्राचीन तौलक निम्नतम सोलहम भाग । मै.

छटाकसन-अव्यय, अलक्षित रूपेँ । मै.

छटाछटि-सं., १. (लाक्षणिक) अत्यन्त चञ्चलता । २. कठोर प्रन्थिक चलन । मै.

छटान-सं., बहुसंख्यक सँ किछु केँ हटबैक कम । मै.

छटाबक-विशे., अपन छविछटा सँ विलक्षणता भरल । मै.

छँटुआ-विशे., नीक छाँटि लेला पर बाँचल अधलाह वस्तु । मै.

छँटैया-सं., देखू—"छँटनी" । मै.

छट्ठी-सं., जनम सँ छठमा दिन पर बच्चाक होम' वाला विधि । छठियार । मै.

छट्ठीक दूध मन पाड़ब-सं., (लाक्षणिक) हीन हालति मे पहुँचा देब । प्रयोग—"बेसी फन फन करबह तँ छट्ठीक दूध मोन पाड़ि देबह । मै.

छठम-विशे., देखू—"छठुम" । मै.

छठमी-विशे., छठ संख्या मे रहैवाली स्त्री । मै.

छठि-सं., १. कातिक शुक्ल षष्ठी तिथि मे सूर्यक विशेष उपासना पर्व । २. मैथिल विवाह पञ्जी प्रबन्ध सँ विचारल विवाहक प्रकरण मे कन्या वरक बीच छठम बाढ़ीक सम्बन्ध । मै.

छठियार-सं., देखू—"छट्ठी" । मै.

छठियारी-विशे., छठियारक उपयोगी, देय । मै.

छड़-सं., गोल पातर आ नाम काठ वा लोहक नमहर डंटा । मै.

छड़क्का-सं., छड़क आकार प्रकारक नमहर जीवित गाछ वृक्षक रूप । मै.

छड़गर-विशे., बेसी नाम आ पातर । मै.

छड़हा-विशे., छड़ जकाँ नाम गाछ । कुशियार । मै.

छड़ी ममरखा-सं., बाल रोगक जड़ी विशेष । मै.

छतर-सं., तात्कालिक कृत्रिम छाया । मै.

छत्ता-सं., रौद पानि सँ बचबैवाला गोलाकार हथ-लग्गू छत । मै.

छत्ती-सं., स्त्री जातिक उपयोगी छत्ता । मै.

छत्तीस-संख्या, छउ एकाइ तीन दहाइक अंक । मै.

छत्र-सं., रौद वर्षा सँ बचै लेल तानल विशेष साधन । राजचिह्न । छत्ता । सं. तत्सम

छतनार-विशे., छत्ता जकाँ तानि पसरल डारि पात वाला गाछ । मै.

छतरी-सं., रौद पानि सँ बचैक लेल उपरक कृत्रिम अस्थायी आवरण । मै.

छति-सं., क्षति । हानि । सं. तद्भव

छतिया-सं., अधम प्रयोगक छाती । मै.

छतियाएब-क्रि., छाती सँ लगाएब आ सटाएब । मै.

छतिवन-सं., वनस्पति विशेष । मै.

छतीस-सं., जड़ी विशेष । मै.

छद्म-सं., छल । कपट । मै.

छदाम-सं., पुरनका मुद्राक लघुतम रूप । मै.

छन्द-सं., १. वेद । २. मात्राक नियम सँ बैसाओल स्वर । ३. विचार, ध्येय । सं. तत्सम

छन्न द' उठब-क्रि., धीपल बासन मे पानि पड़ने ध्वनि विशेष होएब । शुष्क होएब । मै.

छन्ना-सं., छितनाक छोट सँ छोट बासन । मै.

छन्नी-सं., १. बीच मे गहींर जकाँ छोट पसरल बासन । २. बहैत पानि मे माछ बझबैले लगाओल विशेष बीनल साधन । मै.

छन-सं., १. क्षण । २. स्त्रीगणक गहना विशेष । मै.

छनकट-विशे., विश्वास करैक अयोग्य । विश्वास-घाती । स्त्री० छनकटाहि । मै.

छनकब-क्रि., हाथक विशेष मुद्रा सँ सूप द्वारा मिलल जुलल अन्न केँ पृथक करब । मै.

छनका-सं., १. अनेक औषध मिलाओल गर्म पेय । २. खेत केँ पटबै मे पानिक गति केँ चढ़बैक अस्थायी क्यारी । मै.

छनगर-विशे., समय रखैवाला । ढेरी व्यर्थ समय बितबैवाला । मै.

छनगल-विशे., १. अतृप्त, भूखल । २. पूर्वानुभव सँ आतङ्कित । मै.

छनगा-सं., १. जड़ी बूटीक गरम कड़हा । औषध । २. अतृप्त रहैक अभ्यासवाला । मै.

छनछन बीतब-क्रि., अन्देशा भरल प्रतीक्षा मे एक एक क्षणक विशालताक अनुभव होएब । मै.

छनछनाएब-क्रि., १. लगातार पकवान आ तरकारी तरैक छन छन शब्द करब । २. कटल वा छीलल अंग मे उपरें उपर तीव्र वेदना होएब । मै.

छनछनी-सं., १. कोनो वस्तु तेल मे तरैक शब्द । २. कमसम छीलल आ कटल पर स्वतः वा कोनो प्रकारें उपरक तीव्र वेदना । मै.

छनठा-विशे., छानि कउ चरैले छोड़ल पशु । मै.

छनन मनन-सं., तेल मे विशेष रूपें तरकारी तरैक विन्यास । मै.

छनना-सं., द्रव पदार्थ सँ दूषित वस्तु वा पकवान आदि छनैक साधन (पात्र) । मै.

छनगी-सं., छनैवाला छोट वस्तु । मै.

छन मे छनाक-अव्यय, एकै छन मे स्थितिक अप्रत्याहृ रूपक परिवर्तन । फेरा । मै.

छन होएब-क्रि., चेतना शून्य होएब, पीड़ा सँ व्यामोह होएब । मै.

छनाइ-सं., १. छनैक प्रक्रिया । २. द्रव पदार्थ सँ स्थूल वस्तु बहार करैक क्रम । मै.

छनाक द' उठब-क्रि., धीपल तेल वा घी मे सरस वस्तुक पड़ला सँ शब्द होएब । मै.

छनि-क्रि., परोक्ष वस्तुक परोक्ष व्यक्ति वा समक्षक लोक लग होइक वर्तमान क्रिया । मै.

छनुआँ-विशे., तेल वा घी मे तरल छानल खाद्य । मै.

छनैक-अव्यय, एकै छन मे भेल । तुरन्त । मै.

छनौटा-विशे., १. छानि क' धरैक अभ्यासवाला माल । २. पकवान आ तरकारी छनलाक उपरान्त बँचल घी वा तेल । मै.

छनौआ-विशे., तेल घी मे छनै योग्य खाद्य । मै.

छप्पन-संख्या, छ एकाइ पाँच दहाइक अंक । मै.

छप्पय-सं., भाषा काव्यक प्राचीन छन्द । मै.

छप्पर-सं., रौद पानि सँ बँचैले खड़ पातक छायावाला घर । मै.

छप्पर छप्पर-अव्यय, पानि मे चलला सँ पैरक धपाड़क शब्द । मै.

छप्पा देब-क्रि., १. अपन घर द्वार मे शुभ सूचक सधवा द्वारा हाथक चिह्न देब । २. गाड़ी आदि वस्त्र पर विशेष चिह्न करब । मै.

छपकब-क्रि., अपना कें नुकबैक चेष्टा करब । मै.

छपकाएब-क्रि., कोनो वस्तु कें नुकबैक चेष्टा करब । मै.

छपकाह-विशे., बड़ नीचाँ अर्थात् निहुरि कय जाइ अबैवाला घर । मै.

छपकी-विशे., नुकाइक जोकर स्थान । मै.

छपकुनियाँ काटब-क्रि., नुकाइक क्रम मे अत्यन्त छोट बनि कय चलब । मै.

छपकू-विशे., हरदम निपत्ता रहैवाला नुकाएल रहैवाला । मै.

छपकौआ-विशे., नुका क' अर्बै जोग । मै.

छपछप-अव्यय, १. पानि पर हाथ पैर मारला सँ उठल पानिक ध्वनि । २. जोंप धरि कपड़ा डूबैवाला पानि । ३. कैंची आदि अस्त्र सब सँ शीघ्र कटैवाला । मै.

छपटब-क्रि., वृक्षक अनावश्यक पसरल डारि पात काटि झारब । मै.

छपड़ब-क्रि., थोड़ पानि सगरे पसरब । मै.

छप द' डूबब-क्रि., अलक्षित रूपें पानि मे लीन भ' जाएब । मै.

छपन-सं., बात कें नुकबैक यत्न । मै.

छपना-सं., चित्र छापैक साँच । मै.

छपब-क्रि., १. तुलनाक क्रम मे मेल खाएब । २. एकक दोसरा मे लीन भ' जाएब । ३. यन्त्र द्वारा पुस्तकक अक्षर निखारल जाएब । ४. व्याप्त होएब । मै.

छपाइ-सं., पुस्तक छपैक क्रम तथा पारिश्रमिक । मै.

छपाएब-क्रि., मुद्रित करबैक क्रिया करब । मै.

छपाओन-सं., १. छपैक कार्यक्रम । २. छपैक बोनि । मै.

छपाक सन-अव्यय, देखू—''छपाक द' '' । मै.

छपाट-सं., छपटि क' राखल । मै.

छपाटब-क्रि., साधारण रूपें गाछ कें डारि पात झारब । मै.

छपाठी-विशे., झारि काटि क' जमा कयल डारि पात । मै.

छपित-विशे., नुकाएल, प्रकाशित, मेल खाएल । मै.

छपुआ-विशे., चित्र छापि कय रंगल वस्त्र । मै.

छपोछप-अव्यय, वासनक ओंटक अनुसार कानोकान । मै.

छपौनी-सं., छपबैक क्रम । छपैक कार्य । मै.

छबर छबर-अव्यय, नेन्ना भुटकाक चञ्चलता सँ सतत् अंगक चालन । मै.

छबरा-सं., माछक छोट बच्चाक समूह । मै.

छबाएब-क्रि., घर कें खड़ सँ छराएब । (स्थान भेदें शब्द भेद ।) मै.

छबाछड़ि-सं., कोनो वस्तुक आग्रह सँ लैक प्रवृत्ति । मै.

छबि-सं., अंग विन्यास, आकृति, आभा आ लावण्य । सं. तत्सम

छबीस-संख्या, छ एकाइ दू दहाइक अंक । मै.

छबेना-सं., ताड़ी चुबैक स्थान कें छीलैवाला अस्त्र । मै.

छमक-सं., चञ्चलता सँ कलापूर्ण चलन । मै.

छमकब-क्रि., अनका प्रिय लगैक द्वारें चञ्चलता सँ अंग चालन करब। मै.

छमका-विशे., (नेन्नाक हेतु) चञ्चलता प्रकृति द्वारें अधिक अंग चलवैवाला। स्त्री० छमकी। मै.

छमकाह-विशे., बीच बीच मे अनेर छमकि उठैवाला। स्त्री० छमकाही। मै.

छमकाएब-क्रि., बल सँ चञ्चल बनाएब। नीक वेश भूषा बना कें घुमाएब। लोकक बीच प्रदर्शन कराएब। मै.

छमकी-सं., अनका प्रदर्शन करबै ले अपन सजाओट। मै.

छमछम करब-क्रि., नीक वस्त्र आ गहना सँ अपना कें सजा कय लोक कें देखबै ले चञ्चलता सँ घुमब। मै.

छमसिया-विशे., छ' मासक बच्चा। मै.

छमाही-सं., छ' मासक मान।
विशे., छमास पर होम' वाला। मै.

छय-सं., क्षय, विनाश। सं. तद्भव

छर्र द'-अव्यय, अत्यन्त वेग सँ बहार होइत। मै.

छर-सं., सोन आ चानीक सिकरी मे गूहल तारक लानी। मै.

छरका-विशे., अत्यन्त पातर अधिक नाम उपर उठल। मै.

छरकी-विशे., नीचाँ ससल अधिक नाम कम चाकर। मै.

छरछर बहब-क्रि., नहि रोकै जोग वेग सँ बहब। मै.

छरनि-सं., घरक मुख्य छार कें उपर अड़बैक हेतु सचकत आ मोट खढ़क बिछाओन। मै.

छरनौती-विशे., घर छारैवाला विशेष बाती, लड़ आ जौड़। मै.

छरपटि छूटब-क्रि., अन्देशा भरल तीव्र व्यग्रता सँ व्याकुल होएब। मै.

छरपब-क्रि., कूदि कूदि भूमि नापब। मै.

छरपा-विशे., छरपैक अभ्यासवाला। मै.

छरपा छरपी-सं., परस्पर छरपैक प्रतियोगिताक खेल। मै.

छरपान-सं., छरपैक विशेष प्रक्रिया। मै.

छररा-सं., गम्भीर चोट नहि करैवाला बन्दूकक गोलीक समूह। मै.

छररा छोरब-क्रि., तत्वहीन आ मिथ्या गप हाँकब। मै.

छरहर-विशे., अपन रूप रंग आ देह दशाक द्वारें स्वतः सुन्दर तथा नवयुवक, ने मोट आ ने पातर। मै.

छरहा-विशे., एक मूड़ीवाला नमहर पातर। मै.

छराइ-सं., १. कोनो वस्तु कें छारैक (आवरण दैक) निरन्तर कार्य। २. छारैक पारिश्रमिक। मै.

छराएब-क्रि., देखू—"छवाएब"। मै.

छराओन-सं., घर छरबैक योनि या कम। मै.

छरान-सं., घर छारैक रूप। मै.

छरुआ-विशे., दोहरी आवरण पड़ल। मै.

छरेछोट-विशे., अपना संग अनको सम्हारैवाला। मै.

छल्ला पड़ब-क्रि., अंगक उपरी चमड़ा उखड़ि जाएब। मै.

छल्ली लगाएब-क्रि., एक पर एक गेंटि क' राखब। मै.

छलिहगर-विशे., छाल्ही सँ भरल। मै.

छल-सं., करैक किछु कहैक किछु बात। क्रि., रहए (भूतकाल)। मै.

छलओवार-सं., दूर धरि देहक चमड़ा बेलागि होएब। मै.

छलकल-विशे., उपर सँ छाटल छाल्ही कटल। मै.

छलकब-क्रि., भरल बासन सँ कनेको कम्पन भेला पर बहार भ' जायब। मै.

छलका-विशे., (लाक्षणिक) कोनो प्रसन्नता पर आवश्यकता सँ अधिक चञ्चल होम'वाला। मै.

छलछल-विशे., स्वतः नोर उमड़ि पड़ल। मै.

छलछलाएब-क्रि., चुपचाप आँखि मे नोरक प्रकट होएब। मै.

छल द'-अव्यय, अनायास छलछल जकाँ। मै.

छलना-सं., छल, कपट। मै.

छलनी-सं., अनलेख छेद आ चाओ। मै.

छलब-क्रि., कपट करब। लोक कें ठकब। मै.

छलमल करब-क्रि., तुर्यक द्वारें अधिक चञ्चल बनब। मै.

छलरी-सं., मृत जीवक छोड़ाओल सरस चमड़ा। मै.

छलाएब-क्रि., ठकाएब, ठकल जाएब। मै.

छलाक-विशे., १. छल करै मे कुशल। २. बेलागि भ' क' उछलैवाला। मै.

छलाङ मारब-क्रि., ऊँच स्थान के (सँ) कूदि जाएब। उँचेँ कूदि क' भागब। दूर सँ कूदब। मै.

छलिया-विशे., कपट व्यवहार मे चतुर। मै.

छलियाएब-क्रि., ढंग सँ वा छल्ली लगाकय राखब। मै.

छली-विशे., छल करैक बुद्धिवाला। मै.

छहू-सं., पेट मे तीन रेखाक स्थूल मोड़। मै.

छहछह-अव्यय, पानि पर छहलैत जकाँ छोट जीवक ससरब। मै.

छहर-सं., बाढ़ि पानि कें रोकैवाला बान्ह। मै.

छहरदिवाली-सं., आलयक अन्तर कोनो जीव कें अबैक अवरोधक भीत। मै.

छहर महर-सं., अभावो मे उत्साह आ उद्गार एवं उदारता सँ खर्च। मै.

छहराएब-क्रि., छाहरि मे बैसि विश्राम करब। मै.

छहलब-क्रि., अनायास स्नेह द्रवक सहायता सँ वेगेँ छळलि जाएब। मै.

छहलाह-विशे., चिक्कन, स्निग्ध आ ढलान रहैक द्वारेँ अनायास वेग सँ छळलि जाइवाला स्थान। मै.

छहो-सं., छोट माछ विशेष। मै.

छहोछित्त-विशे., अनेक टुकड़ी टुकड़ी भ' क' छिड़ियाएल। मै.

छहोरा-सं., स्थूल खजूर पिण्ड। सुखाएल फल। मै.

छा

छाइ-सं., पथरकोइलाक छाउर। मै.

छाँइल-विशे., (केवल आमिक हेतु) छान्ल, मिझाएल। मै.

छाउर-सं., राख, भस्म, जरल वस्तुक रूपान्तर। मै.

छाएब-क्रि., पसरब, पसारब, व्यापब, व्याप्त होएब। मै.

छाँक-सं., किछु पीबैक तृप्ति। मै.

छाँकनि-सं., बारम्बार पीबैक वस्तुक सेवन। मै.

छाँकब-क्रि., पीबैक वस्तुक तृप्ति सँ पीयब तथा पेय वस्तुक प्रस्तुतीकरण करब। मै.

छाकी-सं., तृप्ति होएब धरि निरन्तर पीयब आ पियाएब। मै.

छागर-सं., बकरीक पुरुष बच्चा। मै.

छाँछ-सं., उत्थर, पसरल पैघ दही पौरैक बासन। एकर छोट रूप छाँछी कहबैछ। मै.

छाजन-सं., १. पहिरै ओढ़ैक तथा देह झँपैक वस्त्र। २. घरक छार। मै.

छाँट-सं., वमन, बोकार। मै.

छाँट-सं., १. धान सँ चाउर कें फरिच्छ करैक प्रक्रिया। २. बहुत सँ अधलाह वस्तुक निकास। मै.

छाँटनि-सं., चाउर कें अधिक फरिच्छ बनबैक हेतु विशेष कूटैक प्रयास। मै.

छाँटब-क्रि., १. बहुत सँ अधलाह कें बीछि क' अलग करब। २. अन्न कें चिक्कन करैले अधिक कूटब। मै.

छाँटि-विशे., अलग कयल निसरल वस्तु विकरी सँ बाँचल वस्तु। मै.

छाड़ब-क्रि., त्यागब, एक कें छोड़ि दोसर धारण करब। मै.

छाड़ीबारी-विशे., निरसि क' त्यागल नूआ आदि। मै.

छात्र-सं., शिष्य। स्त्री० छात्री। सं. तत्सम

छात-सं., कोठाक उपरका भाग। मै.

छाता-सं., रौद पानि सँ बँचबैक साधन। मै.

छाती-सं., वक्षःस्थल, हृदय। (लाक्षणिक) स्तन। मै.

छादन-सं., आवरण। सं. तत्सम

छाम्ही-सं., घरक उपरका भाग। मै.

छान-सं., पशुक दुहु पैरक बन्धन। मै.

छान तोड़ब-क्रि., १. (लाक्षणिक) उत्कट इच्छाक द्वारेँ नियम भङ्ग करै पर लागब। २. बन्धन तोड़ि क' पड़ाइ पर रहब। मै.

छानब-क्रि., दू पैर कें बान्हि पशु कें गति रुद्ध बनाएब। मै.

छानि मारब-क्रि., यत्र तत्र ताकि हारब। मै.

छानी-सं., उपरक भाग, शिखर। मै.

छाप-सं., चिह्न, अनुकृति, एकरूपता। मै.

छापब-क्रि., १. मुद्रित करब। २. वैरिकय अधिकार राखब। ३. चित्रित करब। ४. चिह्न देब। छापा निकारब। मै.

छावर छूपर-विशे., अनेक ठाँ थोड़ थोड़ पानि। प्रयोग—"चमराक डाबर डूबर छावर छूपर पनियाँ" —जटा जटिन। मै.

छापा-विशे., यन्त्र आ काँटा सँ निकालल पुस्तक आदिक अक्षर आदि। मै.

छापा करब-क्रि., कोनो वस्तुक साँच द्वारा अंकित करब। मै.

छापाखाना-सं., छापा करैक यन्त्रशाला । मै.

छापी-सं., चित्र, फोटो, तसवीर । मै.

छाबा-सं., ठेहुन सँ नीचाँ पुट्ठी सँ उपर पाछू दिसक गुदगर अंग । मै.

छाया-सं., कोनो वस्तुक छाँह । प्रकाश शून्य सम्पूर्ण रूपक चिह्न । मै.

छार-सं., १. क्षार । २. घर पर छारैक हेतु खड़क पसार । मै.

छारतक-विशे., घोड़ाक चालि (दौड़) क प्रभेद । मै.

छारन-सं., नदीक बीच दीयर भेला सँ एक दिश प्रवाहहीन धार । मै.

छारब-क्रि., खड़ आदि सँ घरक छादन करब । मै.

छारा-सं., चूड़ जकाँ पातर पातर अनेक टाक संग एक काढ़ा जकाँ गहना । मै.

छारी-सं., १. सतत् छारैक क्रम । २. (विशे.) छारल पुरान कपड़ा । मै.

छारीबारी-विशे., त्यागल पुरान वस्तु कें अनका देबा योग्य बना निहुछल । मै.

छाल्ही-सं., औंटल दूधक उपर जमल तत्ववाला परत । मलाइ । मक्खन । मै.

छाल-सं., जीवक चमड़ाक उपरी भाग । मै.

छाँह-सं., १. छाया । २. रूप आ प्रकृतिक अनुकरण । ३. प्रकाशरोधक वस्तु । मै.

छाहब-क्रि., १. मिलल अनेक वस्तु कें अलग करब । २. चिह्न लगाएब । मै.

छाहरि-सं., गाछ पर सभक सघन छाया । मै.

छाँहिबाँहि-अव्यय, यत्र कुत्र, अनठेकान । मै.

छाही-सं., छाया बनबैक उपाय, वस्तु । मै.

छि

छि:-अव्यय, जुगुप्सा वा निन्दाक ध्वनि । मै.

छिक्का-सं., मुह आ नाक देने एक संग शब्द सहित वेग सँ वाष्पक निकास । मै.

छिकान-सं., अधिक आ उच्च स्वरे छीकैक शब्द । मै.

छिकार-विशे., उपयोग सँ बचलहा । मै.

छिकान छीकब-क्रि., कोनो आरम्भ मे छीकिक अशुभ करब । मै.

छिकास लागब-क्रि., छिक्काक वेग होएब । मै.

छिगरीतान-विशे., अनेक बात आ काजक सम्पादनक व्यग्रता सँ आकुल । मै.

छिच्चा-सं., आधा सिञ्चन प्रक्रिया । मै.

छिचब-क्रि., सिंचन करब । मै.

छिछराह-विशे., बातक अव्यवस्थावाला । मै.

छिछरी घटिया उठब-क्रि., कोनो वस्तुक आवश्यकता द्वारेँ व्याकुलता होएब । मै.

छिछियाएब-क्रि., व्यग्रता सँ सब ठरि बौआएब । मै.

छिछोर-विशे., खेलक्कर, बाल बुद्धिवाला । मै.

छिट्टा-सं., १. छितनास आ महीर बाँसक बीनल पैंच बासन । २. विशे.–कत्तो कत्तो, पातर छीटल बीआ । मै.

छिटक-विशे., एवं क्रि., आँखि बचा क' ल' जाइवाला । प्रयोग–"आँखिक मटक लय छिटक ।" मै.

छिटकनी-सं., केवाड़ कें भीतर सँ बन्न करैक लोहक पेंच । मै.

छिटकब-क्रि., १. चोरा क' भागब । २. अप्रत्याशित भ' क' उछलि जाएब । मै.

छिटका-सं., उड़ि उड़ि क' पड़ैवाला बिन्दु । मै.

छिटकाएब-क्रि., उड़ाएब, भगाएब, चलाएब, खोलब । मै.

छिटकाह-विशे., अनायास गतिवाला । चारू दिश अनेर उड़ैवाला, बेर पर नुका रहैवाला । मै.

छिटकिल्ली-सं., छिटकोला सँ खूजैवाला किल्ली । मै.

छिटकी-सं., १. केवाड़ खिड़की बन्न करैक हेतु काठक घुमबैवाला कील । २. पैर मे पैरक वेग द' क' खसाएब । मै.

छिड़का-सं., पातर बुन्नक सिञ्चन । मै.

छिड़काएब-क्रि., पानि आदि छींटब । मै.

छिड़काह-विशे., स्वयं छिड़िया जाइवाला । मै.

छिड़की-सं., छींटैक प्रक्रम । मै.

छिड़ब-क्रि., बझब, पसरब । (स्थान भेदें शब्द भेद) मै.

छितनार/छितनाल-विशे., मुह पसरल पेन साँकरवाला बासन । मै.

छितनाह-विशे., उपर मुहक बेशी फैलगर । मै.

छितनी-सं., उपर फैलगर नीचाँ साँकर छोट बासन । मै.

छितरब-क्रि., छिटकल जकाँ पसरब । मै.

छितरल-विशे., मुह दिश बेशी फैलल । मै.

छितराएब-क्रि., चारू दिश छीटल होएब । मै.

छितराह-विशे., चारू दिश पसरल होइवाला । मै.

छित्तिर बित्तिर/छिती बित्ती-विशे., छिटल एवं छिरियाएल । मै.

छिते छं-क्रि., छीके, अछिये । (स्थान भेदें शब्द भेद) मै.

छिद्र-सं., भूर, छेद । सं. तत्सम

छिद्की-सं., बिना आर पारक छेद । मै.

छिद्राह-विशे., छेद जकाँ बनल खोधर । मै.

छिन-सं., छन, क्षण । मै.

छिनगब-क्रि., अकस्मात् क्रोध भ' उठब । मै.

छिनता-सं., क्षीणता, रोग विशेष । मै.

छिनता ताकब-क्रि., छिद्रान्वेषण करब । दुर्बलताक अड़ि ताकब । मै.

छिनभिन करब-क्रि., टुकड़ी टुकड़ी कय दूरि करब । मै.

छिनरपन-सं., काम वासनावाला चालि । मै.

छिनरा-विशे., वासना वृत्ति सँ अधम । मै.

छिनाएब-क्रि., छीनल भ' जाएब । मै.

छिनार-विशे., अधिक मैथुन प्रवृत्तिवाला । स्त्री० छिनारि । मै.

छिनाह-विशे., चारि कोन मे एक कोन चकल । चारूकोन नहि मिलल । मै.

छिनुआ-विशे., छीरि क' आनल । मै.

छिप्पी-सं., सब सँ आगू उपरका भाग । मै.

छिपकब-क्रि., नुकाएब । मै.

छिपकान-सं., गुप्त भ' क' रहैक चेष्टा । मै.

छिपकाह-विशे., १. नुका रहैवाला । २. चोरबैवाला । मै.

छिपगर-विशे., अधिक नमहर उपरक भागवाला । मै.

छिपब-क्रि., १. अपना दिश खींचब । २. लोकक आँखि बचा क' चोराएब । ३. नुकाइक चेष्टा करब । मै.

छिपली-सं., छोट थारी । मै.

छिपाएब-क्रि., नुकाएब । मै.

छिपाठ-विशे., छिप्पी दिशक बाँस वा लकड़ी । मै.

छिपाठी-विशे., आगू भागक लकड़ी वा बाँसक वस्तु । मै.

छिपान-सं., गुप्त रहैक विधि । मै.

छिपार-विशे., चुप्पेचाप पार क' लैवाला । प्रयोग–"चोरक धन छिपार खाय ।" मै.

छिम्मड़ि-सं., अन्नक दानाक कोश । केराक एक प्रति । मै.

छिम्मी-सं., केराक एक एक रूप । मै.

छिमड़ा-सं., काँच छिम्मड़ि । मै.

छिमरी-सं., अजोह केराक छिम्मड़ि । मै.

छिया-सं., घृणा व्यञ्जक शब्द । मै.

छिरक-सं., देखू—"छिच्चा" । मै.

छिरकन-सं., सिञ्चन । मै.

छिरहुरा खेलाएब-क्रि., उपेक्षा रखैक प्रवृत्ति राखब, जिम्मेदारी लैयो के ध्यान नै देब । मै.

छिरियाएब-क्रि., १. चारू दिश छिटब । (हि.) बिखेरब । प्रयोग–"दाई लावा छिरियाउ, बाबू बीछि बीछि खाउ । विवाह लोक गीत ।" २. अनुरोध पूर्वक विरोध करब । उपरें उपर विरोध करब । मै.

छिरियाह-विशे., १. स्वतः सबठाँ छीटल होइवाला । २. बात बात मे रूसैक रूपें विरोध करैवाला बच्चा । मै.

छिरियँनी-सं., छिरियाइक स्वभाव । मै.

छिल्ला-विशे., कोनो वस्तुक छिलला सँ एकठाँ कयल पात । मै.

छिलक-सं., कानोकान बासन भरल रहैक कारणें उपर सँ उछलि खसैक रूप । मै.

छिलकन-सं., बासनक उपर सँ उछलि खसब । मै.

छिलकब-क्रि., बासनक उपर सँ द्रवणशील वस्तुक उछलब । मै.

छिलका-सं., कोनो वस्तुक उपरक छाल । मै.

छिलकोइआ-क्रि., गूदा बहार कयला पर बिन टूटल खोइचा । मै.

छिलना-सं., छीलैक साधन । मै.

छिलमिली छूटब-क्रि., कोनो वस्तुक व्यग्रता सँ अकस्मात् अशान्त होएब । मै.

छिलाइ-सं., छीलैक श्रम, छीलैक बोनि । मै.

छिलाएब-क्रि., छीलैक काज कराएब । मै.

छिलान-सं., छीलैक प्रक्रिया । मै.

छिलुआ-विशे., छीलि कय आनल । छीलि कय चिक्कन कयल । मै.

छी

छी-क्रि., (रहब) अपना हेतु त बत्पादर मे अर्थात् प्रथम एवं उत्तम पुरुषक वर्तमान क्रिया। मै.

छीआ-अव्यय, देखू—"छिया"। मै.

छींक-सं., नाक मुह मिलल द्वारा हठात् वाष्प निकासक ध्वनि। मै.

छींकब-क्रि., नाक मुह बाटेँ अचानक वेग सँ वाष्प निकास होएब। मै.

छींथा-सं., देखू—"छिन्था"। मै.

छीछा लेदर करब-क्रि., अनुचित आलोचना करब। खानी दोषे टा उघारब। मै.

छीज-सं., नीचाँ खसला पर विनाश। मै.

छीजब-क्रि. अपन स्थान सँ नीचाँ आबि प्रभावहीन भ' जाएब। मै.

छींट-विशे., रंग विरंग छापीवाला वस्त्र। मै.

छीट-विशे., तौल आ नाप सँ थोड़ बचल। मै.

छीटन-सं., छीटैक क्रिया सँ विकिरण। मै.

छीटब-क्रि., चारू दिश पदार्थ केँ छोड़ब, विखेरब। मै.

छीटा कसब-क्रि., (लाक्षणिक) बातचीत मे कोनो विषय मे ककरो पर दोषारोपण करब। मै.

छीन-विशे., १. फेरा, एक मात्र रहैवाला भत्ता। प्रयोग—"स्त्रीगण केँ एक छीन कपड़ा नहि पहिरैक चाही।" २. क्षीण। मै./सं. तद्भव

छीनब-क्रि., विरोधी कयला पर बलपूर्वक ल' लेब। मै.

छीनाओछरी-सं., एक दोसरा मे परस्पर बल सँ ल' लैक प्रयास एवं चेष्टा। मै.

छीना काटब-क्रि., १. (लाक्षणिक) बहाना कय वंचक प्रयास करब। २. कातेँ कात पड़ाइक प्रयास करब। मै.

छीप-सं., माछ मारैक हेतु सक्कत बन्शीक लग्गी (डण्टा) करीन बन्हैक बाँस। सब सँ उपरक भाग। मै.

छीपब-क्रि., १. अपना दिश खींचब। २. लोकक आँखि सँ अपना केँ बचाएब। मै.

छीपा-सं., पँच धारी। मै.

छीर-सं., क्षीर, दूध वा पानी। मै.

छीलब-क्रि., कोनो वस्तु केँ मूलक उपर सँ बेलागि करब। मै.

छीह काटब-क्रि., नुका कय भागल फिरब। मै.

छुआएब-क्रि., १. कोनो वस्तु केँ कोनो वस्तु सँ भिराएब। २. अशुद्ध होएब। मै.

छुइमुई-सं., लजविजी लत्ता। लाजेँ मुकुचल। मै.

छुकछुक-अव्यय, रेल इञ्जिनक शब्दक अनुकरण। मै.

छुच्छ-विशे., सुन्न, वस्तुहीन, बिना कथूक मिलल। मै.

छुच्छी-विशे., दूषित विचारवाली स्त्री। अनादरक प्रयोग। मै.

छुच्छुन्नर-सं., मूसक आकारक दुर्गन्ध करैवाला जीव (लाक्षणिक) चरित्र आ विचारक अधम स्त्री० छुच्छुन्नरि। मै.

छुच्छुन-विशे., उचित रूपरेखा मे नै परिछै (मिलै) वाला। ओछ। मै.

छुछका-विशे., खलियाह्ल वासन। बिना कथूक मिललवाला। मै.

छुछरी/छुछक-सं., पुरुष नेन्नाक मूत्र मार्ग। मै.

छुछुआएब-क्रि., निरर्थक मृग तृष्णा आ दृष्टि वासना सँ बौआएल फिरब। मै.

छुछुआएल फिरब-क्रि., कुदृष्टि सुखवेल यत्र तत्र घूमैत रहब। मै.

छुछुन-विशे., देहक अनुसार छोट। मै.

छुट्टा-विशे., १. अलग कयल। २. डँटी लागल पान। ३. बिन शासनक लोक। मै.

छुट्टी-सं., काजक भार सँ मुक्ति। मै.

छुटकारा-सं., कोनो वस्तु सँ सब दिन लै मुक्ति। मै.

छुटछुट-विशे., खुजैक स्थिति मे रहैवाला। मै.

छुटछुटाह-विशे., ढील रहैवाला, खुजल। मै.

छुटता-विशे., छुटल रहैवाला। मै.

छुटला-विशे., शीघ्र छोड़ाओल जाइवाला। मै.

छुटला-विशे., छुटै छुटै पर रहैवाला। छुटि क' चलि दैवाला। मै.

छुटाहल-विशे., मुक्त, स्वतन्त्र, सब काज सँ निश्चिन्त। मै.

छुत्ती-सं., खेलाइत नेन्ना सभक थोड़ समय लै खेल सँ बहार होइक शब्द। मै.

छुतक-सं., अशौच। अशुद्धि। मै.

छुतका-सं., मरणाशौच। कोनो अशुद्धि। मै.

छुतब-क्रि., १. सम्पर्क सँ अशुद्ध होएब । २. (लाक्षणिक) रजस्वला होएब । मै.

छुताएब-क्रि., दूषित कय कें छोड़ब । अपवित्र करब । शारीरिक सम्पर्क सँ अशुद्ध बनाएब । मै.

छुद्र-विशे., क्षुद्र । ओछ बुद्धिवाला । सं. तद्भव

छुदरपन-सं., छोट छोट वस्तुक हेतु लोभ, अधलाह भावना । मै.

छुदराह-विशे., छोट विचार एवं स्वभाववाला । मै.

छुदराहा-विशे., समाज मे नामी क्षुद्र स्वभावक लोक । मै.

छुधा-सं., क्षुधा, भूख । सं. तद्भव

छुधाएब-क्रि., भूख सँ व्याकुल होएब । मै.

छुधी-सं., आधुनिक मुद्राक सब सँ छोट एकाइ । मै.

छुबब-क्रि., स्पर्श करब । चमड़ा सँ संयोग करब । मै.

छुबाएब-क्रि., अन्न कें लापड़ि मे द' क' कनेक गरम करब । मै.

छुमछुम-अव्यय, ताल लय पर पैर आ पैंजनीक ध्वनि । मै.

छुरछुरिया/छुरछुरी-सं., रासायनिक पदार्थ सँ बना-ओल विस्फोटक खेलौना । मै.

छुरछुराएब-क्रि., धारा रूप मे मल मूत्र बहराएब । मै.

छुरिया-विशे., छूरीक आकारवाला । मै.

छुरबका-सं., लम्बाकार भ' क' द्रव पदार्थक वेगें निकास । (मल, मूत्र आ शोणितक) । मै.

छुरबका-विशे., एके मुट्ठी सँ वेगें उपर दिश बढ़ै-वाला । मै.

छुलछुल करब-क्रि., नार्मक डर सँ मूत्रक स्थिति भ' जाएब । मै.

छुलछुल मूतब-क्रि., बेर बेर मूत्रक वेग होएब । मै.

छुल द'-अव्यय, अचानक वेग सँ मूत्रक निकास । मै.

छुलहा/छुलाह-विशे., (अनादर मे) क्षुद्र क्षुद्र वस्तु कें देखितें अभिलाषा करैवाला । मै.

छुह छुह करब-क्रि., चञ्चलता सँ लुब्ध दृष्टियें परिवेश मे एम्हर ओम्हर करैत रहब । मै.

छुहिया-विशे., फदोआ करैक उपयोगी देशी नाम थोड़ चाकरक हर । मै.

छू

छू:-अव्यय, महींस आदि माल भगबैक शब्द । मै.

छूआछूति-सं., १. अस्पृश्यक स्पर्श सँ अशुद्धता । २. संक्रामक रोग । मै.

छूछ-विशे., १. एकांग । २. निःसार । प्रयोग– "छूच्छे रोटी । छूच्छे लोटा ।" मै.

छू छू करब-क्रि., छुछुन्दरि जकाँ अनेर सबेर घूमैत रहब । मै.

छू छू गाड़ी-सं., रेलगाड़ी । मै.

छूटब-क्रि., आवेग होएब । मुक्त होएब । गतिशील (चलि पड़ब) होएब । मै.

छूटि-सं., मुक्ति, अधिकता । मै.

छूटि छूटब-क्रि., १. व्यग्रताक आवेग होएब । २. लक्ष्य दिश एक पर एक तेजी सँ दौड़ब । मै.

छूटि छोड़ाएब-क्रि., पतिकरनी क्रिया सँ अनिच्छा पूर्वक कोनो वस्तुक उत्तरदायित्व निभाहब । मै.

छूत-विशे., अस्पृश्य, अशुद्ध । मै.

छूति-सं., अस्पृश्यक स्पर्श सँ भेल दोष । मै.

छून-विशे., तुलना मे छोट भेनिहार, ओछ । मै.

छूब-क्रि., स्पर्श करब । मै.

छूबब-क्रि., देखू—"छूअब" । मै.

छूरा-सं., एक धौतक घातक अस्त्र । मै.

छूरी-सं., बहुत छोट करची कटैवाला अस्त्र । मै.

छूह उड़ियाएब-क्रि., एके छन मे हाथे हाथ बिका-एब । मै.

छूहो-विशे., आगु दिश क्रमशः पातर होमैवाला नाम वस्तु । मै.

छे

छेआनबे-संख्या, छ एकाइ नौ दहाइक अंक । मै.

छेआलीस-संख्या, छ एकाइ चारि दहाईक अंक । मै.

छेआसठि-संख्या, छ एकाइ छ दहाइक अंक । मै.

छेआसी-संख्या, छ एकाइ आठ दहाइक अंक । मै.

छेक/छेकन-सं., कोनो वस्तु कें अस्थायी रूपें रोकि रखैक साधन । मै.

छेकनिहार-विशे., छेकि रखैवाला । मै.

छेकब-क्रि., कथुक वेग वा गति कें रोकैक प्रयास करब । मै.

छेका-सं., कोनो विशेष कार्य मे कोनो वस्तु कें रोकि रखैक विधि । मै.

छेकाइ-सं., देखू—"छेका"। मै.

छेगाएल-विशे., विकट अनुभव कयल। मै.

छेटगर-विशे., यौवन मे आएल। नमहर सन भेल। मै.

छेट ताकब-क्रि., छिद्रान्वेषण करब। बहाना खोजब। मै.

छेंड़ि फूटब-क्रि., १. छागर कें लिंग प्रकट होएब। २. (लाक्षणिक) काज पर काज अप्रत्याशित रूपें जागब। मै.

छेड़ी-सं., बकरी जाति। मै.

छेद-सं., भूर, बिल। सं. तत्सम

छेदगर-विशे., अधिक छेदवाला। मै.

छेदन-सं., काटब, छेद करैक क्रिया। सं. तत्सम

छेदना-विशे., छेद करैक अस्त्र। मै.

छेदब-क्रि., काटब, भूर करब। मै.

छेदाइ-सं., छेद करैक कम एवं बोनि। मै.

छेदान-सं., पैघ भूर, भूर करैक विशेष प्रक्रिया। मै.

छेदाभेदा-सं., अनगनित छागरक बलि। मै.

छेदाह-विशे., छेद सँ भरल। मै.

छेदुआ-विशे., छेद कयलवाला। मै.

छेप/छिपन-सं., अपना सँ लागि रखैत फेंकैक वस्तु। सं. तद्भव

छेव/छिवन-सं., मूल काठक उपरका असार कें झाड़ि कय कात करैक, अभिलषित वस्तु बनबैक हेतु छोलैक प्रक्रिया। मै.

छेवनिहार-विशे., छेवैक काज करैवाला। मै.

छेवब-क्रि., काठ कें मूल विशेष वस्तु गढ़ैले विभिन्न रूपें काटब। मै.

छेवा-सं., काटैवाला प्रकार, छेंटैक कम। मै.

छेवाइ-सं., छेवैक बोनि। मै.

छेम-सं., क्षेम, कुशल। सं. तद्भव

छेमब-क्रि., क्षमा करब। प्रयोग—"एक अपराध छेमब मोर जानि।"—विद्यापति मै.

छेमा-सं., क्षमा। सं. तद्भव

छेर-सं., पातर मल (दस्त)। मै.

छेरकट-विशे., पातरसन मल। मै.

छेरगर-विशे., अधिक काजक, तरुण, अलग कयल। मै.

छेर छेर भरब-क्रि., सगरे पातर मल सँ घिना देब। मै.

छेरना-विशे., अधिक काल पातरे दस्त करैवाला। मै.

छेरनाति-विशे., नाति (पौत्र) क नाति। स्त्री० छेरनातिन। मै.

छेरब-क्रि., विशेष पातर मल छोड़ब। मै.

छेरापूतब छेरा-विशे., (लोकोक्ति) (लाक्षणिक) बच्चा छेरैवाला यौवन मे अवश्य सक्कत होएए। मै.

छेला-सं., सोनारक गहना गढ़ैक अस्त्र। मै.

छेह-सं., कम, योजना मे बान्हल। मै.

छेहत्तरि-संख्या, छ एकाइ सात दहाइक अंक। मै.

छेहन-सं., एक रूपें (कमें) रखैक विधि। मै.

छेहब-क्रि., मिलल जुलल वस्तु कें अलग अलग कय परिष्कृत करब। मै.

छेहर-विशे. फुटा फुटा कय रोपल, बनाओल। घन नहि कयल। मै.

छेहा-विशे., एकैटाक विशेषता भरल। मै.

छै

छै-क्रि., परोक्षवर्ती वस्तुक रहैक वर्तमान क्रिया। मै.

छैक-क्रि., परोक्षवर्ती वस्तुक रहैक परिष्कृत वर्तमान कालक क्रिया। मै.

छैठ-सं., देखू—"छठि"। मै.

छैन (न्ह)-क्रि., मान्य व्यक्ति लग परोक्षवर्ती वस्तुक रहैक वर्तमान क्रिया। मै.

छैना-सं., दूध फटला में वा फाड़ला सँ पानि चुआ कय छानल सत्वमय पदार्थ। मै.

छैनी-सं., लोह कटैक लोहक अस्त्र। मै.

छैनीकाट-विशे., बारीक आकार विशेष। मै.

छैब-सं., देखू—"छवि"। सं. तद्भव

छैला-विशे., सुन्दर नवयुवक, सुदर्शन तरुण। लोक के प्रिय लगैवाला युवा। मै.

छो

छोआ-सं., कुसियारक रसक मंथी। मै.

छोकरी-सं., अनादर मे छोट छौरीक प्रति सम्बोधन। मै.

छोंच-सं., मलत्यागक उपरान्त अंगक शुद्धीकरण। मै.

छोंचब-क्रि., मलत्यागक उपरान्त अंगक शुद्धीकरण करब। मै.

छोट-विशे., नाप, तौल आ वयसँ कम, लघु । मै.
छोटका-विशे., छोट वर्गवाला । स्त्री० छोटकी । मै.
छोटपन-सं., नीक आचार विचारहीनता । क्षुद्रता । मै.
छोट मोट-विशे., भरल पुरल छोट देहवाला । मै.
छोटहा-विशे., मान प्रतिष्ठा आ नीक व्यवहारक-हीन । मै.
छोटाइ-सं., छोट होइक भाप । मै.
छोटीमाइ-सं., जड़ी, औषध विशेष । मै.
छोड़-सं., त्याग । मै.
छोड़ब-क्रि., त्यागब । मै.
छोड़बाड़-सं., घटैक बढ़ैक क्रम । मै.
छोड़ाएब-क्रि., मुक्त कराएब, अलग करब । त्यागब । मै.
छोप-सं., १. अस्थायी छायाक उपाय । उपर सँ काटि छोट करैक क्रम । मै.
छोपनि-सं., कोनो वस्तुक अगिला (उपरका) भाग काटि लैक विधि । मै.
छोपब-क्रि., अगिला सार वस्तुवाला भाग मात्र काटब । मै.
छोपा-सं., छोपैक सिलसिला । विशे., छोपैक योग फसिल । मै.
छोपाइ-सं., निरन्तर छोपैवाला काज । मै.
छोपी-सं., छाही, बैलगाड़ी आदि पर देल कृत्रिम छाही । मै.
छोपुआ-विशे., छोपल जाइवाला धान वा गहूम । मै.
छोभ-सं., क्षोभ । सं. तद्भव
छोर-सं., १. धारी (पंक्ति) क लम्बाइ । २. माल जालक पैंध डोरी । ३. कोनो वस्तुक दूर विस्तार । मै.
छोरब-क्रि., खढ़ आदि वस्तु कें जड़ि सँ काटि क' खसाएब । मै.
छोंरबा-विशे., किशोर बालक । मै.
छोरहर-विशे., युवावस्थाक आरम्भ मे पहुँचल । मै.
छोलगढ़िया-विशे., माटिक मूर्ति गढ़ैवाला । भित्ति चित्र बनबैवाला । कुम्हार आ चित्रकार । मै.
छोलदारी-सं., वस्त्रक कृत्रिम घर । (रावटी) मै.
छोलन-सं., कोनो वस्तु कें उपर सँ खँरोंरि कय छिलला पर बहराएल पदार्थ । मै.
छोलना-सं., उखरक खोइछा छोड़बैक साधन । मै.
छोलनी-सं., तरकारी रन्हैक काल वर्तन मे व्यन्जन चलबैक चापट मुहवाला साधन । मै.
छोलब-क्रि., अस्त्र द्वारा उपरें उपर खरोंरि क' चिक्कन करब । मै.
छोलुआ-विशे., छोलि कय प्रयोग मे अबैवाला । मै.
छोह-सं., ध्यान द्वारा ककरो स्मरण । मै.
छोहक्का उड़ब-क्रि., वस्तु देखैत मात्र हाथैं हाथ बिका जाएब । मै.
छोहकारब-क्रि., महिसक हाँकब वा बैलाएब । मै.
छोहनि-सं., आवृत्ति, बेर, बेप । प्रयोग-"एक बेर' ऐ शब्दक स्थान मे–एक छोहनि अहाँ पटना सँ भ आउ ने" । मै.
छोहब-क्रि., खेत मे जनमल बीआ कें आन खड़ पात सँ साफ करब । मै.
छोहरि-सं., महिसिक नाथ मे लागल मोट रस्सी । मै.
छोह लागब-क्रि., काजक पूर्ति आ अन्त होएब । मै.
छोहा करब-क्रि., पथिया मे घास कें सीटि कय अधिक अँटा कय राखब । मै.
छोहारा-सं., देखू—"छहोरा" । मै.

छौ

छौ-क्रि., अत्यन्त अनादर मे मध्यम पुरुषक वस्तुक रहैक वर्तमान क्रिया । मै.
छौक-क्रि., (अनादर मे) देखू—"छौ" । मै.
छौंकन-सं., १. तीमन मे उपर सँ देल फोरन । २. (लाक्षणिक) राग कुत्साक बात कें आर उत्तेजित करब । मै.
छौंकब-क्रि., तेल फोरन सँ सिद्ध तीमन कें स्वादिष्ट करब । मै.
छौंक मारब-क्रि., (लाक्षणिक) उद्वेग बढ़ब । मै.
छौंकियाएब-क्रि., छौंकी सँ मारब । मै.
छौंकी-सं., अत्यन्त पातर छड़ी (डंटा) । मै.
छौनी-सं., भीत कें पानि सँ बँचबै ले उपर सँ देल छादन । मै.
छौर-सं., क्षौर, अशौचक केश काटैक कर्म । सं. तद्भव
छौरा-विशे., किशोर बालक । स्त्री० छौरी । मै.
छौरिया-विशे., किशोरी बालिका । मै.
छौराएब-क्रि., बीआ आ खाद कें छाउर मे मिलाएब । मै.

ज

ज्यामिति-सं., रेखा गणितक पारिभाषिक शब्द। सं. तत्सम

ज्योति-सं., प्रकाश, इजोत। सं. तत्सम

ज्वर-सं., रोग विशेष, देहक ताप। सं. तत्सम

ज्वाला-सं., धाह, ताप। सं. तत्सम

ज-सं., चवर्गक तृतीय अक्षर जकार। मै.

जँ/जइ-अव्यय, यदि। (अगर) मै.

जइ-सं., जौँक आकारक मालक दाना। मै.

जइओ-अव्यय, यद्यपि। मै.

जइती-विशे., आइक क्रिया करैक समयवाला। मै.

जक-सं., १. मोटर (कार) कें धरती सँ अलगउठैवाला यन्त्र विशेष। २. ढेर। मै.

जकड़न-सं., बात रोग सँ आकि एकै गरेँ रहलेँ अंगक जड़ अर्थात् स्पन्दन होएब। मै.

जकड़ब-क्रि., अंग चलबै मे अशक होएब। मै.

जकथक-अव्यय, जहिनाक तहिना पड़ल रहैक स्थिति। मै.

जकथकाएब-क्रि., अव्यवस्थित रूपेँ एकैठाँ ढेर लगैत जाएब। मै.

जकर-सम्बन्धवाचक सर्वनामक सम्बन्ध कारकक रूप। मै.

जकर लाठी तकर भैंस-लोकोक्ति, (लाक्षणिक) जोरगरैक अधिकार सबठाँ। मै.

जकरा-सम्बन्धवाचक सर्वनामक कर्मकारकक रूप। मै.

जक लागब/जक होएब-क्रि., बिना खर्च भेने वस्तुक आमद सँ ढेर लागब। सामानक बेढंगे जमा होएब। मै.

जकाँ-अव्यय, सदृश, समान। मै.

जकाएब-क्रि., व्यवस्थित रूपेँ जमा होइ जाएब। मै.

जकार-सं., ज अक्षर। स. तत्सम

जकियाएब-क्रि., व्यवस्थित, गोआइ मे वस्तु कें जमा कए राखब। मै.

जकीरा लागब-क्रि., छोट अंकुर कें एकठाँ अस्थायी रूपेँ घन कए रोपब। मै.

जखन-अव्यय, जाहि, जै समय मे। मै.

जखनुक/जखनुका-विशे., जाहि समय मे भेल वा होमवाला। मै.

जग-सं., १. पानिक आधुनिक बासन। २. संसार। मै.

जगजग-विशे., प्रकाशमान, चमकैत। मै.

जगजगाओ-सं., अनवरत प्रकाशित होइक स्थिति। मै.

जगजगार-विशे., अपन विशेषता सँ स्पष्ट निखरल। मै.

जगजियार-विशे., बढ़ि बढ़ि कऽ निखार मे आएल। मै.

जगण-सं., छन्दक विशेष परिभाषा। मै.

जगत-सं., संसार। सं. तत्सम

जगतजोर-विशे., अदृश्यशक्ति सँ भरल। मै.

जगतारनि-सं./विशे., देवी, संसार कें कष्ट सँ बचबैवाली। सं. तत्सम

जगति-सं., इनारक चारूकात चाकरकाँ गोल ऊँच कए बान्हल पुस्ता। मै.

जगती-सं., पृथ्वी। सं. तत्सम

जगदम्बा-सं., दुर्गा। सं. तत्सम

जगन्नाथ-सं., कलियुगी महातीर्थ। स. तत्सम

जगना-विशे., अधिक जगैवाला। मै.

जंगम-विशे., चलै फिरैवाला जीव। मै.

जगमग-विशे., प्रकाशमान। मै.

जगमगाएब-क्रि., १. प्रकाशमान बनाएब, स्वतः ज्योति सँ निखरैत रहब। मै.

जगमोहन-सं., कोठा आ मन्दिरक आगु मे बनाओल अर्धगोलाकार पुस्ता। मै.

जगरआठि-विशे., अधिक वयसवाला, उचित कालक वयस सँ बेसी वयसक। मै.

जगरनथिया-विशे., जगन्नाथक पैदल यात्री। मै.

जगरना-सं., जागरणा, रातुक जागब। सं. तद्भव

जगरा-सं., लगातार जगैत रहैक स्थिति। मै.

जंगल-सं., वन, बोनझार। मै.

जंगला-सं., वातायन, घर मे कृत्रिम बनाओल रौद बसात अबैक बाट। मै.

जंगलाह-विशे., बोन झार सब सँ भरल। मै.

जंगली-विशे., बोन मे भेनिहार तथा रहनिहार। मै.

जगवार-विशे., सतर्क रहनिहार, सजग, अधिक जगैक अभ्यासवाला। मै.

जगशाला-सं., यज्ञशाला। सं. तद्भव

जगाएब-क्रि., निन्द सँ ककरो उठाएब, लोकक उत्साह बढ़ाएब, मानसिक रूपेँ सजग करब। मै.

जमाओन-सं., ककरो द्वारा कोनो व्यक्ति कें जगबैक प्रयास । मै.

जगौनी-विशे., जगबैवाली घड़ी । मै.

जंघगर-विशे., १.अपन जांघक भरें चलैवाला नेना । २. (लाक्षणिक)नमहर जांघक द्वारें झटझट चलैवाला । मै.

जंघा-सं., डाँर सँ नीचाँ ठेहुन सँ उपरक अंग । मै.

जंघिया-विशे., जांघ मात्र धरिक कसल सीयल वस्त्र । मै.

जंघियासब-क्रि., (लाक्षणिक) आबा जाही सँ चलि रेहल खेहल । मै.

जङ्गी-विशे., युद्ध सैनिक । ताहा नामक मुसलमानी पर्वक अवसर पर रहैवाला । उ. तत्सम

जँचना-सं., १. माड़ब । २. साधना मे दृढ़ताक ईश्वरीय परीक्षा । मै.

जँचनिहार-विशे., परीक्षा कयनिहार । मै.

जँचब-क्रि., पसिन्न पड़ब । जाँच मे पड़ि जाएब । मै.

जँचाएब-क्रि., सन्देह हँटबैक हेतु अनका द्वारा परीक्षा कराएब । मन स्थिर कराएब । मै.

जज-विशे., न्याय करैक अधिकारी । मै.

जंजल-विशे., जत्तऽ तत्तऽ असंख्य काटल आ फाटल । मै.

जंजाल-विशे., कर्त्तव्यमोह । संसारक फाँस । मै.

जजी-सं., उच्चन्यायालय । मै.

जट्ठ-सं., पैघ तथा घन जठा । मै.

जटनी-सं., जटा जटिन खेलक मुख्य स्त्री पात्र । "झुमका जब हम अनली गे जटनी"–जटा जटिन । मै.

जटबा-सं., जटा जटिन खेलक मुख्य पुरुष पात्र । "काढ़ा जब हम मङ्ली रे जटबा"–जटा जटिन । मै.

जटा-सं., १. देखू—"जटबा" । मै.
२. परस्पर ओझराएल सट्टल केशक लट । सं. तत्सम

जटाइ-सं., रामायणक प्रसिद्ध गीध । पैघ जटावाला । मै.

जटाजटिन-सं., कथोप कथन युक्त गीत प्रधान मिथिलाक महिला समक प्रसिद्ध लोक नृत्य गीत । मै.

जटाधारी-सं., फूल विशेष । विशे., जटाधारण करैवाला । मै.

जटामसी-सं., जटा मांसी, औषध विशेष । सं. तद्भव

जटिल-विशे., जड़ाओल । कोनो वस्तु पर सक्कत सँ जमाओल । सं. तद्भव

जटिन-सं., देखू—"जटनी" । मै.

जटिल-विशे., समस्यापूर्ण, ओझरौटवाला । गहन । मै.

जठुर-विशे., अत्यन्त ठन्ढा । मै.

जठर-सं., पेट । सं. तत्सम

जड़-विशे., मूर्ख, ज्ञान शक्तिहीन । सं. तत्सम

जड़काला-सं., जाड़क समय । मै.

जड़की-विशे., जाड़ भ' क' होइवाला ज्वर । मै.

जड़ब-क्रि., कोनो वस्तु पर विशेष वस्तु कें जमाएब । मै.

जड़ाउ-विशे., हीरा मोती जमाओल गहना । मै.

जड़ाउर-विशे., जाड़क समय मे देबाक योग वस्त्र आदि । मै.

जड़ाएब-क्रि., जमाएब । मै.

जड़ाओन-सं., थोड़ थोड़ जाड़क अनुभव । मै.

जड़ाह-विशे., जाड़ सँ भरल । मै.

जड़ि-सं., मूल, विकास ह्रासक केन्द्र, बीज । मै.

जड़ि कटाएब-क्रि., (लाक्षणिक) अत्यन्त मरहन्ना (क्षीण) होइक द्वारें फसिल मे उपजा नहि होएब । मै.

जड़ि छोड़ुआ-विशे., बिन छोपल अर्थात् जड़िवाला धानक गाछक बोझ । मै.

जड़ियाएब-क्रि., बहुत दिन सँ जमल होएब । मै.

जड़ियाठ-विशे., जड़ि दिशुक नमहर अंश । मै.

जड़ियाठी-सं., बाँस काठक जड़िवाला सक्कत अंश । मै.

जड़ी-सं., औषध । परोक्ष प्रभाववाला वनस्पतिक मूल । मै.

जड़ीदार-विशे., धातुक पत्ती आ तार सँ चमत्कृत । मै.

जड़ीब-सं., भूमि नपैक हेतु आठ इंचक एक सौ कड़ीवाला मानक । मै.

जड़ैया-विशे., पहिने जाड़ भ' क' होइवाला ज्वर । मै.

जड़्ड-विशे., बुझौली उत्तर विषय बात नहि पकड़निहार । मै.

जत्तऽ-अव्यय, जाहिठाम । मै.

जत्था-सं., एकत्रित वस्तुक ढेरी । मै.

जत/जतए-अव्यय, जाहि ठाम । मै.

जँतकुट्टा-विशे., जाँत के तेज बनवैक हेतु खोधैक रूपें खोधर कय कूटैवाला । मै.
जँतगर-विशे., उचित सँ बेसी दाबि कय भरल । मै.
जतन-सं., यत्न । सं. तद्भव
जँतनिहार-विशे., वेहु दवा क' सेवा करैवाला । मै.
जतनी/जतने/जतबा/जतबाक/जतबी/जतबे/जतबेक -अव्यय, जतेक मानक । जाही प्रमाणक । मै.
जतबो-अव्यय, जाही प्रमाणक । मै.
जतय-अव्यय, जाहिठाम । मै.
जतरा-सं., यात्रा । प्रयोग–"अतरा पतरा सोम दिन जतरा ।" मै.
जँतलाहा-विशे., दाबि कय राखलवाला । मै.
जतहि-अव्यय, जाही ठाम । मै.
जताएब-क्रि., जानकारी देब, ज्ञान मे द' देब । मै.
जताठ-विशे., संकुचित स्थान । जाँतल जकाँ लगैवाला स्थान । मै.
जतिगर-विशे., ऊँच जातिक लोक । मै.
जतिमन्त-विशे., ऊँच जातियो मे श्रेष्ठता रखनिहार । मै.
जतिया-विशे., एक विचार आ व्यवहार संस्कारवाला समाजक लोक । मै.
जतियारय-सं., जातिक पक्षपात । मै.
जतीकाल/जतीखन-अव्यय, जतेक समयक अवधि । मै.
जतुपुतोहु-विशे., देवादनीक पुत्रवधू । मै.
जते/जतेक-अव्यय, जाहि मानक । मै.
जतो-अव्यय, जाहू ठाम । मै.
जँतौठ-विशे., देखू—"जँताठ" । मै.
जथगर-विशे., पुष्टतायुक्त । पुष्ट रूपें । मै.
जथा-सं., सम्पत्ति, धन । मै.
जथाजाल-सं., सम्पत्तिक प्रसार । मै.
जथी-अव्यय, मन मे स्थित अनिश्चित वस्तु दिस साकांक्षताक निर्देश । मै.
जन्त्री-सं., लेखा करै मे अनुपात बहार करैक पोथी । मै.
जन्तर-सं., यन्त्र । सं. तद्भव ।
जन्ता-सं., बनैया वनस्पति विशेष । मै.
जन्तु-सं., जीव मात्र । जंगम प्राणी । मै.
जन-सं., लोक । विशे., श्रमिक । सं. तत्सम
जनक-सं., पौराणिक विदेह राजा । विशे., जन्मदाता । सं. तत्सम
जनक्षँ लागब-क्रि., कोनो विशेष काज मे अधिक जन लगवैक काज पड़ब । मै.
जनगर-विशे., १. लोकगर । २. जन मजदूरक सुखी । मै.
जनगी-अव्यय, एक एक व्यक्तिक लेखा कय । मै.
जनता-सं., लोकक समुदाय । समूह । सं. तत्सम
जननी-विशे., जन्म देब'वाली । सं. तत्सम
जनपद-सं., क्षेत्र, प्रान्त । सं. तत्सम
जनवासा-सं., पाहुन परक रहैक विशिष्ट स्थान । मै.
जनबाहि-सं., जन खटबैक सिलसिला । मै.
जनम-सं., जन्म । सं. तद्भव
जनमत-सं., समुदायक विचार । सं. तत्सम
जनमब-क्रि., प्रादुर्भाव होएब । जनम लेब । मै.
जनमाएब-क्रि., उत्पन्न करब । जमाएब । मै.
जनमारा-विशे., प्राणक घातक हानिकारक । मै.
जनमौटी-विशे., सद्यः जनमल बच्चा । निकट मे जनमल । मै.
जनार-सं., साधु भोजन । केवल दूध वा खीर खोआ क' वैष्णव कें सन्तुष्ट करब । मै.
जनारो-सं., जानवर । घातक पशु । मै.
जनि-अव्यय, नहि, निषेधक शब्द । प्रयोग–"एकहि नगर बसु माधव हे जनि कर बटमारी ।" —विद्यापति । मै.
जनी-सं., श्रमिक स्त्री, स्त्री जाति । मै.
जनीजाति-सं., स्त्रीगण । मै.
जनु-अव्यय, न, निषेध, उत्प्रेक्षा, प्रायः । मै.
जनू-अव्यय, सम्भावना द्योतक शब्द, प्रायः । मै.
जनेर-सं., अन्न विशेष । मै.
जनैत-अव्यय, जानकारी रूपें । मै.
जनौ-सं., यज्ञोपवीत, उपनयन संस्कारक सूत्र । मै.
जनौरी-विशे., जन खटै पर देल अग्रिम रुपैया । मै.
जप-सं., मनैमन मन्त्रक आवृत्ति कय देवताक ध्यान रातैक प्रक्रिया । सं. तत्सम
जपतप-सं., जप करैक साधना । सं. तद्भव
जपन-सं., जप । सं. तत्सम
जपनी-सं., १. माला । २. (लाक्षणिक) बारम्बार व्यवहार मे एकै बातक रट । मै.

जपब-क्रि., जप करब । मै.

जपाइ-सं., जपक अनुष्ठानक दक्षिणा । मै.

जपाएब-क्रि., जप कराएब । मै.

जपाल-विशे., उत्तरदायित्वक कारणें चिन्ताक विषय बनल । मै.

जपी-विशे., नियमित जप कयनिहार । मै.

जपुआ-विशे., अपैक काज कयनिहार । जपक व्यवसाय मे लागल । मै.

जब-अव्यय, जखन । हि. तत्सम

जबकब-क्रि., पानि जमैक द्वारें सर्दी बढ़ब । मै.

जबका-सं., आर्द्रता सर्दी । मै.

जबका मारब-क्रि., सर्दीक दारें बुद्धि आ स्वास्थ्य घटब । मै.

जबकाह-विशे., अधिक सर्दियाएल । मै.

जबड़ा-सं., कल्ला । हि. तत्सम

जब तब-अव्यय, जखन तखन । हि. तत्सम

जब्बर-विशे., शक्तिशाली, भारी । मै.

जबरदस्ती-अव्यय, बल सँ, बलात्कारें । उ. तत्सम

जबा-सं., आड़ुर मे जौक चिह्न (सुलक्षण) । मै.

जबाकुसुम-सं., ओड़ुल फूल । मै.

जबाखार-सं., औषध विशेष । मै.

जबियाएब-क्रि., बड़द आदि कें जजातक उपद्रव सँ बचबैले मुह मे जाबी बान्हब । मै.

जम्बीरी-सं., सुगन्धिहीन रसदार नेबो । मै.

जमकब-क्रि., बहुत लोकक एकठाँ जमा होएब । मै.

जमघट-सं., अधिक लोकक एकठाँ जमब । सम्मेलन होएब । मै.

जमड़ी-सं., तहँ तहँ बहुत दिनक जमल मैल । मै.

जमतिगर-विशे., अधिक संख्या मे एकमतवाला समाज । मै.

जमब-क्रि., १. दिनानुदिन वा एकाएकी एकट्ठा होएब । २. नाच गानक खूब आकर्षक होएब । ३. स्थिर भय कें अचल वा स्थूल बनब । मै.

जमल-विशे., १. गुण विशेषक द्वारें प्रभावशाली बनल । मै.

जमा-सं., १. एकत्रित वस्तु । २. एक खतियानक वेसरा संख्या । मै.

जमाइ-विशे., १. कन्याक पति । २. जमबैक प्रक्रिया । मै.

जमाइत-सं., दल, बेर, झुण्ड । मै.

जमाउ-विशे., जमैक योग्य । मै.

जमाएब-क्रि., अपन बड़ाइ कय प्रभावित करब । मै.

जमाओ-सं., स्थिरीकरण । मै.

जमा करब-क्रि., एकट्ठा करब । मै.

जमाठ-सं., जमबैक उपाय । मै.

जमाय-विशे., बेटीक स्वामी । मै.

जमालगोटा-सं., रेचक (दस्तकारक) औषध । मै.

जमुअठि-सं., जामुक काठक बनल इनारक तहराक पाठ । मै.

जमुआ-सं., जामुक काठ । मै.

जमुआ रंग-विशे., जामुक रंगसनवाला । मै.

जमुना-सं., यमुना नदी विशेष । सं. तद्भव

जमुनिया रंग-विशे., जमुना जल सन रंगवाला । मै.

जमौट-सं., जमबैक अर्थात् प्रभावित करैक चेष्टा । मै.

जमौआ-विशे. प्रभावित करैक चेष्टावाला । मै.

जय-सं., ककरो उत्कर्ष सनबैक शब्द । मै.

जयकार-सं., अनेक कण्ठ सँ जय शब्दक ध्वनि । मै.

जयजयकार-सं., बारम्बार जय ध्वनि । मै.

जयन्ती-सं., व्यक्ति विशेषक जन्म आ मरणक उत्कृष्टता सूचक तिथि । सं. तत्सम

जयवार-विशे., मैथिल ब्राह्मणक वंशानुक्रमक भेद विशेष ।

श्रोत्रिय, योग्य (जोग), भलमानुष, आ जयवार एहि चारि मे आचार व्यवहार आ शिक्षाक भेद आ क्रमक अनुसार चारिम वर्ग । मै.

जया-सं., पार्वतीक प्रसिद्ध शक्ति आ सखी । मै.

जयी-विशे., जय कयनिहार । सं. तत्सम

जर-सं., ज्वर । सं. तद्भव

जउर-विशे., एकत्रित । मै.

जउर-सं., जरायु, बच्चा जन्मक उपरान्त गर्भ सँ बहार होइवाला मास जालक जरायु आ मनुष्यक नार पुरैन । मै.

जरखोरा-सं., मास जालक ज्वर । मै.

जरजर-विशे., जर्जर, अत्यन्त पुरान । सं. तद्भव

जरती-सं., १. अधिक तापक द्वारें तौल मे कमी । २. रौदीक कारणें क्षेतीक दाह । मै.

जरती जाएब-क्रि., तापक द्वारें तौल मे कमी होएब । मै.

जरदा-सं., पानक मसाला रूपें तमाकूक शोधल चूर्णी। मै.

जरदालू-सं., आम विशेष। मै.

जरनघरा-सं., बरिसात मे जारनि कें सुरक्षित रखैक घर। मै.

जरनबाहि-सं., निरन्तर जारनि चिरैक आ चिरबैक काज। मै.

जरनि-सं., ईर्ष्या, भीतरें भीतर आनक नीक नै सोहायब। मै.

जरनीपन-सं., आनक डाह करैक स्वभाव। मै.

जरपाक-सं., ज्वर भेला पर मुह मे फोंसरीक प्रादुर्भाव। मै.

जरब-क्रि., १. डाह करब। २. बहब, दग्ध होएब। मै.

जरब-सं., घातक प्रभाव, आपत्ति। मै.

जरलग्गू-विशे., ज्वर लगैक गुणवाला पदार्थ। मै.

जरा-सं., वृद्धावस्था। मै.

जराइन-विशे., १. ज्वरक गन्ध। २. वस्तुक जरैक गन्ध। मै.

जराउ-विशे., १. ज्वरक अनुकूल। २. जरैक योग्य। मै.

जराएब-क्रि., ज्वर सँ भरब। मै.

जराओन-सं., ज्वरक आभास। मै.

जराठी-विशे., आधा जरल जारनि। मै.

जरावस्था-सं., बुढ़ारी। मै.

जराह-विशे., ज्वरक अंशवाला। ज्वर लगबैवाला। मै.

जरुआ-विशे., जराओल। जरबैक योग्य। मै.

जरैया-विशे., ज्वरक उपक्रम बनैवाला। मै.

जरोह-विशे., सन्तान, शाखा। सन्तापात। मै.

जरौआ-विशे., ज्वरक वातावरण भरल। जरलवाला। जरला विकृत बनल। मै.

जल्दी-अव्यय, शीघ्र, झट द' उ. तद्भव

जल्ला-सं., १. मकरा द्वारा बनाओल जाल। २. छोट छोट कीड़ा द्वारा अन्न मे गढ़ल सक्कत आ छोट कपड़ा जकाँ पदार्थ। ३. क्षोल। ४. ढोरीक चाल जकाँ बीनल भुसा कसैवाला बड़का जाबी। मै.

जल्लीभर्द-सं., भादव मे भेनिहार धान। मै.

जल-सं., पानि। मै.

जलकर-सं., जल सम्बन्धी राजस्व। मै.

जलखरी-सं., छोट जाबी जाहि मे थोड़ फल आदि राखल वा लाओल जाइछ। लोलची। मै.

जलखै-सं., अल्पाहार, किछु खाकए पानी पीबैक प्रक्रिया। मै.

जलगर-विशे., विशेष जलवाला। मै.

जलजलाओ-विशे., उर्ध्वमुख, सब प्रकारें उन्नति मे अग्रसर, गतिशील। मै.

जलजन्तु-सं., जल मे उत्पन्न वा रहैवाला जीव। मै.

जलझुलनी-विशे., बीच बरिसातक (भादवक शुक्ल पक्ष) मे विष्णु भगवानक जलशयन नामे प्रसिद्ध एकादशी तिथि। मै.

जलधर-सं., मेघ। सं. तत्सम

जलन-सं., ज्वलन, दाह, ईर्ष्या। सं. तद्भव

जलनि-सं., बीज, जड़ि, बीआ, वृक्ष आ झाड़ सबहक धरती विशक शाखा प्रशाखा। मै.

जलपा-सं., ज्वालामुखी देवी। सं. तत्सम

जलपान-सं., जलखै, अल्पाहार। मै.

जलपै-सं., भर्दैया फल विशेष। मै.

जलफाँकी-विशे., फुटाओल गुनवाला वस्त्र, वस्तु। मै.

जलबाह-विशे., जाल फेंकैवाला मल्लाह। मै.

जलबाहि-सं., जाल फेंकैक व्यवसाय। मै.

जलभरिया-विशे., बैद्यनाथ कें ढारैले गंगाजल भरैवाला। मै.

जलमर्द-सं., आम आ धानक प्रभेद। मै.

जलामय-सं., सर्वत्र जलक अपार पसार। मै.

जलाशय-सं., जलक आधार। पोखरि, नदी। मै.

जलिया-विशे., जाल फरेब करैवाला। मै.

जलोदर-सं., पेट मे पानि भेला सँ उत्पन्न रोग। मै.

जलोदीप-सं., जल सँ डूबल प्रान्त। जलद्वीप। सं. तद्भव

जस-सं., यश, कीर्ति। सं. तद्भव

जसन-सं., बाँहि परक गहना। मै.

जसबा-सं., धानक विशेष प्रभेद। मै.

जसी-विशे., यशस्वी, जस भरल। मै.

जसोम्ह-सं., गहना विशेष। मै.

जहजह करब-क्रि., सर्वत्र देखार भ' क' प्रकाशित होएब। मै.

जहन-अव्यय, देखू—"जखन" । मै.

जहनि-सं., १. जिद्, हठ । २. भीतर दिशक बिना छतक पुश्ता (उ. जेहन) जगमोहन । मै.

जहनि लागब -क्रि., जिद् लागब, आग्रह होएब । मै.

जहपटार-अव्यय, यत्र तत्र सबठाँ । मै.

जहर-सं., विष, जहर । उ. तत्सम

जहर कनैल-सं., कनैल फूलक फड़, विष । मै.

जहरबात-सं., विषवाला वात रोग । मै.

जहरमोहरा-सं., साँपक विष मारैवाला जड़ी । मै.

जहाँ-अव्यय, जतय, जखनै, जहिया, जाहिठाँ । मै.

जहाज-सं., जलयान । यान्त्रिक पोत । मै.

जहाजी-विशे., १. जहाज द्वारा आएल वस्तु । २. जहाजक संचालक । मै.

जहाँदय-अव्यय, जाहिठाम देने । मै.

जहाँधरि-अव्यय, जाहिठाम पर्यन्त । जतेक धरि । मै.

जहिं-अव्यय, जहिना, जखनै । मै.

जहिखन-अव्यय, जाही छन । मै.

जहिना-अव्यय, जाही रूपें, जहिखन । मै.

जहूद भारी-विशे., अत्यधिक भारवाला । प्रयोग— "ई कोठी तऽ जहूद भारी छै ।" मै.

जहूरी-विशे., जौहरी, रत्न आदि चिन्हैवाला । उ. तद्भव

जा

जा-अव्यय, यावत् । मै.

जाऽऽ !-अव्यय, आश्चर्य, दुःख आ प्रमाद सूचक शब्द । प्रयोग—"जा…… ! ओ चल गेला ।" मै.

जाउत-विशे., (स्त्रीक हेतु) देवर आ भैंसुरक पुत्र । मै.

जाएब-क्रि., गमन करब । जाइक क्रिया । मै.

जाक-सं., एक पर एक सैंत क' स्थूल वा छोटो वस्तुक विन्यास । मै.

जाकब-क्रि., एक पर एक सैंत क' वेशी वस्तुक एकठाँ जमा करब । मै.

जाकर-विशे., बहुत दिन सँ एकहि रूपें राखल पुरान । शक्तिहीन । मै.

जाग-सं., १. सभक जागरण, निद्राभंग । २. याग, यज्ञ । सं. तद्भव/मै.

जागनि-सं., जगरना । मै.

जागब-क्रि., निन्न तोड़ब । मै.

जागरणा-सं., जागल रहैक स्थिति । सं. तत्सम

जाँघ-सं., ठेंहुन सँ उपरक अंग । मै.

जाच-सं., माङब । मै.

जाँच-सं., परीक्षा । मै.

जाचक-विशे., माङैवाला । सं. तद्भव

जाँचनि-सं., परीक्षाक क्रम । मै.

जाचब-क्रि., माङब । मै.

जाँचब-क्रि., परीक्षा करब । मै.

जाजूगी-सं., सनातन, सनातनी, पारम्परिक । मै.

जाट-सं., १. ढँपनीवाला सीसाक बड़का बासन । २. लड़ाकू जाति विशेष । मै.

जाठि-सं., यष्टि, यज्ञ कयल पोखरिक बीच गाड़ल बड़का स्तम्भ । सं. तद्भव

जाड़-सं. शीत, ठंढाक सामयिक प्रभाव । ठंढाक समय । मै.

जाड़ा-सं., जाड़ होइक स्थिति । ठंढाक प्रभाव । मै.

जाँत-सं. चापट गोलाकार उपर नीचाँ दू पाटवाला पीसैक साधन । मै.

जातक-विशे., सद्यः जन्म लेमऽवाला । बौद्धकथा । सं. तत्सम

जाँतठि-विशे., वस्तु कें भार सँ दबैक वस्तु । मै.

जाँतनि-सं., विशेष भारवाला वस्तु सँ दबैक विधि । मै.

जाँतब-क्रि., १. भारी वस्तु सँ कोनो वस्तु कें दबाएब । २. ककरो देह दाबि क' सेवा करब । मै.

जाँता-सं., जाँतक भिन्न भिन्न पाट । मै.

जाति-सं., जन (सं.) धातु सँ जाति शब्दक निर्माण होइत अछि एहि कारणें अर्थ होइछ 'परम्परागत वंशक परिचायक नाम अर्थात् वर्ण । एहि वर्णक चारि वर्ग मे विभाजन भेल अछि । ओहि चारू वर्ग चारू वेद आ चारू पुरुषार्थ सँ सम्बन्ध राखि प्रवृत्त होइछ । ताहू चारू पुरुषार्थ मे सर्वप्रथम थीक धर्म । ई ततेक विशाल अछि जकर विस्तार सँ विवेचना अखन असंभव छैक । तथापि संक्षिप्त अर्थ थेह होइछ-मानवताक शिक्षा वा निर्माण । एहि वस्तुक निर्देश कयनिहार ज्ञानी पुरुष ब्राह्मण होइछ । जीवनक सुरक्षाक हू आवश्यक वस्तु होइछ बल आ धन, ऐ

दूनू वस्तुक साधक अर्थ होइछ तकर साधना मे लीन व्यक्ति क्षत्रिय आ वैश्य कहबैछ। आ कोनो कामनाक सिद्धि ककरो सेवा अर्थात् भक्ति कयने भेटैत छैक। से भक्ति करैवाला अर्थात् जकर सेवा (भक्ति) कयल जाइत अछि ताहि सँ जकना कें नत (निम्न) रखनिहार शूद्र वर्ण मे राखल गेल अछि। मुदा सभक लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति थिकैक। मोक्ष कोनो वर्ग विशेषैक नहि भ' सकैत छैक। तँ ओहि वर्गक वीर्य सँ उत्पन्न पितृ संस्कार रखनिहार व्यक्तिक जाति पितृ संस्कारें होइछ। एहि रूपें संस्कारक प्रभाव युक्त वंशानुगत जाति भ' सकैत अछि।

मुदा जकरा पूर्वोक्त प्रकारक जन्म जात संस्कार नहि भ' क' भिन्न वर्गक गुण आ कर्म साधना मे प्रवीणता होइक तकरा हेतु जातिक अर्थ वर्ग टा भ' सकैत अछि। एहन स्थिति मे ज्ञा (सं.) धातु सँ जाति शब्द बनि वर्गक अर्थ होइत अछि। जेना संसार मे बहुत वस्तुक भेल जे मनुष्य सँ भिन्न रहैछ—प्रयोग होइत अछि ई एहि वर्गक थीक आ ओ ओहि वर्गक।

सारांश ई जे पैतृक (वीर्यगत) संस्कार आ वर्ण अर्थात् गुण कर्म क्रमवाला वर्ग जाति कहाओल जाइत अछि।

जँ पैतृक (वीर्यगत) संस्कार नहि राखि भिन्न वर्गक संस्कार (गुण कर्मक वर्गवाला) रखैत हो तँ ओ ओही गुण कर्मक जाति थीक। फलतः सत् पथ पर रहैवाला संस्कार अथवा गुण कर्मक भेदें दूनू प्रकारक जाति भ' सकैत अछि। असत् पथक संस्कारवाला व्यक्ति राक्षसे कहबैं अछि जाहि मे वर्ण वा जातिक कोनो अस्तित्व नहि होइत छैक। सं. तत्सम

जादू-सं., अलक्षित भौतिक प्रक्रिया। मै.

जादूगर-विशे., अलक्षित भौतिक प्रक्रियाक विशेषज्ञ। मै.

जाधरि-अव्यय, यावत् काल पर्यन्त। मै.

जानतब-सं., ज्ञान, बोध, बूझल। मै.

जानतबे-अव्यय, ज्ञानक अनुसार, बुद्धिक अनुकूल। मै.

जानब-क्रि., ज्ञान करैक प्रयास करब। भाव बूझब। मै.

जानवर-सं., पशु। हि. तत्सम

जानि-अव्यय, जनैक भाव, बोध। मै.

जानि ने जानी-अव्यय, ज्ञानक बहारक स्थिति। मै.

जाप-सं., जप, जप करब। मै.

जापक-विशे., जप करैवाला। मै.

जाफ्री-सं., गरम मसालाक एक वस्तु। जाती पत्र। मै.

जाफर-सं., जाती फल। औषध विशेष। मै.

जाफरी-सं., बाँसक बाती सँ सघन बीनल असंख्य छेदवाला विशेष टाट। स्त्रीगणक अढ़क साथ। मै.

जाबत-अव्यय, यावत्। सं. तद्भव

जाबब-क्रि., जाल जकाँ बीनल पदार्थ सँ बड़द आदि मालक मुह बन्द करब। मै.

जाबा-सं., १. देश विशेष। २. लोहक वा कोनो धातुक तार सँ बनाओल पैघ छेदक जाल। मै.

जाबी-सं., पातर डोरी सँ जाल जकाँ बनाओल डोरा सन फल रखैक बासन। मै.

जाबे-अव्यय, यावत् काल। मै.

जाभड़-सं., बहुत दिनक बैसल मैल। मै.

जामिन-विशे., अपराधीक जिम्मेवारी रखैवाला। मै.

जामु/जामुन-सं., फल विशेष। मै.

जाया-सं., स्त्री, पत्नी। सं. तत्सम

जार-विशे., स्त्रीक अवैध प्रणयी। सं. तत्सम

जारनि-सं., जरबैवाला लकड़ी। मै.

जारब-क्रि., जराएब। मै.

जारी-सं., आरम्भ, क्रिया सँ चेतनाक सम्बन्धक। मै.

जाल-सं., १. सूत वा पातर तारक बीनल छेदवाला वस्तु। २. (लाक्षणिक) प्रपञ्च। मै.

जालबन्दी-सं., १. लहठीक भेद। २. जालक पैरन। मै.

जालसाजी-सं., फूसि षड्यन्त्र। मै.

जाल रचब-क्रि., १. (लाक्षणिक) ककरो फँसबैले फूसि बात गढ़ब। २. सूत सँ जाल बनाएब। मै.

जालखिराएब-क्रि., पानि मे जाल घुमाकय फेंकब। मै.

जाला-सं., भूसा आ भूसा सन वस्तु फर्मोनेल डोरी सँ जाल जकाँ बीनल बासन। मै.

जाली-सं., जाल जकाँ तारक बनाओल वस्तु। मै.

जासूस-विशे., सीकिया, गुप्तचर। उ. तत्सम

जाह्-क्रि., १. मध्यम पुरुष कें जाइक आदेश। २. अव्यय, आश्चर्य खेद आदिक शब्द। प्रयोग—"जाह् हम आइ जाएब बिसरि गेलौं।" मै.

जाहि-सम्बन्धवाचक सर्वनाम, प्रयोग—"जाहि ठाँ जाहि विषय मे मन लागए सह् पढ़ू।" मै.

जि

जिआ-सं., मन, अन्तःकरण। मै.

जिआन-विशे., नष्ट, क्षति। मै.

जिगा-सं., गहना विशेष। मै.

जिच्च-सं., शतरंजक चालि मे बादशाह कें घेरि क' विवश करब। मै.

जिज्ञासा-सं., खोज पुछारी। सं. तत्सम

जिञ्जीर-सं., लोहाक कड़ी सँ बनल साँकल। मै.

जिड-सं., विशेष प्रकारक अंग सज्जा। अं. तत्सम

जित्त-विशे., जीवित, जीवनवाला। मै.

जित्ते-विशे., जीवितावस्थावाला। मै.

जितलहा-विशे., जीतल वस्तु। मै.

जिताजितीअलि-सं., परस्पर जितैक प्रतियोगिता। मै.

जितिया-सं., स्त्रीगणक जीमूतवाहन व्रत। मै.

जिद्-सं., हठ, आग्रह, जहनि। उ. तत्सम

जिद्दी-विशे., जिद् धेने रहनिहार। मै.

जिदियाह्-विशे., जिद् धरैवाला। स्त्री० जिदियाहि। मै.

जिन-विशे., १. जैन धर्मक प्रवर्तक। २. मुसलमानक प्रेत। सं. तत्सम/उ.

जिभिया-सं., जीह् शुद्ध करैक वस्तु चीरा। मै.

जिम्मक-सं., वनस्पति विशेष। मै.

जियाएब-क्रि., जीवित करब। जीवित राखब। मै.

जिरतिया-विशे., खेतीक उत्तरदायी। मै.

जिराएब-क्रि., विश्राम करब। मै.

जिरात-सं., निजी खेती। मै.

जिरान-सं., विश्राम, आराम। मै.

जिराफ-सं., नम्मा गर्दनिवाला अमेरिकी पशु। मै.

जिरिया-सं., जीर बराबरि कीड़ी विशेष। मै.

जिल्द-सं., पोथीक पत्रक बन्धन। उ. तत्सम

जिला-सं., प्रशासनिक क्षेत्रक भूमण्डल। मै.

जिलेबी-सं., १. कुण्डली बान्हल मधुर विशेष। २. एहि नामक वनस्पति। मै.

जिस्ता-सं., कागजक मान। मै.

जिसता-सं., तुर धुनैक काल धुनकी पीटैवाला मुङरी। मै.

जिह्वा-सं., देखू—"जिभिया"। मै.

जिहुलाह्-विशे., नीक निकुत खाइक सतत् इच्छावाला। नीक पदार्थ खाइले जीह् मे पानि भरैवाला। चहटगर खाइले व्यग्र रहैवाला। मै.

जी

जी-सं., अन्तरात्मा, मन। प्रयोग—"कथी ले जी डाहू छी।" मै.

जी !-अव्यय, टोकला पर सम्मानसूचक उत्तर। मै.

जीअत-विशे., १. जीवित। २. विशेष भारवाला। मै.

जीअन-सं., जीवन। सं. तद्भव

जीआ-सं., देखू—"जी"। मै.

जीत-सं., जय। मै.

जीतब-क्रि., विजय करब। मै.

जीन-सं., घोड़ाक पीठ पर सवारक बैसैक आसन। मै.

जीप-सं., विशेष प्रकारक हवागाड़ी। अं. तत्सम

जीव-सं., जीवात्मा, जन्तु। सं. तत्सम

जीवट-सं., दुःसाहस सँ शक्ति प्रयोगक उत्साह। मै.

जीवटगर-विशे., सतत् उत्साह आ साहस रखैवाला। मै.

जीवतगर-विशे., १. भारी। २. धनिक। ३. प्रभावी। मै.

जीवन-सं., जीवित रहैक कम। सं. तत्सम

जीभ-सं., स्वाद लैक अंग (इन्द्रिय) जिह्वा। मै.

जीर-सं., कटुक विशेष (मसाला)। मै.

जीरह्-सं., बात कें खोधि खोधि बहार करब। वादी प्रतिवादीक अभियोग प्रमाणित करैले मोकदमा मे विभिन्न रूपें बात पुछैक कम। मै.

जीह्-सं., देखू—"जीभ"। मै.

जीह् ममड़ब-क्रि., कोनो वस्तु देखैत मात्र मन लोभाएब। मै.

जीह् पनिछाएब-क्रि., खाइक नीक वस्तु देखितैं जीह् पर पानि बहार होएब। मै.

झौह फेंरियाएब-क्रि., वमन वेग होएब। मै.

जु

जुआ-सं., १. खींचै बेल बैलगाड़ीक आगू मे लागल बड़दक कान्ह पर रहैवाला काठक नामानामी पट्टी। २. दाओ (कौंति) रखैवाला खेल। मै.

जुआनी-सं., यौवन, जवानी। उ. तद्भव

जुआरी-विशे., जुआ खेलाइ मे निपुण। मै.

जुइन-सं., पुरुष लिंग। पुरुषक गुप्तांग। मै.

जुगी-सं., दू दू टाक जोड़ सँ बनल एक मान। मै.

जुगू लागब-क्रि., पचीसीक खेल मे दूनू गोंधियाँक एकै कोष्ठ मे बैसल बिना पौ सँ नै छूटैवाला गोटीक होएब। मै.

जुग-सं., १. चूड़ीक संग जोड़ल चूड़ी। २. युग। सं. तद्भव

जुगनू-सं., भगजोगनी। खद्योत। हि. तत्सम

जुग पाकड़ि-विशे., (लाक्षणिक) बहुत पुरान लोक। मै.

जुगाइत-सं., अधिक कालक अवधि। मै.

जुगिलगर-विशे., काज आ व्यवहार मे अबैक योग्य। मै.

जुगुति-सं., युक्ति, उपाय। सं. तद्भव

जुगुत-विशे., युक्ति, उचित प्रतिकार। मै.

जुज्झी-सं., छोट बच्चाक गुप्तांग। मै.

जुझब-क्रि., युद्ध मे मग्न भ' क' लड़ब। हि. तत्सम

जुट्टी-सं., धानक शीश वा आन कोनो लच्छावाला वस्तुक गुहि क' बनल वस्तु। मै.

जुट-विशे., समान मतक दल। मै.

जुटब-क्रि., सम्मिलित होएब। जोड़ाएब। मै.

जुटाएब-क्रि., प्रबन्ध कय एकत्र करब। मै.

जुटान-सं., १. एकत्र करैक प्रयास। २. सम्मेलन। मै.

जुठल-विशे., सक्कत। मै.

जुड़ब-क्रि., १. हृदय सँ ठण्ढा होएब अर्थात् तृप्तिक आनन्द होएब। २. अभिलषित वस्तुक प्राप्ति होएब। ३. उपभोगक अनुकूल आपूर्ति होइत रहब। मै.

जुड़बन्हन-सं., स्त्री (वधू) पुरुष (वर) क आत्माक एकाकार भ' क' बन्धन। मै.

जुड़ाएब-क्रि., १. मन सँ तृप्त बनाएब। २. शरीरे शीतल होएब। मै.

जुत्ता-सं., पनही। मै.

जुत्थ-सं., यूथ। समूह। मै.

जुति-सं., हर जोतैक काल बड़दक कान्हक मिलान। मै.

जुतिगर-विशे., अपन जोड़क संग कान्ह उठबैवाला बड़द। मै.

जुतियाएब-क्रि., जुत्ता सँ पीटब। मै.

जुध-सं., युद्ध। सं. तद्भव

जुन्ना-सं., नमहर खड़ केँ ऐंठि क' बना नमहर एक भत्तावाला रस्सी। मै.

जुनेठ-सं., जुन्नाक हेतु बिन छोपल धानक डाँट सँ झारल धान। मै.

जुनेठब-क्रि., जुन्ना सँ कसि क' बान्हब। मै.

जुम-सं., चुनाओल तमाकूक मुह मे दैक मात्रा। मै.

जुमब-क्रि., वस्तुक पूर्ति होएब। मै.

जुमाउ-विशे., पुरैवाला आ पुरबैवाला। मै.

जुमाएब-क्रि., पुराएब, खर्चक अनुसार पूर्ति करब। मै.

जुमुटु बान्हब-क्रि., बहुत लोकक समूह बना क' चढ़ि आएब। मै.

जुमौआ-विशे., जुमौनिहार, जुमैवाला। मै.

जुरबन्द-सं., खोपा बन्हैक वस्तु। मै.

जू

जू-सं., १. मगक आगू तथा ढोंढ़ी आ काँख मे रह-निहार सूक्ष्म कीट। २. अजायब घर। हि. तत्सम

जूआ-सं., बैलगाड़ीक आगू बड़दक कान्ह पर रहैवाला गोल आयताकार लकड़ी। मै.

जूआसारि-सं., जूआ खेलाइक अड्डा। मै.

जूट-सं., सन, पटुआक सूत। मै.

जूटब-क्रि., संयुक्त होएब। मै.

जूटिका बन्धन-सं., उपनयन सँ पछिला राति बरूआक टीक केँ शाहीक काँट सँ तीन भाग कय प्रत्येक भाग मे मोड़ल आमक पल्लव बन्हैक प्रक्रिया। सं. तत्सम

जूटी-सं., स्त्रीगण सभक केशक तीन लट बनाकय गूहल केश विन्यास। मै.

जूठनि-विशे., ऐंठाओल पदार्थ। मै.

जूड़-सं., ठंढा। मै.

जूड़ शीतल-सं., पानि कादोक खेल, मेष संक्रान्तिक दोसर दिन। मै.

जूड़ा-सं., स्त्रीगणक केश विन्यास। खोपा। मै.

जूता जुतौअलि-सं., जूता सँ परस्परक मारि। मै.

जूलि-सं., परिवारक प्रधानता, जकर विचारेँ घरक काज चलैत होइक। मै.

जूमब-क्रि., पहुँचब, आबि जाएब। मै.

जूस-सं., फलक सिद्ध रस। मै.

जूही-सं., फूल विशेष। मै.

जे

जे-सम्बन्धवाचक सर्वनाम-कर्ता कारक। प्रयोग-"जे कहलौं से बुझलौं कि ने।" मै.

जेकती-अव्यय, समान, जेना, जकाँ। मै.

जेट-सं., विशेष हवाइ जहाज। मै.

जेठ-सं., १. जेठ मास। प्रयोग-"जेठ हे सखि हेठ वर्षा।" २. वयसेँ पैघ। मै.

जेठका-विशे., अनेक मे वयसेँ सब सँ पैघ। स्त्री० जेठकी। मै.

जेठजनी-विशे., (आदर मे) देयादनी वा बहिन सब मे जेठ। मै.

जेठजर-सं., (लाक्षणिक) जेठक प्रति ईर्ष्या आ आक्रोश। मै.

जेठरैअति-विशे., प्रभावशाली, प्राचीन जमीन्दारक लगानक संग्रह करैक प्रमुख। मै.

जेठसासु-विशे., पत्नीक जेठ बहिन। सासुक सम्मान योग्य। मै.

जेठाइ-सं., वयसेँ पैघ होइक अन्तर। मै.

जेठान-सं., देव उठान। (स्थान भेदेँ शब्द भेद)। मै.

जेठांश-सं., त्रिया कर्मक अधिकारी रहैक द्वारेँ जेठ केँ देय। मै.

जेठीमधु-सं., कन्द विशेष। मै.

जेठुआ-विशे., जेठ मास मे होमवाला। मै.

जेनऽ-अव्यय, जेम्हर, जाहि दिश। मै.

जेना-अव्यय, जाहि रूपेँ, यथा। मै.

जेबकतरा-विशे., आधुनिक पाकिटमार। मै.

जेब खाएब-क्रि., आनक संग मिलान होइक योग्य होएब। सुपुट बैसब। मै.

जेवर-सं., गहना। उ. तद्भव

जेबी-सं., अंगा मे बनाओल थोकरी। उ. तत्सम

जेम्हर/जेमहर-अव्यय, जाहि दिश। मै.

जेर-सं., समूह, झुन्ड, बहुतक एक समष्टि। मै.

जेरगर-विशे., अधिक लोक सँ भरल व्यक्ति। मै.

जेली-सं., फलक गूदा केँ औटकय जमाकय बनल भोज्य वस्तु। मै.

जेहन-अव्यय, १. जाहि प्रकारक। मै.
सं., २. आगूक कृत्रिम अढ़नै आ हृदय। उ. तद्भव

जेहनसन-विशे., सन्दिग्ध अवस्थाक शब्द। मै.

जेहरि-सं., पैरक गहना विशेष। मै.

जै

जै-सं., जय। अव्यय, जाहि। सं., जौक आकारक अन्न। मै.

जैओ-अव्यय, यद्यपि। मै.

जैखन-अव्यय, जाहीक्षण। मै.

जै जनमल-विशे., सन्तान। मै.

जैजथा-सं., सब प्रकारक सम्पत्ति। मै.

जैंत-सं., वनस्पति विशेष। मै.

जैतीकाल-अव्यय, जाइक समय मे। मै.

जैतुक-सं., जमाय केँ देवाक वस्तु। मै.

जैधी-विशे., देयादनीक बेटी। मै.

जैन-सं., भारतीय धर्म सम्प्रदाय विशेष। मै.

जैवन्धी-सं., सत्यनाशक बाट। मै.

जो

जो-क्रि., अत्यन्त निरादर मे, जाइक आज्ञा। मै.

जोआएब-क्रि., यौवन प्राप्त करब। मै.

जोआरि-सं., समुद्रक लहरि (लाक्षणिक) कोनो बातक तरङ्ग उठब। मै.

जोँक-सं., पानि मे रहैवाला शोणित चूसैवाला छोट जीव। मै.

जोँकटी-सं., पेट मे उत्पन्न कीड़ा। चाली। मै.

जोकर-विशे., १. योग्य। २. हँसबैक चेष्टावाला। मै.

जोकरक-विशे., योग्यतावाला। मै.

जोँकी-सं., १. पेटक सूक्ष्म कीड़ावाला रोग। २. सोहिजनक बहुराएल माथ फड़। ३. ठेंढी। मै.

जोख-सं., तौल (अन्न आदि वस्तुक)। मै.

जोखतौल-सं., तौलैक निरन्तर क्रम। मै.

जोखब-क्रि., तराजू सँ तौलब। मै.

जोखा-सं., जोड़ करब, हिसाब करब । मै.

जोखिम-सं., संकट, खतरा, आपत्ति । उ. तद्भव

जोग-सं., १. योगसाधना । २. जमायक भोजन कालक स्त्रीगण द्वारा गाओल गीत । ३. योग्य (विशे.) । सं. तद्भव

जोगटोन-सं., तान्त्रिक प्रयोग । मै.

जोगब-क्रि., तत्परता सँ रक्षा करब । ओगरब । मै.

जोगबार-विशे., सुरक्षा मे तत्पर लोक । मै.

जोगाइत-विशे., गोप्यताबाला । सं., प्रबन्ध, प्रतीकार । मै.

जोगाएब-क्रि., बचा कय गुप्त राखब । रक्षा करब । मै.

जोगान/जोगार-सं., आवश्यक एवं उपयुक्त वस्तुक जुटान तथा व्यवस्था । मै.

जोगिन-विशे., जोगटोन आ तन्त्र मन्त्र करैवाली स्त्री । मै.

जोगिया-विशे., १. घरद्वार छोड़ि सन्यासी बनैवाला । २. योगी सन्यासीक गुण आ बाना धरैवाला । मै.

जोगियाबाना-सं., साधु सन्यासीक वेशभूषा । मै.

जोगीरा-सं., होरीक गीतक बीचक फकरा । मै.

जोड़ीहुरीर-सं., छोटकी हुरीर । मै.

जोट्टा लागब-क्रि., गोधियाक गोटीक घर मे पचीसी खेलक गोटीक फँसि जाएब । मै.

जोटल-विशे., सक्कत सँ दू वस्तु जोड़ल । मै.

जोटलाहा-विशे., दू वस्तु सक्कत सँ जोड़लवाला । मै.

जोटुआ-विशे., दू वस्तु एकठाँ सक्कत सँ साटलवाला । मै.

जोड़-सं., दू अंगक सक्कत सँ मिलान । मै.

जोड़न-सं., दूध सँ दही जमबैबैक दही । मै.

जोड़ब-क्रि., दू अंश कें एकठाँ सक्कत सँ साटब । मै.

जोड़ मिलब-क्रि., एकक अनुकूल दोसरक होएब । मै.

जोड़ लागब-क्रि., मनुष्य सँ अतिरिक्त जीवक मैथुन करब । मै.

जोड़ा-विशे., दू संख्याक एक मान । मै.

जोड़ी-सं., १. दू घोड़ावाला घोड़ागाड़ी । २. स्त्री पुरुषक संग । मै.

जोड़ीदार-विशे., सब काज मे संग रहनिहार । मै.

जोड़ी पढ़ब-क्रि., एक स्वरें दू व्यक्ति मिलि मन्त्र पढ़ैत साँपक विष झारब । मै.

जोड़ुआ-विशे., दू खण्ड जोड़ि कऽ बनाओल वस्तु । मै.

जोड़ैया-सं., ईंटा सँ देवाल ठाढ़ करैक श्रम । मै.

जोड़ौआ-विशे., दोसर खण्ड जोड़ि बनलाहा । मै.

जोत-सं., हर सँ खेतक कोड़नि । मै.

जोतब-क्रि., १. हर सँ खेत कोड़ब । २. गाड़ी हर मे बड़द कें लगाएब । मै.

जोतलाहा-विशे., हर सँ कोड़लाहा खेत । मै.

जोतखी-विशे., जोतिषशास्त्र जननिहार । मै.

जोतसीम-विशे., जोतैक योग्य खेत या जोतल जाइवाला खेत । मै.

जोता-विशे., निजी खेतवाला कृषक । मै.

जोताइ-सं., जोतैक तथा कार्य्य मे लगबैक प्रवृत्ति । मै.

जोताउ-विशे., जोतैक योग्य बनल खेत । मै.

जोताएब-क्रि., हरवाहक द्वारा खेत कोड़ाएब । मै.

जोताह-विशे. जोतला सँ उकटल देखवाला । मै.

जोतान-सं., नीक जकाँ जोतैक आ निरन्तर जोतैक श्रम । मै.

जोतास-विशे., जोतै लै उपयुक्त खेत । मै.

जोतासी-सं., जोतै योग्य खेती । मै.

जोति-सं., प्रकाश, इजोत, ज्योति । सं. तद्भव

जोतिष-सं., ग्रह नक्षत्रक शास्त्र । ज्योतिष । सं. तद्भव

जोतिषिवारब-सं., ज्योतिष शास्त्रक ज्ञान सँ जीविका । मै.

जोती-सं., पालो सँ (हर मे) बड़द कें बन्हैवाला डोरी । मै.

जोतुआ-विशे., जोतल जाइवाला । मै.

जोरी-विशे., तत्काल जोड़ि कऽ काज चलबैवाला बाँस, काठ आ डोरी । मै.

जोर-सं., बल, मेल, सामर्थ्य आ आग्रह । मै.

जोरगर-विशे., शक्तिशाली, अधिक तेज, बलगर । मै.

जोरब-क्रि., मिलाएब, उद्योग करब, ओजस्वी बनाएब । गणना करब । मै.

जोराएब-क्रि., गणना कराएब । सक्कत सँ मिलाएब । मै.

जोक-विशे., पत्नी । मै.

जोलहा-विशे., कपड़ा बीनैक व्यवसायवाला जाति । मै.

जोलही-विशे., जोलहाक बीनल कपड़ा । मै.

जोश-सं., उत्साहक आवेग । उ. तत्सम

जोह-सं., एक पर एक लोकक उमड़ल जकाँ गति । मै.

जोहब-क्रि., ताकब, अन्वेषण करब । छत्ती लगाएब । मै.

जोहा करब-क्रि., घासक मुट्ठी कें तहिया क' पथिया मे कसब । मै.

जोहि उठब-क्रि., एके क्रिया मे सामूहिक भावनाक वेग होएब । मै.

जौ

जौं-सं., चैती अन्न विशेष । मै.

जौंआ-विशे., एक संग एकै गर्भ सँ दू बच्चा जन्म लेनिहार । मै.

जौड़-सं., दूनू हाथ सँ रगड़ि क' बाँटल डोरी । मै.

जौड़ी-सं., विभिन्न मालक विभिन्न डोरी । मै.

झ

झ-सं., १. चवर्गक चारिम वर्ण । २. चोआ वा सुगन्धि मिलाओल गीलि (सुंघनी) । मै.

झक्कड़-सं., बुन्नीक संग तेज बसात । मै.

झक्का-सं., अम्मत फल कें मेही काटि नोन तेल मिलओल चहटगर पदार्थ । मै.

झक्की-विशे., धुनै मे भावनाक उग्रतावाला । मै.

झक्ख मारब-क्रि., निष्क्रिय भेल एकाकीपन मे समय बिताएब । मै.

झक-सं., कनेक कालक निद्रा, औंघाइत औंघाइत निन्न । मै.

झकझक-विशे., प्रकाशक द्वारें दूरें सँ देखार । मै.

झकझकाएब-क्रि., अलगे सँ प्रकाशित होएब । मै.

झकझोरब-क्रि., सबकत सँ पकड़ि दुहू दिश तेजी सँ हिलाएब । मै.

झँकना-विशे., सिद्ध वस्तु कें एक सँ दोसर वर्तन मे करैक बासन (साधन) । मै.

झँकब-क्रि., पैघ वर्तन सँ अन्न छानि छानि क' बहार करब । मै.

झक लागब-क्रि., आलस अथवा सँ किछु क्षण ले निन्न आएब । मै.

झकसी-सं., फुही पड़ैत छारल मेघ । मै.

झँकाएब-क्रि., सिद्ध वस्तु कें एक सँ दोसर वर्तन मे कराएब । मै.

झकाएब-क्रि., १. कनेक काल ले व्यस्ततो मे निन्न पड़ब । २. गाछक फल झारै ले डारि हिलाएब । मै.

झकाझक-विशे., चारू दिश परिष्छ रहला सँ चमकदार । मै.

झकार-सं., बासनक भिजलाहु वस्तु कें उपर नीचाँ बासनै मे उछालि क' उपर नीचाँ करैक चेष्टा । मै.

झंकार-सं., गहना आ भ्रमर आदिक मधुर शब्द । सं. तत्सम

झकारब-क्रि., बासनक वस्तु कें उछालि क' उपर नीचाँ करब । मै.

झकास-सं., १. बसात परक मेघक थोड़ वर्षा । २. गाछ वृक्षक सघनता सँ अन्हराओन । मै.

झकोर-सं., सहसा वेग सँ कम्पन । मै.

झँकोरब-क्रि., हठात् वेग सँ कँपाएब । मै.

झख-सं., विषाद भरल चिन्ता । मै.

झखनी लागब-क्रि., दीनता सँ गम्भीर चिन्ता । मै.

झखब-क्रि., दीनता भरल गम्भीर चिन्ता मे पड़ल रहब । मै.

झखरल-विशे., असमय मे झरि क' खसल । मै.

झखरब-क्रि., समय पर गाछ सँ फलक पूर्णतः झरि जाएब । मै.

झखरी-विशे., असमय मे झरल पदार्थ । मै.

झखरौआ-विशे., झड़ि कय खसलवाला । मै.

झखरलहा-विशे., झखरल फलवाला गाछ । मै.

झखाएब-क्रि., १. गाछ डोला कय पाकल फल झाड़ब । २. दुखदायी बात कहि गम्भीर चिन्ता मे द' देब । मै.

झंखार-सं., १. पैघ आ विस्तृत गाछक समूह । २. अधिक वृद्धता वश पुरान । (विशे.) मै.

झँखुरी-सं., छोट गाछक झुण्ड । गाछक छोट छोट डारि । मै.

झग्गर-सं., इनार सँ डोल बहार करैक लेल लोहक अनेक अंकुशक झाबा । मै.

झंगर-सं., परस्पर ओझराएल अनेक काज आ वस्तुक समूह। मै.

झगझग-विशे., विशेष प्रकारें प्रकाशमान। मै.

झगड़ब-क्रि., परस्पर कलह् करब। मै.

झगड़ा-सं., विरोध। मै.

झगड़ाझांटी-सं., विरोधक क्रम। मै.

झगड़ावन-सं., आपस मे स्थायी विरोधक क्रम। मै.

झगड़ाहु-विशे., अनेरो झगड़ा करैले उदमाहल। मै.

झगड़ुआ-विशे., झगड़ा वा विरोध उत्पन्न करैवाला। मै.

झगड़ौआ-विशे., झगड़ा मे फँसलहा। मै.

झझकार-सं., खौझाएल शब्द। मै.

झझकारब-क्रि., खौझाएल शब्दें गंजन करब। मै.

झझकाह्-विशे., अनेरो खौझा क' गप करैवाला। मै.

झंझट-सं., अनेक प्रकारक कठिन काजक व्यग्रता। मै.

झंझटिया-विशे., १. अनेक ओझरौटवाला काज। २. विन्वें मे अड़ड़ा रोपैवाला। मै.

झंझराह्-विशे., बीच बीच मे फाँकवाला बासन। मै.

झंझरी-विशे., छेदवाला नाओ। मै.

झझाएब-क्रि., आवश्यकताक अनुसार खेत मे पानि बहब। मै.

झंझावात-सं., बिहारि, वर्षाक संग आन्ही। सं. तत्सम

झझौ (पात)-सं., बसातक द्वारे काटल फाटल केराक पात। मै.

झट्टा-सं., पटकि पटकि दाना झारल धानक डाँट। मै.

झट द'-अव्यय, जल्दी सँ। मै.

झटक-सं., तेज बसातक संग वर्षा। मै.

झटकन-सं., सूपक बसातक संगें अन्नक परिष्कार। मै.

झटकब-क्रि., सूपक बसातें अन्न कें स्वच्छ करब। मै.

झटका-सं., १. गर्दनिक उपर देने छागरक बलि। मै.

झटका-सं., जोर सँ कचुक आक्षेपें चोट। मै.

झटकारब-क्रि., तेज चलब। मै.

झटकी-सं., बसातक वेग पर एक लक्खत वर्षा। मै.

झटझट-अव्यय, लगले लागल। शीघ्रता सँ। मै.

झँटना-सं., गुच्छावाला वस्तु सँ मारैक साधन। झँटैक वस्तु। मै.

झटपट-अव्यय, अतिशीघ्र। मै.

झटहा-सं., मारैक हेतु तथा फल तोड़ैले फेंकैवाला छोट डंटा। मै.

झटहा मारब-क्रि., (लाक्षणिक) तात्पर्य्य सँ अर्थ बहार करैवाला शब्द कहब। मै.

झँटुआ-विशे., झाँटिकय झाड़ल दानावाला। मै.

झंठी-विशे., डारि पात झड़ल गाछ। मै.

झड़-विशे., १. असमय खसल फल। २. शीस सँ झड़ल दानाक गाछ। मै.

झड़ना-विशे., शीस सँ झट द' झड़ैवाला। मै.

झड़नमा-विशे., झड़ै मे अत्यन्त सुगम। मै.

झड़ब-क्रि., १. अपन जड़ि सँ अलग भ' क' खसब। २. स्त्रीक मासिक धर्म होएब। ३. पशु स्त्री कें लज्जा खसब। मै.

झड़र-सं., छोटका बड़र। मै.

झड़री-सं., बुड़ारी मे देहक कारी कारी चिह्न। मै.

झड़लहा-विशे., अपनें खसलहा। मै.

झंडा-सं., पतक्खा, पताका। मै.

झड़नी-सं., बाँसक पातर काड़मक बनल मूठदार वस्तु। मै.

झड़ाठ-विशे., कोनो वस्तु कें उठा बैसा कबला सँ झड़ल दाना। मै.

झड़ीकस-सं., काठ मे खाँच कढ़ैवाला कमारक अस्त्र। मै.

झड़ी लागब-क्रि., लगातार बुन्ना बुन्नी बर्षब। मै.

झड़ुआ-विशे., झड़ि झड़ि क' खसलहा। मै.

झन्न द'-अव्यय, धातुक बर्तनक खसैक शब्द। मै.

झनक-सं., मालक व्याधि। मै.

झनकब-क्रि., १. कनेक नेड़राएब। २. रोमाञ्चक संग देहक काँपब। मै.

झनक बलाह्-विशे., कखनो कखनो बलाहक रंग धयनिहार। स्त्री० झनक बलाहि। मै.

झनकाएब-क्रि., भीतर सँ देह कें सिहराएब। मै.

झनकार-सं., काड़ा, नूपुर आदिक शब्द। मै.

झनकारब-क्रि., गहना आदिक शब्द करब। मै.

झनकाह्-विशे., कोनो बातक सूरि मे बहैवाला। जाही ताही बातक झोंकवाला। स्त्री० झनकाहि। मै.

झनकी-सं., बतहपनाक काज । मै.

झनझनाएब-क्रि., १. पातर धातुक झनझन बाजब । २. झुनझुन कय देहक काँपब । मै.

झनन झनन-सं., नर्त्तक काल ताल पर नुपुरक शब्द । मै.

झनपटहा-विशे., खाइक सूतैक काल अनेर झमेल करैवाला मैन्मा । खौंझाहू । मै.

झनरझनर-सं., कोनो धातु सँ बहराएल अप्रिय शब्द । मै.

झन सन-अव्यय, धातुक वस्तुक जोर सँ खसैक ध्वनि । मै.

झनाक द'-अव्यय, धातुवाला वस्तुक चोट सँ मस्तिष्क मे प्रतिक्रिया । मै.

झप्पड़-सं., हल्लुक हाथेँ थापड़क मारि । मै.

झँप्पा-सं., कोनो वासनक मुह केँ गक्कत सँ झँपैक वस्तु । मै.

झप्पा-विशे., गरम दूध मे द' क' झाँपल भात । मै.

झपक-सं., नुका क' अचानक हाथ सँ ल'लैक क्रिया । मै.

झपकब-क्रि., नुका नुका क' ल' भागब । मै.

झपका-विशे., झपकि क' ल' लैक लतिवाला । मै.

झपकी-सं., कोनो अवस्था मे निन्न भ' जाइक अभ्यास । मै.

झपट्टा-सं., कोनो वस्तु पर आक्रमण करैत अचानक तेजी भरल चेष्टा । मै.

झपट-सं., अलक्षित आक्रमणक वेग । मै.

झपटब-क्रि., छीनैक हेतु अचक्केँ वेग सँ आक्रमण करब । मै.

झपटा मारब-क्रि., कोनो वस्तु पर अचक्के जोर सँ टूटि पड़ब । मै.

झपटान-सं., अनूक झपटैक क्रिया । मै.

झपताला-सं., संगीतक तालक प्रभेद । मै.

झँपन-सं., मेघक अस्थायी छाया । मै.

झँप्पन तोपन-सं., बहुत दिन धरि मेघक छाया । मै.

झपना-सं., झँपैक अस्थायी वासन । मै.

झँपसी लागब-क्रि., पुस मासक धौन्ह लागब । मेघक द्वारेँ टिपिर टिपिर बुन्न पड़ैत दिन झाँपल रहब । मै.

झँपाओन-विशे., १. धौन्ह वा मेघ सँ झाँपल दिन । २. झँपैक मूल्य वा पुरस्कार । मै.

झपाक द' उठब-क्रि., पानिक धोखा सँ थाल मे पैर पड़ने अचानक धँसैक शब्द होएब । मै.

झँपोल-सं., अड़ करैक आ झँपैक मन क' दैक चेष्टा । मै.

झब्बा-सं., एक आधार (डन्टी) मे अनेकक स्थिति । मै.

झबझब-अव्यय, जल्दी जल्दी । मै.

झब द'-अव्यय, शीघ्रता सँ । मै.

झबरब-क्रि., चारु दिश झब्बाक झब्बाक लटकल रहब । मै.

झबरा-विशे., गरदनि पर नमहर केश लटकल रहै-वाला । स्त्री० झबरी । मै.

झबसन-अव्यय, झट द' । मै.

झबसी-सं., काज नष्ट करैवाला, जल्दीबाजी । मै.

झबहा-सं., एक सेरवाला बड़का दूधक नग्गा । मै.

झबहो-सं., आधा सेरक छोटका नग्गा । मै.

झबिया-सं., कुञ्जीक गुच्छा । मै.

झमक-सं., प्रदर्शनक हेतु तेजी सँ अंग चालन । मै.

झमक झमक-सं., विभिन्न चेष्टा आ तेजी सँ अंग चालनक द्वारेँ आभूषण सभक ध्वनि । मै.

झमकब-क्रि., मधुर ध्वनिक संग प्रकृतिक अभि-व्यक्ति होएब । मै.

झमकाएब-क्रि., अपन झमक सँ वातावरण आ परि-वेश मे मधुरता एवं आनन्द पसारब । मै.

झमझौहरि-सं., अनेक लोकक एक संग जोर सँ क्रन्दन वा विवाद । मै.

झमटगर-विशे., डारि पातक अधिकता सँ सघन भेल । मै.

झम द' उठब-क्रि., द्रव्य (धातु) क वस्तु खसने ध्वनि होएब । मै.

झमर झमर-सं., अनेक द्रव्यक सम्मिलित ध्वनि । मै.

झमरुआ-विशे., वासन मे अँचार केँ मसाला द' क' वागन केँ छौंक सँ ढोला ढोला कय मसाला मिला-ओल अँचार । मै.

झमाएब-क्रि., १. एकठाँ अधिक काल रौद बसात मे पड़ल रहने वस्तुक विकृत होएब । २. (लाक्षणिक) शोचक द्वारेँ एकठाँ सँ दोसर ठाँ नहि होएब । मै.

भय गेल ।

झमाक-सं., एक संग अनेक धातुक वस्तुक खसैक ध्वनि । मै.

झमाझम-अव्यय, १. मुसलाधार वर्षाक ध्वनि । २. धातुक वासन आ गहना सभक कम्पनक ध्वनि । मै.

झमान-सं., कष्ट, चिन्ता आ विवशता सँ दुखी होइत निष्क्रिय । मै.

झमान सँ खसब-क्रि., अचानक निराशा सँ चिन्तित भय उठब । मै.

झमार-सं., अथक परिश्रम आ शारीरिक एवं मानसिक अव्यवस्था सँ उत्पन्न क्लेश । मै.

झमारब-क्रि., झोंक सँ अधिक डोलाएब । मै.

झमेल-सं., अपन अपन बात के रखैक हेतु उठाओल समस्या । मै.

झमेलिया-विशे., बात बात मे समस्या ठाढ़ करैवाला । मै.

झड़र-विशे., असमय मे गाछ सँ खसल । मै.

झर-विशे., कटु शब्द । मै.

झरक-सं., बसातक संग आएल ताप । मै.

झरकल-सं., झरकजैक, केवल आगि मे पकबैक कम । मै.

झरकब-क्रि., आगि सँ वे गर पाकब । डहब । मै.

झरकबाहि-सं., मानसिक उत्तापक लहरि । मै.

झरकल मुह सौंपने पाबी-लोकोक्ति., अभद्र मुह कें सँ देखाबी सेह नीक । मै.

झरकलहा-विशे., (लाक्षणिक) रूपें स्वभावें अदर्शनीय । मै.

झरकाएब-क्रि., आगि मे पकाएब । डाहब । मै.

झरका लागब-क्रि., अनेर सुखाइक कम होएब । मै.

झरकाह-विशे., झरकल जकाँ । झरकजैक योग्य । मै.

झरकौआ-विशे., झरका क' बनाओल । झरकाएल । मै.

झरझर-अव्यय, गह पैघ रहैक द्वारेँ वासन सँ वेगेँ वस्तुक खसब । मै.

झर झमेल-सं., झमेलक विशेषता । मै.

झरझराएब-क्रि., झरझरा कय खसब । मै.

झरड़-सं., कुड़ारी मे उगल मुहक फोंसरी । मै.

झरना-सं., घर दर कोनो वस्तु के झारैक (स्वच्छ करैक) वस्तु । मै.

झरनी-सं., स्त्रीगणक केश झारैक साधन । मै.

झर पड़ब-क्रि., कान मे निरन्तर कटु ध्वनिक द्वारेँ शून्यता उत्पन्न होएब । मै.

झरब-क्रि., १. बिना प्रयासेँ आमद होएब । २. धनवानक हाथेँ द्रव्यक प्राप्ति होएब । ३. मन्त्र सँ विष नीचाँ खसब । मै.

झरबड़र-सं., देखू—'झरड़' । मै.

झरबैर-सं., झाँठी सँ उत्पन्न गाछक छोट दानावाला बैर (फल) । मै.

झरलहा-विशे., गाछ सँ स्वयं खसलहा । मै.

झराएब-क्रि., १. मन्त्र द्वारा विष आदि नीचाँ उतरबाएब । २. घरद्वार सभक जमल मैल स्वच्छ कराएब । मै.

झरोखा-सं., खिड़की । मै.

झरौड़-सं., उचित सँ छोट दानावाला वस्तु । मै.

झल्ला-सं., विशेष प्रकारक बथुआ साग । मै.

झउल-सं., फाँक, छेद, बहारक प्रकाश अबैक छोट छोट गह । मै.

झलक-सं., क्षणिक दर्शन । प्रकाशन । मै.

झलक देब-क्रि., नाम मात्रक दर्शन देब । मै.

झलकब-क्रि., प्रकाशित होएब । मै.

झलकी-सं., प्रकाशक रेखा । मै.

झलकाएब-क्रि., चिक्कन कय के चमकाएब । मै.

झलझल-विशे., अत्यन्त मेही आ स्वच्छ रहैक द्वारेँ पारदर्शी । मै.

झलझली-सं., आवरणक मेही सँ नग्नता । मै.

झलफल-सं., कनेक कनेक अन्हारक आगम । मै.

झलफलाएब-क्रि., स्पष्ट नहि सूझब । मै.

झलफली-सं., १. अन्हारक द्वारेँ देखै मे बाधा । २. सूझैक शक्तिक अभाव । मै.

झलब-क्रि., उठा उठा क' डाँट सँ अन्न झाड़ब । मै.

झलमल-सं., खनहि पूर्ण आ खनहि क्षीण प्रकाश सँ चमक । मै.

झलमलाएब-क्रि., खनहि पूर्ण खनहि थोड़ प्रकाशेँ चमकब । मै.

झलरी-विशे., पातर आ पुरान भेला सँ पहिरैक अयोग्य, झालरि बनल । मै.

झलहेर-सं., नाओ सँ जल भ्रमण । मै.

झलाक झलाक-अव्यय, अत्यन्त चमक सँ देखार । मै.

झलाबोर-सं., पानि सँ सब किछु डूबल रहैक दृश्य । मै.

झलिबज्जा-विशे., झालि बजबै मे निपुण । मै.

झलौआ-विशे., बिना छोपल (जड़ि छोड़ आ) धान । मै.

झ?िमगर-विशे., कड़ुआइ भरल तेज गन्धवाला । मै.

झहर झहर-अव्यय, तीव्र वेग सँ वर्षाक क्रम । मै.

झहरब-क्रि., झरि झरि खसब । (लाक्षणिक) अनायास सतत् लाभ होएब । मै.

झहार-सं., अनायास झरि झरि खसबाक क्रम । मै.

झहरा होएब-क्रि., कोनो कारणे टूटि टूटि नष्ट होएब । मै.

झा

झा-सं., मैथिल ब्राह्मणक एक उपाधि । मै.

झांइ-सं., १. कनेक मात्रक स्थिति । २. दुराग्रह । मै.

झांइ चढ़ब-क्रि., अनेर कोनो बातक जिद्द होएब । मै.

झाइंग बान्हब-क्रि., फूसि दोष लगाएब । मै.

झांइ झांइ-अव्यय, अस्पष्ट उग्रतापूर्वक अधिक लोकक ध्वनि । मै.

झांइस-सं., कड़ु तेलक नाक मुंह मे कड़ुआहटिक स्वाद । मै.

झाउं झाउं-अव्यय, कुकूरक आ ओकर जकाँ मनुष्यक बजैक शब्द । मै.

झाक-सं., सुलगबैले चुलहा पर देल फोंक जारनि । मै.

झाकन-सं., धानक उसिना आ भोजक भात बर्तन सँ उझिलैक क्रम । मै.

झाकब-क्रि., सिद्ध भात आ उसिनल धान आन बासन मे बारम्बार उझिलब । मै.

झांकी लेब-क्रि., अल्पकालक दर्शन । मै.

झांखब-क्रि., एकै ठाम अधिक बोझि क' राखब । मै.

झांखी-सं., गाछक छकड़ल पाड़ल झारि पातक समूह । मै.

झांखुर-सं., छोट छोट गाछ आ लत्तीक सघनता सँ बनल बोन । मै.

झाग-सं., साबुन आदिक सघन फेन । मै.

झागन-सं., तौलिया गमछाक फर । मै.

झांझ-सं., पकवान आ पैघ बर्तन सँ भात छनै लेल पैघ डंटावाला सघन छेदवाला गोल चापट धातुक बनल बर्तन । मै.

झांझन-सं., बाँसक लागि लागल फाड़ल पसारल टाट बन्हैक साधन । मै.

झांझरि-विशे., अनेक छेद भरल । मै.

झांझी-विशे., कुत्ताक प्रभेद । छोट शरीरक विशेष भूकैवाला कुत्ता । मै.

झांट-सं., अनचहँ हल्लुक वस्तुक चोट । मै.

झांटन-सं., धान आदि झांटैक क्रम । मै.

झांटब-क्रि., १. हल्लुक वस्तु सँ चोट करब । २. धान आदिक डांट सँ दाना झाड़ब । मै.

झांट बाढ़नि करब-क्रि., दुर्वाक्य कहि कय भगाएब । मै.

झांटि-सं., गुप्तांग लगक केश । मै.

झांटी-विशे., तेज बसात । मै.

झाड़-सं., एकठाँ अनेक छोट गाछ आ लत्तीक गोल । मै.

झाड़नि-सं., १. घर द्वारक भीतर बाहर झाड़ैक प्रकार । २. दाओन करै मे बराबरि डांट झाड़िकय दाना नीचाँ खसबैक क्रम । मै.

झाड़ फानूस-सं., शोभाले कोठाक भीतर लटकाओल काच वा कागजक विभिन्न आकारक गुच्छा ।

उ. तद्भव

झाड़फूंक-सं., तन्त्र मन्त्रक विधि सँ रोगक शान्तिक प्रयास । मै.

झाड़ब-क्रि., वस्तु कें परिच्छ करब । मै.

झाड़ा फिरब-क्रि., मलत्याग करब । मै.

झाड़ी-सं., छोट छोट गाछ आ लत्ती सँ झांपल स्थान । कुञ्ज । मै.

झाड़ु-सं., बाढ़नि । (स्थान भेदें शब्द भेद) । मै.

झात् !-अव्यय, मुंह नुकाकय छोट नेन्नाक मनोरंजनक हेतु कहैक शब्द । मै.

झांप-सं., १. सवारी (महफा, चौपाला) क ओहार । २. देवताक उपर लटकओबाला ओहार । मै.

झापट-सं., अनचोकें वस्त्र आ पक्षीक पाँखि सभक झटका । मै.

झापड़-सं., पञ्जा पसारि हल्लुक हाथक थापड़। मै.
झाँपनि-सं., आवरण, झाँपैक साधन वा क्रम। मै.
झाँपब-क्रि., आवरण देब। आच्छादन करब। मै.
झापस-सं., बुद्धि पर अन्हरजाली देब। झासा। मै.
झाबा-सं., गुच्छा। मै.
झाबी-सं., कुञ्जी आदि वस्तुक गुच्छी। मै.
झाम-सं., ताप सँ बरकल पजेबा। मै.
झाम गुड़ब-क्रि., चिन्ता दीनता आ असमर्थता सँ सोच मे पड़ल निष्क्रिय होएब। मै.
झामर होएब-क्रि., परिष्कारक बिना तथा कष्टक द्वारें घर आ देह आदि विवर्ण होएब। मै.
झामरि लेब-क्रि., १. दौड़ दौड़ क' कुकुरक भूकब। २. नर्तकीक उन्मत्त भ' क' नाचब। मै.
झामा-विशे., कत्तो कत्तो ताप सँ बरकल भट्ठाक ईंटा। मै.
झार-सं., पानि सन पातर मल। मै.
झारझूर-विशे., बासन के नीक जकाँ झारला सँ बहराएल शेष वस्तु। मै.
झारनझूरन-विशे., झारि झूरिकय एकत्रित वायल। मै.
झारनि-सं., १. मन्त्र द्वारा कोनो वस्तु ल' क' विष आदि अदृश्य वस्तु के उतारैक प्रयास। वस्त्र सँ गर्दा झारैक हेतु जोर सँ कम्पन। मै.
झारनिहार-विशे., मन्त्र पढ़ि झारैवाला। मै.
झारब-क्रि., १. वस्त्र आदि सँ धूरा आदि खसबैले झोंक सँ कँपाएब। २. मन्त्र सँ विष आदि उतारब आ भूत भगाएब। मै.
झारी-सं., टोंटीवाला सौंकर मुहक जलपात्र। मै.
झालरि-सं., कपड़ाक विभिन्न रूपक बनाओल मालाकार बेरुआ आदि वस्तुक शोभा। मै.
झालि-सं., पातर गोल पत्र जकाँ दूनू हाथ सँ बजबैवाला वाद्य विशेष। मै.
झाँसि-सं., देखू—"झाँइस"। मै.
झाँसी-सं., लत्ती पातीक पात केँ खाइवाला लाल छोट कीड़ी विशेष। मै.

झि

झिक्काझोरी-सं., एके वस्तु कें अपना अपना दिस घीचैक प्रयास। मै.
झिगा-सं., १. इचना माछ। २. घेरा (तरकारीक फल)। (स्थान भेदें शब्द भेद)। मै.
झिंगुनी-सं., लत्ती मे फड़ैवाला छोट व्यंजन। मै.
झिंगुर-सं., राति कें शब्द करैवाला जंगली कीड़ा। मै.
झिझकब-क्रि., कोनो विषय कें करै मे आगाँ पाछाँ करब। मै.
झिझकाह-विशे., झिझकैक स्वभाववाला। मै.
झिझकी-सं., कोनो काज कें करै मे आगाँ पाछाँ करैक प्रकृति। मै.
झिझिया-सं., तौला कें रंग सँ लिखनि कय कें बीच सँ नीचाँ असंख्य छेद कय, दीप बारि कय माथ पर लय गीत गबैत नवरात्र मे भरि गाम घुमबैत डाइनि योगिन सँ रक्षाक हेतु दुर्गाक प्रार्थना भरल टोना विशेष। मै.
झिझिर कोना-सं., आँखि झाँपि कोन सँ कोन बुलैक खेल। मै.
झिझिरी-विशे., पुरान होइक कारणें अधिक फाटल चीटल। मै.
झिटका/झिटुका-सं., फूटल माटिक बासनक छोट टुकड़ा। झिटकी। मै.
झिटकी मारब-क्रि., धोखा दय अपन लक्ष्य पर आनब। मै.
झिटब-क्रि., छल, बल आ कल सँ वस्तु ल' लेब। मै.
झिड़काह-विशे., पहिनहि अनेरो बात पर बिगड़ि उठनिहार। मै.
झिड़की-सं., पहिनें खिसियाएल बात कहैक स्वभाव। मै.
झिनकी-सं., मालक रोग विशेष। मै.
झिमझिम-विशे., सघन बुन्नीवाला बिन बसातक वर्षा। मै.
झिमिर झिमिर-विशे., लगातार थोड़ बेगक वर्षा। मै.
झिल्लम-सं., बाँहि सक्कत करैलेल काठक बनाओल मुद्गर। मोट आ छोट काठक गोल खण्ड। मै.
झिल्लम झाड़ब-क्रि., (लाक्षणिक) कोर्इँ हाथ फेँकि फेँकि बिगड़ब। मै.

झिल्ली-सं., १. मनुष्यक कानक भीतर तथा अक्षत यौवनाक योनि मे पातर आ कोमल चमड़ाक आवरण। २. तार जकाँ बेसनक साग। मै.

झिलमिली-सं., घरक भीतर मे देवाल मे देल रौद बसात अबैक छोट झरोखा (छेद)। मै.

झिलिया-सं., बेसनक तार जकाँ जिलेबीसन मधुर सपेटल तेल पीक छानल नोनगर खाद्य पदार्थ। मै.

झिलियाएब-क्रि., कोड़ल खेत कें कोदारि सँ चौरस करब। मै.

झिसियाएब-क्रि., अत्यन्त मेंही बुन्नीवाला वर्षा। मै.

झिहरी-सं., कनेक कनेक झरैवाला वासनक छेद। मै.

झिहिरझिहिर-विशे., मन्द आ निरन्तर अबैवाला वायु। मै.

झी

झीँक-सं., पीसैक काल निरन्तर जाँत मे देवाक मुट्ठीभरि अन्नक मान। मै.

झीँकब-क्रि., अपना दिश क' खींचब। मै.

झीँकातीरी-सं., अपना अपना दिश एकै वस्तु कें खींचैक चेष्टा। मै.

झीरो-सं., धानक गाछक संग बढ़ैवाला घास। मै.

झीसी-सं., मेघ सँ खसैत अत्यन्त मेंही बुन्नी। मै.

झु

झुक्का-सं., डन्टी लागल लगुआ भट्टा कें चीरि कय बिना पिठारक तरुआ तरकारी। मै.

झुकनी-सं., आँखी सँ झुकि झुकि खसैक अभ्यास। मै.

झुकब-क्रि., नीचाँ लिबब। नत होएब। मै.

झुकाएब-क्रि., नीचाँ लिबाएब। नवाएब। मै.

झुकाओ-सं., एक दिसाह मनक आकर्षण। मै.

झुकान-सं., झुकैक क्रम। मै.

झुकाह-विशे., एक दिश लिबल सन भेल। मै.

झुग्गी-सं., अस्थायी बाटक कातक फूसक घरवाला छोट दोकान। मै.

झुझुआएब-क्रि., थोड़ वस्तु सँ असन्तोष प्रकट करब। मै.

झुझुआन-विशे., थोड़ रहला सँ असन्तोषजनक। मै.

झुझुआह-विशे., १. थोड़ होइक द्वारेँ मन भरैं मे अयोग्य। २. झुझुआइक गुणवाला। मै.

झुट्ठा-विशे., फुसियाह। फूसि बजैवाला। मै.

झुड़्‌र-विशे., बुढ़ारीक द्वारेँ लटकल चमड़ावाला बूढ़। मै.

झुण्ड-सं., समूह, दल। मै.

झुरखुर-विशे., झुकल अंग, नमड़ल चमड़ा आ पाकल पिपनीवाला बूढ़। मै.

झुनकी-विशे., बाजनवाला ठेङा। मै.

झुनकुट पुरान-विशे., अत्यन्त पुरान वस्तु आ अत्यन्त वृद्ध लोक। मै.

झुनझुन-अव्यय, द्रव्यक बनल वस्तुक मेंही ध्वनि। नूपुर आ घुघरू काड़ा आदिक ध्वनि। मै.

झुनझुना-सं., अत्यन्त नेन्नाक झुनझुन शब्द करैवाला खेलौना। मै.

झुनझुनी-सं., एकै गरेँ अधिक काल अंगक रहला सँ रक्त संचार अवरुद्ध भेनेँ अथवा विशेष रोग भेनेँ अथवा दुर्बलता सँ अंगक भीतर झुनझुन शब्द करैसन अनुभव। मै.

झुनझुनी भरब-क्रि., आश्चर्य, आनन्द आ भय सँ रोग विशेष सँ अंग मे झुनझुन अनुभव होएब। मै.

झुनाएब-क्रि., खेत मे फसिलक अत्यन्त पाकि जाएब। मै.

झुनुक-सं., नूपुरक शब्द। काड़ाक ध्वनि। मै.

झुनुर झुनुर-अव्यय, कंकड़ भरल फोंक गहनाक ध्वनि। मै.

झुम्मक-सं., कर्णफूल आदि गहना मे शिरीषक फूल जकाँ लागल डोलैत वस्तु। मै.

झुम्मरि-सं., १. गीतक लयक प्रभेद। २. तानल हाथ मे हाथ जोड़ि आ पैर मे पैर जोड़ि वेग सँ दू नेन्ना युवतीक नचैक खेल। प्रयोग—"फरिछा झुम्मरि खेलै छी।" मै.

झुमका-सं., गहना विशेष। मै.

झुरकुटिया-विशे., केराक भेद। पातर आ छोट केरा। मै.

झुरखी-सं., छोट छोट ठहुरीवाला जारनि। मै.

झुरझुर-सं., नेन्नाक खाइक आ सुतैक बेरक झमेल। मै.

झुरझुराएब-क्रि., रहि रहि क' दुखिताह होएब। मै.

झुरझुरी-सं., अधिक वासनाक वेग, आश्चर्य आ भयक आवेग सँ देहक सिहरन आ सनसनाएब। मै.

झुरमुठि-सं., परस्परक सक्कत पकड़। मै.

झुल्ला-सं., डोरी आ तार सँ नेम्ना भुटका कें झुलबैक बनल वस्तु । मै.

झुलझुल-अव्यय, विनोदक खेल नेम्ना कें झुलबैक कालक शब्द । मै.

झुलना-सं., उतनुआ नेम्नाक उपर देल (लटकाओल) झुलैत रंग बिरंगक चिड़ै आदि वस्तु । मै.

झुलनी/झुलबा-सं., उतनुआ नेम्नाक झुलैक पलना । मै.

झुलहाल होएब-क्रि., दुख, चिन्ता आ व्यग्रता सँ व्याकुल होएब । मै.

झुलाएब-क्रि., शिशुक मन बहटारैले झुलबा पर आन दय कें डोलाएब । मै.

झुलेझुले-अव्यय, बच्चा कें झुलबैक कालक शब्द । मै.

झू

झूटब-क्रि., बारम्बार वेग सँ आक्रमण ले दौड़ब । मै.

झूट होएब-क्रि., चोट आदि सँ अंग सुन्न होएब । मै.

झूठ-विशे., फूसि । हि. तत्सम

झूठफूसि बनाएब-क्रि., मिथ्या गप गढ़ि गढ़ि दोष देब । मै.

झूना मलमल-सं., विशेष प्रकारक मेहीं वस्त्र । मै.

झूमब-क्रि., मन जकाँ अंग चलाएब । मै.

झूर-विशे., १. अधिक कड़ा कय तरल । २. मन मे चिन्ता आ विरक्ति भरल । मै.

झूरझमान होएब-क्रि., चिन्ता, कष्ट आ निराशा सँ अत्यन्त पीड़ित रहब । मै.

झूल-सं., प्राचीन राजा आ आधुनिक अधिवक्ता (वकील) एवं हाथीक पीठ परक विस्तृत आ विलक्षण वस्त्र । मै.

झूलन-सं., श्री कृष्ण कें झुलबैक वार्षिक पर्व । झूला पर नेम्ना के झुलबैक प्रयास । मै.

झूलब-क्रि., लटकैवाला पर चढ़ि आगू पाछू बारम्बार डोलब । मै.

झूला-सं., बैसि कय आ ठाढ़ भ' क' शून्य मे डोलैक साधन । मै.

झूला झूली-सं., झूला झूलैक निरन्तर कम । मै.

झूस-विशे., अल्पता, थोड़, घट्टी, कमी । मै.

झो

झोंक-सं., हठ करैक आवेग । मै.

झोंकगर-विशे., अधिक पुष्ट, वेगी तेज । प्रयोग—"कने झोंकगर औन दियौ जे झट द' भानस भ' जाय । मै.

झोंक झोंक-सं., तेजी सँ आंच दैक काज । मै.

झोंकन-सं., १. कोनो विषय पर एक दिशाहि जोर । २. भट्ठी मे अधिक जारनि बोझैक कम । मै.

झोंकब-क्रि., १. कोनो बात पर एके पक्षक जोर देब । २. कोनो वस्तुक विशेषता सँ व्यवहार करब । ३. चूल्हा मे अधिक जारनि बोझब । मै.

झोंका-सं., १. कोनो आन्तरिक आ मानसिक रोगक दौड़ । २. माल महिसिक भौतिक रोग । मै.

झोंकाइ-सं., निरन्तर अधिकता सँ आपूर्ति । मै.

झोंकाड़-सं., १. भट्ठी आ चुल्हि मे लगातार इन्धन भरब । २. कोनो वस्तुक विशेष आपूर्ति । मै.

झोंकान-सं., कोनो एक वस्तुक एकै बेर अधिकता रखैक चेष्टा । मै.

झोंकारब-क्रि., अधिकता सँ कोनो वस्तुक प्रयोग करब । मै.

झोंकारा-सं., १. एक पर एकक तेजी सँ भरैक कम । २. जरबै लेल चुल्हि आदि मे जारनि अधिक दैक चेष्टा । मै.

झोंकाह-विशे., भावनाक वेग पर चलनिहार । स्त्री० झोंकाहि । मै.

झोंकी-सं., १. बसातक वेग । २. मानसिक आवेग । मै.

झोखरब-क्रि., अंग अंग मे शक्तिहीनता सँ ढील होयब । चमड़ा लटकब । मै.

झोकौआ-विशे., झोंकैक अर्थात् अधिकता सँ भरैक योग्य वा भरैवाला । मै.

झोंझ-विशे., डारि पातक अधिकता सँ सघन । मै.

झोंझगर-विशे., अधिक सघन । मै.

झोंझराह-विशे., सघनता सँ अगम्य । मै.

झोंझा-सं., देखू—"झोंझ" । मै.

झोंझाह-विशे., झोंझ सब सँ भरल । मै.

झोंझि-सं., सघन झोंझवाला स्थान । मै.

झोंझों-अव्यय, १. नेन्ना कें खेलबैक हेतु पीठ पर लदैक प्रक्रिया । २. अधिक लोकक जोर सँ परस्पर बाजब आ विवाद करब । प्रयोग–"कथीले सब क्यो झोंझों करै छी ।" मै.

झोंट-सं., स्त्रीगणक माथक नमहर केश । मै.

झोंटकी-सं., छोट बच्चाक नाम नाम केश । मै.

झोंटगर-विशे., वयस्कक पैघ पैघ केशवाला । मै.

झोंटहा-सं., स्त्री जाति । मै.

झोंटा-सं., स्त्रीक माथक केश । मै.

झोंटाझोंटी-सं., झोंटा पकड़ि स्त्रीक झगड़ा । मै.

झोंटा झोंटीअलि-सं., स्त्री जातिक परस्पर झोंट पकड़ि लड़ाइ । मै.

झोंटी-सं., १. अनावश्यक बढ़ल केश । २. विशेष स्थानक कबुला मे कटै बेल बढ़ल नेन्नाक केश । मै.

झोंटैला-विशे., अधिक नमहर केशवाला किशोर । मै.

झोपड़ी-सं., धरती लागल मोड़ल टाटक एकजनिया खोपड़ि । मै.

झोर-सं., तीमनक अधिक विशेष जल । मै.

झोरगर-विशे., उचित सँ बेशी रसदार । मै.

झोरगराह-विशे., अधिक जलवाला तीमन । मै.

झोरब-क्रि., १. ताकब, सघन वन मे शिकारक अन्वेषण करब । २. कपड़ा द्वारा हाथ सँ मथि गर्दा वा रस बहार करब । मै.

झोरमाण-सं., रसदार तीमन । मै.

झोरा-सं., हाथ मे लटका कय लय जाइवाला कपड़ा आदिक पैघ थोकड़ी । मै.

झोराझार-सं., १. (लाक्षणिक) वस्तुक समाप्त होएब । २. उपनयनक उपरान्त चरिमा (रातिम) दिन बरुआक भीखिक झोरा झारैक विधि विशेष । मै.

झोराएब-क्रि., बड़ी, माछ आदि तीमन मे मसालाक संग जल देब । मै.

झोराह-विशे., अधिक जलदार । मै.

झोरी-सं., १. झोराक छोट रूप । २. झोरैक काज । मै.

झोरौआ-विशे., झोर दैक योग्य तीमन । मै.

झोल-सं., वस्तुजात आ घरद्वार मे धूआँ धुकुर सँ जल्ला मकड़ाक जालक कारी रंगक पिनाओन जमल दूषित वस्तु । मै.

झोल अन्हारी-सं., झलफल अन्हारवाला समय । मै.

झोलझूला-विशे., देहक नाप सँ पैघ कुवब अङ्गा । मै.

झोलड़ी-विशे., अत्यन्त ढील खाटक पौरान आ देहक अंगा । मै.

झोलन-सं., कपड़ा सँ झोरि कय मेही सुखाएल वस्तु कें छानि बहराएल वस्तु । मै.

झोलब-क्रि., १. (लाक्षणिक) मानसिक रूपें हिलाएब । २. शरीर कें डोलाएब । ३. कपड़ा सँ गर्द पर सुखाएल वस्तु केर विकृत वस्तु कें छानब । मै.

झोलरस्तू-विशे., झोलक द्वारें विकृत बनल । मै.

झोलराह-विशे., घोराइक ढील भेला सँ कुरूप भेल खाट आदि । मै.

झोलरी-विशे., यत्र तत्र टूटल फाटल रहैक द्वारें ढील आ नीचाँ लटकल । प्रयोग-"की कहू हमर खाट तेहन झोलरी भ' गेल अछि जे सूतिओ नै सकै छी ।" मै.

झोला-सं., खाँचा मे गाड़ी चलला सँ देहक अधिक हिलब । मै.

झोला देब-क्रि., आकाश पाताल देखा कय भय आतङ्क बढ़ाएब । मै.

झौ

झौआ-सं., जटा सन पातवाला छोट गाछ । मै.

झौल करब-क्रि., अबोध नेन्नाक खाइक, पिबैक आ मुतैक काल खौंझाएब, कानब । मै.

झौंस-विशे., अत्यन्त कम तेल मे भुजला वा तरला सँ झरकल तरकारी तीमन । मै.

झौंसब-क्रि., अत्यन्त थोड़ तेल मे तीमन के धूमिल करब । मै.

झौंसा-विशे., (गारि) झरकलहा । मै.

झौहरि-सं., १. एकै बेर झगड़ाक रूपें जोर सँ बाजब । २. शोक सँ आकुल बहुत लोकक एक संग आक्रन्द करब । मै.

